|| गंगेश्वर जीवन दर्शन ||

[मूल वंशावली]

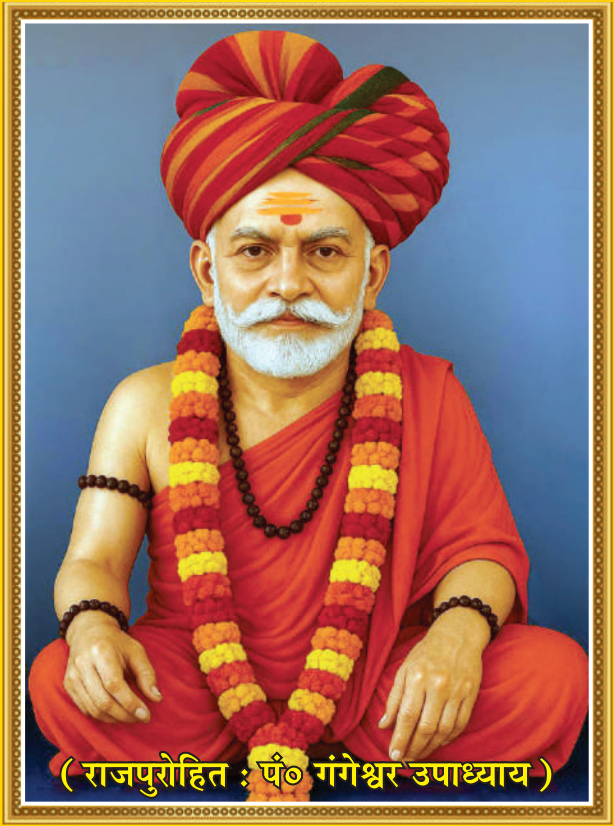

लेखक : डॉ० राम प्रकाश उपाध्याय

वंशवृक्ष संकलनकर्ता द्वय

स्व० ओम प्रकाश उपाध्याय

(गहमर, गाजीपुर)

डॉ० राम प्रकाश उपाध्याय

(अमौरा, गाजीपुर)

पराशर गोत्रीय, गंगेश्वर वंशीय चतुरशीतिः (चौरासी)

गंगेश्वर जीवन दर्शन

[मूल वंशावली]

—वंशवृक्ष संकलनकर्ता द्वय—

स्व० ओम प्रकाश उपाध्याय

(गहमर, गाजीपुर)

डॉ० राम प्रकाश उपाध्याय

(अमौरा, गाजीपुर)

—लेखक—

डॉ० राम प्रकाश उपाध्याय

(अमौरा, गाजीपुर)

पराशर गोत्रीय, गंगेश्वर वंशीय चतुरशीतिः

(चौरासी)

सं० २०८१ प्रथम संस्करण १,००० प्रतियाँ
(महाशिवरात्रि)

मूल्य : रुपये ३०१ (तीन सौ एक रुपये मात्र)

Price : Rs. ₹ 301
ISBN : 9788197972317

प्रकाशक :
नवीन प्रकाशन, कोलकाता

© राम प्रकाश उपाध्याय
(ग्रन्थ के किसी भी अंश को लेखक के बिना लिखित अनुमति के प्रकाशित कराना दण्डनीय अपराध है।)

मुद्रक :
**YEXEL Print Solution
Gorakhpur**

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग सेवा :
रवीश चन्द्र शुक्ल, गोरखपुर
सम्पर्क सूत्र : 9452697108

ब्रजेश पाठक

उप मुख्यमंत्री

कार्यालय कक्ष सख्या 99, 100
मुख्य भवन, विधान सभा सचिवालय
दूरभाष 0522-2238088 (का0)
0522-2239999 (आ0)

लखनऊ, दिनांक

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्ता हो रहा है कि ज्योतिषाचार्य पं0 राम प्रकाश उपाध्याय द्वारा 'गंगेश्वर जीवन दर्शन' (मूल वंशावली) नामक सदग्रंथ का संकलन किया जा रहा है। इस ग्रंथ में चातुर्वण्य के लिए अत्यंत उपयोगी वर्ण्य विषयों का संग्रह तथा सनातन धर्म को विश्व पटल पर स्थापित करने का भागीरथी प्रयास किया जा रहा है। यह ग्रंथ समाज के सभी वर्गों में धार्मिक क्रिया-कलापों को जानने एवं समझाने का उत्कृष्ट प्रयास है।

मैं ज्योतिषाचार्य पं0 राम प्रकाश उपाध्याय द्वारा 'गंगेश्वर जीवन दर्शन' नामक ग्रंथ की सफलता की कामना करते हुए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

दिनांक: 30 अप्रैल 2025

(ब्रजेश पाठक)

डॉ0 दयाशंकर मिश्र ''दयालु''
राज्यमंत्री(स्वतंत्र प्रभार)
आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि
प्रशासन विभाग (एम०ओ०एस०)
उत्तर प्रदेश।

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) उत्तर प्रदेश

कार्यालय
71, मुख्य भवन, लखनऊ,
दूरभाष सं० - 0522-2238466

दिनांक 15-12-2024

पत्रांक– 249 / रा0मं0(स्व0प्र0) / आ0खा0सु0 / 24

भावोद्‌गार

प्रिय डॉ0 रामप्रकाश उपाध्याय जी
अमौरा, गाजीपुर, उ0प्र0।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप एक महान वंश के वंश वृक्ष को संकलन करने का भगीरथ प्रयास कर रहे हैं। पूर्वज हमारी थाती हैं इस पुस्तक के माध्यम से माँ कामाख्या, महर्षि पराशर भगवान वेद व्यास के बारे में गूढ़ जानकारी प्राप्त हो रही हैं। आपके वंश का यह राष्ट्र , सनातन धर्म सदैव ऋणी रहेगा। आपके वंश उत्तर प्रदेश ही नही वरन् सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैल कर राष्ट्र एवं धर्म की सेवा कर रहे हैं। पुस्तक में गायत्री, गौमाता, रामचरितमानस माला यह हर काल खण्ड में सभी वर्णो के लिये उपयोगी है।

मै बाबा विश्वनाथ, माँ अन्नपूर्णा से यही प्रार्थना करता हूँ कि आपके गोत्र एवं वंश सदैव ही खुशहाल और प्रसन्न रहें। माँ कामाख्या, बाबा गंगेश्वर की कृपा आप सभी जनों पर बनी रहे यही कामना है।

15.12.2024

(डॉ० दयाशंकर मिश्र "दयालु")
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
आयुष विभाग,
खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन (MOS)
उत्तर प्रदेश

प्रस्तावना

''आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु
विश्वतोऽदब्धासो......................।

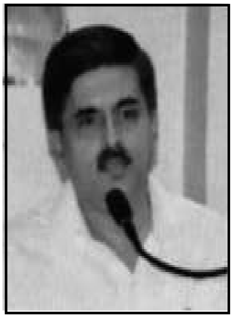

ऋग्वेद (१-८९-१) के इस सूत्र वाक्य का भाव यह है कि ''श्रेष्ठ विचार सब ओर से हमारे पास आएँ।'' सत्य के साथ अतीत प्रकट हो। राष्ट्र के लिए समर्पित मनुष्य एवं उसकी भावनाओं को यश उपलब्ध हो। ग्रन्थ-संरचना हेतु चिन्तन राष्ट्र के प्रति समर्पण ही है। किसी भी ग्रन्थ रचना से इतिहास को पुनर्जन्म उपलब्ध होता है। अपने पूर्वजों की स्मृति संजोकर रखना पुनीत कार्य है। अत: पवित्र ग्रन्थ हमारे पूर्वज स्वरूप है। इस पावन कृत्य को जन्म देने का श्रेय विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं आचार्य राम प्रकाश उपाध्याय को जाता है। आचार्य उपाध्याय द्वारा संकलित और रचित ग्रन्थ का मैंने आदि से अन्त तक सूक्ष्म अवलोकन किया। सर्वविद्या की राजधानी में आपने एक कुशल इतिवृतकार का परिचय देते हुए ''गंगेश्वर जीवन-दर्शन'' ग्रंथ का प्रणयन किया है जो स्तुत्य है।

प्रस्तुत ग्रन्थ ऐतिहासिक प्रमाणों से संयुक्त है। वर्तमान में अधिकांश लेखक मात्र अपने कक्ष में आराम से बैठकर ही दूसरों द्वारा निर्मित ग्रन्थों में समाविष्ट की हुई सामग्रियों की सहायता से अपने ग्रन्थ का निर्माण कर लेते हैं, किंतु आचार्यजी के ग्रंथ से प्रमाणित होता है कि यह कार्य विभिन्न स्थानों के सर्वेक्षण से ही सम्पन्न हो सकता है। आपने युगों, मन्वंतर, वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, सूत्रों, ऋषियों, ब्राह्मणों, उनके गोत्रो आदिका गहनता से सहारा लेकर ग्रन्थ को प्रमाणिकता और सम्पन्नता प्रदान की है। विशेष चर्चा 'पराशर' अविस्मरणीय रहेंगे, कामाख्या स्तोत्रम्, मृत्युंजयमंत्र, बाबा गंगेश्वर की जीवन यात्रा पर है। पुराणानुसार ब्राह्मणों हेतु आचार संहिता, गायत्री, स्वास्तिक, यज्ञोपवीत आदि के महत्त्व और गौरव की प्रस्तुति के साथ-साथ सर्वाधिक श्रमसाध्य कार्य वंशवृक्ष का परिचय रहा है। इतिहास में तिथियों और वंशावलियों का अत्यधिक महत्त्व होता है। बारहवीं शताब्दी के कल्हण ने अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति 'राजतंरगिणी' (११४८ ई०) को भी वंश परिचय और कालक्रम से संयुक्त किया है।

कल्हण लिखता है कि वही गुणवान कवि स्तुत्य है जो राग-द्वेष से पृथक

रह कर केवल तथ्यों के निरूपण के लिए अपनी भाषा का प्रयोग करे।

श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृता।
भूताऽर्थकने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती॥

—(राजतरंगिणी १.७)

इसीलिए ई. एच. कार लिखता है कि इतिहास के अध्ययन से पूर्व इतिहासकार का अध्ययन और इतिहासकार के अध्ययन से पूर्व उसके सामाजिक परिवेश का अध्ययन अनिवार्य होता है। तभी तथ्य और सत्य प्रकट होगा। सर्वाधिक प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का अध्ययन करने वाले तहकीकात-ए-हिन्द (१०३१ ई.) के लेखक अल्बीरुनी भी इतिहास में गलत सूचना देने से भयभीत रहता है। इस प्रवृत्ति को वह कायरता समझता है। वह कहता है कि केवल वही पुरुष सराहनीय है जो असत्य से दूर भागता है और सत्य का अवलम्बन करता है। वह कुरान को उद्धृत करता है ''सत्य बोलो, चाहे वह तुम्हारे अपने ही विरुद्ध क्यों न हो।''

संस्कृत कोश-साहित्य के रचयिता लब्धप्रतिष्ठ आचार्य हेमचन्द्र, (११४५ ई.) कवि कल्हण के समकालीन थे। उन्हें शब्दकोश के अतिरिक्त चालुक्यों के समसामयिक इतिहास लिखने का भी श्रेय प्राप्त है। हेमचन्द्र चालुक्य नरेश जयसिंह सिद्धराज के समवयस्क तथा पुत्र चालुक्य नरेश कुमार पाल के गुरु भी थे। प्रबन्धकार राजशेखर सूरि (१३४९ ई.) और आचार्य हेमचन्द्र ने इतिहास को साहित्य के घेरे से बाहर निकाला और इतिहास की मुक्त परिभाषा दी। आज अतीत का वृतांत साहित्य की परिधि को विध्वंस कर समग्र इतिहास की गोद में जा बैठा है। इतिहासशास्त्र के एक किनारे पर विश्वव्यापी है तो दूसरे किनारे पर स्थानीय इतिहास। आज इतिहास व्यापक परिवर्तन के साथ अग्रसित हो रहा है। जहाँ एक ओर हम गगनचुम्बी इमारतों का अध्ययन कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ विंध्याचल की गुफाओं के भित्ति चित्रों में भी इतिहास ढूढ़ रहे हैं।

सर्वत्र दृष्टि (दर्शन) रखने वाला ईश्वर और विशिष्ट दृष्टि रखने वाला इतिहास ही है। श्वेताश्वरोपनिषद् का तीसरे अध्याय का तीसरा श्लोक यह भाषित कराता है। 'भारद्वाज: पूर्वज और वंशज' के लेखक-इतिहासकार प्रोफेसर विश्वनाथ भारद्वाज का विचार है कि देश काल का सम्यक् ज्ञान इतिहास है। इतिहास का जन्म मानव का जन्म है और इतिहास की मृत्यु मानव की मृत्यु है। अत: मानव पर मानवीय दृष्टि एवं इतिहास को जीवित रखने का प्रयास आचार्य उपाध्याय द्वारा

'गंगेश्वर जीवन-दर्शन' में किया गया है। जिसके लिए आप अधिकतम् प्रशंसा के पात्र हैं। आधुनिक इतिहासशास्त्र विस्तार की दशा से गुजर रहा है जिसके विविध आयाम हैं, भले ही उसमें सुसम्बद्धता नहीं है। यदि परम्परागत इतिहास-लेखन अर्द्धसत्यों का अव्यवस्थित ढेर है तो आधुनिक इतिहास अबोधगम्य और जटिल है क्योंकि आज इतिहासशास्त्र की अनेक परिपाटियाँ हो चली हैं।

ब्रह्म, वेद और इतिहास अत्यन्त जटिल हैं। इसी से वेदव्यास ने 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' अर्थात् ब्रह्म कौन है? उत्तर है, इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय जिससे होते हैं वहीं ब्रह्म है। इसी तर्ज पर हम यह कह सकते हैं 'अथातो इतिहासजिज्ञासा' अर्थात् इतिहास क्या है? इतिहास वह है जो सत्य की खोज करता है। अर्थ स्पष्ट है कि ब्रह्म ही सत्य है और सत्य का प्रस्तुतिकरण ही इतिहास है। अत: ब्रह्म और इतिहास 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के पर्याय हैं। गीता का प्रथम श्लोक "**धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।**" जिज्ञासा पर ही आधारित है कि हे संजय! तुम यह बताओ (इतिहास) कि मेरे और पाण्डु पुत्रों ने कुरुक्षेत्र में क्या किया?

दीर्घकाल तक इतिहास 'तथ्यों का वृत्तान्त' समझा गया जबकि सत्यता यह है कि तथ्य नहीं बोल सकते है। अत: तथ्यों को बोलवाने का कार्य इतिहासकार ही करता है। मैंने स्व ग्रन्थ 'इतिहास के आइने में गांधी-दृष्टि' में निष्कर्ष निकाला है कि इतिहास अन्तत: एक इतिहासकार की मानसिक संरचना होता है। तथ्यों और इतिहासकारों के बीच एक अविरल इतिहासकीय संघर्ष चलता रहता है। इन विचारों के मध्य भूत और भविष्य के बीच एक सेतु निर्मित होता है वह सेतु वर्तमान और इतिहासकार होता है। ऐतिहासिक घटना की तुलना में एक इतिहासकार का कार्य अधिक दायित्वयुक्त होता है क्योंकि वह वर्तमान की निष्पक्षता के आधार पर अतीत से तथ्य परक वाद-विवाद करते हुए भविष्य को प्रकाशमय बनाने हेतु चिन्तित रहता है। वर्तमान का जन्म अतीत के गर्भ से हुआ है। हमारे अतीत का प्रकाश वर्तमान को सुशोभित और प्रकाशित कर रहा है। इस प्रकार अतीत और वर्तमान का ऐतिहासिक ज्ञान मानव जीवन की अमूल्य निधि है। हम विश्व में 'युद्ध' में पिछड़ सकते हैं क्योंकि वह हमारे मूल में नहीं है, लेकिन 'ज्ञान' में पिछड़ना असंभव है क्योंकि वह हमारे मूल में है। अतीत का यह ज्ञान रूपी मूल वर्तमान तक चला आया है जो सुखद भविष्य का निर्धारण करेगा। गांधी ने बुद्ध और अतीत के धर्मशास्त्रों, बुद्ध-महावीर से सत्य और अहिंसा हम सब तक

पहुँचाते हुए हमारे वर्तमान को सुखद रौशनी दी है। यही रौशनी मानव कल्याण करते हुए सम्पूर्ण विश्व को प्रत्येक क्षेत्र में शान्ति प्रदान करेगी।

किसी भी वंश का जीवन दर्शन लिखने के लिए व्यक्ति के सम्यक् चरित्र की अहम् भूमिका होती है क्योंकि कोई भी इतिहास परिवर्तित नहीं कर सकता है। केवल इतिहासकार या इतिहास का लेखक ही इतिहास की धारा को बदल सकता है। इसलिए लेखक का सत्य (ईश्वर) और तथ्य (प्रमाण) से सम्पर्क बना रहेगा तभी वास्तविक इतिहास का जन्म होगा। इस प्रकार की आकांक्षा केनोपनिषद् के शान्ति पाठ में भी की गयी है, यथा—

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्मनिराकुर्यां मा ब्रह्म निराकरोत्, अनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु, ते मयि सन्तु॥

सम्पूर्ण शक्ति मुझे प्राप्त हो, ईश्वर मेरा त्याग न करे, सदा मुझे अपने साथ रखे, मेरे साथ ब्रह्म का और ब्रह्म के साथ मेरा नित्य संबंध बना रहे। तभी मनुष्य के माध्यम से जो कुछ सृजित होगा वह सत्य (ब्रह्म) को आरूढ़ करेगा।

समुद्र विशाल और अथाह है उसमें से मोती किनारे पर बैठकर नहीं प्राप्त किया जा सकता वरन् डुबकी लगानी ही होगी। मैं एक बार पुनः ग्रन्थ रचयिता आचार्य श्रीरामप्रकाश उपाध्याय के श्रम को नमन करता हूँ। काशी के कण-कणमें विराजमान भगवान् शंकर से प्रार्थना करता हूँ कि इस प्रकार के और भी प्रामाणिक ग्रन्थों का प्रणयन करने की प्रेरणा और सामर्थ्य वह उन्हें प्रदान करते रहें जिससे हिन्दी साहित्य को समृद्धि मिले। आचार्यश्री उपाध्याय राम का प्रकाश प्रकाशित करें। मैं, आपको ग्रन्थ प्रकाशन और प्रसिद्धि के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ। इस ग्रन्थ के माध्यम से आप सदियों तक विद्यानुरागियों के मस्तिष्क और हृदय में जीवित रहेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रोफेसर प्रवेश भारद्वाज
इतिहास-विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संस्तुति

डॉ० प्रतिभा मिश्र

वन्दे वांछित कामर्थेचन्द्रार्धकृतशेखराम्।
सिंहारूढाचतुर्भुजास्कन्दमातायशस्वनीम् ॥

नवरात्रि के पंचम दिवस स्कंदमाता का ध्यान कर यह लेख लिखते माँ से प्रार्थना करती हूँ कि प्रस्तुत ग्रंथ के ग्रंथकार एवं समस्त परिवारजन पर माँ दुर्गा अपनी अनुकंपा सदैव बनाए रखें।

पराशर गोत्रीय बाबा गंगेश्वर की वंशावली प्रकाशित करवाने वाले श्रद्धेय ग्रंथकार आचार्य श्री रामप्रकाश उपाध्याय जी को सादर नमन, जिन्होंने यत्नपूर्वक-पूर्वजों के इतिहास एवं उनकी पावन स्मृति को सुरक्षित रखने की इस अति प्राचीन प्रथा के प्रणयन से पूर्वजों के आशीर्वाद से आने वाली पीढ़ियों के सुसंस्कृत जीवन के लिए पर्याप्त कार्य किया। सत्य एवं तथ्य परक इतिहास लेखन हेतु जिस गहन अन्वेषण एवं स्त्रोत की आवश्यकता होती है, प्रस्तुत ग्रंथ इसका एक परम अनुकरणीय उदाहरण है।

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः। तत्प्रयत्नेन कुर्वीत ....

प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन के विषय में जब प्रिय शिष्य 'जनमेजय' से पता चला तो हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ। साथ ही ऐतिहासिक दृष्टि से इस प्राचीनतम विधा के अध्ययन—अवलोकन का जो सुअवसर प्राप्त हुआ, उसके लिए समस्त उपाध्याय परिवार का हृदय से आभार।

'वंशावली लेखन', भारतीय इतिहास की आदिमविद्या है। यह सतत् सनातनधर्म का वह दर्पण है, जिसे इतिहास के प्राथमिक स्त्रोत के रूप में विशेष दृष्टि से देखने का प्रयास किया जा रहा है। परम प्रतापी राजा पृथु के समय से चली आ रही इस प्रथा एवं इससे जुड़े लोगों का भारतीय इतिहास में अत्यंत सम्मानीय स्थान रहा है। वैदिक ऋषियों द्वारा समाज को सुसंगठित एवं

सुव्यवस्थित करने की दृष्टि से इस प्रथा का आरंभ हुआ। आरंभिक काल में वंशावली लेखन में सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर वृतांत आरंभ होता है, तत्पश्चात ब्रह्मा जी से वंशावली शुरू होती है। वंशावली के आरंभ में मंगलाचरण अवश्य लिखा जाता था। जैसे—

॥ रिद्धि दे सिद्धि दे अष्ट नवनिधि दे, वंश मा वृद्धि दे॥

परिवार एवं समाज की वंश-परम्परा के अध्ययन से उसके रीति-रिवाज, संस्कृति गोत्र शाखा, प्रवर-ईष्ट-भैरव-जीवनमृत्यु कुलधर्म, कुलाचार, पूर्वजों के नाम आदि की विषद जानकारी प्राप्त होती है। कुछ प्रांतों में जाति और गोत्रों के अतिरिक्त ग्राम विशेष की परंपराएं, ग्राम देवी, देवता आदि के उल्लेख भी वंशावलियों में मिलते हैं। विभिन्न राजवंशों की मुद्राएँ, हस्त लेखन, दानपत्र, अंगूठे और पंजों के निशान के साथ-साथ वंशावलियाँ अनेक प्रान्तों की बहियों में मौजूद हैं, जो नई पीढ़ी के ऐतिहासिक ज्ञान में अभिवृद्धि कर, उनके लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं। इन विस्तृत विवरणों का परिवार और समाज के कल्याण हेतु प्राचीन काल से ही उपयोग किया जाता रहा है। 'वंशावली', इतिहास जानने के सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत में से एक है।

वर्तमान समय में प्राचीन अभिलेखों, प्राचीन लिखित सामग्री के साथ-साथ वंशावली पर विश्व के अनेक देशों में शोध किये जा रहे हैं। भारत में वंशावली-लेखन करने वाले अनेक समुदायों में प्रमुख रूप से राव-भाट जी, ब्रह्मभट्ट जी, जागा जी, पण्डे जी, बड़वा जी, राणीमंगा जी, याज्ञिक जी, बारोट जी आदि नाम सम्मिलित हैं।

अन्य प्रांतों में वंशावली लेखक कुछ और नामों से जाने जाते हैं। राजस्थान के वंशावली लेखकों ने आरंभ में डिंगल एवं पिंगल (देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली प्राचीन राजस्थानी साहित्यिक भाषा) में रचना कार्य किया। 'वली' का शाब्दिक अर्थ बेल अथवा लता है। राजस्थान में नयी नवेली दुल्हन को घर की बड़ी बुजुर्ग सदस्य अपना आशीर्वाद देते हुए कहती हैं—'दोब ज्यूं पसरो, बेल ज्यूं बढ़ो'। यह आशीर्वाद वंशवृद्धि के लिए दिया जाता है।

अपने आरंभिक स्वरूप में वंशावली वह हस्तिलिखित पांडुलिपि है, जो अपने

आप में विशिष्ट साहित्यिक ग्रन्थ है। कागज का आविष्कार होने से पूर्व बालू-रेत के लेप को गीला कर, उसे सूखा कर उस बालू रेत पर अक्षर खोद कर वंशावली लेखन कार्य किया जाता था। प्राचीन काल में भोजपत्र, ताम्रपत्र पर एवं शिलालेखों में भी वंशावली-लेखन की परम्परा देखी जा सकती है। भारत के प्राचीनतम तीर्थ होने का गौरव प्राप्त करने वाले उत्तर प्रदेश के कासगंज स्थित सतयुग कालीन सोरों शूकर क्षेत्र में वंशावली लेखन कार्य, कत्थे को घिस कर विशेष स्याही बनाकर किया जाता था। भारत की विभिन्न देशी रियासतों में स्थापित संग्रहालयों में सहस्त्र वर्ष प्राचीन वंशावलियाँ सुरक्षित हैं।

भारतीय इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारत के गौरवशाली अतीत की स्मृतियों को नष्ट करने के उद्देश्य से इतिहास के स्त्रोत के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखने वाले धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ वंशावली की पोथियों को मुगल काल में विदेशी आक्रांताओं ने नष्ट करने का कुत्सित कार्य किया, किंतु तत्कालीन विषम परिस्थितियों में भी वंशावली लेखकों ने, अपनी वंशावली को अपने प्राणों से भी अधिक मूल्यवान मानते हुए उन्हें सुरक्षित रख कर इस विद्या को अक्षुण्ण रखने का हरसंभव उपक्रम किया। आज परंपरागत इतिहास को मिल रही चुनौतियों से अपरंपरागत एवं वैकल्पिक स्त्रोतों को महत्व मिल रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि वंश-लेखक अपने लेखन में—नवाचार अपनाएं। परम्परागत वंशावलियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी का प्रयोग एवं वैज्ञानिक दृष्टि का समावेश किया जाए तो इस कार्य में नवीन पीढ़ियाँ भी सहभागी कर सकेंगी।

विभिन्न उद्देश्यों से सामाजिक, पारिवारिक एवं साँस्कृतिक परिवेश के अध्ययन हेतु अन्वेषणधर्मी अनिकेतनों, दरबारी लेखकों, ईसाई मिशनरियों एवं ब्रिटिश प्रशासकों ने इतिहास लेखन का कार्य किया, किंतु इस लेखन की कुछ आधारभूत सीमाएँ थीं। जैसे पूर्वाग्रह, सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश से प्रत्यक्ष संपर्क का अभाव आदि, जिसके परिणाम स्वरूप लेखन में कल्पनाशीलता का बाहुल्य एवं प्रामाणिकता की कमी जैसे दोषों का समावेश हो जाने से इतिहास के वस्तुनिष्ठ अध्ययन की समस्या उत्पन्न हुई। वहीं वंशावली लेखन में समावेशित

अनुभवजन्य विवरणों से अतीत के अध्ययन के लिए न केवल महत्त्वपूर्ण कच्ची सामग्री अपितु प्रभावशाली विश्लेषण प्राप्त होते हैं, जो इतिहास बोध को और संपुष्ट करते हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ में दैनन्दिन बात–व्यवहार, पूजा–विधि, रीति–रिवाज पर शास्त्र सम्मत ढंग से बताया गया है, जो वर्तमान पीढ़ी के दिशा–निर्देश के अतिरिक्त अनेकानेक सामाजिक समस्याओं के निराकरण में उपयोगी सिद्ध होगा। इसके अनुसार जीवन शैली में यथासम्भव परिवर्तन लाकर वर्तमान समय में गहराते जा रहे पर्यावरणीय संकट के निराकरण में सहायता प्राप्त होगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

सधन्यवाद!

डॉ० प्रतिभा मिश्र
असि० प्रो० इतिहास विभाग
डी०ए०वी०पी०जी० कॉलेज, वाराणसी

॥ संस्तुति ॥

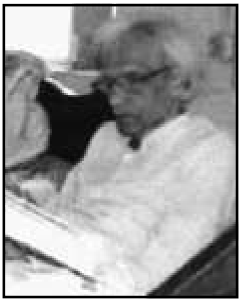

उपभोक्ता सभ्यता को ही महात्मा गाँधी ने आसुरी सभ्यता कहा था और इसके सांघातिक प्रभाव को लक्ष्य कर उसके प्रति अपने देश को आगाह किया था। किन्तु महात्मा जी की शुभ चिन्ता से प्रेरित चेतावनी को देश ने गुरुता नहीं दी परिणामतः देश आसुरी सभ्यता की उच्छृंखल उद्दाम लहरों की चपेट में आ गया और मनुष्य विवेक छोड़ कर बहिर्मुखी और भोग-संसक्त हो गया। इसी कुप्रभाव का परिणाम है कि आज अधिकांश लोग स्मृति-लोप से आक्रान्त हो गये हैं। यह रोग संक्रामक व्याधि और महामारी का रूप लेता जा रहा है। सुदीर्घ परम्परा और प्रामाणिक इतिहास के तथ्य में रुचि और उसकी अभिज्ञता की बात तो दूर, आज के आदमी को अपनी दो-तीन पूर्व पीढ़ियों से कोई प्रयोजन नहीं है। तीन पूर्व पीढ़ी के शील तथा अवदान की बात तो दूर अपने पुरुखों के नाम तक से आज की पीढ़ी अपरिचित है। जो जाति अपनी परम्परा और इतिहास की प्रामाणिक जानकारी से रिक्त होती है, उसका भविष्य नहीं होता; अपने वर्तमान के साथ हल्ला करते उसका लोप हो जाता है।

गाँव और अरण्य भारतीय संस्कृति की आधार-भूमि है। उपभोक्ता सभ्यता से काफी अंश तक प्रदूषित होने के बावजूद गाँव-जंगल में भारत के जातीय प्रत्यय के प्रति अभी, क्षीण रूप में ही सही, रुचि और आस्था जीवित है, जो नवजागरण की सम्भावना का संकेत है।

ज्योतिषाचार्य श्री राम प्रकाश उपाध्याय ने गहरी निष्ठा और गंभीर अध्यवसाय से 'गंगेश्वर जीवन-दर्शन' नामक पुस्तक तैयार की है, जो आश्वस्त करती है कि नयी पीढ़ी के लोग अपनी वंश-परम्परा के प्रति सुमुख होंगे और अपने मूल से टूट-छूट रहे तथा विजातीय अशुभ प्रभाव से दब कर अपनी स्वकीय पहचान मिटा रहे आज के लोग अपनी जड़ से जुड़ने को प्रेरित होंगे। ऐसा हो, यही मनःकामना है।

गोत्राचार में अतिरंजना और आत्मश्लाघा की ध्वनि जरा ऊँची और तेज होती है, जो विधायक नहीं होती। पं० राम प्रकाश जी इस बिन्दु पर सचेत हैं। यह शुभ है। उपाध्याय जी का उपक्रम लोक स्वीकृत हो, यही काम्य है।

पद्मश्री

डॉ० कृष्ण बिहारी मिश्र

अक्षय नवमी, २०७४

डॉ० आनन्द मोहन उपाध्याय (साहित्यकार)
पीएच०डी० डी०लिट
गहमर, गाजीपुर

प्रियवर राम प्रकाश उपाध्याय जी की प्रज्ञा बहुत कुछ ऋतम्भरा के नजदीक है इसलिए वे एक साथ साहित्य, ज्योतिष सनातन ग्रन्थों से जुड़कर, परम्परा की लीक पर चल कर, कुछ नवोन्मेषित शोध समाज को अवदानित करना चाहते हैं। 'गंगेश्वर वंश' एक अनुसंधानिक कृति है, जिसमें एक प्रज्ञाशील अनुसंधित्सु की शोध दृष्टि उन्मेषित हुई है। अध्ययन आक्षेप नहीं होता है, बल्कि जो भी कमनीय, महनीय और अपेक्षित है, उसे एक सार्थक संवाद देने की कोशिश होती है, शिवत्व को साधने की वैष्णवी सिद्धि होती है।

अधुना पीढ़ी सभ्यता-संघात से प्रभावित हुई है। यद्यपि इसमें इसका दोष नहीं है। वैश्विक बाज़ार मुखर है। उचक-उचक कर अपने को विज्ञापित करने की कोशिशें बढ़ी है। वैश्विक आँगन बड़ा हुआ है, पर मन का आंगन छोटा हुआ है। चाँद पर प्लाट खरीदने की चाहत सबके मन में है, पर धरती की करूणा को हल्दी, दधि, अक्षत से श्री सम्पन्न करने की उमंग क्षीण हुई है। पं० राम प्रकाश उपाध्याय जी की समूची कोशिश छिन्नमूल होती पीढ़ी को, अपनी परम्परा से सम्पृक्त होने व जड़मूल होने की चेतना से सम्पृक्त करने की सायासात्मक साधना है। मैं निश्चय ही कह सकता हूँ कि यह कृति शोध-साहित्य में बहुमानता पायेगी।

कहते हैं, पुरुखों की आत्मा अपने वंशजों के आसपास करुणा बनकर बरसती रहती है, थोड़ी सी अवगाहन साधना से हमारे अंदर आशीष बनकर उतरती है। शायद इसलिए ही बाबा गंगेश्वर ने श्री रामप्रकाश जी को लेखनी पकड़ाई कि मेरे वंशजों के इतिवृत्त को समेटो और उसी की अवदानिक परिणति है, यह शोध कृति। श्री राम प्रकाश जी के बारे में सोचते ही एक खास शख्सियत की तस्वीर सामने उभर कर आती है। एक शख्सियत जिसके कई आयाम है—लोक चिंतक भी हैं, सनातन आर्ष ग्रन्थों के सजग अध्येता हैं, ज्योतिषी हैं तो समाज में उजास को

रचने वाले एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। कवि हृदय रखते हैं तो अभिनव गद्यकार भी है, बुद्धि के शिखर हैं, तो रहमदिल भी हैं, सतत विचारशील हैं, तो जलते यथार्थ के दृष्टि साक्ष्य भी है, सौंदर्यानुभूति के मर्मज्ञ हैं तो विविध विषयों के व्याख्याकार भी। जो सुन्दर होगा वही, शिवत्व को साधेगा, वैष्णवता के रस सूत्रों को तलाशेगा। अंधेरे में हो, इसलिए अकेले हो, उजाले में आओ, तो कम से कम तुम्हारी परछाई तो साथ होगी, पर शिवत्व को चैत्यभूमिका या पीठिका बनाने के लिए तिमिर हलाहल का पान करना पड़ता है। श्री राम प्रकाशजी में एक उद्ग्रीव व उमगता मन है, जो बार-बार कहता है 'काश! मैं सृष्टि की दुःखयष्टि को भेंट पाता, अंधेरे को छांट पाता और उजास की श्री शिवली की अल्पना पर 'गंगेश्वर बाबा' को प्रतिष्ठित कर पाता। खुशी है एक साधना सिद्धि बनी है। साधुवाद के पात्र हैं श्री रामप्रकाश जी। शायद ऐसे ही के लिए पं० जानकी वल्लभ शास्त्री ने लिखा होगा।

''जिन्दगी निचोड़ दी अछोर के लिए।
तिमिर गरल पीया अमृत भोर के लिए।

अमृत-भोर की संधान-यात्रा में तिमिर गरल पान करना ही शिवत्व की प्रतिष्ठापना है। तुलसी के ही समसामयिक आंगल साहित्य साधक शेक्सपीयर ने लिखा होगा—

All the elements are so mixed in 'Him'
that nature would stand up
and say to the world
That here is a 'Man'

प्रकृति भी उन्मेषित हो जाय और दुनिया से कह उठे, हाँ यह एक इंसान है। साध्य और साधक दोनों प्रणम्य और चरणेषु हैं। 'गंगेश्वर बाबा' उपाध्याय वंश के आशीष मूर्ति हैं और चैत्यपीठिका पर बैठा है—साधक रामप्रकाश।

वे एक अच्छे दोस्त, एक ईमानदार आदमी और उससे भी ऊपर एक मनीषी हैं, जिनके पास नई सोच, नई दृष्टि और नये प्रतिमान ढूंढ़ने की भूख है। पहली बार देखा तो मेरे सामने एक मझौला कद्दावर, गोरा बदन, उन्नत ललाट, चमकता रक्ताभ चेहरे वाला वैष्णव मूर्ति, ज्ञान का पुंज और कला साहित्य का पारखी एक

असाधारण आदमी खड़ा था। उन्होंने मुझमें कुछ देखा और फिर हम दोनों जैसे एक हो गये। अगर सच्चा रिश्ता अचानक जुड़ जाये तो समझो आत्मा उसे कई युगों से जानती है। दोस्ती गहरी होती गयी और हम दोनों एक राह पर जिज्ञासा, एक चाहत, एक गर्मजोशी लिए सारस्वत पथ के राही हो गये। हम दोनों के बीच आज भी शुभत्व को शिवत्व तक लाने के लिए संवाद जारी है।

श्री रामप्रकाश जी ने उपाध्याय वंश के लिए इस कृति के माध्यम से एक मन का मंदिर बनाया है और हम सबके प्रणम्य को यथोचित आसन दिया तथा यह एक योग्य युवा की कृताजंलि है। अनुष्ठान तो बहुत हुए, पर सिन्धु की तरंगों में यह दीपदान महनीय है।

इति नमस्कारन्ते ।

माँ कामाख्या

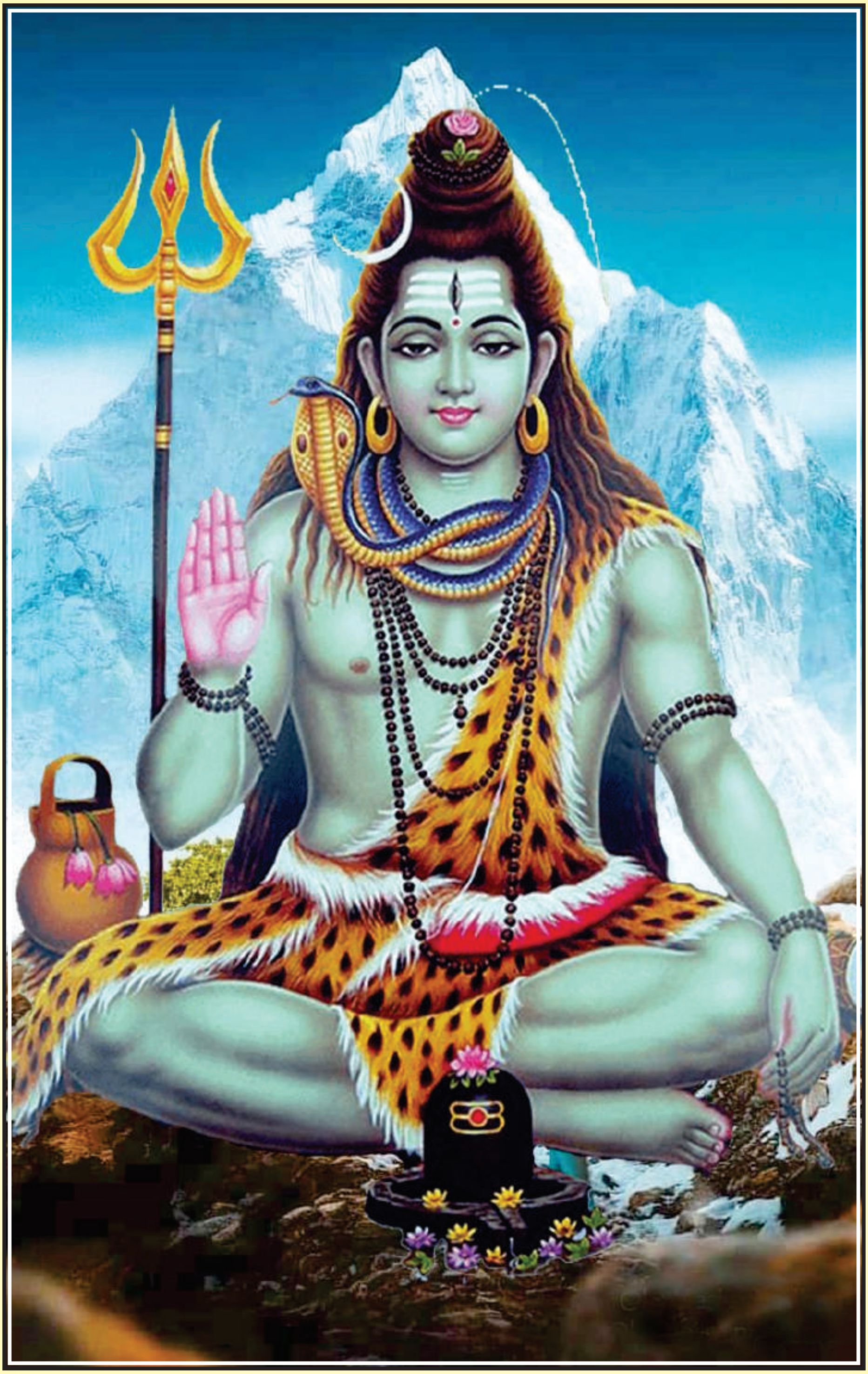

भगवान् शिव जी

भगवान् ब्रह्मा जी

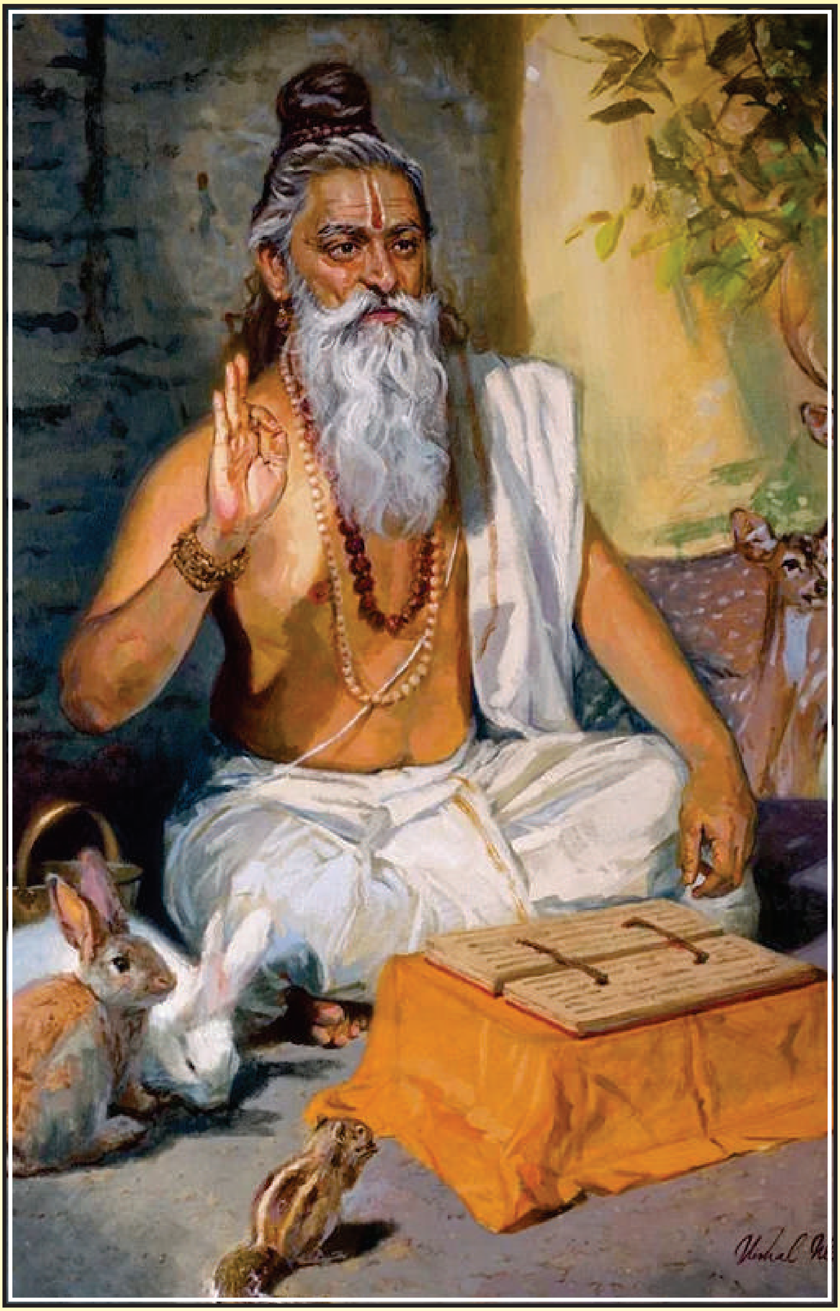

वशिष्ठ जी

पुस्तकञ्च महेशानि यद्गृहे विद्यते सदा। काश्यादीनि च तीर्थानि सर्वाणि तस्य मंदिरे॥

हे पार्वती! सद्ग्रंथों का संग्रह जिसके घर होता है, वहां काशी आदि सभी तीर्थ वास करते हैं। (भूतशुद्धि तंत्र-17/6)

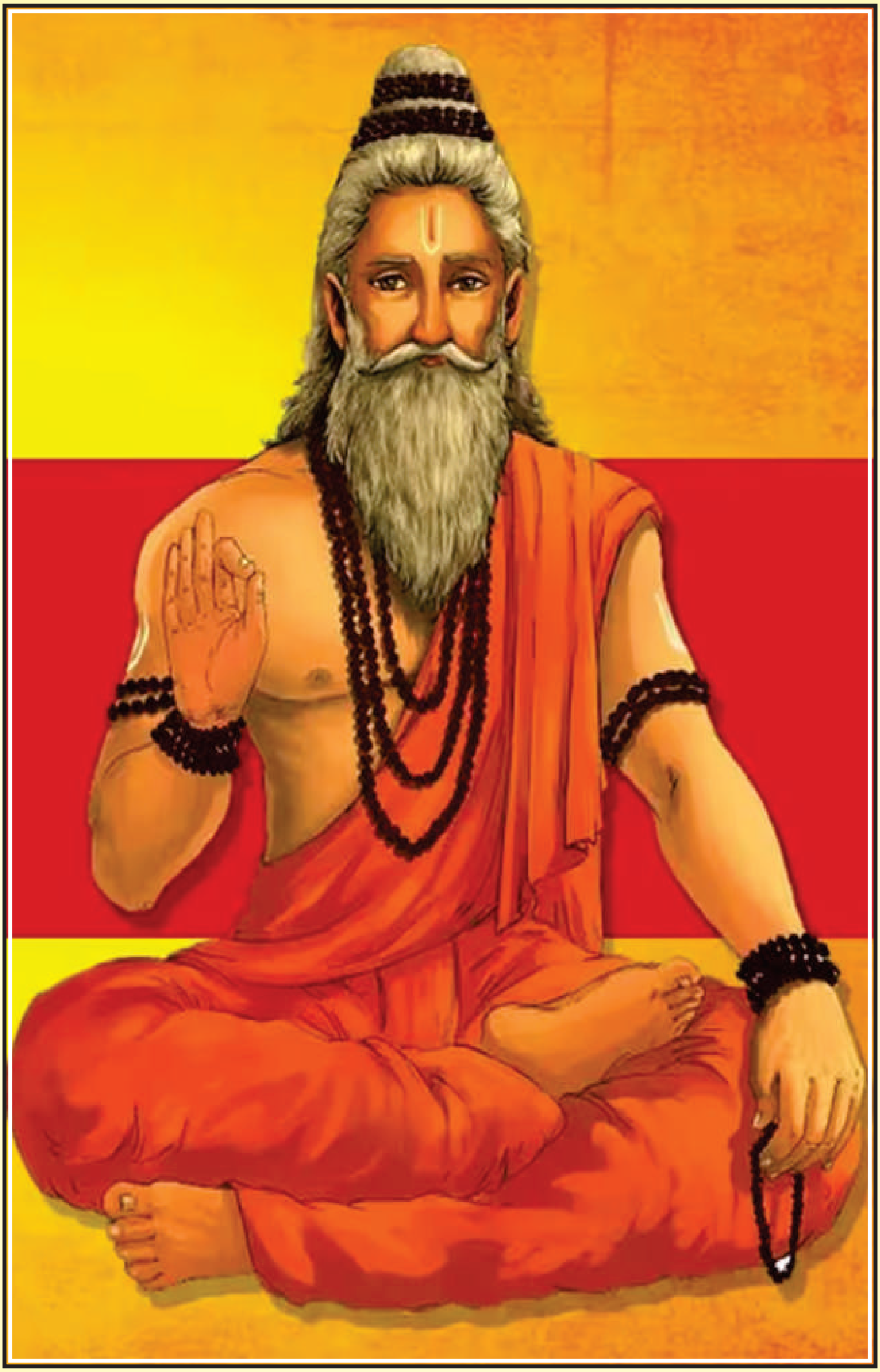

शक्ति जी

अपने पूर्वजों को देवता बनाने वाली पुस्तकें अमर होती हैं। —प्लेटो

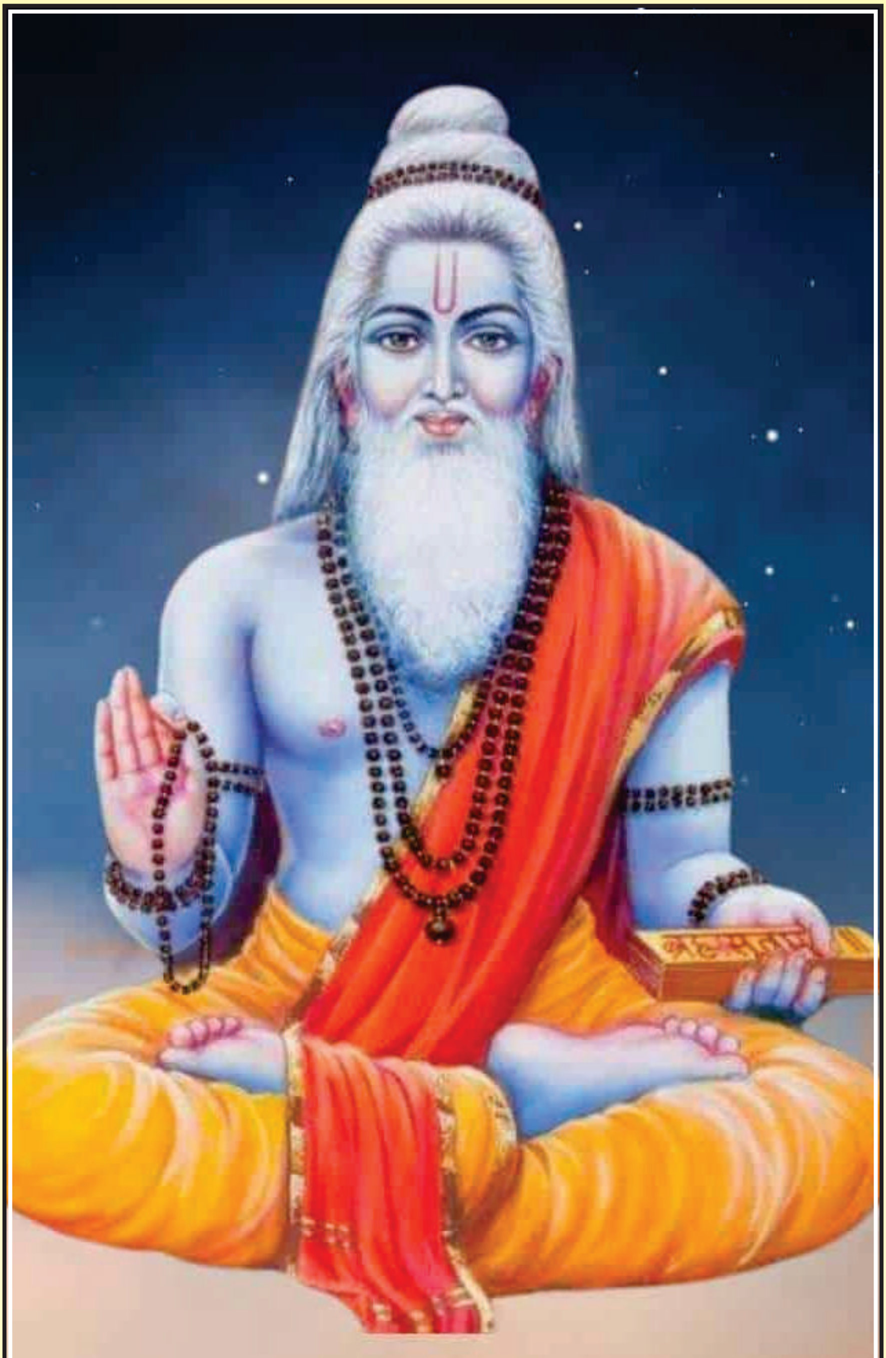

महर्षि पराशर जी

पुस्तकें विचार की समाधियां हैं। —लांगफेलो

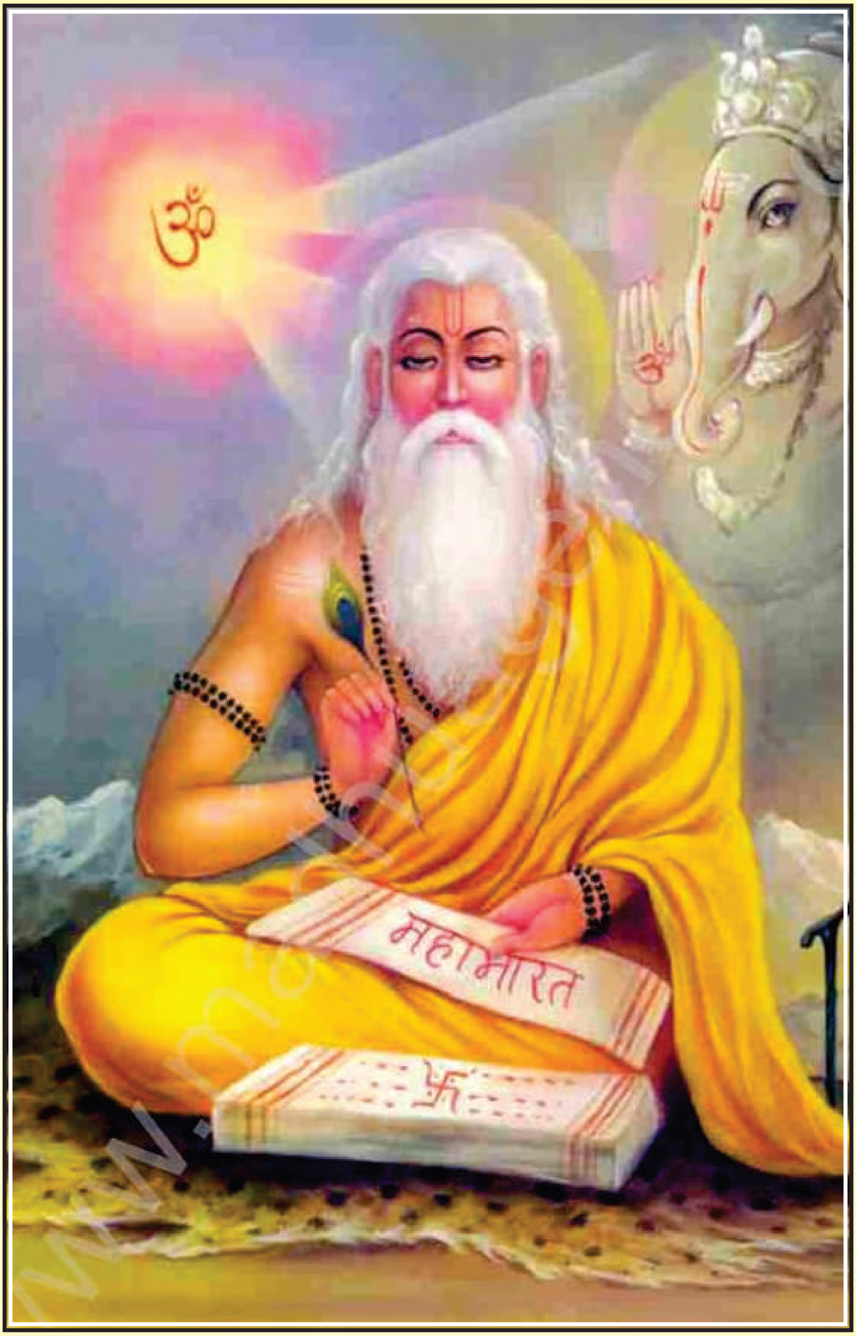

महर्षि वेदव्यास जी

पुस्तकें भटके पथिक का मार्गदर्शन कर उर्ध्वगति प्रदान करती हैं।

—(डॉ० राम प्रकाश उपाध्याय)

गौर जी

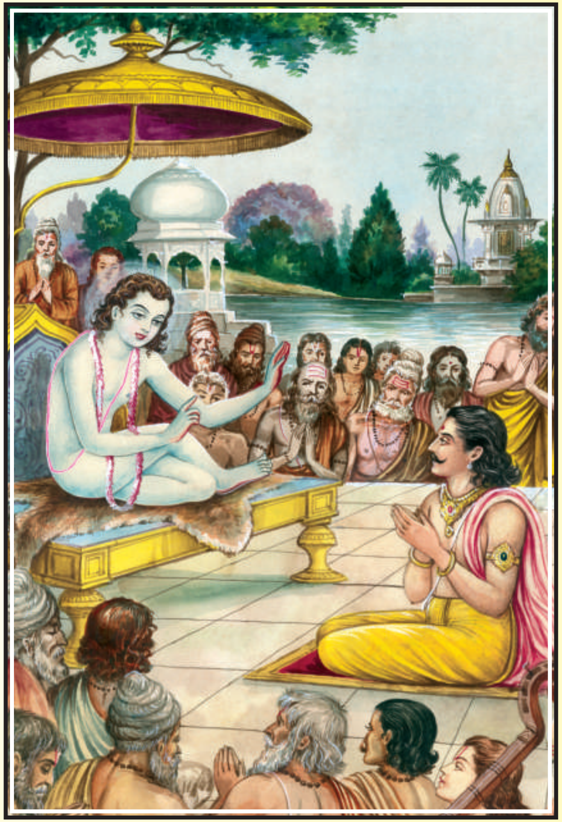

शुकदेव जी

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ज्योतिष तथा कर्मकाण्डके प्रकाण्ड विद्वान पं० श्रीरामप्रकाश उपाध्याय जी के द्वारा संग्रहीत तथा लिखित यह ग्रन्थ 'गंगेश्वर जीवन–दर्शन' न केवल ब्राह्मण समाज के अन्तर्गत आने वाले उपाध्याय ब्राह्मणोंके लिये ही आदरणीय है, अपितु समस्त बुद्धिजीवी समूह के लिए उपयोगी तथा अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का भाव जागृत करने वाला है। गहराई से विचार करने पर ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण अध्यात्म साहित्य वस्तुतः अपने मूल के खोज की एक पावन गाथा है। आदरणीय उपाध्याय जी के द्वारा इस दिशा में किया गया प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय तथा समस्त मानव जाति के लिए अनुकरणीय है।

पुस्तक में मुख्य रूप से पराशर गोत्रीय 'गंगेश्वर वंश' की पावन कुल परम्परा को प्रमाणित रूप से लेखक ने प्रस्तुत किया है। एक इतिहासकार की तरह जगह–जगह जाकर के, बड़े बुजुर्गों से पूछकर के, स्थान विशेष को देख करके तथा बहुत से धर्मग्रन्थों का विधिवत उद्धरण देते हुए अपने प्रतिपाद्य विषय का कुशलता पूर्वक प्रतिपादन किया है।

व्याकरण शास्त्र के सर्वश्रेष्ठ विद्वान आचार्य भट्टोजी दीक्षित ने अपने ग्रन्थ 'वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी' में 'उपाध्याय दधीते' लिख करके यह प्रमाण्ति किया है कि वैदिक काल से लेकर पौराणिक काल तक अध्यापन का कार्य उपाध्याय लोग ही करते थे। अथवा दूसरे शब्दोंमें इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि ब्राह्मणों का वह समूह जो अध्यापन का कार्य करता था वह उपाध्याय कहलाया। कालान्तर में यह शायद ब्राह्मण समुदाय में प्रतिष्ठा के रूप में प्रयोग होने लगा। ब्रह्मवैवर्त पुराण में आदरणीय भगवान् व्यास ने भी उपरोक्त तथ्य को प्रमाणित करते हुए लिखा है कि—

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता ....।

अपने उच्च कोटि के ज्ञान के द्वारा मानवमात्र को शिक्षा प्रदान करने वाली इस पवित्र जाति की पावन कुल परम्परा को आदरणीय पं० श्री रामप्रकाश उपाध्याय जी ने अपने अथक प्रयास तथा अपनी नवनवोन्मेष शालिनी प्रतिभा के द्वारा लोगों के समक्ष उजागर किया है। मैं इस पुनीत कार्य के लिए श्री उपाध्याय जी को कोटिशः धन्यवाद प्रदान करता हूँ।

व्याख्यान् वाचस्पति

डॉ० बृजेश मणि पाण्डेय (वाराणसी)

निवेदन

ॐ ईशा वास्यमिद ॐ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

जगद्-जननी माँ कामाख्या की असीम अनुकम्पा एवं माँ हंसवाहिनी, वीणा-वादिनी शारदा की कृपा से अभिभूत; मैं जब यह संदेश सुना कि स्व० बाबा गंगेश्वर उपाध्याय के वंशज अपने पूर्वजों का इतिहास पृष्ठांकित कर रहे हैं तो मुझे हार्दिक एवं आत्मीय प्रसन्नता हुई। विलम्ब से ही सही, पर बाबा पराशर की संतति/कुलोत्पन्न विद्वत्जनों का मनोभाव इस ओर आकर्षित तो हुआ। बाबा गंगेश्वर के इतिहास एवं सह वंशावली से न मात्र उस वंश/कुल के लोगों को अपना परिचय मिलेगा अपितु समग्र ब्राह्मणवंश को इस अद्भुत कार्य से विशेष प्रकार की अनुभूति होगी, साथ ही भावी पीढ़ी को गर्व होगा तथा उनके लिए एवं भावी संतानों के लिए यह ग्रन्थ एक मील का पत्थर प्रमाणित होगा।

यूँ तो मैं "बाबा श्री" (स्व० गंगेश्वर) की शूरवीरता, विद्वता, दृढ़-प्रतिज्ञता एवं अद्भुत् व्यक्तित्व की गौरव-गाथा कई विद्वत्जनों एवं प्रबुद्ध लोगों के मुखार-बिन्द से सुन चुका हूँ, किन्तु बाबा के वंशजों का अथक प्रयास जिससे यह सामग्री एकत्र हुई एवं प्रकाशित हो रही है; निश्चय ही एक अत्यन्त कठिन एवं दुष्कर कार्य है, जिसे पूर्णकर प्रकाशित कराने में पं० लक्ष्मीकान्त उपाध्याय, पं० ओमप्रकाश उपाध्याय तथा पं० राम प्रकाश उपाध्याय (लेखक अमौरा-निवासी) का अथक प्रयास अति सराहनीय है। इस वंशावली को दृष्टिगत् कर, लोगों में एक विशिष्ट एवं सार्थक संदेश जाएगा।

यद्यपि मैं इस वंश/गोत्र में उत्पन्न नहीं हूँ तथापि मेरे दो चचेरे भाई श्री उमाशंकर उर्फ गणेश उपाध्याय एवं श्री रामानन्द उपाध्याय आज गहमर निवासी हैं। जहाँ तक हमारे कुल का प्रश्न है, मैं स्व० पं० महादेव उपाध्याय सांकृत्य गोत्रोत्पन्न बरेजी ग्रामवासी एवं बाबा कीनाराम मठ देवल के यज्ञ-पुरोहित का पौत्र तथा स्व० पं० नरसिंह दत्त उपाध्याय 'वैद्यराज' का पुत्र हूँ। मैं यह स्पष्ट रूप से कहने में गर्व-अनुभव करता हूँ कि बाबा गंगेश्वर के कुल में उत्पन्न कन्या स्व० सूर्यतारा देवी सुपुत्री स्व० पं० लाल मोहर उपाध्याय से मेरा पाणिग्रहण-संस्कार दिनांक 25 जून सन् 1961 ई० को हुआ। उस आदर्श देवी ने जीवन

पर्यन्त कठिन प्रयास, कार्य-कुशलता एवं सौहार्द का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया, फलतः आज मेरे सुपुत्र श्री दिनेश प्रताप उपाध्याय (डी०आई०जी०) कोबरा सी०आर०पी०एफ० में हैं एवं सुपुत्री अंजू देवी अमेरिका में कार्यरत हैं।

माँ कामाख्या एवं बाबा गंगेश्वर की अनुकम्पा का ही फल है कि इनके वंशज आज भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी फूल-फल रहे हैं। जहाँ तक मुझे ज्ञात है उत्तर प्रदेश प्रान्त के गाजीपुर, बलिया, वाराणसी एवं बिहार के छपरा, कैमूर, बक्सर, रोहतास तथा झारखण्ड के गढ़वा, पलामू आदि स्थानों पर भी बाबा के वंशज निवास कर रहे हैं। बलिया में बाबा गंगेश्वर के सहोदर बाबा बालेश्वर के वंशज भी अति सुखी-सम्पन्न हैं।

मैं पौराणिक कथाओं एवं ऐतिहासिक कहानियों से पाया हूँ कि ब्रह्म-कुल में उत्पन्न ऋषि-महर्षियों/अवतारों की हम संतानें हैं; वे हमारे पूर्वज विद्वता, बुद्धिमता, शूरता-वीरता के प्रतीक थे। इनमें कुछ नाम जो प्रातःस्मरणीय हैं, जिन्हें प्रत्येक ब्राह्मण-बन्धु को अवश्य ज्ञात होना चाहिए। भगवान् परशुराम, वशिष्ठ, पराशर, भारद्वाज, अंगिरा, गौतम, गर्ग, मनु, पुलस्त्य, अत्रि, व्यास, शुक, सांकृत्य, भृगु, रम्य, मरीचि, अगस्त्य, शांडिल्य, दुर्वासा आदि प्रमुख हैं। बाल्यावस्था से ही मेरी मानसिकता ब्राह्मण-वंश के इतिहास को जानने की रही है। किंचित् मात्र मैंने अध्ययन भी किया। हम ब्राह्मणों ने आज अपना स्तर बहुत नीचे ला दिया है। हमें तुलसीकृत रामचरित मानस' की अधोलिखित चौपाइयाँ नहीं विस्मृत करनी चाहिए—

जनि आचरजु करहु मन माहीं। सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं॥
तब बल तें जग सृजइ बिधाता। तपबल बिष्नु भए परित्राता॥
तपबल संभु करहिं संहारा। तप तें अगम न कछु संसारा॥
तपबल बिप्र सदा बरिआरा। तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा॥
चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई। सत्य कहऊँ दोऊ भुजा उठाई॥

(बा०काण्ड)

मेरा यह परम सौभाग्य ही है कि जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि बाबा गंगेश्वर की वंशावली प्रकाशित करने का प्रयास चल रहा है तो मैं पं० लक्ष्मीकान्त उपाध्याय से मिला और उस ग्रन्थ में अपने लिए सागर में एक बूँद मात्र के बराबर स्थान माँगा, उन्होंने विशेष कृपा करके मुझे यह सब लिखने का अवसर दिया,

जो आपके समक्ष है।

मेरा निवेदन समग्र विप्र-जन, द्विज-बन्धु, ब्राह्मण-कुलोत्पन्न एवं ब्राह्मण समाज से है कि इस अल्प-बुद्धि वाले ब्राह्मण-बालक के अनुरोध पर किंचित् अल्पमात्र ध्यान दें। बाबा गंगेश्वर की वंशावली तो प्रकाशित हो ही रही है, शेष सभी ब्राह्मणबन्धु अपने-अपने कुल/वंश की परम्परा, इतिहास, संस्कार एवं गौरव-गाथा को प्रकाशित करने का यत्न करें तथा जिस प्रकार बाबा श्री का धर्म-ध्वज गगन में लहरा रहा है, वैसी ही पताका इन सारे ऋषि कुलोत्पन्न ब्राह्मणों की लहरे और सर्वोच्च शिखर तक पहुँचे।

अस्तु, शुभकामना एवं निवेदन सहित—

विद्याधर उपाध्याय

(प्राक्तन उप कमान्डेन्ट के० रि० पु० बल)

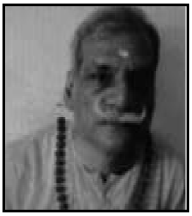

शुभकामनायें

पूर्वजों को स्मरण करने के लिए यह एक उचित प्रशंसनीय प्रयास है जिसकी जितनी भी सराहना की जाय उतना ही कम है। ब्राह्मणों का सदा से ही देश—समाज के उत्थान में योगदान रहा है और भविष्य में भी यही धारणा बनी रहे इसके लिए हम सभी को सतत् प्रयास करते रहना है। समय-समय पर इस प्रकार के प्रकाशन से पुरोहित तथा परहित की कल्याणकारी भावनाओं को याद दिलाते हुए इसे हम सब जागृत रख सकते हैं।

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक प्रगति ने हम सबको भौतिकता की तरफ आकर्षित कर लिया है और हमारी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को प्रचुर मात्रा में क्षति पहुँचाया है, जिससे हमारी संस्कृति एवं संस्कारादि प्रभावित हुए हैं। भौतिकता हमारी आवश्यकताओं को अप्रत्यासित रूप से वृद्धि कर दिया है जिससे मानसिक तनाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। लोग अवसादग्रस्त होते जा रहे हैं, जिस पर नियंत्रण करना एक चुनौती बन गया है।

वर्तमान समय में भौतिक पदार्थों की प्राप्ति हेतु जो अथक प्रयास चल रहा है, उससे अधिकांश लोग वास्तविक कर्तव्य पथ से भटक कर अंधकार की ओर अग्रसर हो रहे हैं और बुराइयों के दलदल में फँसते जा रहे हैं, उनको सुपथ पर लाने के लिए पंडित, कथावाचक, प्रवचनकर्त्ता, संत-महात्मा एवं शंकराचार्य जैसे महापुरुषों को संकीर्ण विचारधारा से ऊपर उठकर गंभीरता से विचार करना होगा ताकि हमारी संस्कृति व संस्कार सुरक्षित रह सके।

भावी पीढ़ी वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित तार्किक दृष्टिकोण को अपना चुकी है। अत: वो आज अंधविश्वास पर आधारित कोई भी प्रवचन और प्रणाली को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। हमें समझाने-बुझाने के लिए ऐसी पद्धति को अपनाना होगा; जिससे उनका शंका समाधान हो सके।

पंडित राम प्रकाश उपाध्याय द्वारा प्रकाशन हेतु किये गये भगीरथ प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ। मुझे आशा है कि भविष्य में इस प्रकार का प्रयास चलता रहेगा। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि आप सपरिवार सुखमय जीवन यापन करें तथा भावी पीढ़ी अपने संस्कार व संस्कृति के प्रति सजग रहे।

धन्यवाद

आप सभी का शुभचिन्तक

रणजीत उपाध्याय (प्राक्तन ले० कर्नल)

अक्षय नवमी वि० सं०-२०७४

॥ ॐमंगलमूर्तये नमः ॥

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

(मनु स्मृति ६। ९२)

धैर्य, क्षमा, शिष्टाचार, दूसरे की वस्तु में स्पृहा न होना, आहार-विहार की पवित्रता, इन्द्रियों को विषयों में प्रवृत्त न करना, अकर्तव्य से बचना या बचाना, आत्मानात्मा विषयक विचार, असत्य भाषण न करना तथा अक्रोध ये धर्म के दस लक्षण हैं। इन दस लक्षणों को धारण करने के कारण ही ब्राह्मण सर्वत्र पूज्यनीय है। इसीलिए ब्राह्मण को भूसुर अर्थात् पृथ्वी का देवता कहा गया है।

ब्रह्माजी के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पैर से शूद्र उत्पन्न हुए। बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य जी ने कहा है कि जो ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करके संसार से प्रयाण करता है, वह ब्राह्मण है। ब्राह्मणवर्ण का पहले भेद एक ही था। बाद में एक के दो भेद-गौड़ और द्रविड़ नाम से हुए जो दो भिन्न देशों में रहे। बाद में गौड़ और द्रविड़ के भी पाँच-पाँच भेद हुए—पंचगौड़ एवं पंच द्रविड़। अर्थात् विन्ध्यपर्वत के उत्तर में निवास करने वाले सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल और मैथिल ब्राह्मण पंचगौड़ा कहलाये और कर्नाटकी, तैलंग, द्रविड़, महाराष्ट्रीयन और गुर्जर ये पाँच जो विन्ध्यपर्वत के दक्षिण में निवास करते हैं, द्रविड़ ब्राह्मण कहलाये। इन्हीं दस ब्राह्मणों से उनकी शाखाओं सहित चौरासी प्रकार के ब्राह्मण कहे गये हैं। इन चौरासी प्रकारों के अतिरिक्त भी अनेक ब्राह्मण हुए।

गोत्र- किसी भी वंश के मूल व्यक्ति की वंश परम्परा जहाँ से प्रारम्भ होती है, उस वंश का गोत्र उसी के नाम से प्रचलित हो गया। जैसे महर्षि पराशर से पराशर गोत्र, वशिष्ठ से वशिष्ठ गोत्र, भारद्वाज से भारद्वाज गोत्र आदि।

संस्कृत के विदेशी विद्वान मैक्समूलर ने कहा है—"वर्ग का विस्तार होने पर अपनी पहचान बनाने के लिए आदि पुरुषों के नाम से गोत्र धारण कर लिए गये। इस प्रकार गोत्र से अभिप्राय 'आदि पुरुष' से है। सनातनधर्म एक विशाल

वट–वृक्ष है और हम सब उसकी शाखाएँ हैं, इसलिए इस धर्म की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। कहा भी गया है—'**धर्मो रक्षति रक्षितः।**'

माँ कामाख्या की अनुकम्पा से पराशर गोत्रीय 'बाबा गंगेश्वर' की वंशावली प्रकाशित होने जा रही है। यह एक अद्‌भुत कार्य हैं। मैं विजय कुमार उपाध्याय ग्रा० व पत्राचार गहमर (टीकाराय पट्टी), जनपद गाजीपुर से हूँ। यद्यपि कि मैं जन्म से ही यहाँ रहता हूँ किन्तु यह स्थान मेरे पिताश्री उमाशंकर उपाध्याय का ननिहाल है। इसलिए इसके मिट्टी के कण–कण से मैं परिचित हूँ। आदरणीय पिताजी का जन्म यहाँ से लगभग ५ किमी० दक्षिण बरेजी ग्राम में हुआ है किन्तु हम सब भाई–बहनों का लालन–पालन और शिक्षा–दीक्षा ग्राम गहमर से ही हुई है।

हम सब गंगेश्वर बाबा के वंशज तो नहीं है पुनरपि उससे अलग हैं, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। जब मुझे किसी तरह ज्ञात हुआ कि इतना पुनीत कार्य सम्पन्न होने जा रहा है तो हमें अपार हर्ष हुआ जैसे अपने ही गोत्र व परिवार की वंशावली प्रकाशित हो रही है। पितृ वंश से तो नहीं किन्तु मातृपक्ष से इस वंश से हमारा गहरा सम्बन्ध है।

सर्वप्रथम श्री लक्ष्मीकान्त उपाध्याय तथा श्री ओमप्रकाश उपाध्याय एवं हमारे बड़े भ्राता श्री रामप्रकाश उपाध्याय (लेखक) को इस पुनीत कार्य के लिए कोटिशः धन्यवाद करता हूँ। गैर पराशर गोत्रीय वंशजों के लिए यह 'मील का पत्थर' सिद्ध होगा और उनको इससे एक प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

सधन्यवाद—

पं० विजय कुमार उपाध्याय (शास्त्री)
10/सी, गोरापद सरकार लेन, कोलकाता–67

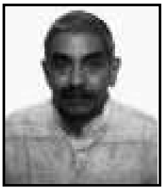

॥ जय माँ कामाख्या॥

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः।
न पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः॥

लोग पुण्य की इच्छा करते हैं, किंतु पुण्य जनक कार्यों को करना नहीं चाहते। इसके विपरीत पापफलों को नहीं चाहते पर पाप कर्म करते हैं। इस स्थिति में कल्याण कहां संभव है?

'जब हम जग पैदा हुए जग हँसा हम रोए। ऐसी करनी कर चलो हम हंसे जग रोए॥' माँ कामाख्या की असीम अनुकम्पा से 'पराशर गोत्रीय'

स्व० पं० गंगेश्वर उपाध्याय के वंशजों के वंशवृक्ष के प्रकाशन की जानकारी जब मुझे मिली तो हार्दिक प्रसन्नता हुई। व्यक्ति के भौतिक जीवन का आधार उनके पूर्वज होते हैं। व्यक्ति के जीवन में जो कुछ भी होता है उसमें पूर्वजों की भी कृपा है। इसलिए पितृपक्ष का पहले और देवपक्ष का आगमन बाद में होता है। मुझे जब यह ज्ञात हुआ कि ग्राम अमौरा निवासी 'आचार्य पं० राम प्रकाश उपाध्याय' के द्वारा उपरोक्त वंशवृक्ष पृष्ठांकित किया जा रहा है तो मैंने भी उस सागर में एक बूंद के लिए इच्छा प्रकट की। मैंने 'बाबा गंगेश्वर' की विद्वता, तपस्या, गौरवगाथा, उदारता और पराक्रम के बारे में कई विद्वानों से सुन रखी है। मुझे तो यह भी ज्ञात है कि गाधिपुरी जनपद के गहमर-करहियां क्षेत्र में माँ कामाख्या की तथा इसी जनपद के ग्राम अमौरा के पश्चिमी शिवमंदिर की स्थापना 'बाबा गंगेश्वर' के ही करकमलों द्वारा हुआ है।

पुस्तक 'गंगेश्वर जीवन दर्शन' में अंकित बाबा गंगेश्वर का इतिहास, वंशवृक्ष एवं अन्य समाजोपयोगी विषय केवल उनका ही परिचय नहीं देगी, जो इस वंश के हैं बल्कि चारों वर्णों के लिए एक पथ प्रदर्शक सिद्ध होगी।

'श्री लक्ष्मीकांत उपाध्याय', 'स्व० ओमप्रकाश उपाध्याय' एवं चतुरशीतिः (चौरासी) के सभी सम्मानित बंधुओं, युवाओं को इस पुनीत कार्य के लिए

धन्यवाद देता हूँ। उपरोक्त पुस्तक भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत सिद्ध होगी। ग्रंथकार 'आचार्य पं० राम प्रकाश उपाध्याय' की कोशिश अपने मार्ग से भटक रही पीढ़ी को नयी राह दिखाएगी एवं मूल से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करेगी, ऐसा मुझे विश्वास है। पुस्तक के प्रकाशनार्थ 'गीताप्रेस गोरखपुर' के कर्मठ एवं वरिष्ठ पदाधिकारी 'श्री आशुतोष उपाध्यायजी' को भी इस भगीरथ प्रयास हेतु कोटिशः साधुवाद। बाबा के वंशजों द्वारा किया जा रहा यह प्रयास अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

आचार्य पं० श्रीदेव उपाध्याय 'शास्त्री'
ग्रा०+पत्रालय—करहियाँ
जनपद—गाधिपुरी (गाजीपुर) उ० प्र०।
वि० संवत् 2080
(श्रावण शुक्ल पूर्णिमा)

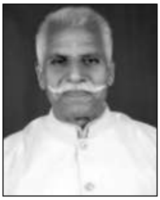

गौरव-गीत

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् मय यह, परम पिता की सृष्टि हमारी।
अद्‌भुत, अनुपम अवरणीय यह, लीला उस सृष्टा की न्यारी॥

'हरि' के मुखारविंद से निकला, ब्राह्मण, वेद व यज्ञ प्रणाली।
सृष्टि अग्रसर हुई इन्हीं से, भिन्न प्रकृति बहु शाखा वाली॥
उन्हीं आदि ब्रह्मा से निकले, तपोनिष्ठ ब्राह्मण बलशाली।
उनमें से ही ऋषि वशिष्ठ थे, भार्या अरुंधति तप वाली॥
उनके आत्मज शक्ति मुनि थे, यथा नाम वैसा गुण खानी।
'शक्ति' मुनि से हुए 'पराशर', कृपापात्र कुल देवी भवानी॥
माँ कामाख्या कुलदेवी थी, राजराजेश्वरी माता रानी।
वही पराशर वंश हमारा, देव हैं कुल के अवढर दानी॥
इसी वंश में 'कृष्ण द्वैपायन, 'व्यास' नाम से ख्यात हुए थे।
जिनके पुत्र जन्म से त्यागी, ज्ञानी 'सुक' विख्यात हुए थे॥
वही शृंखला वंश हमारी, 'गंगेश्वर' थे वंश पुरोधा।
फतेहपुर सीकरी के वासी, और यजमान 'धामदेव' योद्धा॥
परिस्थितियाँ विपरीत हुईं जब, चले वहाँ से लेकर दलबल।
काशी से पूरब आगे को, जहाँ जाह्नवी धोती कलिमल॥
गाधि ऋषि का पावन स्थल, गंगधार दक्षिण दिशि अविरल।
बाबा गंगेश्वर ने सोचा, रैन बसेरा का लायक थल॥
बस डेरा था पड़ा वहीं पर, सीकरवार डीह नामक स्थल।
पर चहुँओर घोर था जंगल, क्षत्रिय-ब्राह्मण का कर्मस्थल॥
वहीं पूर्व 'गहबन' बन 'गहमर' ख्यात हुआ गहमर महान।
एशिया द्वीप का बड़ा ग्राम, हर क्षेत्र में जिसका कीर्तिमान॥
तो गुरु 'वशिष्ठ' का पावन कुल, सुकदेव व्यास से ज्ञानागर।
थे एक से बढ़कर एक विज्ञ, जो किये वंश का नाम उजागर॥
'केशव प्रसाद' का अहोभाग्य, जिस कुल में विविध ज्ञान सागर।
उस पावन कुल में जन्म हुआ, यह गर्व हमें हम 'पराशर'॥

केशव प्रसाद उपाध्याय 'गहमरी'

एक अमर कृति को शुभकामना

मैं श्रीमती मनोरमा उपाध्याय पत्नी ले० कर्नल रणजीत उपाध्याय, गहमर (उ०प्र०) अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ। मेरा विवाह विश्व के सबसे वृहद ग्राम गहमर के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व स्व० सुदर्शन उपाध्याय के सुपुत्र रणजीत उपाध्याय से सम्पन्न हुआ तथा माँ गंगा का तट, माँ कामाख्या के दर्शन एवं पूजा का सुअवसर यह सब सौभाग्य से ही प्राप्त हुआ। पति सेना में अधिकारी बने और ले०कर्नल के पद से सेवानिवृत्त हुए। पिता (श्वसुर) स्व० सुदर्शन उपाध्याय के सान्निध्य और आशीर्वाद से राम रहीम महाविद्यालय, गहमर का निर्माण और स्थापना हुई। उन लोगों के आशीर्वाद का ही फल है कि मेरे सुपुत्र विश्वजीत आज सेना में उच्चाधिकारी हैं। परम सौभाग्य का विषय यह है कि जिस वृहद् वटवृक्ष की शाखा हम हैं, उसकी मूल वंशावली का निर्माण हो रहा है। मैं एक सामान्य जन हूँ पर मेरी कल्पना में नारी शक्ति की प्रतिभा जागृत हुई और मैंने भी सोचा कि क्यों न इस पुनीत कार्य में मैं अपना नाम डाल दूँ? जो एक बड़े सरोवर में एक बूँद की तरह होगा पर अस्तित्व तो बना रहेगा। मैं माँ कामाख्या, भगवान भोले शिव एवं माँ सुरसरि से हृदय से प्रार्थना करती हूँ कि ये शक्तियाँ अपनी कृपा और आशीर्वाद की ऐसा बरसात/बौछार करें कि यह वंश अपने शुभ कर्मों, शुभ पग धारण के भाव एवं प्रेममय कुशल व्यवहार से चौरासी में ही नहीं अपने विश्व के हम समाज में अपनी निर्मल ज्योति का प्रसार करें और हर समाज में अपनी उत्तम छाप छोड़ें।

हार्दिक शुभकामना सहित........

श्रीमती मनोरमा देवी
पत्नी प्रा० ले० कर्नल रणजीत उपाध्याय
(गहमरी)

सा विद्या या विमुक्तये

आदर्श संस्कृत उच्च विद्यालय चुन्नी

प्रखण्ड-चौसा, बक्सर 429 कोटि यू डैस-10302503104

सचिव/प्रधानाध्यापक
उदय नारायण उपाध्याय
व्याकरणाचार्य

पत्रांक:-
दिनांक : ....

विषय:

बाबा गंगेश्वर

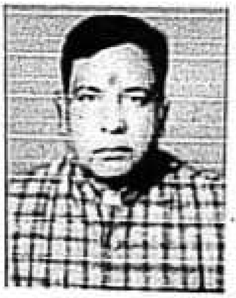

बात उन दिनों की है जब मै उदय नारायण उपाध्याय अपने बड़े पिता जी स्वर्गीय शिवशंकर उपाध्याय के साथ कभी कभी माँ कामाख्या धाम करहिया, गहमर (उत्तर प्रदेश) जाया करता था | उस समय मुझे बाबा गंगेश्वर के बिषय में विशेष जानकारी नहीं थी | माँ का मंदिर भी जीर्णावस्था में था | चैत नवमी और पूर्णिमा को वहाँ मेला लगता था | भीड़ इतनी रहती थी कि वहाँ के कुंए भी सूख जाया करते थे | डरवन के राजपूत भी पंडाल लगाकर मिठाईयां बांटते और पानी पिलाते थे | मै भी सम्मिलित होकर इसका आनंद लेता था |

आज के दशक में डॉक्टर राम प्रकाश उपाध्याय और लक्ष्मीकांत उपाध्याय ने लोगों को चौरासी में इकठ्ठा कर इस कार्य को आगे बढ़ाया | पूर्व में मेरे बड़े पिता जी स्वर्गीय शिवशंकर उपाध्याय और बड़े भाई स्वर्गीय हीरालाल उपाध्याय, स्वर्गीय जगत नारायण उपाध्याय और स्वर्गीय बृजभूषण उपाध्याय जहाँ भी चौरासी का बैठक होता था वहाँ अवश्य जाते थे |

मै उदय नारायण उपाध्याय ,डॉक्टर राम प्रकाश उपाध्याय और जितेन्द्र उपाध्याय ने बाबा गंगेश्वर में विशेष रुचि ली और वंशावली की चर्चा कर उपाध्याय वंश के बिषय में लेखनी के माध्यम से एक पुस्तक निर्माण के कार्य में सहयोग की चर्चा भी की | साथ ही मै और मेरे बड़े भाई पंडित प्रेमनाथ उपाध्याय, दीपक उपाध्याय और अरुण कुमार उपाध्याय के द्वारा पुस्तक निर्माण के लिए सहयोग राशि भी प्रदान किया गया |

मेरी कामना है कि यह कार्य आगे भी अनवरत इसी तरह चलता रहे |

धन्यवाद्

॥ हृदयोद्‌गार ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणा शरीरं गृहं।
पूजा ते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः ॥
संचारः पदयोः प्रदक्षिणा विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥

प्रभो आशुतोष! आप ही मेरी आत्मा हैं, भगवती गिरिजा मेरी बुद्धि हैं। मेरे प्राण आपके सहचर हैं और यह शरीर आपका गृह मंदिर है। आप द्वारा प्रदत्त विषय और उनका उपभोग आपकी पूजा है। मेरी निद्रावस्था ही आपकी समाधि है। मेरा पाद संचरण ही आपकी परिक्रमा है। मेरे शब्द (बातचीत और लेखन) आपके स्तोत्र-पाठ हैं। शम्भो! मेरे द्वारा जो कुछ भी संपादित हो रहा है, वह सब आपकी आराधना है।

सृष्टि का क्रम भगवान विष्णु के नाभि से उत्पन्न कमल से प्रारंभ हुआ है। उसी से ब्रह्माजी की उत्पत्ति हुई। बाद में पितामह ब्रह्मा को सृष्टि निर्माण का आदेश हुआ। ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठ और उनके पुत्र शक्ति तथा उनके पुत्र पराशर हुए। पराशर के पुत्र वेदव्यास, उनके पुत्र शुकदेव और शुकदेव के पुत्र गौर हुए। गौर जी के तथा बाबा गंगेश्वर के मध्य कुछ पीढ़ियों का नाम अभी भी अज्ञात है। बाबा 'गंगेश्वर' अपने चारों भाइयों में ज्येष्ठ थे। पराशर जी मंत्रद्रष्टा ऋषि हैं इसलिए ये गोत्रकार भी हैं।

सोलहवीं सदी में मुगलों द्वारा निर्वासित होने के पश्चात बाबा 'गंगेश्वर' एवं उनके यजमान 'धामदेव राव' माँ कामाख्या (कुलदेवी) सहित पूर्व की ओर चल दिये। दोनों पुरोहित-यजमान अपने प्रजा व सैनिकों सहित गहवन (गहमर) के पास सकराडीह (शंकरगढ़ या सिकारगढ़ या गर्दिहगढ़) को अपनी राजधानी बनाकर नवीन राज्य स्थापित किए।

'धामदेव राव' के वंशज सीकरी से निकलने के कारण सीकरवार या सिकरवाल राजपूत कहलाए, जो बड़गूजर राजपूतों की एक शाखा है। सकराडीह स्थल वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वांचल में गाधिपुरी (गाजीपुर) जनपद में गहमर गाँव के पश्चिम व ग्राम करहियाँ के उत्तर में है। वहीं से दोनों कुलों के वंशज चतुरशीतिः (चौरासी) ग्रामों में फैले हुए हैं, ऐसी धारणा है।

आज हम भगवान राम, कृष्ण, परशुराम के वंश वृक्ष को सरलता पूर्वक पुराणों में ढूँढ़ सकते हैं किन्तु बाबा गंगेश्वर के वंशजों का वंशवृक्ष कहीं लिपिबद्ध नहीं है। आज

से लगभग दो दशक पूर्व गहमर गाँव के निवासी स्व० ओम प्रकाश उपाध्याय जी ने गाँव-गाँव, घर-घर जाकर राग-द्वेष, स्तुति-निन्दा से परे रहकर वट-वृक्ष सदृश वंशावली के संकलन का वीणा उठाया। इसमें चौरासी के अन्य सम्मानित सदस्यों की भी भूमिका रही है। मैंने इस पुनीत कार्य में स्व० उपाध्याय जी के अस्वस्थ होने के बाद सहयोग का वीणा उठाया।

चौरासी के सभी पूर्वजों वरिष्ठ सम्मानित सदस्यों एवं युवा पीढ़ियों को, जो वंशवृक्ष संकलन से लेकर पं० 'गंगेश्वर' उपाध्याय की मूर्ति स्थापन तक तन-मन-धन से संकल्पित रहे, उनको हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। लोगों के स्थान-परिवर्तन के कारण चौरासी की वंशावलियाँ अभी भी अपूर्ण हैं तो कुछ गाँवों की वंशावलियाँ अभी भी अनुपलब्ध हैं। अवशिष्ट वंशवृक्ष को दूसरे संस्करण में प्रस्तुत करने का प्रयास रहेगा। वंशावली; वंश के पूर्वजों वयोवृद्ध जनों के कथनानुसार व उनके परामर्श व सहयोग से तैयार की गई है। इतिहासकार नहीं रहता परन्तु इतिहास में शोध की सदैव संभावना बनी रहती है जिससे भविष्य में परिवर्तन की संभावना रहती है।

ग्रंथ के विस्तार क्रम में प्रथम भाग में ऋषि परिचय, कालगणना, मंत्रद्रष्टा महर्षि वेद व्यास 'पराशर' एवं उनके वंशजों से संबंधित विषय हैं। १६२ ऋषियों के नवरत्नों का परिचय, कल्कि अवतार की चर्चा, कुलदेवी माँ कामाख्या एवं कुलदेवता भगवान शिव के स्तोत्रादि, बाबा गंगेश्वर एवं उनके यजमान के फतेहपुर सीकरी से 'सकराडीह' तक की यात्रा का वर्णन एवं जन-हिताय संक्षिप्त आचार संहिता का भी वर्णन है। अकबर महान था किन्तु पूर्व जन्म में वह मुकुन्द ब्राह्मण था। ज्ञाता-ज्ञात में उसने गोदुग्ध में गाय के रोम (बाल) का भी पान कर लिया था, फलस्वरूप उसे यवन कुल में जन्म लेना पड़ा। जीवन में छोटी सी चूक भी मनुष्य की दशा व दिशा, लोक-परलोक को प्रभावित कर सकती है। इसको ध्यान में रखते हुए संक्षिप्त आचार संहिता का भी इसमें समायोजन किया गया है।

प्रथम भाग में ही आरोग्यता हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं उसकी जप-विधि, अमृतेश्वरी मंत्र, यज्ञ की महत्ता, ऋषि, छन्द, देवता एवं विनियोग का महत्व, बलिवैश्व यज्ञ, धरा की कामधेनु गायत्री एवं द्विज (वर्णत्रय) हेतु यज्ञोपवीत एवं उसके निर्माण विधि का सचित्र वर्णन है। सनातन धर्मावलम्बियों के लिए 'गोमाता एक सचल मंदिर हैं। प्रत्येक धर्म-संप्रदायों में गोमाता का स्थान तथा उनसे मानव समाज के होने वाले कल्याण का भी सम्यक् वर्णन है। इसी भाग में जनकल्याणार्थ

'रामचरितमानस माला' को भी स्थान दिया गया है। इसमें कामना परक १०८ चौपाइयों का वर्णन है; जिनकी सहायता से अहोरात्र कामनानुसार संपुट लगाकर अखण्ड पाठ किया जा सकता है। 'कुलदेवी' माँ 'कामाख्या' के जमदग्निपुरी (जमानियाँ) क्षेत्र में होने से इस क्षेत्र के महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों एवं प्रमुख दर्शनीय स्थलों के महत्व को भी भावी पीढियों के संज्ञानार्थ महत्व दिया गया है। भारत ही नहीं अपितु विश्व के लोग भी इस क्षेत्र के प्रतिभा के कायल हैं। पुरोहित एवं यजमान सदियों से देव-पितृ कार्य में चौरासी का भातृ सम्मेलन करते चले आ रहे हैं। अत: यह एक पहेली बनकर रह गया है जिसके रहस्योद्‌घाटन का सफल प्रयास किया गया है कि हमारे समाज में 'चौरासी' संख्या का महत्व क्यों है।

द्वितीय भाग में उपाध्याय गंगेश्वर के वंशजों की वंशतालिका का वर्णन किया गया है। अंत में कुलदेवी व कुलदेवता की आरती तथा पावन वंश का वंशगीत भी सम्मिलित है। सर्वप्रथम आभार व्यक्त करता हूँ अपने पूर्वजों का जिन्होंने चौरासी की नींव रखी। इसके अतिरिक्त हम सभी वंशज क्रमश: अध्यक्ष त्रय स्व० पंडित कमलापति उपाध्याय (अमौरा), स्व० शिवपूजन उपाध्याय (करहियाँ) एवं स्व० बद्री उपाध्याय (गहमर) के चिर ऋणी रहेंगे जिन्होंने अपने सहयोगियों—राजाराम उपाध्याय (बगाढ़ी), रामायन उपा० (गोड़सरा), सुखदेव उपा० (मठियाँ), यमुना उपा० (सेंवराई), जगन्नाथ उपा० (खुदुरा), शिवगोविन्द उपा० (गहमर), गौतम उपा० (सातों अवन्ती), चन्द्रदेव उपा० (गहमर), हरिनारायण उपा० (गोड़सरा), सूर्यनाथ उपा० (मठियाँ), श्रीनिवास उपा० (डरवन), राम बड़ाई उपा० (मनियाँ), हरदेव उपा० (गहमर), झूलन उपा० (गहमर), महादेव उपा० (गहमर), यमुना उपा० (मंझरियाँ), भरत उपा० (मंझरियाँ), कैलास उपा० (खुदुरा), रामकुमार उपा० (अमौरा), शिवपूजन उपा० (गहमर), धर्मदेव उपा० (मनियाँ), रामनगीना उपा० (उपाध्याय सागर), लक्ष्मीकान्त उपा० (गहमर), रामाधार उपा० (मठियाँ), स्व० बब्बन उपा० (भरखरा) सहित कुशलतापूर्वक चौरासी का नेतृत्व किया। इनके नेतृत्व क्षमता से भावी पीढ़ी को सीख लेनी चाहिये।

आभार व्यक्त करता हूँ, प्रा० कर्नल रणजीत उपाध्याय (गहमर) का जिन्होंने इस दुष्कर कार्य का दायित्व सौंपा। इसके अतिरिक्त 'सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय' के पूर्व पुस्तकाध्यक्ष स्व० श्रीराम तिवारी ग्रा०+ पत्रा० बड़ौरा, जनपद

कैमूर का एवं वर्तमान पुस्तकाध्यक्ष श्रीमोहन तिवारी ग्राम–बघरी, पत्रा० जमानियाँ गाजीपुर का भी हृदय से आभार व्यक्त करना चाहूँगा। इन लोगों ने समय–समय पर अपने ज्ञान की पिटारी से इस पुनीत कार्य में सहयोग किया। इसी तरह पंकज जायसवाल (ग्रा०–बाँसगाँव, पत्रा० अतरौलिया, जनपद–आजमगढ़) ने भी इस पुनीत कार्य में आर्थिक व तकनीकी सहयोग द्वारा इस भवन की प्रथम ईंट रखने में सहयोग किया। इसके अतिरिक्त डॉ० बृजेशमणि पाण्डेय जी, डॉ० आनन्द मोहन उपाध्याय जी, स्व० डॉ० कृष्ण बिहारी मिश्र जी, डॉ० प्रतिभा मिश्रा जी, प्रो० प्रवेश भारद्वाज जी, श्री विद्याधर उपाध्याय जी, श्री रामाधार उपाध्याय जी, श्री देव उपाध्याय एवं श्री विजय उपाध्याय जी जैसे लोग भी अपनी लेखनी से प्रोत्साहित कर इस ग्रंथ को आगे बढाने में सहयोग किये हैं। इन लोगों को भी मैं हृदय से आभार व्यक्त करना अपना परम धर्म समझता हूँ।

शास्त्र एक अगाध सागर है। मैने अपने सामर्थ्यानुसार उसमें डुबकी लगाकर कुछ मुक्तामणि चुनने का प्रयास किया है जिसकी सहायता से यह मालिका तैयार हुई है। मेरा इसमें अपना कुछ नहीं है। इन मनकों को फेरने से यदि मानव मात्र का भला हो सके तो, मैं अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा। प्रस्तुत ग्रंथ 'गंगेश्वर जीवन दर्शन' ग्रंथ में इस बात का ध्यान रखा गया है कि गैर पराशर गोत्रीय अर्थात् चातुर्वर्ण्य भी इससे लाभान्वित हो सकें। वेद–पुराण, स्मृति, उपनिषदादि ग्रंथों का अवलंबन लेकर समाज को उसके दायित्वों को बोध कराने का प्रयास किया गया है। ग्रंथ एवं पूर्वज हमारे धरोहर हैं, इनके आदर्शों पर चलकर ही हम इन्हें सच्ची श्रद्धा–सुमन अर्पित कर सकते हैं। विशेष कर यदि विप्र समुदाय का इस ग्रंथ के माध्यम से श्री वृद्धि हो तो मेरा प्रयास सार्थक रहेगा क्योंकि ब्राह्मण समाज का दर्पण हैं। इसीलिए इन्हें भूसुर कहा गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि कोई ऐसा विषय न हो जिससे किसी की भावना आहत हो। कुछ गाँवों की जनसंख्या अधिक है इसलिए पृष्ठों को क्रमांक के आधार पर रखा गया है। ग्रामों का क्रम देवनागरी लिपि अ, आ, इ, ई .... ज्ञ के क्रमानुसार रखा गया है। वंशावली में एक ही पिता के कई पुत्रों के क्रमों में व्यतिक्रम संभव हो सकता है क्योंकि यह जनश्रुतियों पर आधारित है। अत: इस मानवीय भूल हेतु साहित्यानुरागी विद्वत्जनों से क्षमा प्रार्थी हूँ तथा उनके मार्गदर्शन का भी स्वागत रहेगा जिससे द्वितीय संस्करण में उस त्रुटि को दूर किया जा सके। चौरासी एवं गैर चौरासी के सज्जनों द्वारा जो आर्थिक प्रेरणा मिली है, उनको भी सहृदय

आभार। यह पुनीत कार्य आप सभी के सहयोग से हो रहा है और आगे भी होना चाहिए, ऐसा भावी पीढ़ी से अपेक्षा भी है।

सम्पूर्ण गंगेश्वर वंश आभार व्यक्त करता है उ० प्र० के यशस्वी उप मुख्यमंत्री मा० ब्रजेश पाठकजी, राज्यमंत्री मा० दयाशंकर मिश्र (आयुष खाद्य सुरक्षा एवं औषधि स्वतंत्र प्रभार) का जिन्होंने अपनी शुभाशंसा से इस समाजोपयोगी सद्ग्रन्थ की गरिमा बढ़ायी है। डॉ० सच्चिदानन्द तिवारी (सी०ए०एल०एल०एम०, प्रदेश कोषाध्यक्ष, भारतीय श्रमिक कामगार कर्मचारी महासंघ भाजपा) की सद्ग्रन्थ के प्रति गहरी संलग्नता की प्रशंसा हेतु मेरे पास शब्द नहीं है। पुनरपि इनका भी हृदय से आभार।

अंत में पुनः मैं गीता प्रेस गोरखपुर के उत्पाद प्रबंधक अनुज श्री आशुतोष उपाध्याय जी, श्री अवधेश उपाध्याय (गर्रा), गहमर निवासी डॉ० बुद्धनारायण उपाध्याय जी एवं भाजयुमो के जनपद मंत्री श्री जितेन्द्र उपाध्याय (करहियाँ), श्री शिव नारायण उपाध्याय एवं श्री राहुल उपाध्याय (मझरियाँ, बक्सर, बिहार), अंजनीकान्त उपा० (सकास, रोहतास) का भी विशेष रूप से सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ। इन सज्जनों ने परछाई की भाँति इस पुनीत यज्ञ में तन-मन-धन से आहूति प्रदान की है। ये गंगेश्वर वंश के गौरव हैं। इनका त्याग अनुकरणीय रहेगा। यदि इस पुनीत कार्य में ज्ञाता-ज्ञात रूप से किसी की भावना आहत हुई होगी तो, आशा है अपना समझकर मुझे अवश्य क्षमा करेंगे। **पराशर गोत्रीय, गंगेश्वर वंश की यह प्रथम मूल वंशावली है जिसे मूर्त रूप दिया गया है। भगवान राम पर अनेक रामायण हैं किन्तु आदि कवि वाल्मीकि जी का रामायण सर्वप्रथम है। ठीक उसी तरह यह प्रथम वंशावली होगी जो जन-जन के आकांक्षाओं की पूर्ति करेगी, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।**

ज्योतिषाचार्य
डॉ० राम प्रकाश उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० अमौरा, गाजीपुर, उ०प्र०
पिन-232333

मुद्रक की कलम से

यह सौभाग्य का अवसर है कि मुझे इस ग्रन्थ को मुद्रित कराने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैंने अपने ज्ञान के अनुसार इस ग्रन्थ को तकनीकी रूप से व्यवस्थित और सुदृढ़ करने का प्रयास किया है। यह ग्रन्थ आने वाली पीढ़ियों के लिये सूर्य के प्रकाश की तरह हमारे पूर्वजों के इतिहास को सदैव प्रकाशित करता रहेगा। इस प्रकार के सद्ग्रन्थ प्रत्येक सनातनी को अपने घरों में अवश्य रखना चाहिये। गंगेश्वर वंशियों के लिये तो यह अत्यधिक अनिवार्य है।

अग्रज श्री राम प्रकाश उपाध्याय एवं स्व० ओम प्रकाश उपाध्याय (गहमर) द्वारा अति परिश्रम से तैयार किया गया यह ग्रन्थ मील का पत्थर है। मैं अपने अग्रज रवीश चन्द्र शुक्ल जी को भी विशेष धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने इस दुष्कर कार्य को सरल बनाने में भरपूर सहयोग किया।

मुझे गर्व है कि मैं बाबा गंगेश्वर का वंशज हूँ एवं माँ कामाख्या का कृपा पात्र हूँ।

आशुतोष कुमार उपाध्याय
सुपुत्र : स्व० दीनानाथ उपाध्याय
(गहमर, गाजीपुर)
(प्रोडक्सन मैनेजर) गीताप्रेस, गोरखपुर

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस इस बात का प्रमाण है कि जब आपके उद्देश्य पवित्र होंगे, आपके मूल्य पवित्र होंगे, तो सफलता आपका पर्याय बन जाती है।

नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री, भारत सरकार)
7 जुलाई 2023, गीताप्रेस परिसर, गोरखपुर

प्रथम भाग

अनुक्रमणिका

१.	चौरासी की अवधारणा	१
२.	मन्वंतर	५
३.	प्रलय	७
४.	संवत्	८
५.	महर्षि पराशर एक दृष्टि में	९
६.	महर्षि पराशर का जन्म	१०
७.	सृष्टि में अनेक पराशर	१४
८.	सृष्टि में अनेक शुकदेव	१६
९.	ब्राह्मणों की उत्पत्ति स्थान	१७
१०.	ब्राह्मण किसे कहा जाये ?	१७
११.	ब्राह्मण के लिए करणीय	१८
१२.	ब्राह्मण के प्रकार	१८
१३.	ब्राह्मण के नौ-रत्न (पराशर गोत्रीय)	१८
१४.	गोत्र एवं उसका महत्त्व	१९
१५.	गोत्रादि का महत्त्व	२०
१६.	कुछ गोत्र एवं उनके नवरत्न	२४
१७.	कान्यकुब्ज एवं सरयूपारी ब्राह्मणोत्पत्ति वर्णन—	३३
१८.	कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के गोत्र—	३४
१९.	कान्यकुब्ज और सरयूपारी में अन्तर	३४
२०.	सरयूपारी ब्राह्मणों के गोत्र एवं भेद	३५
२१.	क्या गोत्र अलग होने पर विवाह हो सकता है ?	३६
२२.	कान्यकुब्ज एवं सरयूपारी का भ्रम निवारण	३७
२३.	ब्राह्मणों में शाकद्वीपीय ब्राह्मण एवं उनका महत्त्व	३८
२४.	पराशर गोत्र का गौरवशाली भविष्य	३९
२५.	पराशर गोत्रीय गाँव	४०
२६.	सृष्टि के अविस्मरणीय पराशर	४१
२७.	लोक और अलोक के प्राणी	४४

२८. प्रत्येक दिन में युगों की कल्पना ४४
२९. माँ कामाख्या का संक्षिप्त पौराणिक इतिहास ४५
३०. कामाख्या स्तोत्र ४७
३१. माँ कामाख्या कवच ४९
३२. कामाख्या मूल मंत्र ५१
३३. फतेहपुर सीकरी का संक्षिप्त इतिहास ५२
३४. बाबा गंगेश्वर एवं उनकी जीवन यात्रा ५४
३५. तारनहार भगवान् वेद-व्यास ५७
३६. महामृत्युञ्जय मंत्र के मृतसंजीवनी होने का रहस्य ६२
३७. संक्षिप्त आचार-संहिता ६८
३८. सर्वोत्तम गोदान ७८
३९. जग के लिये यज्ञ एवं उसका महत्व ७९
४०. बलिवैश्व यज्ञ की प्रासंगिकता ८३
४१. धरा की कामधेनु 'गायत्री' ८५
४२. गायत्री और यज्ञोपवीत ८८
४३. पंचगव्य तैयार करने की विधि ९४
४४. नदिया एक घाट बहु-तेरे ९६
४५. वन्दे गोमातरम् १०१
४६. गायों की जातियाँ एवं आदिगौमाता १०५
४७. गोबर एवं गोमूत्र की महत्ता १०८
४८. विभिन्न सम्प्रदायों में गोमाता १०९
४९. गोबीज मंत्र एवं गोधन की महत्ता ११४
५०. एकादशी व्रत की पारणा में गोमाता ११७
५१. जमानियाँ एक दृष्टि ११८
५२. कामना-परक रामचरितमानस माला १२८

चौरासी की अवधारणा एवं कब से ?

चौरासी को संस्कृत में चतुरशीतिः कहा जाता है। यदि इसका मूलांक निकाला जाये तो 8+4=12 = 1+2=3। तीन अंक के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। हिन्दुओं में चौरासी की संख्या का विशेष महत्त्व है। इस अंक में ऐसा क्या छिपा है जिससे इसका अध्यात्मिक महत्त्व इतना बढ़ गया है। इस विषय पर चिंतन करने पर अभी तक निम्न बिन्दु इसके महत्त्व को दर्शाते हैं—

1. सर्वप्रथम सृष्टि में चौरासी लाख योनियाँ हैं। स्वकर्मानुसार जीव इस मृत्युलोक में उपरोक्त योनियों में जन्म लेकर अपना कर्मफल भोगता है।
2. व्रज की परिक्रमा भी चौरासी कोश की है। इस परिक्रमा को सर्वप्रथम पितामह ब्रह्माजी ने पूर्ण किया था। इस परिक्रमा से जीव के चौरासी लाख योनियों के पापों का शमन हो जाता है तथा तीर्थ यात्रा एवं देव-दर्शन का फल प्राप्त होता है।
3. घट-घट के 'राम' की नगरी अयोध्या चौरासी कोश में फैली है। इसकी परिक्रमा चौरासी लाख योनियों के आवागमन के बंधन से मुक्त कर देती है। यह परिक्रमा कुल 22 दिन में पूर्ण होती है। चौरासी कोश का आधुनिक माप लगभग 252 कि०मी० है।
4. राजा वल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक गोस्वामी हरिवंशजी के तीन ग्रंथों में एक ग्रंथ है—'चौरासी पद'। इसे 'हित-चौरासी' भी कहा जाता है। वल्लभ संप्रदाय के कुछ ग्रंथ कृष्णचरित्र से सम्बन्धित हैं। इसमें 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' नामक ग्रन्थ भी है।
5. बौद्धधर्म की वज्रयान शाखा के अन्तर्गत चौरासी सिद्ध अति प्रसिद्ध हैं। ये वाममार्गी साधना में पारंगत थे।
6. सीकरवार क्षत्रियों के युद्ध में चौरासी का विशेष महत्त्व था। फतेहपुर सीकरी के राजा धामदेव के राजमहल में कुल चौरासी खंभे इसके प्रतीक थे।
7. ज्योतिष में कुल रत्नों व उपरत्नों की संख्या चौरासी है।
8. देवदूत संख्या चौरासी आंतरिक शक्ति, स्वतंत्रता, चतुरता और व्यक्तिगत विकास से संबंध रखती है। इनमें 8 और 4 का संयोजन संतुलन, व्यवस्था और संगठन की एक शक्तिशाली भावना प्रकट करता है। 8 वास्तविकता

पर टिके रहने तो 4 लक्ष्य की प्राप्ति हेतु परिश्रम को बढ़ावा देता है। 8 के मालिक शनि और 4 के स्वामी हर्षल हैं जो दोनों ही शनि के आधिपत्य में हैं। अध्यात्मिक क्षेत्र में शनि ग्रह का विशेष महत्त्व है।

9. जैन सम्प्रदाय में शासन व्यवस्था में चौरासी संख्या का विशेष महत्त्व है।
10. योगासनों में चौरासी प्रकार के योगासनों का वर्णन आया है।
11. उज्जैन में चौरासी महादेव हैं। दूषण नामक एक राक्षस था। उस राक्षस को वर मिला था कि जहाँ उसका रक्त गिरेगा वहाँ चौरासी रूप धारण कर लेगा। शिप्रा (श्रीप्रिया) नदी के जल से उसका उद्धार हुआ। इन महादेवों की परिक्रमा 118 कि०मी० की है। चौरासी में से अस्सी मंदिर शहर में हैं जबकि चार मंदिर द्वारपाल सदृश बाहर हैं। इन चौरासी महादेवों के दर्शन से चौरासी लाख योनियों से मुक्ति मिल जाती है। शिप्रा नदी भगवान शिव की बहन भी हैं।
12. चौरासी में 8 और 4 में शनि का प्रभाव है तथा मूलांक से गुरु के प्रभाव में है। न्याय के क्षेत्र में शनि और गुरु का विशेष महत्त्व है। इन दोनों की युति जन्मपत्रिका में गुरु–शौरि योग का निर्माण करती है। शनि न्यायधीश का प्रतीक तो गुरु न्यायिक कानूनों का प्रतीक है।
13. बाबा गोरखनाथ ने अपने जीवन काल में गुरु मत्स्येन्द्र नाथ के द्वारा प्राप्त चौरासी सिद्ध शाबर मंत्रों को साधना के द्वारा पूर्ण किया था जो आज लुप्त है।
14. प्रत्येक व्यक्ति के शरीर की लंबाई उसके हाथ के अंगुल से 84 अंगुल की होती है।
15. सीकरवार क्षत्रियों में महाराज कनकसेन के वंशजों ने चौरासी स्थानों पर राज्य किया था, जिसे चौरासी कहा गया है।

उपरोक्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं में सभी में चौरासी का महत्व है किन्तु विन्दु छठवाँ, चौदहवाँ एवं पन्द्रहवाँ चौरासी के भातृ–सम्मेलन को पुष्ट करते हैं। इन्हीं को ध्यान में रखकर बाबा गंगेश्वर एवं यजमान धामदेव राव के वंशजों ने चौरासी के भातृ–सम्मेलन का संकल्प लिया होगा जिसका निर्वहन आज भी दोनों कुलों द्वारा हो रहा है।

भारत का तात्पर्य भा=ज्ञान, रत=लिप्त रहना। अर्थात् ज्ञान में लिप्त रहना। यहाँ के ऋषि-महर्षि सदैव अनुसंधान की ओर अग्रसर रहे हैं। इनके इस अथक परिश्रम का ही परिणाम है कि भारत जो कभी विश्वगुरु कहा जाता था। यहाँ के धर्म को सनातन धर्म कहा जाता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को लक्षित करके हमारा धर्म चलता है। चारों वर्णों का क्रमशः विभाजन भी इस धर्म का एक अंग है। इसी तरह चार आश्रम भी हैं। उपरोक्त चारों पुरुषार्थ तीन यज्ञों पर ही टिके हैं—देवयज्ञ, पितृयज्ञ एवं ऋषियज्ञ। दूसरे शब्दों में इन्हें हम देवऋण, पितृऋण एवं ऋषिऋण कह सकते हैं। इन तीनों ऋणों से जब तक व्यक्ति मुक्त नहीं हो जाता है, तब तक उसे चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ता है। इन तीनों ऋणों में क्रमशः देवऋण-पूजा-पाठ-यज्ञादि करके चुकाया जाता है, पितृऋण-सन्तान उत्पन्न करके एवं पिण्डदान-तर्पण, गया श्राद्धादि करके चुकाया जाता है, तथा ऋषिऋण ज्ञानार्जन व ज्ञानदान करके चुकाया जाता है। इनमें ऋषिऋण चुकाना सबसे कठिन है।

हमारे ऋषि, देवताओं से भी ऊपर हैं। इसी संदर्भ में मनु महाराज ने स्पष्ट कहा है—

ऋषिभ्यः पितरो जाताः पितृभ्यो देव दानवाः।
देवेभ्यश्च जगत् सर्वं चरं स्थाण्वनुपूर्वशः॥

अर्थात् पितर लोग ऋषियों के वंशज हैं तथा पितरों के वंशज देव और दानव हैं। तथा देवताओं से यह चराचर जगत है।

ऋषिगण भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लिए वंदनीय हैं। आज विज्ञान जिसकी खोज कर रहा है, वह पहले से ही हमारे ऋषियों द्वारा वेदों-पुराणों में सुरक्षित किया गया है। इन ऋषि परम्परा में कुछ ऋषि मंत्रद्रष्टा भी रहे हैं। जैसा कि कहा भी गया है—"ऋषयो मंत्रद्रष्टारः" जिन ऋषियों ने वेद में अपना योगदान दिया है उन्हें मंत्र-द्रष्टा भी कहते हैं। अर्थात् मंत्र द्वारा सबकुछ अनुभव करने की क्षमता रखने वाला।

वेदकालीन ऋषियों में कुछ ऋषि गोत्र प्रवर्तक भी हैं। गोत्र चलने की परम्परा मुख्य रूप से दो है—(१) जन्म से (२) विद्या से। भृगु अंगिरा, गौतम, अत्रि, विश्वामित्र, कश्यप, अंगिरस, भारद्वाज, वशिष्ठ और अगस्त्य—ये आठ मूल गोत्र प्रवर्तक ऋषि बताये गये हैं। मंत्रद्रष्टा ऋषि सर्व प्रथम ऋषि होने के कारण गोत्र

प्रवर्तक की श्रेणी में गिने जाते हैं। इसी लिए ही इन्हें दूसरे शब्दों में सृष्टि-प्रवर्तक, गोत्र-प्रवर्तक एवं ज्ञान-प्रवर्तक कहा जाता है। मंत्रद्रष्टा ऋषियों के अतिरिक्त कुछ ऐसे ऋषि हुए जिन्हें पौराणिक ऋषि की संज्ञा दी गई जैसे—मार्कण्डेय, लोमश इत्यादि। सात प्रकार के ऋषियों का वर्णन शास्त्र में पाया जाता है—

(१) ब्रह्मर्षि (वशिष्ठ आदि) (२) देवर्षि (कण्व आदि)

(३) महर्षि (व्यासादि) (४) परमर्षि (भेल आदि)

(५) काण्डर्षि (जैमिनी आदि) (६) श्रुतर्षि (सुश्रुत आदि)

(७) राजर्षि (ऋतुपर्णादि)

मन्वंतर

कुल चौदह मन्वंतर हैं। जो निम्न हैं—

(१) स्वयम्भुव (२) स्वारोचिष (३) औत्तमि (४) तामस (५) रैवत (६) चाक्षुष (७) वैवस्वत (वर्तमान में चल रहा है) (८) सावर्णि (९) दक्षसावर्णि (१०) ब्रह्मसावर्णि (११) धर्मसावर्णि (१२) रुद्रसावर्णि (१३) रुचि (१४) भौम

उपरोक्त मन्वन्तरों में क्रमशः एक वेद-व्यास हैं जो इस क्रम में उन्तीस हैं। जो निम्न है—

(१) ब्रह्मा (२) मातरिश्वा (३) शुक्र (४) बृहस्पति (५) विवस्वान् (६) यम (७) इन्द्र (८) वशिष्ठ (९) सारस्वत (१०) त्रिधामा (११) शरद्वान् (१२) त्रिशिख (१३) अन्तरिक्ष (१४) वर्णी (१५) त्र्यारुण (१६) धनंजय (१७) कृतंजय (१८) तृणंजय (१९) भारद्वाज (२०) गौतम (२१) निर्यन्तर (२२) वाजश्रवा (२३) सोमशुष्म (२४) तृणबिन्दु (२५) ऋक्ष (बाल्मीकि) (२६) शक्ति (२७) पराशर (२८) जातूकर्ण्य (२९) द्वैपायन

द्वैपायन व्यास जी मंत्र द्रष्टा ऋषि-श्रेणी में नहीं हैं, जैसा कि—''अष्टादश पुराणानां कर्त्ता सत्यवती सुतः।'' ये पुराणकार ही रहे हैं।

चारो युगों की आयु क्रमशः निम्न है—

सतयुग	१७,२८,०००	मानव वर्ष
त्रेता-	१२,९६,०००	मानव वर्ष
द्वापर-	८,६४,०००	मानव वर्ष
कलियुग-	४,३२,०००	मानव वर्ष
कुलयोग-	४३,२०,०००	(कुल चतुर्युगी)

इस प्रकार लगभग ७१ चतुर्युगी बीतने पर एक मन्वन्तर होता है। चौदह मनवन्तर बीतने पर ब्रह्माजी का एक अहोरात्र (दिन-रात) होता है। इस तरह ब्रह्माजी की आयु १०० वर्ष हैं। अर्थात् ब्रह्मा जी की आयु के बीतने पर महाप्रलय होता है।

काल गणना एक दृष्टि में :—

२ परमाणु	=	१ अणु
२ अणु	=	१ त्रसरेणु
३ त्रसेरणु	=	१ त्रुटि
१०० त्रुटि	=	१ वेध
३ वेध	=	१ लव
३ लव	=	१ निमेष
५ क्षण	=	१ काष्ठा
१५ काष्ठा	=	१ लघु
१५ लघु	=	१ नाड़िका
६–७ नाड़िका	=	१ प्रहर या याम
०८ प्रहर	=	३० मुहूर्त
३० मुहूर्त	=	१ दिन–रात
२१/२ घटी	=	१ घंटा
२१/२ पल	=	१ मिनट
२१/२ विपल	=	१ सेकेण्ड
२४ घंटे	=	१ दिन–रात
१५ दिन–रात	=	१ पक्ष
२ पक्ष	=	१ मास या पितरों का एक दिन–रात।
२ मास	=	१ ऋतु
३ ऋतु	=	१ अयन
२ अयन	=	१ वर्ष (सौर, बार्हस्पत्य, सावन, चांद्र, नाक्षत्र)
३६ वर्ष	=	१ पितृ–वर्ष
१४ मनुओं की अवधि	=	१ ब्रह्मा का दिन–रात

द्वारा–(पौराणिक कोश)

दूसरे शब्दों में सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के सम्मिलित काल को महायुग कहते हैं। ऐसे हजारों–हजारों महायुगों के व्यतीत होने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है, जिसे कल्प कहते हैं। कुल कल्पों की संख्या तीस है।

(१) श्वेत
(२) नीललोहित
(३) वामदेव
(४) रथंत्तर
(५) रौरव
(६) प्राण
(७) बृहत्
(८) कन्दर्प
(९) सत्य
(१०) ईशान
(११) व्यान
(१२) सारस्वत
(१३) उदान
(१४) गारुड़
(१५) कौर्म (ब्रह्मा की पूर्णिमा)
(१६) नारसिंह
(१७) समान
(१८) आग्नेय
(१९) सोम
(२०) मानव
(२१) पुमान्
(२२) वैकुण्ठ
(२३) लक्ष्मी
(२४) सावित्री
(२५) घोर
(२६) वाराह
(२७) वैराज
(२८) गौरी
(२९) माहेश्वर
(३०) पितृकल्प (ब्रह्मा की अमावस्या)

द्वारा—पौराणिक कोश

एक महायुग पर प्रलय होती है तथा एक कल्पान्त पर महाप्रलय होती है। सृष्टि रचना महाप्रलय के बाद ही प्रारंभ होती है।

॥ प्रलय॥

''प्रलय'' का अर्थ मन्वन्तरों के अंत में सृष्टि की समाप्ति।

यथा— **एतच्चतुर्दशगुणं कल्पमाहुस्तु तद्विदः।**
ततस्तु प्रलयः कृत्स्नः स तु सम्प्रलयो महान्॥

मत्स्यपु० १४२/३६

अर्थात् कालतत्त्व को जानने वाले विद्वान् मन्वन्तर के चौदह गुणे काल को एक कल्प मानते हैं, इसके बाद सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है, जिसे प्रलय कहते हैं।

विष्णु पुराण में कहा गया है कि जब तक ब्रह्मा जागते रहते हैं, संसार भी जागता है, सृष्टि भी जागती है। किन्तु ब्रह्मा के सो जाने पर सृष्टि भी सो जाती है, अर्थात् प्रलय होता है। प्रलय मुख्य निम्न प्रकार के हैं—

(१) साधारण प्रलय। (२) अवान्तर प्रलय।
(३) नैमित्तिक प्रलय। (४) प्राकृतिक महाप्रलय।
(५) आत्यन्तिक प्रलय।

(१) साधारण प्रलय—इसमें भूकम्प, महामारी, युद्धादि जैसे विनाशकारी आपत्तियों से सामूहिक प्राणियों एवं पदार्थों का नाश होता है।

(२) अवान्तर या पार्थिव प्रलय—यह प्रलय प्रत्येक मन्वन्तर के समाप्ति पर होता है। प्रलय काल के निकट के वर्षों में वर्षा के अभाव में सूर्य के किरणों से पृथ्वी का जल शोषित हो जाता है। तदुपरान्त प्रलय की अग्नि उत्पन्न होकर समस्त पृथ्वी को गोमय (गोबर) के पिण्ड की भाँति जलाती है। पुन: प्रलयकालीन आँधी के द्वारा आकाश में धूल छा जाती है। यह धूल एक कल्प के वर्षों में एक योजन ऊँची उठ जाती है। तदुपरान्त अनवरत मूसलाधार वर्षा से पूरी पृथ्वी जलमग्न हो जाती है। ये घटनाएँ मन्वन्तर के संधिकाल के वर्षों में होती है। इसके बाद पृथ्वी शुद्ध होकर जल से बाहर निकलती है और आगामी मन्वन्तर से सृष्टि प्रारंभ होती है।

(३) नैमित्तिक प्रलय—कल्प के अन्त में होने वाले प्रलय को नैमित्तिक प्रलय कहते हैं। इसमें सारे ग्रह-उपग्रह भी और समस्त सौर मंडल ब्रह्म में लीन हो जाता है। रात्रि के समाप्ति पर दिन से पुन: कल्प का प्रारंभ और सौर-मंडल की उत्पत्ति होती है।

(४) प्राकृतिक महाप्रलय—यह प्रलय ब्रह्मा की आयु के दोनों परार्द्धों के समाप्त होने पर होता है जिसमें सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का लय होकर, महतत्त्व अहंकार और पंचतत्त्व ये सातों प्रकृतियाँ भी लय को प्राप्त होती हैं।

विभिन्न प्रकारके प्रलयों का वर्णन विष्णुपुराण, हरिवंशपुराण, भविष्यपुराण, मत्स्यपुराण, लिंगपुराण, महाभारत वनपर्व व श्रीमद्भगवद्गीता में देखने को मिलता है।

संवत्

कालगणना में कल्प, मन्वन्तर, युगादि के पश्चात् संवत्सर का नाम आता है जिसे ज्योतिष का राजा कहते हैं। युगानुसार सत्युग में ब्रह्मसंवत्, त्रेता में वामन संवत्, परशुराम संवत्, श्रीराम संवत् (रावण विजय से), द्वापर में युधिष्ठिर संवत् और कलियुग में विक्रम, कल्कि संवत् होंगे। अभी विक्रम संवत्सर चल रहा है। बाद में विजय, नागार्जुन व कल्कि संवत् क्रमश: होंगे। संवतों का बदलाव किसी भी पौराणिक घटना के बाद ही होता है। जैसे—सहस्रार्जुन वध के बाद परशुराम संवत् रावण-बध के बाद श्रीराम संवत् ये मुख्य संवत् हैं।

महर्षि पराशर एक दृष्टि में

जीवात्मा अपने कर्मानुसार चौरासी लाख योनि में भटकता रहता है। इन चौरासी लाख योनियों में २० लाख वर्ष वृक्ष, १० लाख वर्ष पक्षी, ३० लाख वर्ष पशु, ९ नौ लाख वर्ष जलचर, ११ लाख वर्ष कीड़े-मकोड़े तथा ४ लाख वर्ष मनुष्य के हैं। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने नौवें अध्याय में अर्जुन से कहा भी है—

''सर्व भूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥
प्रकृति स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात्॥

(गीता अ० ९, श्लोक ७-८)

अर्थात् हे अर्जुन! कल्पों के अंत में सब भूत मेरी प्रकृति को प्राप्त होते हैं अर्थात् प्रकृति में लीन होते हैं और कल्पों के आदि में मैं उनको फिर रचता हूँ। अपनी प्रकृति को अंगीकार करके स्वभाव के बल से परतन्त्र हुए सम्पूर्ण भूत समुदाय को बार-बार उनके कर्मों के अनुसार रचता हूँ।

यह भारत भूमि देवताओं, ऋषियों, महापुरुषों, संतों एवं विचारकों की है। राम, कृष्ण, बुद्ध, वशिष्ठ, कश्यप, भारद्वाज, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द आदि इस पावन धरा पर अवतरित हुए। इन्हीं में से एक महापुरुष महर्षि पराशर भी हुए। पराशर जी के पिता शक्ति तथा पितामह (दादा) वशिष्ठ थे जो भगवान् राम के कुलगुरु थे। पराशर का अर्थ परा+शरः।

अर्थात् परा (वाणी), शर (वाण) के समान गतिशील एवं प्रभावी होने के कारण उन्हें पराशर कहा गया है। कल्याण के धर्मशास्त्रांक में माधव सायणाचार्य ने अपने प्रसिद्ध धातुवृत्ति के क्रयादिगण के १६ वें सूत्र में पराशर का अर्थ बताया है—**'पराश्रृणाति पापानीति पराशरः।''**

अर्थात् जिनके दर्शन मात्र से पापों का नाश हो जाता है, वही पराशर है। पराशर जी का देवत्व अथर्ववेद में भी वर्णित है। जिनका दर्शन या स्मरण पवित्र बना देता है, तो फिर यदि उनके शास्त्रीय उपदेशों का पालन किया जाये तो मानव मात्र का कितना कल्याण हो सकता है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

भारतवर्ष में पराशर नाम के अनेक ऋषि, महर्षि हुए किन्तु इनमें शक्तिपुत्र पराशर (कृष्ण द्वैपायन वेद-व्यास के पिता) विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। जबकि इन पराशरों में कई सहस्र वर्षों का अन्तराल देखने को मिलता है।

ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के सौ पुत्र थे जिनमें महर्षि शक्ति ज्येष्ठ पुत्र थे। विश्वामित्रजी की दुष्प्रेरणा से कल्माषपाद द्वारा वशिष्ठ के सभी एक सौ पुत्रों का बध कर दिया गया जिनमें शक्ति भी थे। उनके केवल दोनों पुत्रों शक्ति एवं वसुक के दो-दो पुत्र हुए जो सभी मंत्रद्रष्टा ऋषि हुए। ऋग्वेद में महर्षि वशिष्ठ के बारह पुत्र मंत्रद्रष्टा रहे हैं, जिनके नाम निम्न हैं—

(१) मन्यु (२) उपमन्यु (३) व्याघ्रपात् (४) मृडीक (५) वृषगण (६) प्रथ (७) इन्द्रप्रमति (इन्द्रप्रतिम) (८) द्युम्नीक (९) चित्रमहा (१०) कर्णश्रुत (११) वसुक्र (१२) शक्ति।

उपरोक्त बारह पुत्रों के अतिरिक्त चार पौत्र भी वशिष्ठ जी के मंत्रद्रष्टा हुए— (१) वसुकृद् वासुक्र (२) बसुकर्ण बासुक्र (३) पराशर शाक्त्य (४) गौरवीतिशाक्त्य।

द्वारा कल्याण वेदकथांक
(वर्ष-७३)

महर्षि पराशर का जन्म

व्यक्ति के भौतिक जीवन का आरंभ पितरों की कृपा से होती है। हम जीवन में चाहे जो कुछ भी है, जहाँ भी हैं, सबकुछ हमारे पूर्वजों की कृपा हैं। पूर्वजों की कृपा से ही मनुष्यों को जीवन में मान-सम्मान, वैभव आदि प्राप्त होता है। इन्हीं पूर्वजों में हैं गोत्रकार मंत्रद्रष्टा महर्षि पराशर। इनके पिता का नाम शक्ति तथा माता का नाम अदृश्यन्ती था। ये मैत्रावरुणि वशिष्ठ के पौत्र थे। माता अदृश्यन्ती उतथ्य मुनि की दुहिता थीं। ये उच्चकोटि की विदुषी थीं। अपने पति शक्ति के जप-तप, स्वाध्याय में हमेशा मदद करती रहती थीं। पराशर जी के जन्म के पूर्व ही उनके पिता शक्ति की मृत्यु हो चुकी थी। इससे संबंधित एक कथानक भी है जो महाभारत के आदिपर्व के १७५-१७६ अध्याय में वर्णित है।

वशिष्ठ जी के सौ पुत्रों में शक्ति सबसे बड़े थे। वे तीक्ष्ण बुद्धि के थे। उनकी विलक्षण प्रतिभा तपस्या एवं स्वाध्याय को देखकर सभी लोग उनका समुचित आदर करते थे। इक्ष्वाकु वंश में राजा दशरथ से दस पीढ़ी लगभग पूर्व एक राजा

हुए जिनका नाम कल्माषपाद था। वे एक तेजस्वी राजा थे। एक दिन वे नगर से बाहर निकलकर शिकार के लिए जा रहे थे। शिकार करके वे इधर-उधर भटकते हुए, फिर नगर को लौटने लगे। उस दिन वे भूख-प्यास से पीड़ित थे और एक सँकरा रास्ता पकड़कर जा रहे थे। रास्ता तंग था। उधर से मुनि शक्ति आ रहे थे।

मुनि को देखकर राजा ने उन्हें अपने रास्ते से हट जाने के लिए कहा। महामुनि शक्ति ने सनातन धर्म का हवाला देते हुए कहा कि महाराज! मार्ग तो मुझे मिलना चाहिए, क्योंकि राजा का यह धर्म है कि अपने से श्रेष्ठ जनों को मार्ग दे। इस प्रकार दोनों में मार्ग के लिए विवाद बढ़ता गया। राजा ने क्रोधवश महामुनि शक्ति के ऊपर कोड़े से प्रहार किया। कोड़े की चोट से वे मूर्छित होकर गिर पड़े। बाद में होश आने पर उन्होंने नरेश को श्राप दिया—

''राजाओं में नीच कल्माषपाद! तू एक तपस्वी ब्राह्मण को राक्षस की तरह मार रहा है, इसलिए आज से तू नरभक्षी राक्षस हो जा तथा मनुष्यों के मांस में आशक्त होकर समस्त पृथ्वी पर विचरण कर।''

श्राप देकर महामुनि शक्ति शांत हुए, इधर यजमान के लिए विश्वामित्र एवं वशिष्ठ में बैर चल रहा था। दोनों में वाद-विवाद चल ही रहा था कि, विश्वामित्र जी बीच में आ गये। वे महर्षि शक्ति को पहचान गये। इधर राजा श्राप के भय से महामुनि शक्ति को प्रसन्न करने के लिए स्तुति करने लगा। तब तक मौके का लाभ उठाकर विश्वामित्र जी ने एक किंकर नामक राक्षस को राजा के शरीर में प्रवेश करा दिया। राक्षस के प्रवेश करते ही विश्वामित्र वहाँ से चले गये।

इधर राक्षस के प्रवेश से राजा कल्माषपाद अपनी सुध-बुध खो बैठे।

दूसरी घटना में एक दिन किसी ब्राह्मण ने राजा कल्माषपाद को वन में देखा और उनसे भोजन माँगा। राजा ने उस ब्राह्मण को दो घड़ी रुकने को कहा। उन्होंने कहा कि वन से लौटने पर मैं आपको भोजन दूँगा। राजा चले गये। ब्राह्मण वहीं ठहर गया। राजा भोजन की बात-भूलकर अपने नगर को लौट आये। ब्राह्मण वहीं प्रतीक्षा करता रहा। रात को अचानक भोजन देने की बात राजा को स्मरण हुआ। उन्होंने तुरंत रसोइये को मांस युक्त भोजन लेकर वन में जाने को कहा। रसोइया मनुष्य का मांस और अन्न लेकर वन में जाकर उस ब्राह्मण को दे दिया। तपस्वी

ब्राह्मण अपने तपोबल से समझ गये कि यह भोजन खाने योग्य नहीं हैं। उन्होंने उस राजा को श्राप दिया कि उसकी जिह्वा ऐसे ही अन्न के लिए लालायित रहेगी। दो बार श्राप मिलने के कारण राजा में आसुरी शक्ति और प्रबल हो गयी। इसी बीच कुछ दिनों बाद राजा ने महामुनि शक्ति को अपने सामने देखा और उनका ही सर्वप्रथम भक्षण किया। इस तरह महामुनि शक्ति का अंत हुआ। इधर विश्वामित्र जी बार-बार वशिष्ठ के पुत्रों पर हमला करने के लिए राक्षस को प्रेरित कर रहे थे। यह कथा विष्णुपुराण में भी है।

वशिष्ठ मुनि का आश्रम नैमिषारण्य में था जो उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में गोमती नदी के तट पर है। पराशर जी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब उनके पितामह वशिष्ठ अपने सौ पुत्रों के असामयिक निधन से स्वयं भी आत्महत्या का प्रयास कर रहे थे। उन्होंने लगभग पाँच बार अपनी जीवन लीला समाप्त करने का प्रयास किया है। किन्तु वे हर बार असफल रहे। प्रथम बार उन्होंने अपने को मेरु पर्वत के शिखर से गिराया, दूसरी बार धधकते हुए दावानल में प्रवेश कर गये। दावानल से बचने के बाद वे समुद्र में डूबकर आत्महत्या का प्रयास किए। वहाँ भी वे असफल रहे। बरसात में जल से भरी हुई नदी में अपने शरीर को पाशों से बाँधकर वे कूद पड़े, परन्तु नदी ने उनके बंधनों को काटकर उन्हें सुरक्षित स्थल पर पहुँचा दिया। पाशमुक्त होकर निकलने पर वशिष्ठ जी ने उस नदी का नाम ''विपाशा'' (व्यास) रखा। पाँचवीं बार वे पुनः हिमालय से निकलने वाली नदी के प्रखर धारा में अपने आप को डाल दिये। नदी वशिष्ठ जी के तपोबल से शतधारा में बदल कर भाग चली। इसी कारण उसका नाम ''शतद्रु'' (सतलुज) पड़ा।

इधर वशिष्ठ जी आत्महत्या के लिए प्रयास कर रहे थे उधर माता अदृश्यन्ती ने गर्भ में ही वेदों का ज्ञाता, अपने पुत्र को बना दिया। वे वशिष्ठ जी के आश्रम में ही पुत्र को संस्कारवान बनाने के लिए पति के मृत्यु के पश्चात् भी जप-तप में तथा आश्रम व्यवस्था में अपना ध्यान केन्द्रित रखती थीं। वशिष्ठ जी को इस बात का पता भी नहीं था कि महामुनि शक्ति का पुत्र अदृश्यन्ती के गर्भ में पल रहा है। शक्ति पुत्र ने गर्भ में आकर मरने की इच्छा वाले परासु (वशिष्ठ) मुनि को पुनः जीवित रहने की प्रेरणा दी थी, इसलिए विश्व में वह बालक पराशर नाम से सुप्रसिद्ध हुआ—

परासुः स यतस्तेन वशिष्ठः स्थापितो मुनिः।
गर्भस्थेन ततो लोके पराशरः इति स्मृतः॥

(महा० आदि० प० १७७/३)

महर्षि पराशर जी के जन्म में मतैक्य का अभाव है। किन्तु अधिकांश लोग आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को ही मानते हैं क्योंकि महर्षि वशिष्ठ ने दावानल में आत्महत्या का प्रयास किया जो प्राय: ग्रीष्म ऋतु में ही लगती है। वर्षा ऋतु के बाद ही शरद ऋतु आती है। आत्महत्या के प्रयासों के बाद जैसे ही अपनी पुत्र-वधू के गर्भ स्थित पराशर से उन्होंने वेद-ध्वनि सुनी, तुरंत वे आश्रम को लौट आये। पराशर जी के जन्म का उल्लेख महाभारत में मिलता है। अत: उनका जन्म आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को ही होना तर्क संगत लगता है। इनका जन्म नैमिषारण्य में वशिष्ठ मुनि के आश्रम में हुआ था। पराशर जी के पत्नी का नाम वत्सला था जिसका उल्लेख गणेश पुराण में हुआ है।

महर्षि पराशर जब बड़े हुए और पितृबध की उन्हें जब जानकारी हुई तब उन्होंने प्रतिशोधवश राक्षसों के मूलोच्छेद हेतु राक्षस यज्ञ प्रारंभ किया। राक्षसों का विनाश देखकर अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और महाक्रतु यज्ञ को रोकने के लिए आये। पुलस्त्य जी के बहुत समझाने पर महामुनि शक्तिपुत्र पराशर ने यज्ञ का समापन किया। पुलस्त्य ऋषि के आग्रह पर जब महर्षि पराशर ने यज्ञ बंद कर दिया तो उनकी इस क्षमाशीलता से प्रसन्न होकर उन्होंने (पुलस्त्य ऋषि) निम्नलिखित आशीर्वाद भी दिया—

''पुराण संहिताकर्त्ता भवान्वत्स भविष्यति।
देवतापारमार्थ्यं च यथाव द्वेत्स्यते भवान्॥

(वि० पु० १/१/२६)

अर्थात् हे वत्स! तुम पुराण संहिता के रचनाकार बनोगे तथा धर्म के सभी गूढ़ विषयों का तुम्हें ज्ञान होगा।

महर्षि पराशर द्वारा प्रणीत निम्न लिखित ग्रंथ है—

(१) वेदों के मंत्रद्रष्टा (२) बृहत्पराशर होराशास्त्र (ज्योतिष) (३) बृहत्पाराशरीय धर्म संहिता (४) लघु पराशरी (५) पराशरस्मृति (६) पाराशरीय वास्तु शास्त्र (७) पाराशरीय नीतिशास्त्र (८) पराशर संहिता वैद्यक (९) पराशर पुराण (१०) विष्णुपुराण-पुराणरत्न (११) पराशर गीता (१२) श्रीराम चरितामृतम्

(१३) विष्णुपुराण (१४) तत्वविचारपुराणरत्न (१५) श्री भगवत्स्वरूप-पुराणरत्न (१६) ब्रह्मयोग आदि। वैदिक काल में महाभारत कालतक नक्षत्र ज्योतिष का ही प्रचलन था। पराशर ने राशियाँ लायीं। ॐ नमो हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा।' हनुमत् मंत्र पराशर जी की ही देन है। पिता शक्ति तो 'ह्लीं' एकाक्षरी भुवनेश्वरी मंत्र के ऋषि ही हैं।

इसमें पराशर स्मृति एक युगान्तकारी धर्मग्रंथ है। इसमें महर्षि पराशर ने सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग की धर्म व्यवस्था को देखकर प्राणियों के लिए सहज साध्य धर्म की मर्यादा निर्दिष्ट की और बताया कि कलियुग में लोगों के लिए सत्युगादि के धर्मों का अनुष्ठान दुष्कर हो जाएगा, अतः उनके आयु और शक्ति को ध्यान में रखते हुए इस स्मृति की रचना की। सतयुग में मनुस्मृति, त्रेता में गौतम स्मृति, द्वापर में शंख स्मृति एवं कलियुग में पराशर स्मृति की ही प्रधानता है।

यथा—

कृते तु मानवा धर्मस्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।
द्वापरे शंख लिखिताः कलौ पराशराः स्मृताः॥

(प० स्मृति १/२४)

मत्स्य पुराण में अध्याय २०१ में महर्षि पराशर के वंश का भी वर्णन मिलता है जो निम्न है—

(१) गौरपराशर—काण्डशय, वाहनप, जैह्यप, भौमतापन, गोपालि।

(२) नील पराशर—प्रपोहय, वाह्यमय, ख्यातेय, कौतुजाति, हर्यस्चि।

(३) कृष्ण पराशर—कार्ष्णायन, कपिमुख, काकेस्थ, जपाति, पुष्कर।

(४) श्वेतपराशर—श्रीविष्ठायन, बालेय, स्वायष्ट, उपय, इषीकहस्त।

(५) श्यामपराशर—वाटिक, बादरि, स्तम्ब, क्रोधनायन, क्षैमि।

(६) धूम्र पराशर—खल्यायन, वार्ष्णायन, तैलेय, यूथप, तन्ति।

उपरोक्त सभी पराशरों के तीन प्रवर पराशर, शक्ति एवं वशिष्ठ हैं।

सृष्टि में अनेक पराशर

वेद-पुराण एवं प्राचीन वांग्मय में उपलब्ध साक्ष्य से ज्ञात होता है कि प्राचीन ऋषियों की परम्परा में अनेक पराशर हुए हैं।

(१) पुराण कोश के अनुसार एक पराशर जो गोत्रकार ऋषि हैं तथा वशिष्ठ

के पौत्र एवं शक्ति के पुत्र हैं तथा इनकी माता का नाम अदृश्यन्ती है। इनके पिता शक्ति का देहान्त इनके जन्म के पूर्व ही हो चुका था। इनके गुरु याज्ञवल्क्य जी थे। ये ८६ श्रुतर्षियों में से एक थे तथा २६ वें द्वापर के वेद व्यास भी थे। इन्हें विष्णुपुराण लेखन का वरदान प्राप्त था।

(२) एक प्रसिद्धि प्राप्त किए स्मृतिकार जिनकी स्मृति "पराशर स्मृति" के नाम से जानी जाती है। कलियुग के लिए इसका विशेष महत्त्व है।

(३) एक पराशर सामग आचार्य कुशुमि के पुत्र तथा तीन शिष्यों में से एक थे। इनका वर्णन ब्रह्माण्ड पुराण के अन्तर्गत आता है।

(४) नवें द्वापर के भगवद्‌वतार ऋषभ के वेद पारगामी विद्वान् चार पुत्रों में से एक पुत्र थे जिनका नाम पराशर था। इसका वर्णन वायुपुराण के २३ वें अध्याय में है।

(५) मंत्र-ब्राह्मण-कारक तथा ब्रह्मक्षेत्र के निवासी सप्त ऋषियों में से एक ऋषि हुए हैं। इसका भी वर्णन वायुपुराण में हैं।

(६) एक पराशर कृष्ण द्वैपायन के शिष्य बाष्कल के शिष्य भी थे।

यथा— **चतुर्धा स बिभेदाथ बाष्कलोऽपि च संहिताम्।**
बोध्यादिभ्यो ददौ ताश्च शिष्येभ्यस्स महामुनिः॥ ११ १७
बोध्याग्निमाढकौ तद्वद्याज्ञवल्क्य पराशरौ।
प्रतिशाखास्तु शाखायास्तस्यास्ते जगृहुर्मुने॥

(विष्णु पु० ३/४/१७-१८)

अर्थात् बाष्कल ने भी अपनी शाखा के चार भाग किए और उन्हें बोध्य आदि अपने शिष्यों को दिया। वे शिष्य बोध्य, अग्निमाढक, याज्ञवल्क्य तथा पराशर थे।

(७) वराहमिहिर के पूर्व पराशर एवं गर्ग प्रसिद्ध दैवज्ञ (ज्योतिषी) हो चुके हैं।

(८) पराशर नाम के एक प्राचीन वेदान्ताचार्य भी थे। रामानुज स्वामी के शिष्य कूरेश के पुत्र का नाम भी पराशर ही था। इन्होंने रामानुज की आज्ञा से विष्णुसहस्रनाम पर भाष्य लिखा।

यहाँ जिन महर्षि पराशर का उल्लेख किया गया है, वे वशिष्ठ के पौत्र तथा शक्ति के आत्मज थे। इन्होंने राजा जनक को भी ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान का दान

किया था। इसके अतिरिक्त इन्होंने धर्म, नीति-शास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद एवं वास्तुशास्त्र जैसे अनेक क्षेत्र में भी अवदान किया है। इन्हीं के वंशज चौरासी के रत्न बाबा गंगेश्वर हैं। महर्षि पराशर के पत्नी का नाम वत्सला था तथा माता का नाम अदृश्यन्ती था।

सृष्टि में अनेक शुकदेव

उपरोक्त बिन्दुओं से यह पता चलता है कि समयानुसार अनेक पराशर हुए है, जैसे कि सूर्य वंशीय क्षत्रियों में राजा दशरथ से लगभग आठ पीढ़ी पूर्व राजा दशरथ हुए हैं। ठीक इसी तरह सृष्टि में समयानुसार अनेक शुकदेव भी हुए हैं।

शुकदेव के बारे में श्रीमद्भागवत, महाभारत, हरिवंशपुराण, वायुपुराण, लिंगपुराण, स्कन्दपुराण, कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, सौरपुराण, ब्रह्माण्डपुराण एवं देवी भागवत् आदि ग्रंथों में विस्तृत वर्णन मिलता है। कथा क्रम में कहीं उनको असंग या वीतराग बताया गया है तो कहीं सन्तानयुक्त बताया गया है। ये विसंगतियाँ इस बात का संकेत देती हैं कि एक से अधिक शुकदेव भिन्न-भिन्न समय में हुए हैं।

(१) अमर कथा के श्रोता शुकदेव।

(२) चेटिका/वटिका के गर्भ से उत्पन्न शुकदेव।

(३) छाया शुकदेव का वर्णन श्रीमद्भागवत के नवम स्कन्ध में है।

(४) आरणेय शुकदेव (अरणिसुत)

(५) पूर्वकाल के शुकदेव।

ब्राह्मणों के उत्पत्ति स्थान

महात्मा मनु ने अपनी संहिता मनुस्मृति में भारत भूमि को देव-भूमि कहा है। पुराकाल में इसे ब्रह्मवर्त भी कहा जाता था। उत्तर में स्थित हिमालय और दक्षिण में स्थित विन्ध्याचल पर्वतों का मध्यभाग तथा कुरुक्षेत्र के पूर्व तथा प्रयाग के पश्चिम का भूभाग मध्यदेश कहा जाता है। पूर्व में समुद्र पर्यन्त, पश्चिम में समुद्र पर्यन्त और हिमालय एवं विन्ध्याचल के मध्य के स्थान को आर्यावर्त कहा जाता है। यही आर्यावर्त ब्राह्मणों के निवास योग्य भूमि है। आर्यावर्त का मध्य भाग ही मध्यदेश कहा जाता है।

प्राचीनतम काल से ही आर्य संस्कृति का प्रधान केन्द्र मध्यदेश ही रहा है। वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण ग्रंथों एवं उपनिषदों की रचना भी यहीं हुई थी। रामायण और महाभारत का भी संबंध यहीं से है। अयोध्या एवं व्रज भी यहीं है। गीता का उपदेश भी कुरुक्षेत्र में ही दिया गया है। बाल्मीकि, तुलसी, बुद्ध, महावीर आदि सब यहीं के थे। नैमिषारण्य, पुष्कर, प्रयाग (तीर्थराज), काशी सब मध्यदेश में ही हैं। इस तरह यह स्पष्ट है कि ब्राह्मणों की उत्पत्ति भी मध्यदेश में ही हुई है। आर्यभट्ट, कश्यप, पतंजलि, पाणिनि, कालिदास, रामानुज, चाणक्य, वराहमिहिर आदि भी इसी देश में पैदा हुए।

ब्राह्मण किसे कहा जाये?

ऋग्वेद के पुरुषसूक्त और शुक्ल यजुर्वेद के १०वें मंत्र में ब्राह्मण कि उत्पत्ति इस प्रकार है—ब्रह्माजी के मुख से ब्राह्मण, बाहु से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पैर से शूद्र उत्पन्न हुए। उपनिषद में इसके बारे में चर्चा है कि ब्राह्मण कोई शरीर नहीं है, ब्राह्मण कोई जाति नहीं है, ब्राह्मण कोई जीव नहीं है। बृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य जी ने कहा है कि जो ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करके संसार से प्रयाण करता है, वह ब्राह्मण है। बुध ने कहा है कि जो उत्तम स्थिति को प्राप्त किया है, वह ब्राह्मण है। शास्त्रों का वचन है कि ब्राह्मण की पहचान उसका गुण, स्वभाव व सदाचार है। जन्म-जन्मान्तर की तपस्या ही व्यक्ति को ब्राह्मण की श्रेणी में लाता है। जो ब्रह्म को जानता है एवं पूरे ब्रह्माण्ड को ब्रह्ममय देखता है, वही ब्राह्मण है।

शास्त्रों का रचयिता, सत्कर्मों का अनुष्ठाता, शिष्यादि का उद्‌बोधक, वेदादि का वक्ता तथा सबका हितैषी ही ब्राह्मण है।

ब्राह्मण के लिए करणीय

ब्राह्मणों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिये—

(१) ज्ञानाभ्यास।

(२) सत्यभाषण

(३) इंद्रिय संयम।

(४) शास्त्राभ्यास।

(५) परोपकारी एवं पर उन्नति से प्रसन्न रहना।

(६) सुख-दुःख में समधर्मी।

(७) यज्ञ करना और कराना।

(८) धैर्यवान।

(९) लज्जाशील।

(१०) ईर्ष्या-रहित।

(११) दान देना एवं दान लेना।

(१२) मनोजयी होना।

ब्राह्मण के प्रकार

कर्मानुसार ब्राह्मण दस प्रकार के होते हैं—

(१) देव ब्राह्मण	(२) मुनि ब्राह्मण
(३) द्विज ब्राह्मण	(४) क्षत्रिय ब्राह्मण
(५) वैश्य ब्राह्मण	(६) शूद्र ब्राह्मण
(७) मार्जार ब्राह्मण	(८) कृतघ्न ब्राह्मण
(९) म्लेच्छ ब्राह्मण	(१०) चाण्डाल ब्राह्मण।

ब्राह्मण के नौ-रत्न (पराशर गोत्रीय)

(१) गोत्र	-	पराशर
(२) वेद	-	यजुर्वेद
(३) उपवेद	-	धनुर्वेद
(४) शाखा	-	माध्यंदिनी
(५) सूत्र	-	कात्यायन
(६) प्रवर	-	३(वशिष्ठ, शक्ति, पराशर)

(७) शिखा - दक्षिण
(८) पाद - दक्षिण
(९) कुलदेवता/कुलदेवी- शिव/कामाख्या

गोत्र एवं उसका महत्त्व

ऋषियों की वंश परम्परा को गोत्र कहा जाता है। प्रत्येक मन्वन्तर में अनेक ऋषि गोत्र प्रवर्तक होते हैं। ऋषि मंत्रद्रष्टा होते हैं। पृथ्वी का सम्पूर्ण मानव जाति किसी न किसी ऋषि के संतान हैं, वे चाहे किसी धर्म को क्यों न मानते हों। गोत्र का दूसरा अर्थ कुल भी होता है। व्यक्ति का जिस ऋषि के वंश में जन्म हुआ वही उनका गोत्र हुआ। मुख्य रूप से आठ ऋषि ही गोत्रकर्ता हुए जो निम्न है—

(१) भृगु या जामदग्न्य कुल।
(२) अंगिरस या गौतम कुल।
(३) अंगिरस या भारद्वाज कुल।
(४) अत्रिकुल।
(५) विश्वामित्र कुल।
(६) कश्यप कुल।
(७) वशिष्ठ कुल।
(८) अगस्त्य कुल।

कभी-कभी यह भी प्रश्न उठता है कि चारों वर्णों के गोत्रकर्ता एक ही ऋषि कैसे हुए?

इसके सन्दर्भ में अग्नि पुराण एवं हिन्दू धर्मकोश में स्पष्ट से वर्णन मिलता है—

क्षत्रिय वैश्य शूद्राणां गोत्रं च प्रवरादिकम्।
तथान्यवर्णसंकराणां येषां विप्राश्च याजकाः॥

अ० पुराण (वर्ण संकरोपाख्यान)

अर्थात् गोत्रों के आदि पुरुष ब्राह्मण ऋषि थे। इसलिए ब्राह्मणों के जो गोत्र हैं वे ही पौरोहित्य परम्परा से क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के भी गोत्र हैं। जिनकी पौरोहित्य परम्परा छिन्न हो गयी और जिसके गोत्र का पता नहीं लगता उनकी

गणना कश्यप गोत्र में की जाती है। क्योंकि कश्यप सबके पूर्वज माने जाते हैं।

गोत्र का महत्त्व

माता की पाँच पीढ़ी के अन्दर तथा पिता की सात पीढ़ी के अन्दर की कन्या एवं वर का विवाह वर्जित है। इसी तरह समान गोत्र व प्रवर में भी विवाह वर्जित है। समान गोत्र व प्रवर वाली विवाहिता से उत्पन्न संतान यथा—

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने॥
आरुढ़पतितापत्यं ब्राह्मण्यां यक्ष शूद्रजः।
सगोत्रोढ़ा सुतश्चैव चाण्डालास्त्रय ईरिताः॥

(याज्ञवल्क्यस्मृति एवं विष्णु धर्मसूत्र)

इस तरह से भी सगोत्र एवं एक ही प्रवर में विवाह होना आपस में प्रीति के लिए उचित नहीं है। अर्थात् प्रीति कम होती है।

श्राद्ध (पितृकर्म) में भी प्रेत एवं पितरों के गोत्र व नाम से जलदान एवं पिण्डदान का निर्देश है। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में वगैर गोत्र के संकल्प नहीं होता है। पाणिग्रहण संस्कार (विवाह) में तो गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा एवं सूत्र इन सबका उच्चारण किया जाता है। पितरों के पास दी हुई सामग्री गोत्र एवं नाम के द्वारा ही पहुँचती है।

(२) **वेद :** ईश्वर की कृपा से ऋषियों के अन्तःकरण में वेदों की सृष्टि हुई। दूसरे शब्दों में यह पितामह ब्रह्माजी की देन है। इसी से वेद को अपौरुषेय भी कहा जाता है। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। इन चारों वेदों का अध्ययन, सांगोपांग कठिन होने के कारण किसी गोत्र-विशेष के ऋषियों ने किसी एक वेद के अध्ययन की नींव रखी। अतः एक ही वेद कंठस्थ किया जाने लगा। लेखन कला के अभाव में वेद-मंत्रों को पीढ़ी-दर पीढ़ी सुनकर ही पढ़ाया या याद रखा जा सकता था। अतः जिस गोत्र के ऋषि ने जो वेद याद किया वही उस वंश का 'वेद' कहलाया।

(३) **उपवेद :** प्रत्येक वेद के उपवेद भी हैं। ये उपवेद व्यवहारिक हैं। इनसे मनुष्य को समाज सेवी बनने का अवसर प्राप्त होता है, साथ ही ये

जीविकोपार्जन में भी सहायक सिद्ध होते हैं। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद, यजुर्वेद का उपवेद-धनुर्वेद, सामवेद का उपवेद-गान्धर्ववेद और अथर्ववेद का उपवेद स्थापत्यवेद (वास्तु-शिल्प, अर्थशास्त्र) है। उपवेद भी चार हैं।

(४) **शाखा :** जब किसी एक गोत्र का व्यक्ति उस गोत्र के लिए निर्धारित 'वेद' का पूर्णरूपेण अध्ययन करने में असमर्थ रहने लगा तब ऋषियों ने वैदिक परम्परा को जीवित रखने के लिए अपने वेद की किसी शाखा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया। यह शाखा ही किसी गोत्र की शाखा कही जाने लगी। पतंजलि के अनुसार चारों वेदों की कुल ११३१ शाखायें हैं।

(क) ऋग्वेद-२१ शाखा (ख) यजुर्वेद-१०१ शाखा (ग) सामवेद-१००० शाखा (घ) अथर्ववेद-९ शाखा।

(५) **सूत्र :** शाखाओं के संक्षिप्त रूप को सूत्र कहते हैं। जब गोत्रानुयायियों के लिए शाखा भी अध्ययन की दृष्टि से कठिन हो गया तब परवर्ती ऋषियों ने उन शाखाओं के भाव को सूत्र-रूप में परिवर्तित किया। इस प्रकार संक्षेप में ही सही प्रत्येक गोत्रावलम्बी को अपने सूत्र की जानकारी रखना परमावश्यक है। सूत्रों के चार विभाग हैं—

(१) श्रौत सूत्र (२) गृह्य सूत्र (३) धर्मसूत्र (४) शुल्व सूत्र

इन सूत्रों में यज्ञ-क्रिया के नियम हैं। प्रत्येक वेद के अपने-अपने सूत्र-ग्रंथ है।

(६) **प्रवर :** प्रवर का अर्थ श्रेष्ठ होता है। गोत्र-प्रवर्तक मूल ऋषि के बाद की वंश-परम्परा में जो महान ऋषि हुए, वे गोत्र के 'प्रवर' कहलाये। प्रवरों की संख्या कुल ४९ है। प्रवर १, २, ३ और ५ तक होते हैं। ये गोत्र प्रवर्तक ऋषि के निकटतम ऋषि होते हैं। इसी प्रवर संख्या को ध्यान में रखते हुए यज्ञोपवीत में उतनी गाँठें लगायी जाती हैं।

(७) **शिखा :** यजुर्वेद के अनुसार 'केशान् शीर्षन् श्रियै शिखा'। अर्थात् शीर्ष भाग में लंबे बालों की चोटी ही शिखा है। यह सनातन धर्म की पहचान है। इसके दो भेद हैं—दक्षिण एवं वाम। प्रत्येक गोत्र प्रवर्तक ने अपनी पहचान बनाये रखने के लिए शिखा (चोटी) को बाएँ या दायें से घुमाकर बाँधने की परम्परा डाली। कोई शिखा को दायें से घुमाकर ग्रंथि लगाता है तो कोई बायें

घुमाकर ग्रंथि लगाता है। यजुर्वेदीय व अथर्ववेदीय की शिखा दक्षिण (दायें) है, तो ऋग्वेदीय व सामवेदीय की शिखा वाम (बाएँ) है। इसी तरह जनेऊ में भी वाम व दक्षिण घुमाकर ग्रंथि लगाने की परम्परा है।

(८) **पाद :** पाद का अर्थ चरण या पैर होता है। किसी गोत्र वाले अपने वेदोपवेद के अनुसार दायें या बायें चरण को मोड़कर बैठते थे या यज्ञादि कर्म में पहले दायाँ या बायाँ और प्रक्षालन कराते थे। यात्रा के समय में भी पहले दायाँ या बायाँ पैर बाहर निकालते थे। यजुर्वेदीय व अथर्ववेदीय लोग दक्षिण (दायाँ) पाद का प्रयोग करते थे तथा सामवेदीय व ऋग्वेदीय लोग वाम-पाद का प्रयोग करते थे।

(९) **कुल देवता एवं कुल देवी :** प्रत्येक वेद-पाठी किसी न किसी देवता की आराधना करते थे जिन्हें कुल देवता कहा जाता है। उस कुल देवता का पूजन जन्म, विवाह आदि संस्कारों में किया जाता है। ऋग्वेद वालों के कुलदेवता-ब्रह्मा, यजुर्वेद वालों के कुलदेवता-शिव, सामवेद वालों के कुल देवता-विष्णु तथा अथर्ववेद वालों के देवता—इन्द्र हैं।

उपरोक्त नवरत्नों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य विषय हैं

(क) **उपपद :** यह प्राचीन काल में नहीं था। इसे जातिसूचक उपाधि भी कहा जाता है। जैसे-उपाध्याय, शुक्ल, पाण्डेय, सिंह, गुप्त, इत्यादि।

(ख) **आस्पद :** जिन नामों या स्थानों से जिन वंशों की प्रसिद्धि होती है, उसे आस्पद कहते हैं। इससे क्षेत्रीय पहचान के रूप में भी जाना जाता है। जैसे मैथिली, सरयूपारीण, गौड़, पयासी, काचनी इत्यादि।

(ग) **अभिजन :** पूर्वजों के चिर-निवास का गाँव या नगर जहाँ से चलकर वे अन्य गाँवों या नगरों में बस गये। अत: पुरानी पहचान के लिए अभिजन एक प्रामाणिक लक्षण है। जैसे-सरारि, पासी, नदौली, चौखरी, पिंडी, खैरी इत्यादि।

गंगेश्वर जीवन दर्शन (मूल वंशावली) विमोचन समारोह की स्मृतियाँ

(वि० संवत् २०८२, रविवार २१ जून सन् २०२५ ई०)

विमोचनकर्ता : डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु', राज्य मंत्री (स्वंतत्र प्रभार) आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग (एम. ओ. एस.) उ० प्र०। परिलक्षित हैं- प्रो० प्रवेश भारद्वाज (बी.एच.यू.), डॉ. शोभनाथ पाठक (डी.ए.वी), रि० कर्नल रणजीत उपाध्याय, डॉ. सानंद सिंह, ज़मानिया विधानसभा की पूर्व विधायक श्रीमती सुनीता सिंह, के साथ लेखक डॉ. रामप्रकाश उपाध्याय एवं अन्य क्षेत्रीय अतिथिगण।

कुछ गोत्र एवं उनके नवरत्न

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
१	अत्रि	ऋग्वेद	आयुर्वेद	शाकल्य	आश्वलायन	अत्रि,आर्चमानस, श्यावश्व	वाम	वाम	ब्रह्मा
२	अष्टावक्र	,,	,,	,,	,,	बाहल, खरुल, कण्व, विकल, वयीवत्र	,,	,,	,,
३	आप्लवान	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	यमदग्न, च्यवन, आप्लवान	वाम	वाम	विष्णु
४	अम्बसार	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, भार्गव, अम्बसार	,,	,,	,,
५	आयास्व	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अंगिरस, आयास्व, गौतम	दक्षिण	दक्षिण	शिव
६	आक्षकर्ण	,,	,,	,,	,,	बक, सावकन, सत्ययिका	,,	,,	,,
७	अंगिरस	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, भारद्वाज, बार्हस्पत्य	,,	,,	,,
८	अघमर्षण	,,	,,	,,	,,	कौशिक, देवराज, अघमर्षण	,,	,,	,,
९	अगस्त्य	,,	,,	,,	,,	पुलस्त्य, वशिष्ठ, ऐन्द्र, और्व, अगस्त्य	,,	,,	,,
१०	अमद्र	,,	,,	,,	,,	लोमस, सावर्ण, अमद्र	,,	,,	,,
११	अप्लवान	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	वत्स, यमदग्न, अप्लवान, च्यवन	वाम	वाम	विष्णु
१२	असित	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	वाशिल, कौशल्य, असित	दक्षिण	दक्षिण	,,
१३	और्व	,,	,,	,,	,,	वत्स, च्यवन, और्व, यमदग्न, अप्लवान	वाम	वाम	विष्णु

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
१४	औतथ्य	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आंगीरसौतथ्य, काक्षीवत, गौतम, कौमण्ड	दक्षिण	दक्षिण	शिव
१५	औतथ्य	,,	,,	,,	,,	आंगीरसौतथ्य, काक्षीवत, गौतम, देवमातम	,,	,,	,,
१६	औतथ्य	,,	,,	,,	,,	अंगिरसौतथ्य, गौतम	,,	,,	,,
१७	इन्द्रोदय	,,	,,	,,	,,	कौडिन्य, भार्गव, इन्द्रोदय	,,	,,	,,
१८	इन्द्रप्रमद	,,	,,	,,	,,	अत्यवान, वैतहव्य, इन्द्रप्रमद	,,	,,	,,
१९	ऐन्द्र	,,	,,	,,	,,	अत्रि, अंगिरस, ऐंद्र	,,	,,	,,
२०	एकावशिष्ठ	,,	,,	,,	,,	वशिष्ठ, यमदग्न, एकावशिष्ठ	,,	,,	,,
२१	उतथ्य	,,	,,	,,	,,	अंगिरसौतथ्य, दैर्घतामास	,,	,,	,,
२२	उतथ्य	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, गौतम, शारद्वन्त	,,	,,	,,
२३	उदवारन	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, गौतम, श्रमान	,,	,,	,,
२४	उपमन्यु	,,	,,	,,	,,	भार्गव, वशिष्ठ, उपमन्यु	,,	,,	,,
२५	उपमन्यु	,,	,,	,,	,,	उपमन्यु, वशिष्ठ, अभ्रवत्स	,,	,,	,,
२६	कश्यप	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	कश्यप, असित, देवल	वाम	वाम	विष्णु
२७	कश्यप	,,	,,	,,	,,	कश्यप, आवदमार, नैध्रुव	,,	,,	,,
२८	कश्यपा:	,,	,,	,,	,,	कश्यपा:, वत्स, रणेकुव	,,	,,	,,
२९	कश्यपेया:	,,	,,	,,	,,	काश्यपेय, कुशिक, कौशिक, काश्यपेया	,,	,,	,,
३०	कृष्णाजिन	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, च्यवन, जामदग्नि	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
३१	कात्यायन	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	विश्वामित्र, वशिष्ठ, किल	दक्षिण	दक्षिण	शिव
३२	कौशिक	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, अघमर्षण, कौशिक	,,	,,	,,
३३	कौशल्य	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, अघमर्षण, मधुछन्दस	,,	,,	,,
३४	कृष्णात्रि	,,	,,	,,	,,	कृष्णात्रि, आर्चमानस, श्तावाश्व	,,	,,	,,
३५	कौडिन्य	,,	,,	,,	,,	आत्रेय, आर्चमानस, श्तावाश्व	,,	,,	,,
३६	कपि	,,	,,	,,	,,	वशिष्ठ, कौडिन्य, मित्रावरुण	,,	,,	,,
३७	कौशिक	,,	,,	,,	,,	कौशिक, विश्वामित्र, कौशिक	,,	,,	,,
३८	कात्यायन	,,	,,	,,	,,	कात्यायन, आच्छिल, विश्वामित्र	,,	,,	,,
३९	कौत्स	,,	,,	,,	,,	कौत्स, अंगिरस, यौवनाश्व	,,	,,	,,
४०	कुशिक	,,	,,	,,	,,	कुशिक, विहकस्य, श्वेतप	,,	,,	,,
४१	कपिल	,,	,,	,,	,,	कपिल, ओदर, देवराज	,,	,,	,,
४२	किल	,,	,,	,,	,,	सांकृत, सांख्यायन, किल	,,	,,	,,
४३	कौलव	,,	,,	,,	,,	मधुछन्दस, विश्वामित्र, कौलव	,,	,,	,,
४४	गर्ग	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, सैन्य, गर्ग	,,	,,	,,
४५	गौतम	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज	,,	,,	,,
४६	गोभिल	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	गोभिल, अंगिरस, भारद्वाज	वाम	वाम	विष्णु
४७	गौतम	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, गौतम, अत्रि	दक्षिण	दक्षिण	शिव
४८	गांगेय	,,	,,	,,	,,	दालभ्य, अंगिरस, बार्हस्पत्य	,,	,,	,,
४९	गौतम	,,	,,	,,	,,	गौतम, अंगिरस, आतिथ्य	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
५०	गर्ग	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	गर्ग, गसर्गेय, भजि, कर्सामुना	दक्षिण	दक्षिण	शिव
५१	गार्ग	,,	,,	,,	,,	गार्गेय, गर्ग, शंखलिखित	,,	,,	,,
५२	कण्व	,,	,,	,,	,,	कण्व, वोदास, मान	,,	,,	,,
५३	गौरव	,,	,,	,,	,,	आभद्र, कौलव, गौरव	,,	,,	,,
५४	गालव	,,	,,	,,	,,	गालव, अज्ञात, पहारी, तोषकल्का	,,	,,	,,
५५	चान्द्रायण	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	चान्द्रायण, वात्स, वत्स	वाम	वाम	विष्णु
५६	चामनदेव	,,	,,	,,	,,	चामन, मौनस, मध्याम	,,	,,	,,
५७	चान्द्रायण	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	चान्द्रायण, वात्स, वत्स	दक्षिण	दक्षिण	शिव
५८	ऐरम्ब मैजन	,,	,,	,,	,,	शिल, च्यशिल, कौशिल्य			
५९	चंद्रगर्ग	,,	,,	,,	,,	चंद्रगर्ग, अत्रसुप्रभूदयत्र, अंगिरस	,,	,,	,,
६०	च्यवन	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	और्व, यमदग्न, वत्स, च्यवन, अप्लवान	,,	,,	,,
६१	जमदग्न	,,	,,	,,	,,				
६२	जावहिऋति	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	जावहिऋति, तथा,	दक्षिण	दक्षिण	शिव
६३	जातूकर्ण्य	,,	,,	,,	,,	अत्रि, वशिष्ठ, जातूकर्ण	,,	,,	,,
६४	वत्स	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	वत्स, च्यवन, अप्लवान, द्रमदा	वाम	वाम	विष्णु
६५	धनंजय	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, मधुछन्दस, धनंजय	,,	,,	,,
६६	वात्स	,,	,,	,,	,,	भार्गव, च्यवन, आप्लवान, जमदग्न, और्व	,,	,,	,,
६७	मौनस	,,	,,	,,	,,	मौनस, भार्गव, वातहव्य, सांचा	,,	,,	,,
६८	मौगिल	,,	,,	,,	,,	मौगिल, भार्गव, साहित्य	,,	,,	,,
६९	वाछिल	,,	,,	,,	,,	वाच्छिल, यजन, ब्रह्मा	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
७०	वाच्छिल	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	वाछिल, च्यवन, मौनस, लौर्भ्य	वाम	वाम	विष्णु
७१	बाल	,,	,,	,,	,,	जमदग्नि, कुशिक, खिल, कश्यप, कौशिक	,,	,,	,,
७२	बौधायन	ऋग्वेद	अथर्व	आश्वलायन	आश्वलायन	पुलस्त्य, बौधायन, शिच्य, त्रेयव०, पर्वातिथेय	,,	,,	,,
७३	वशिष्ठ	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	आत्रेय, आर्चमानस, श्यावास्व	दक्षिण	दक्षिण	शिव
७४	विष्णुवर्णन	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	अंगिरस, अमौह्य, बौरुचा	,,	,,	,,
७५	वाभ्रव्य	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, अवदल, वाभ्रव्य	,,	,,	,,
७६	वासिल	,,	,,	,,	,,	वासिल, अत्रि, अर्चिस	,,	,,	,,
७७	वामदेव	,,	,,	,,	,,	वामदेव, माध्यायन, गौतम	,,	,,	,,
७८	वैहल	,,	,,	,,	,,	मौकल्य, अंगिरस, बार्हस्पत्य	,,	,,	,,
७९	देवरात	,,	,,	,,	,,	वैहल, असित, बहल	,,	,,	,,
८०	विद	,,	,,	,,	,,	भार्गव, और्व, जामदग्न्य	,,	,,	,,
८१	वैन्य	,,	,,	,,	,,	भार्गव, वैन्य, पार्थ	,,	,,	,,
८२	दालभ्य	,,	,,	,,	,,	दालभ्य, च्यवन, और्व, आप्लवान	,,	,,	,,
८३	धौम्र	,,	,,	,,	,,	धौम्र, कप्पिस, अंत्रिसर	,,	,,	,,
८४	बार्हस्पत्	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, बार्हस्पत्य भारद्वाज	,,	,,	,,
८५	विश्वामित्र	,,	,,	,,	,,	कात्यायन, वशिष्ठ, विश्वामित्र	,,	,,	,,
८६	वातहव्य	,,	,,	,,	,,	आप्लवान, इन्द्रप्रमद, वातहव्य	,,	,,	,,
८७	देवल	,,	,,	,,	,,	वाशिल, देवल, शौनकेत	,,	,,	,,
८८	ध्रुवनैन	,,	,,	,,	,,	कौलव, वामदेव, ध्रुवनैन	,,	,,	,,
८९	वामदेव	,,	,,	,,	,,	ध्रुवनैन, कौलव, वामदेव	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
९०	भद्रशील	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वाशिल, भारद्वाज, भद्रशील	दक्षिण	दक्षिण	शिव
९१	भागीरस्य	,,	,,	,,	,,	ध्रुवनैन, इन्द्रोदय, भागीरस्य	,,	,,	,,
९२	भारद्वाज	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज	,,	,,	,,
९३	वाल्मीकि	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	यस्क, बाल, बाल्मीकि	वाम	वाम	विष्णु
९४	भार्गव	,,	,,	,,	,,	वत्स, भार्गव, च्यवन, आप्लवान	,,	,,	,,
९५	भार्गव	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वशिष्ठ, इन्द्रप्रमदा, भारद्वजासित	दक्षिण	दक्षिण	शिव
९६	दालभ्य	,,	,,	,,	,,	माण्डव्य, माण्डकेय, विश्वामित्र	,,	,,	,,
९७	दम	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, बार्हस्पत्य, च्यवन	,,	,,	,,
९८	वृद्धविष्णु	,,	,,	,,	,,	वृद्धविष्णु, पैष्यत, शुद्धत्तशय	,,	,,	,,
९९	देवदत्त	,,	,,	,,	,,	देवदत्त, विष्णु, खते	,,	,,	,,
१००	मुद्गल	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	मुद्गल, भार्गव, च्यवन, आप्लवान, जमदग्नि	वाम	वाम	विष्णु
१०१	नितुनन्दन	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	अंगिरस, पौरु, कुत्सात्रसदस्य	,,	वाम	विष्णु
१०२	मुद्गल	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, आर्यश्वा, मौदगल्य	,,	,,	,,
१०३	मिहस	,,	,,	,,	,,	कुशिक, कौशिक, काश, काश्य, काश्यपेय	,,	,,	,,
१०४	मौनस	,,	,,	,,	,,	मौनस्य, भार्गव, वेधस	,,	,,	,,
१०५	मामिल	,,	,,	,,	,,	अमिलु, वाशिलु, कौशिक	,,	,,	,,
१०६	माण्डव्य	,,	,,	,,	,,	वामदेव, माध्यायन, गौतम	,,	,,	,,
१०७	मौकल्य	,,	,,	,,	,,	वाशिल, दारनीषु, सारस्वत	,,	,,	,,
१०८	मित्रयुव	,,	,,	,,	,,	भार्गव, ब्राध्रपतस्य, दिवोदास	,,	,,	,,
१०९	मित्रावरुण	,,	,,	,,	,,	मित्रावरुण, वशिष्ठ, कौडिन्य	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
११०	मौगिला	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	मौगिला, अंगिरस, बार्हस्पत्य	वाम	वाम	विष्णु
१११	मरीचि	,,	,,	,,	,,	कात्यायन, वशिष्ठ, मरीचि	,,	,,	,,
११२	माधुवछन्दस	,,	,,	,,	,,	धनंजय, विश्वामित्र, माधुवछन्दस	,,	,,	,,
११३	मैत्रेतृण	,,	,,	,,	,,	मित्रावरुण, पराशर, मैत्रेंतृण	,,	,,	,,
११४	माधुवछन्दस	,,	,,	,,	,,	जोहित, सिंहल, मधुच्छन्दस	,,	,,	,,
११५	नैधव	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	कश्यप, कौशिक, अवत्सार	वाम	वाम	विष्णु
११६	पराशर	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	वशिष्ठ, शक्ति, पराशर	दक्षिण	दक्षिण	शिव
११७	पाराशर	,,	,,	,,	,,	भार्गव, दनच्य, गुणित	,,	,,	,,
११८	याज्ञवल्क्य	,,	,,	,,	,,	वशिष्ठ, लोमस, याज्ञवल्क्य	,,	,,	,,
११९	पुलस्त्य	,,	,,	,,	,,	मौनस, मरीचि, पुलस्त्य	,,	,,	,,
१२०	पूर्ण	ऋग्वेद	अथर्ववेद	आश्वलायन	आश्वलायन	विश्वामित्र, देवरात, पूर्ण	वाम	वाम	ब्रह्मा
१२१	यस्क	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	भार्गव, वैतहव्य, शावेतश	दक्षिण	दक्षिण	शिव
१२२	यदभू	,,	,,	,,	,,	यदभू, विश्वामित्र, देवरात	,,	,,	,,
१२३	लोमस	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	मरीचि, पुलस्त्य, लोमस	,,	,,	,,
१२४	लोहिताक्ष	,,	,,	,,	,,	लोहिताक्ष, वैतहव्य, विष्णाव	,,	,,	,,
१२५	शाण्डिल्य	सामवेद	गंधर्ववेद	कौथुमी	गोभिल	शांडिल्य, असित, देवल	वाम	वाम	विष्णु
१२६	शाण्डिल्य	,,	,,	,,	,,	शांडिल्य, काल्व, बाल्मीकि	,,	,,	,,
१२७	सांकृतायन	सामवेद	गंधर्व	कौथुमी	गोभिल	सांकृतायन, सांख्य, गौरव	,,	,,	,,
१२८	संभव	,,	,,	,,	,,	संभव, अनुरक्त, देवल, असित	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
१२९	सांस्कृत	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	सांस्कृत, सांख्यायन, किल	दक्षिण	दक्षिण	शिव
१३०	सावर्ण्य/सावर्णि	सामवेद	गन्धर्व	कौथुमी	गोभिल	सावर्ण्य, भार्गव, च्यावन, आप्नवान, और्ष	वाम	वाम	विष्णु
१३१	सिंहल	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	गांगेय, गर्ग, सांख्यसलिल	दक्षिण	दक्षिण	शिव
१३२	शारद्वन्त	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, गौतम, शारद्वन्त	,,	,,	,,
१३३	सत्यवति	,,	,,	,,	,,	अगस्त, जित्त, सत्यवतीत	,,	,,	,,
१३४	शौनक	,,	,,	,,	,,	शौनक, अंगिरस, नर्मदा	,,	,,	,,
१३५	हरिकर्ण	,,	,,	,,	,,	हरिकर्ण, तन्न, धात्रय	,,	,,	,,
१३६	सावर्ण	,,	,,	,,	,,	लोमस, अभद्र, सर्वण	,,	,,	,,
१३७	शौनकेत	,,	,,	,,	,,	वाशिल, शौनकेत, देवल	,,	,,	,,
१३८	सप्तसार	,,	,,	,,	,,	अघमर्षण, नितुण्ड, सप्तसार	,,	,,	,,
१३९	शौनक	,,	,,	,,	,,	शौनक, शौव, भावन	,,	,,	,,
१४०	सांख्यायन	,,	,,	,,	,,	संस्कृत, किल, सांख्यायन	,,	,,	,,
१४१	पाणिनि	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र मधुछन्दस, धनंजय	,,	,,	,,
१४२	व्याघ्रपाद	,,	,,	,,	,,	व्याघ्रपाद, सांस्कृति	,,	,,	,,
१४३	घृतकौशिक	,,	,,	,,	,,	कुशिक, कौशिक, घृतकौशिक	,,	,,	,,
१४४	हरित	,,	,,	,,	,,	वशिष्ठ	,,	,,	,,
१४५	सावर्णि	,,	,,	,,	,,	भार्गव, च्यवन, और्व	,,	,,	,,
१४६	वीतहव्य	,,	,,	,,	,,	वीतहव्य, भार्गव, सावेदास	,,	,,	,,
१४७	लोंगाक्षि	,,	,,	,,	,,	कश्यप, आवत्सार, वशिष्ठ	,,	,,	,,
१४८	कर्दम	,,	,,	,,	,,	कश्यप, असित, देवल	,,	,,	,,

क्रम	गोत्र	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र	प्रवर (संख्या)	शिखा	पाद	कुलदेवता
१४९	मैत्रेय	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यंदिनी	कात्यायन	कश्यप, आवत्सार, रैम्य	दक्षिण	दक्षिण	शिव
१५०	मनु	,,	,,	,,	,,	मनु, दक्ष, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ	,,	,,	,,
१५१	कपिल	,,	,,	,,	,,	कपिल, ओदर, देवरात	,,	,,	,,
१५२	जैमिनि	,,	,,	,,	,,	भार्गव, वीतहव्य, सावेदास	,,	,,	,,
१५३	गालिव	,,	,,	,,	,,	गालिव, यज्ञात, प्रहरी, तौपकल्प	,,	,,	,,
१५४	बिल्व	,,	,,	,,	,,	अत्रि, अंगिरा, वशिष्ठ	,,	,,	,,
१५५	वासुकि	,,	,,	,,	,,	वासुकि, अनन्त, आक्षोभ्य	,,	,,	,,
१५६	अज	,,	,,	,,	,,	विश्वामित्र, मधुच्छन्दस, अज	,,	,,	,,
१५७	मार्कण्डेय	,,	,,	,,	,,	भार्गव, च्यवन, और्व, आप्लवान, जामदग्न	,,	,,	,,
१५८	माध्यंदिनी	,,	,,	,,	,,	वशिष्ठ, मित्रावरुण, कौण्डिन्य	,,	,,	,,
१५९	पातंजलि	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, आमहीयव, औरुक्ष	,,	,,	,,
१६०	उद्दालक	,,	,,	,,	,,	आत्रेय, आर्चमानस, श्यावश्य	,,	,,	,,
१६१	रोहित	,,	,,	,,	,,	रौहित्य	दक्षिण	दक्षिण	शिव
१६२	कर्ण	,,	,,	,,	,,	अंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज वांदन, वाल्वचस	,,	,,	,,

कान्यकुब्ज एवं सरयूपारी ब्राह्मणोत्पत्ति वर्णन—

कान्यकुब्ज का नामकरण—इसके बारे में कहा जाता है कि महोदयपुर के राजा कुसनाभ एवं रानी घृताची से एक सौ कन्याएँ जन्म लीं। सभी कन्याएँ सुन्दर थीं। एक दिन वे अपने बाग में सहेलियों के साथ बिहार करने गई। वहाँ अपने सहेलियों के साथ गाने-बजाने-नाचने लगी। उन सर्वगुण सम्पन्न रूप यौवनशालिनी कन्याओं को देखकर पवन देव प्रकट हो गये। वे उनसे कहने लगे कि हमसे विवाह करने से तुम सबका मानवी भाव समाप्त होकर दैवीय हो जाएगा और अजर-अमर हो जाओगी। राजकुमारियों ने पवन देवता के प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहा कि हमारे पिताजी जिससे विवाह करेंगे, वही निर्णय हमें स्वीकार्य है। उनका यह वचन सुनकर पवन देव ने उनके शरीर मे प्रवेश कर उन्हें कुब्जा बना दिया। अपने कुबड़े स्वरूप में कन्याएँ घर लौट आयीं। उनके कुब्जा स्वरूप को देखकर राजा कुसनाभ ने पूछा हे पुत्रियों! तुम्हारे शरीर की यह दशा कैसे हुई? राजकुमारियों ने सारा वृतान्त पिताजी को बता दिया। देव पराक्रमी राजा ने उनका हाल जानकर कन्याओं को विदा कर दिया और ऋषि-मुनियों से उनके योग्य वर की तलाश करने की चर्चा की। राजा कुसनाभ ने सर्वसम्मति से उन सौ कन्याओं का पाणिग्रहण संस्कार महात्मा ब्रह्मदत्त से करा दिया। ऋषि के पाणिग्रहण करते ही उन कन्याओं का कुबड़ापन दूर हो गया। वे अपने पूर्व स्वरूप को प्राप्त कर ब्रह्मर्षि ब्रह्मदत्त के आश्रम को चली गईं।

जिस प्रदेश में वे कन्याएँ शाप वश कुब्जा हुई थी उसी दिन से वह ब्रहर्षि सेवित देश 'कान्यकुब्ज' नाम से प्रसिद्ध हुआ प्रदेश के निवासी ब्राह्मण कान्यकुब्ज कहलाये। इसी क्षेत्र में विश्वामित्र जी ने इन्द्र के साथ सोमपान किया था जिससे वे राजर्षि से ब्रह्मर्षि हो गये। इस क्षेत्र का मान निम्नलिखित है—

श्रृंगिण स्थलमारंभ्य दालभ्यौकान्तमायतः।
कौशलाद्दक्षिणे देशः कान्यकुब्जः प्रचक्षते॥

अर्थात् श्रृंगीरामपुर से दालभ्य ऋषि के आश्रम तक कौशलदेश नाम अयोध्यापुरी से दक्षिण में कान्यकुब्ज देश कहलाता है। यद्यपि वर्तमान में कानपुर, फतेहपुर, शाहजहाँपुर, भगवन्तनगर आदि कान्य- कुब्ज ब्राह्मणों का निवास स्थल है। कुछ लोग इसे पांचाल देश की भी संज्ञा देते हैं। ये ब्राह्मण अपने कुल, मान,

मर्यादा एवं स्वाभिमान का विशेष ध्यान रखते हैं। इनके पूर्वज कर्मकाण्डी, कर्म-परायण थे। ये गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय के है। कान्यकुब्ज ब्राह्मण जो सरयूनदी के दक्षिण में रहे थे, उन्हें साढ़े दस गाँव रहने के लिए मिले थे-स्थूली, सरवरेज, गोर, शिवराजपुर, ऊमरि, मनोह, गुदरपुर, वरिया, हरिवंशपुर, पचोर और आधे में चीगीसपुर है।

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के गोत्र—

(१) कश्यप (२) भारद्वाज (३) शांडिल्य (४) सांकृत्य (५) कात्यायन (६) उपमन्यु (७) काश्यप (८) धनंजय (९) कविस्त (१०) गौतम (११) गर्ग (१२) कौशिक (१३) वशिष्ठ (१४) वत्स (१५) कृष्णात्रेय (१६) पराशर। इनमें पूर्व के छः षट्कुली कहे जाते हैं। इनकी उपाधियाँ जीवन यापन हेतु किये गये कर्मों के आधार पर है जैसे—

१- वेद का पठन-पाठन करने से- द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि।

२- अध्यापन करने से- उपाध्याय, पाठक, भट्टाचार्य आदि।

३- यज्ञादि अनुष्ठान करने से वाजपेयी, अग्निहोत्री, अवस्थी, दीक्षित आदि।

४- श्रौत-स्मार्त कर्मानुष्ठान करने से- मिश्र कहलाये।

५- शुद्ध निर्मल गुण कर्मों के अनुष्ठान से- शुक्ल कहलाये।

कान्यकुब्ज और सरयूपारी में अन्तर

त्रेता युग में रामचन्द्रजी रावण को मारकर लंका विजय कर सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे। अयोध्या आने पर उनका राज्याभिषेक हुआ। राम राज्य के आते ही सभी लोग सुख पूर्वक रहने लगे। उन्हें इस बात की चिंता थी कि मेरे द्वारा एक प्रकांड पंडित एवं कुलीन ब्राह्मण की हत्या हुई है। ब्रह्महत्या के दोष से दुःखी थे। ऋषियों से परामर्श लेकर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। उस यज्ञ में कन्नौज से दो भाई कान्य एवं कुब्ज भी आये थे। कान्य बड़े थे तथा कुब्ज छोटे थे। यज्ञ में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। जब यज्ञ समाप्त हुआ तब कुब्ज ने सोचा कि अब राम ब्राह्मणों को दक्षिणा देंगे। यह दक्षिणा ब्रह्महत्या एवं जनता से वैध-अवैध तरीके से वसूले गये सम्पत्ति का है। इस दान-दक्षिणा से मुझे भी पाप लगेगा। ऐसा दान नहीं लेना चाहिये। यह सोच कर कुब्ज ऋषि दान-दक्षिणा लेने के भय से चुपचाप अयोध्या से सरयू नदी पारकर सरयू से उत्तर

दिशा की ओर चले गये। उनके साथ बहुत से ब्राह्मण भी चले गये। ये ब्राह्मण सरयू नदी पारकर दक्षिणा लेने के डर से भागे थे, इसलिए इनको सरयूपारीण या सरयूपारी या सरवरिया ब्राह्मण कहा गया।

सरव्याश्चोत्तरे देशे ये गताश्च द्विजोत्तमाः।
सरयू ब्रह्माणास्ते वै संजाता नामभिः किल॥

(उ० भा० ब्रा० गौत्र-शासनावली)

इन ब्राह्मणों की विशेषता है कि जिस गाँव में अपनी पुत्री का विवाह करते है, उस गाँव की कन्या नहीं लेते है। यहाँ तक कि लड़की के ससुराल के गाँव का पानी तक नहीं पीते हैं। वर्तमान् में गोरखपुर, गाजीपुर, जौनपुर, मिर्जापुर, काशी, प्रयाग, अयोध्या, बस्ती, आजमगढ़, गोण्डा आदि स्थानों पर सरयूपारी ब्राह्मण बहुतायत से रहते हैं। इसके अतिरिक्त अन्यत्र भी देखे जाते हैं। मत्स्य पुराण के अनुसार—

अयोध्या दक्षिणे यस्याः सरयूतटगः पुनः।
सारवीवार देशोऽयं गौडास्तदनुकीर्तिताः॥

लोक व्यवहार में सरयू नदी के उत्तर दिशा वाले किनारे को सारब कहते हैं। इसलिए वहाँ के ब्राह्मणों को सारब या सरयूपारी भी कहते हैं।

सरयूपारी ब्राह्मणों के गोत्र

(१) गर्ग (२) गौतम (३) शांडिल्य (४) पराशर (५) सावर्णि (६) काश्यप (७) वत्स (८) भारद्वाज (९) कौशिक (१०) उपमन्यु (११) वशिष्ठ (१२) गार्ग्य (१३) कात्यायन (१४) घृतकौशिक (१५) गर्दभीमुख (१६) भृगु (१७) भार्गव (१८) अगस्त्य (१९) कौडिन्य आदि। परम्परावश १६ गोत्र की ही चर्चा होती है।

सरयूपारी ब्राह्मणों के भेद

सरयूपारी ब्राह्मणों के तीन भेद हैं—

(१) त्रिकुल (तीनकुल)

(२) त्र्योदशकुल (तेरहकुल)

(३) तीसरी श्रेणी

(१) **त्रिकुल—**त्रिकुल में केवल गर्ग, गौतम एवं शांडिल्य गोत्री ब्राह्मण ही आते हैं। ये अपने को श्रेष्ठ मानते हैं।

(२) **त्र्योदशकुल (द्वितीय श्रेणी)**—पयासी, समुदार, धर्मपुरा, चौराकांचनी, गुर्दवान, बृहद्ग्राम, माला, पाला, पीण्डी, नागचोरी, इटाये, त्रिफला तथा इटिया। ये तेरह स्थान है तथा त्रिकुल के अतिरिक्त ये द्वितीय श्रेणी में आते हैं जो उपरोक्त तेरह स्थानों से आते हैं।

(३) **तृतीय श्रेणी**—तृतीय श्रेणी में अगस्त्य, कौडिन्य, पराशर, वशिष्ठ, भार्गव, कात्यायन, गार्ग्य, उपमन्यु, कौशिक तथा भृगु और इनके अतिरिक्त अन्य गोत्र वाले तीसरी श्रेणी में आते हैं। इनके निम्नलिखित स्थान हैं—

खोरिया, कोंडरिया, अगस्त्यपार, सिंघनजोड़ी, नैपुरा, करैली, हस्तग्राम, गुरौली, चारपानी, मीठाबेल, सोनोरा, मार्जनी, पोहिम, कोडिग्राम, कुसौरा और पिपरासी। इसमें उपाध्याय लोग खोदिया और लखिया गाँवों के मूल निवासी हैं। इसके अतिरिक्त धनैती, नदुवा, चौखरी गाँवों में भी हैं।

क्या गोत्र अलग होने पर विवाह हो सकता है, अथवा नहीं?

यह प्राय: चर्चा का विषय बना रहता है कि गोत्र यदि भिन्न है तो विवाह सम्बन्ध किया जा सकता है या नहीं? किन्तु इसमें गहराई तक जाने पर शास्त्रों द्वारा यही निर्देशित है कि भिन्न गोत्र होते हुए भी यदि प्रवर एक है तो विवाह-संबंध नहीं होना चाहिए जैसे—

(क) शांडिल्य, कश्यप और गर्दभी मुख ये तीनों गोत्र भिन्न है पर इन तीनों गोत्रों के प्रवर शाण्डिल्य, असित व कश्यप होने से विवाह संबंध वर्जित है।

(ख) भारद्वाज, गर्ग, रौक्षायण और और्व ये चारों भारद्वाज कहे जाते हैं। इनका परस्पर विवाह संबंध वर्जित है।

(ग) हारित, संकृति, कण्ड, रथीतर, मुद्गल, विष्णु-वृद्ध ये छ: ऋषि अंगिरस पक्ष के हैं। इसलिए इनमें भी विवाह संबंध वर्जित है।

(घ) वीतहव्य, मिश्रयु, शुनक तथा वेणु ये चार ऋषि भृगु पक्ष के होने से भार्गव कहलाते हैं। इनका भी परस्पर विवाह संबंध वर्जित है।

(ङ) भृगु, सावर्णि एवं वत्स गोत्रों के पंच प्रवर क्रमश: भार्गव, च्यवन, आप्व, और्व व जामदग्न्य है। इसलिए इनका भी परस्पर विवाह संबंध वर्जित है।

(च) माण्डव्य, दर्भ, रैवत के साथ भृगु, जमदग्नादि का विवाह संबंध वर्जित है।

कान्यकुब्ज एवं सरयूपारी का भ्रम निवारण

वैदिक शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मण की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के मुख से हुई। मुख से उत्पन्न उस पुरुष को ब्रह्माजी ने ब्राह्मण कहा। तभी से ब्राह्मण ब्रह्मा जी के पुत्र माने गये हैं। पूर्व में ब्राह्मण की एक ही जाति थी। देश भेद से उनके दो भेद हो गये (१) गौड़ ब्राह्मण (२) द्रविण ब्राह्मण। फिर गौड़ व द्रविड़ के पाँच-पाँच भेद होने से उनकी संख्या दस हो गई।

(१) पंचगौड़ ब्राह्मण—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल तथा मैथिल।

(२) पंच द्रविण-कर्नाटक, तैलंग, द्रविण, महाराष्ट्री तथा गुर्जर।

वर्तमान में गौड़ ब्राह्मण की संख्या ११५ से भी अधिक हो गई है। जाति भास्कर में ब्राह्मणों की अनेक शाखायें बतलाई गई है। जिसमें कान्यकुब्ज व सरयूपारी का भी उल्लेख है लेकिन अगर देखा जाय तो सरयूपारी लोग भी कान्यकुब्ज से निकले हुए हैं। ऊपर के लेख में कान्य-कुब्ज दोनों भाइयों का उल्लेख हुआ है। कुब्ज भाई ही सरयूपार आये इस लिए उनके अनुयायी व वंशज सरयूपारी कहलाये, किन्तु मूल रूप से इन्हें कान्यकुब्ज या कुब्ज सरयूपारी ब्राह्मण कहना ही समीचीन होगा तथा तर्कसंगत् भी होगा। इस संबंध में यहाँ देखा जा सकता है—

सारस्वाताः कान्यकुब्जा गौड़ा उत्कल मैथिलाः।
पंचगौड़ा इति ख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिनः॥

(जाति भास्कर (पृ० ८७)

ब्राह्मणों में शाकद्वीपीय ब्राह्मण एवं उनका महत्त्व

भविष्यपुराण में श्रीकृष्ण जी ने नारद से कहा है—

(क) **यत्य भुंक्ते भोजकस्तु गन्धपुष्पादिनाऽर्चितः।**
तस्य भुक्ते स्वयं भानुः पितरो देवतास्तथा॥

(भविष्यपुराण)

अर्थात् हे नारद! जिसके यहाँ गन्ध पुष्पादि से पूजित शाकद्वीपीय ब्राह्मण भोजन करते है, उसके यहाँ स्वयं भगवान् सूर्य, पितर व सभी देवता भोजन करते हैं।

(ख) **भुंजते यस्य वै गेहे भोजका यदुनन्दनः।**
भुंक्ते तत्र स्वयं भानुर्ब्रह्मा विष्णु तथा शिवः॥

(साम्बपुराण)

अर्थात् जिसके यहाँ हे यदुनंदन! शाकद्वीपीय ब्राह्मण भोजन करते हैं, उसके यहाँ स्वयं सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु व शिव भोजन करते हैं।

(ग) **मगानां भोजन भक्त्या शक्त्या दानं प्रकल्पयेत्।**
दशपूर्वान् दशपरानात्मना सह भारत॥
समादाय व्रजेत् स्थानं खेरमिततेजसः।
दैव पर्वोत्सवे श्राद्धे पुण्येषु देवशेषु च॥
भानुं सम्पूज्य विधिवत् भोजकान् भोजयेततः।
पितरः सर्व देवानां सूर्यमाश्रित्य संत्रिता॥
प्रीते सूर्ये तु ते सर्वे प्रीताः स्युर्नात्र संशयः॥

(भविष्य पु० ब्राह्मपर्व)

अर्थात् युधिष्ठिर!

शाकद्वीपीय ब्राह्मणों को भक्तिपूर्वक भोजन करावें, शक्ति के अनुसार दान देवें। इससे वह दस पीढी पूर्व व दस पीढ़ी बाद के अपने वंश के साथ अमित तेजस्वी श्री सूर्य भगवान् का स्थान प्राप्त करता है। अतः देवपर्वों, श्राद्ध एवं पुण्य दिनों में भी सूर्य की विधि-पूर्वक पूजन कर शाकद्वीपीय ब्राह्मणों को खिलावें। क्योंकि पितर, सभी देवताओं के स्वामी श्री सूर्य के आश्रित है। अतः सूर्य के प्रसन्न होने पर सभी पितर प्रसन्न होते हैं। इसमें संशय नहीं है।

विशेष—शाकद्वीपीय ब्राह्मणों पर आक्षेप करने वाली प्रथम और अंतिम पुस्तक है जिसका नाम 'कृत्यसार' है। जिसका निम्न श्लोक है—

''कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्बपत्र मगद्विजाः।
श्राद्धकाले समापन्ने पितरो यांति निराशयाः।

कृत्यसार का लेख प्रमाण शून्य है। इसके पहले के ग्रन्थ कल्पतरु, स्मृत्यर्थसार, मदन पारिजात, स्मृतितत्व। निर्णयसिंधु, धर्मसिन्धु आदि बड़े ग्रंथों या पुराणों में यह श्लोक कहीं नहीं मिलता है।

निष्कर्ष—इस प्रकार अनेक पुराणों एवं अति प्राचीन निबन्धों के कतिपय वचनों से यह सिद्ध है कि देव-पितृकर्म में शाकद्वीपीय ब्राह्मण अतिशय प्रसस्त हैं और वे श्राद्धादि में सर्व-प्रथम दक्षिणादि से पूजनीय हैं। (निर्णय सिंधु पृ० (९२६)

पराशर गोत्र का गौरवशाली भविष्य

माँ कौशल्या एवं माँ देवकी धन्य हैं, जिनको भगवान का माँ बनने का सौभाग्य मिला है। यह भारत भूमि भी धन्य है। इसी तरह पराशर वंश भी धन्य है जहाँ कि विष्णु भगवान् का दसवाँ अवतार कलियुग के अंत में होनेवाला है। कल्किपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, श्रीमद्भागवतपुराण, वायुपुराण में इसका विस्तृत वर्णन देखने को मिलता है। कलियुग के अंत में लगभग आठ सौ कुछ वर्ष व्यतीत होने को रहेंगे, उस समय मलेच्छ, पापी, लोभी राजाओं का संहार करने के लिए संभल नामक ग्राम में विष्णुयश शर्मा नामक ब्राह्मण के घर भगवान् कल्कि का आगमन होगा। विष्णुयश शर्मा का गोत्र पराशर ही होगा। याज्ञवल्क्य जी इनके पुरोहित होंगे। लक्ष्मी जी पद्‌मा के रूप में अवतार लेंगी और कल्कि से उनका विवाह होगा। इनके घोड़े का नाम देवदत्त होगा।

कल्कि अवतार का प्रमुख कारण ब्रह्मद्वेषी क्षत्रियों का संहार करना है। कलियुग की समाप्ति के समय जब संध्या मात्र अवशिष्ट रह जाएगी तब विष्णुयश के पुत्र के रूप में भगवान् कल्कि का अवतार होगा। उस समय आयुधधारी सैकड़ों-हजारों विप्रों को साथ लेकर चारों ओर से धर्मविमुख जीवों, पाखण्डियों और शूद्रवंशी राजाओं का विनाश करेंगे। ये मलेच्छ और बौद्धों का तथा कुथोदरी नाम की राक्षसी का भी बध करेंगे। पुनः भल्लाट् नामक नगर में इनका शैय्याकरण, प्रयाति और राजा शशिध्वज के साथ युद्ध होगा। इसके बाद शशिध्वज की मुक्ति होगी तथा सतयुग का प्रारंभ होगा। सारा अपना कार्य सम्पन्न करने पर भगवान् कल्कि गंगा-यमुना संगम पर शरीर त्याग कर वैकुण्ठ जाएँगे। मत्स्य पुराण के श्लोक द्वारा इसको जाना जा सकता है—

'तस्मिन्नेव युगे क्षीणे संध्याशिष्टे भविष्यति।
कल्की तु विष्णुयशसः पाराशर्य पुरः सरः।
दशमो भाव्यसंभूतो याज्ञवल्क्य पुरः सरः।

(म० पु० ४७/२४८)

पौराणिक कोश के अनुसार इनके माता का नाम सुमति होगा। सम्भल नामक ग्राम विश्वकर्मा द्वारा निर्मित होगा।

इस तरह हम पराशरवंशियों के लिए यह गौरव व सौभाग्य की बात होगी कि भगवान् ने स्वयं इस धरा पर अवतरित होने के लिए पराशर गोत्र का ही चयन किया है।

पराशर गोत्रीय गाँव

ब्राह्मण गोत्रावलीके अनुसार निम्न ३३ गाँव पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों के प्राप्त हुए हैं—

(१) विष्णुस्थलिया
(२) व्यास नगरिया
(३) उज्जैन नगरिया
(४) धर्मप्रस्थिया
(५) पराशर प्रस्थिया
(६) चिरंजिया
(७) मूदड्ट
(८) करनालिया
(९) वशिष्ठस्थलिया
(१०) श्रोत्रिय
(११) ब्रह्मनगरिया
(१२) नरेशवाल
(१३) हाईवाल
(१४) ववणिया
(१५) सोमप्रस्थिया
(१६) समसेरिया
(१७) होड़लिया
(१८) वयाल
(१९) पंचोली
(२०) शोभापुरिया
(२१) बड़ोहतिया
(२२) शुकपुरिया
(२३) धारवाल
(२४) दशालिया
(२५) वेदवाल
(२६) गुरुस्थली
(२७) विचारप्रस्थया
(२८) ववाड़िया
(२९) असोंधिया
(३०) कटवालिया
(३१) सूरजपुरिया
(३२) सोमपानिया
(३३) बल्लभगढ़िया।

सृष्टि के अविस्मरणीय पराशर

जब तक सृष्टि रहेगी, 'पराशर' अविस्मरणीय रहेंगे। सदैव मानव समाज उनका ऋणी रहेगा। वैसे तो जितने भी ऋषि हुए, उनका समग्र योगदान रहा है परन्तु 'पराशर' उनमें से भिन्न थे। उनके द्वारा सभी क्षेत्रों में किये गये अवदान के कारण वेद, पुराण एवं महाभारत आदि धर्म ग्रन्थों में बार-बार महर्षि पराशर का उल्लेख आया है।

वेद व्यास जी महर्षि पराशर के पुत्र थे। इस सन्दर्भ में एक पौराणिक कथानक भी है। एक समय राजा उपरिचर की पत्नी ऋतुमती थी। स्नानोपरान्त उसने अपने पति से अपनी कामना प्रकट की, परन्तु पितरों की आज्ञा से राजा को वन में जाना पड़ा। वन में गये किन्तु पत्नी के ध्यान के कारण उनका वीर्य स्खलित हो गया। उसे उन्होंने एक वट-वृक्ष के पत्ते में रख दिया और स्त्री को भेजने का निश्चय किया। उन्होंने एक बाज पक्षी के द्वारा उसे भेज दिया। बाज पुटक लेकर जा रहा था तभी माँस का टुकड़ा समझकर उससे दूसरा एक बाज पक्षी उलझ पड़ा। उलझाव में पुटक यमुना नदी में गिर पड़ा। उसी समय अद्रिका नामक एक अप्सरा नदी में स्नान कर रही थी। दूसरी तरफ एक विप्रदेव स्नान कर प्राणायाम कर रहे थे। अप्सरा उनका पैर पकड़ ली। ब्राह्मण देव ने उसे मछली होने का शाप दे दिया। वह अप्सरा मछली हो गयी। मछली उस बहते हुए वीर्य को निगल गई। कुछ समय बाद वह मछली एक मल्लाह के हाथ लगी। जब वह मल्लाह के हाथ लगी उस समय उसके गर्भ का दसवाँ माह चल रहा था।

मल्लाह मछली को घर लाया तथा उसका पेट चीरने लगा। उसमें से एक पुत्र और एक कन्या निकले। मल्लाह ने दोनों बच्चों को राजा के हाथों सौंप दिया। वही बालक आगे चलकर 'मत्स्य' नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा कन्या मत्स्यगंधा नाम से प्रसिद्ध हुई। उनके शरीर से मछली की दुर्गन्ध आ रही थी। इधर यमुना में प्राणायाम करते ब्राह्मण ने जब अप्सरा को श्राप दिया तब वह रोने लगी। तब ब्राह्मण को दया आ गई और उन्होंने कहा कि जब तुम्हारे पेट से दो मानव उत्पन्न होंगे तब तुम शाप से मुक्त हो जाओगी। इस तरह मत्स्य व मत्स्यगंधा के जन्म देते ही वह मर कर अमर हो गई।

मल्लाह के घर मत्स्यगंधा सारा गृह-कार्य करती थी। नदी में नाव चलाती

तथा घर एवं पिता के कार्यों में हाथ बटाती थी।

एक बार महर्षि पराशर तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे। मत्स्यगंधा से उन्होंने नदी पार कराने के लिए कहा। महर्षि को लेकर वह नाव से उस पार चल दी। मत्स्यगंधा अति सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता देखकर महर्षि मोहित हो गये। उनके मन में काम भावना जगी। उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया। हाथ पकड़ते ही वह भयभीत होकर आग्रह करने लगी। महाराज! आपकी कुल-जाति और मेरी कुल-जाति अलग है, दूसरी तरफ मेरे शरीर से दुर्गन्ध निकलती है और मैं अभी अविवाहित हूँ। अतः आप मुझे छोड़ दीजिए। पराशर ने अपने तपोबल से उसे कस्तूरी की सुगन्ध वाली बना दिया। तब से वह योजनगंधा अर्थात् सत्यवती हुई। दिन का समय होने से धीवर-कन्या काम वासना के लिए मना कर रही थी, तब पराशर ने तपोबल से घना कोहरा उत्पन्न कर दिया। सत्यवती ने कहा कि आपका वीर्य व्यर्थ नहीं जाएगा और मैं क्वाँरी हूँ, मेरे लिए क्या रास्ता निकाल रहे हैं? पराशर जी ने कहा कि तुम्हारी गर्भ में जो पुत्र होगा वह विष्णु का अंश होगा। तीनों लोकों में उसकी प्रसिद्धि होगी। वह पुराणों का रचयिता होगा, वेद को चार भागों में विभक्त कर उसे और सरल करेगा। दूसरी तरफ तुम हमेशा अविवाहित ही दिखाई दोगी।

इस प्रकार सत्यवती घर लौटी। समयानुसार यमुना द्वीप में कुछ समय बाद एक पुत्र को जन्म दिया। सत्यवती का पुत्र कामदेव सदृश सुन्दर था। यमुना द्वीप में उत्पन्न होने से उसका नाम द्वैपायन हुआ तथा श्याम वर्ण के होने से कृष्ण-द्वैपायन नाम हुआ। जन्म लेते ही वह बालक बड़ा हुआ तथा कहा कि माते! मैं तपस्या के लिए जा रहा हूँ। जब तुम मुझे याद करोगी, मेरी उपस्थिति पाओगी। बाद में वेदों का विभाजन करने से इनका नाम वेद व्यास पड़ा।

पराशर पुत्र व्यास जी नियोग क्रिया द्वारा पांडव व कौरव-वंश को आगे बढ़ाये। अन्यथा यह चंद्रवंश डूब गया होता। पुनः महाभारत नहीं होता और यदि महाभारत नहीं होता तो गीता जैसा शाश्वत ग्रंथ आज विश्व को नहीं मिलता। पुराण आज इस सृष्टि के धरोहर हैं जिन का श्रेय वेद-व्यास जी को ही जाता है। वेद-व्यास जी की कृति से आज पराशर एवं सत्यवती भी अमर हैं। पराशर जी ने इस पावन धरा को अमर-संतति दिया जिनके माध्यम से मानव समाज ऋषिऋण से मुक्त हो रहा है।

महर्षि पराशर के काम-भावना में बहुत बड़ा रहस्य छिपा था। उन्होंने जो क्रिया सत्यवती के साथ किया, उसके लिए वे बहुत पहले से सोच रखे थे और उपयुक्त समय का अवसर आया जानकर वे स्वयं सत्यवती के पास गये और सत्यवती से उपरोक्त प्रसंग की चर्चा की। जब सत्यवती ने उसका हेतु पूछा तब उन्होंने उसे समझाया कि देवि! तुम्हारे गर्भ से मेरे तेज द्वारा श्रीमन्नारायण के अंश के अवतरित होने का समय समीप है अतः तुम इसमें सहयोग करके मातृपद पाकर गौरवान्वित होओ। ऐसा कहकर पराशर जी ने सत्यवती से सहयोग माँगा। सत्यवती के शंकाओं का निवारण करते हुए वेद-व्यास जी के उत्पत्ति का मार्ग प्रशस्त किया जो उपरोक्त प्रसंग में वर्णित है।

मेरा सिर्फ इतना ही कहना है कि अगर महर्षि पराशर जी काम भावना से युक्त होते तो सत्यवती से वे अपने जीवन में कई ऐसे प्रसंगों के साथ जुड़े हुए होते तथा सत्यवती से बार-बार मिलने के लिए लालायित रहते, लेकिन उन्होंने अपने जीवन काल में कोई ऐसा दूसरा प्रसंग की पुनरावृत्ति नहीं की। इससे यह सिद्ध होता है कि महर्षि पराशर जी ने सृष्टि के कल्याणार्थ इस कार्य को स्वीकार किया, न कि व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति हेतु।

अतः उस महान मंत्रद्रष्टा जग परोपकारी ऋषि को सहृदय नमन करते हैं और सृष्टि पर्यन्त यह सृष्टि उनका ऋणी रहेगी।

लोक और अलोक में निवास करने वाले प्राणियों की संख्या परिसंख्या

(१) स्थावर जैसे—मिट्टी, पत्थर, आदि की संख्या का हजारवाँ भाग इस सृष्टि में कीड़े-मकोड़े, मच्छर-मक्खी आदि हैं।

(२) कीड़े-मकोड़े-मच्छर आदि के हजारवें भाग-जलीय जीव हैं।

(३) जलीय जीव के हजारवें भाग पक्षीगण हैं।

(४) पक्षियों के हजारवें भाग पशु (चौपाया) हैं।

(५) पशुओं के हजारवें भाग मनुष्य (दोपाया) है।

(६) मनुष्यों के हजारवें भाग-धार्मिक मनुष्य हैं।

(७) धार्मिक मनुष्य के हजारवें भाग-स्वर्ग जाने वाले हैं।

(८) स्वर्ग जाने वाले के हजारवें भाग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं।

द्वारा—ब्रह्माण्ड पु०(पृ० ९३८)

प्रत्येक दिन में चार युग

प्रतिदिन मनुष्य सतयुग, त्रेता, द्वापर व कलियुग का न केवल अनुभव करता है, अपितु वह इन चतुर्युगियों में जीता भी है। उषा या प्रभात काल, सात्विक काल होता है। इस समय मनुष्य में सात्विक विचार आते हैं। मध्यान्ह को त्रेता कहा गया है। इस काल में व्यक्ति अपने कर्म क्षेत्र में रहता है। इसे रजोगुणीकाल भी कहा जा सकता है। संध्याकाल तमोगुणी होने से द्वापर का परिचायक है। दिनभर की घटित घटनाओं के चिन्तन से मन में कुविचार, वैरभाव, वैमनस्य आदि का उदय होता है। रात्रि-काल तामसी होने से कलियुग है। इस काल में सभी असामाजिक कार्य व्यभिचार, जुआ, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन कर व्यक्ति दुष्कर्मों में लिप्त होता है।

माँ कामाख्या का संक्षिप्त पौराणिक इतिहास

भारत वर्ष के पूर्वोत्तर में राज्य **आसाम** है, जिसका प्राचीन नाम कामरूप था। इसके नामकरण का कारण इस प्रकार बतलाया गया है—''मूल प्रकृति भगवती कामरूपिणी सती (दक्षकन्या, शिव-पत्नी) जिस देश में विराजमान हैं, वह देश उनके नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ कामगिरि (गुवाहाटी के पास) के योनिपीठ में कामाख्या देवी का मंदिर है। तंत्रचूड़ामणि का कहना है''—

योनिपीठं कामगिरौ कामख्या तत्र देवता।
सर्वत्र विरला चाहं कामरूपे गृहे-गृहे॥

अर्थात् कामगिरि में योनिपीठ है। वहाँ कामख्या नामक देवी है। सर्वत्र मैं विरला हूँ, किन्तु कामरूप में घर-घर हूँ। यह प्रदेश गणेशगिरि के शिखर पर स्थित है।

कामाख्या शब्द की व्याख्या इस प्रकार की गई है—जो भक्तों की कामना को पूर्ण करती है अथवा भक्त साधकों द्वारा जिसकी कामना की जाती है, वह 'कामा' है। जिसका 'कामा' नाम है वह 'कामाख्या' है। कालिकापुराण के अध्याय ६१ में इसका विस्तृत वर्णन पाया जाता है।

कामाख्या देवी का मंदिर पहाड़ी पर है। लगभग एक मील ऊँची इस पहाड़ी को 'नील-पर्वत' भी कहते हैं। तंत्रों में लिखा है कि करतोया नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र नदी तक त्रिकोणाकार कामरूप प्रदेश माना जाता है। किन्तु अब वह रूप-रेखा नहीं है। इस प्रदेश में सौभारपीठ, श्रीपीठ, रत्नपीठ, विष्णुपीठ, रुद्रपीठ तथा ब्रह्मपीठ आदि कई सिद्धपीठ हैं। कामाख्यापीठ सबसे प्रधान है। देवी का मंदिर कूचविहार के राजा विश्व सिंह और शिव सिंह का बनवाया हुआ है। इसके पहले के मंदिर को बंगाली आक्रामक काला पहाड़ ने तोड़ डाला था, जो वर्तमान मंदिर से कुछ दूरी पर है। पास में छोटा सा सरोवर है। देवी भागवत् के सातवें स्कन्ध के अड़तीसवें अध्याय में कामाख्या देवी के माहात्म्य का वर्णन है। कामाख्यापीठ के संबंध में कालिकापुराण के इकसठवें अध्याय में निम्नांकित वर्णन पाया जाता है—

''शिव ने कहा, प्राणियों की सृष्टि के पश्चात् बहुत समय व्यतीत होने पर मैंने दक्षतनया सती को भार्या रूप में ग्रहण किया, जो स्त्रियों में श्रेष्ठ थीं। वह मेरी अत्यन्त प्रेयसी भार्या हुई।..... अपने पिता द्वारा यज्ञ के अवसर पर मेरा अपमान देखकर उसने प्राण त्याग किया। मैं मोह से व्याकुल हो उठा और सती के मृतशरीर

को कन्धे पर रखकर समस्त चराचर जगत में भ्रमण करता रहा। इधर-उधर घूमते हुए इस श्रेष्ठपीठ (तीर्थस्थल) को प्राप्त हुआ। पृथ्वी के १०८ स्थानों पर सती के अंगों का पतन हुआ, योग निद्रा (मेरी शक्ति=सती) के प्रभाव से वे पुण्यतम स्थल बन गये। इस कुब्जिका पीठ (कामाख्या) में सती के योनिमंडल का पतन हुआ। यहाँ महामाया देवी विलीन हुई। मुझे पर्वत रूपी शिव में देवी के विलीन होने से इस पर्वत का नाम नील-पर्वत हुआ। यह महातुंग (ऊंचा) पर्वत पाताल के तल में प्रवेश कर गया.....।''

इस तीर्थ स्थल के मंदिर में शक्ति की पूजा योनिरूप में होती है। यहाँ कोई देवी मूर्ति नहीं है। योनि के आकार का शिलाखण्ड है, जिसके ऊपर लाल रंग के गेरू की धारा गिरायी जाती है। और वह रक्ताम्बर से ढका रहता है। इस पीठ के सम्मुख पशु बलि भी होती है। १०८ देवी पीठों के श्रवण मात्र से मनुष्य पाप से मुक्त हो सकता है।

जैसा कि प्रथम भाग में वर्णित है कि 'पराशर' गोत्र के कुलदेवता व कुलदेवी शिव एवं शिवा हैं। बाबा गंगेश्वर की माँ कामाख्या के रूप में शिवा में अपार श्रद्धा थी। वे माँ कामाख्या के अनन्य भक्त थे। माँ उन पर सदैव प्रसन्न रहती थी। उनकी भक्ति की पराकाष्ठा यहाँ तक थी कि शुभाशुभ कोई भी घटना माँ उन्हें स्वप्न में आकार बता देती थी। उन्हीं का छोटा सा विग्रह रखकर वे उनकी उपासना करते थे। वही विग्रह लेकर वे सकराडीह पहुँचे, जहाँ माँ को स्थापित किए। आरंभ में जंगल के बीच एक छोटा सा मंदिर बना, जहाँ बाबा नित्य उनकी आराधना करते थे। कालान्तर बीसवीं सदी के अंत से इस मंदिर को उनके वंशजों ने तथा धामदेव के वंशजों ने भव्यरूप देना प्रारंभ किया। आज वह सकराडीह में माँ कामाख्या का मंदिर एक पर्यटन-स्थल के रूप में विकसित हुआ है। जहाँ दर्शन एवं पूजा-पाठ के लिए लोग सुदूर देशों से भी आते हैं।

बाबा गंगेश्वर के पश्चात क्रमश: उनके ज्येष्ठ संतान लक्षराम व उनके संतान गंगाराम पुजारी रहे हैं। बाबा गंगाराम के नाम ग्राम गहमर में एक पट्टी है जिसे 'गंगाराम बाबा पट्टी' कहा जाता है। यह सरकारी अभिलेखों में भी अंकित है।

माँ कामाख्या के मंदिर के ठीक वायव्य कोण में बाबा गंगेश्वर के वंशजों ने बाबा गंगेश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए भव्य मंदिर-निर्माण का संकल्प लिया था। सदियों से बाबा गंगेश्वर के वंशज एवं गैर गंगेश्वर वंशीय ब्राह्मण क्षेत्र की समृद्धि के लिए प्रत्येक वर्ष बासंती नवरात्र में गाँव-गाँव, घर-घर से संकल्प लेकर नवरात्रि पर्यन्त माँ कामाख्या के मंदिर में 'श्रीदुर्गा सप्तशती' का

पाठ–जपादि अत्यन्त शुचिता पूर्वक करते चले आ रहे हैं। ब्रह्ममयी माँ की कृपा–प्राप्ति ही सर्वोपरि लक्ष्य है।

आगे कुलदेवी माँ कामाख्या के ध्यान, स्तोत्र, कवच, मंत्रादि दिए जा रहे हैं, जिनसे पाठकगण लाभान्वित हो सकें।

माँ कामाख्या का ध्यान

रविशशि युत कर्णा कुंकुमापीतवर्णा,
मणिकनकविचित्रा लोल जिह्वा त्रिनेत्रा।
अभयवरदहस्ता साक्षसूत्रप्रहस्ता,
प्रणतसुरनरेशा सिद्धकामेश्वरी सा॥
अरुण–कमलसंस्था रक्तपद्मासनस्था,
नवतरुणशरीरा मुक्तकेशी सुहारा।
शवहृदि पृथुतुंगा स्वांघ्रि युग्मा मनोज्ञा,
शिशुरविसमवस्त्रा सर्वकामेश्वरी सा॥
विपुल विभवदात्री स्मेरवक्त्रा सुकेशी,
दलितकरकदन्ता सामिचन्द्रावनभा।
मनसिज–दृशदिस्था योनिमुद्रांलसन्ती,
पवनगगनसक्तां संश्रुतस्थानभागा॥
चिन्त्या चैवं दीप्यदग्निप्रकाशा,
धर्मार्थाद्यैः साधकैर्वाञ्छितार्थः॥

—कालिकापुराण

॥ कामाख्या स्तोत्रम्॥

जय कामेशि चामुण्डे जय भूतापहारिणी।
जय सर्वगते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
विश्वमूर्ते शुभे शुद्धे विरुपाक्षि त्रिलोचने।
भीमरुपे शिवे विद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
मालाजये जये जम्भे भूताक्षि क्षुभितेऽक्षये।
महामाये महेशानि कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
भीमाक्षि भीषणे देवि सर्वभूतक्षंकरि।
करालि विकरालि च कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
काल कराल विक्रान्ते कामेश्वरि हरप्रिये।
सर्वशास्त्रसारभूते कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥

कामरूप-प्रदीपे च नीलकूट-निवासिनि।
निशुम्भ-शुम्भमथनि कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
कामाख्ये कामरूपस्थे कामेश्वरि हरिप्रिये।
कामनां देहि में नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
वपानाढ्यवक्त्रे त्रिभुवनेश्वरि।
महिषासुरवधे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
छागतुष्टे महाभीमे कामख्ये सुरवन्दिते।
जय कामप्रदे तुष्टे कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
भ्रष्टाराज्यो यदा राजा नवम्यां नियतः शुचिः।
अष्टाम्याच्च चतुर्द्दश्यामुपवासी नरोत्तमः॥
संवत्सरेण लभते राज्यं निष्कण्टकं पुनः।
य इदं श्रृणुवाद्भक्त्या तव देवि समुद्भवम्॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः परं निर्वाणमृच्छति।
श्रीकामरूपेश्वरि भास्करप्रभे, प्रकाशिताम्भोजनिभायतानने॥
सुरारि-रक्षः-स्तुतिपातनोत्सुके, त्रयीमये देवनुते नमामि।
सितसिते रक्तपिंगविग्रहे, रूपाणि यस्याः प्रतिभान्तितानि॥
विकाररूपा च विकल्पितानि, शुभाशुभानामपि तां नमामि।
कामरूपसमुद्भूते कामपीठावतंसके॥
विश्वाधारे महामाये कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
अव्यक्त विग्रहे शान्ते सन्तते कामरूपिणी।
कालागम्ये परे शान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
या सुषुम्नान्तरालस्था चिन्त्यते ज्योतिरूपिणी।
प्रणतोऽस्मि परां वीरां कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
द्रंष्टाकरालवदने मुण्डमालोपशोभिते।
सर्वतः सर्वगे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥
चामुण्डे च महाकालि कालि कपाल हारिणी।
पाशहस्ते दण्डहस्ते कामेश्वरि नमोऽस्तुते।
चामुण्डे कुलमालास्ये तीक्ष्णद्रंष्ट्र महाबले।
शवयानस्थिते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तुते॥

—योगिनीतन्त्र

॥ कामाख्या-कवचम् ॥

ॐ कामाख्या कवचस्य मुनिबृहस्पति स्मृतः।
देवी कामेश्वरी तस्य अनुष्टुप्छन्द इष्यतः॥
विनियोगः सर्वसिद्धौ नञ्च श्रृण्वन्तु देवताः।
शिरः कामेश्वरी देवी कामाख्या चक्षुषी मम्॥
शारदा कर्ण युगलं त्रिपुरा वदनं तथा।
कण्ठे पातु महामाया हृदि कामेश्वरी पुनः॥
कामाख्या जठरे पातु शारदा पातु नाभितः।
त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु महामाया तु मेहने॥
गुदे कामेश्वरी पातु कामाख्योरूद्वये तु माम्।
जानुनोः शारदा पातु त्रिपुरा पातु जंघयोः॥
महामाया पादयुगे नित्यं रक्षतु कामदा।
केशे कोटेश्वरी पातु नासायां पातु दीर्घिका॥
दन्तसंघाते मातङ्यवतु चांगयोः।
बाह्वोर्म्मा ललिता पातु पाण्योस्तु वनवासिनी॥
विन्ध्यवासिन्यंगुलीषु श्रीकामा नखकोटिषु।
रोमकूपेषु सर्वेषु गुप्तकामा सदावतु॥
पादांगुलि-पार्ष्णिभागे पातु मां भुवनेश्वरी।
जिह्वायां पातु मां सेतुः कः कण्ठाभ्यन्तरेऽवतु॥
पातु नश्चान्तरे वक्षः ईः पातु जठान्तरे।
सामिन्दुः पातु मां वस्तौ विन्दुर्विद्वन्तरेऽवतु॥
ककारस्त्वयि मां पातु रकारोःऽस्थिषु सर्वदा।
लकाराः सर्वनाडिषुः ईकारः सर्व संधिषु॥
चन्द्रः स्नायुषु मां पातु विन्दुर्मज्जासु सन्ततम्।
पूर्वस्यां दिशि चाग्नेय्यां दक्षिणे नैऋते तथा॥
वारुणे चैव वायव्यां कौवेर हरमंदिरे।
अकाराद्यास्तु वैष्णवा अष्टौवर्णाषु मंन्त्रणाः॥
पातु तिष्ठन्तु सततं समुद्भव विवृद्धये।
ऊर्द्धाधः पातु सततं मान्तु सेतुद्वयं सदा॥
नवाक्षराणि मन्त्रेषु शारदा मन्त्रगोचरे।
नवस्वरन्तु मां नित्यं नासादिषु समन्ततः॥

वातपित्तकफंभ्येस्तु त्रिपुरायास्तु त्र्यक्षरम्।
नित्यं रक्षतु भूतेभ्यः पिशाचेभ्यस्तथैव च॥
तत् सेतु सततं पाता क्रव्याद्भ्यो मान्निवारकौ।
नमः कामेश्वरी देवीं महामायां जगन्मयीम्॥
या भूत्वा प्रकृतिर्नित्यं तनोति जगदायतम्।
कामाख्यामक्षमाला भयवरदकरां सिद्धसूत्रैकहस्तां॥
श्वेतोप्रेतोपरिस्थां मणिकनकयुतां कुंकुमापीतवर्णाम्।
ज्ञानध्यान प्रतिष्ठामतिशयविनयां ब्रह्मशक्रादिवन्धा॥
मग्नौ विन्द्वन्तमन्त्रप्रियतमविषयां नौमि विद्धेयैरतिस्थाम्।
मध्ये मध्यस्य भागे सततविनमिता भावहावली या॥
लीला लोकस्य कोष्ठे सकलगुणयुता व्यक्त रूपैकनम्रा।
विद्या विदयैकशान्ता शमनशमकरी क्षेमकत्री वरास्या॥
नित्यं पायात् पवित्र प्रणववरकरा कामपूर्वेश्वरी नः।
इति हरकवचं तनुस्थितं शमयति वै शमनं तथा यदि॥
इह गृहाण यतस्व विमोक्षणे सहित एष विधिः सह चामरैः।
इतीदं कवचं यस्तु कामाख्यायाः पठेद् बुधः॥
सुकृत् तं तुं महादेवी तनुव्रजति नित्यदा।
नाधिव्याधि भयं तस्य न क्रव्यादमो भयं तथा॥
नाग्नितो नापि तोयेभ्यो न रिपुभ्यो न राजतः।
दीर्घायुर्बहुभोगी च पुत्र पौत्रं समन्वितः॥
आवर्त्तयन् शतं देवी मन्दिरे मोदते परे।
यथा तथा भवेद्बुधः संग्रामेऽन्यत्र वा बुधः॥
तत्क्षणादेव मुक्तः स्यात् स्मरणात् कवचस्य तु॥

—कालिकापुराण

जो नित्य इस कवच का पाठ करता है, माँ कामाख्या की कृपा सदैव उसके ऊपर बनी रहती है। वह व्यक्ति रोग, दुःख, अग्निभय, जलभय, शत्रुभय व अकालमृत्यु से सुरक्षित रहता है। आयु, वित्त, पुत्र-पौत्रादि से परिपूर्ण होता है। यदि संकल्प पूर्वक देवी मंदिर में एक सौ पाठ किये जायँ तो उपरोक्त सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस कवच के स्मरण मात्र से भी व्यक्ति का कल्याण हो जाता है।

॥ कामाख्या मूल मंत्र॥

''क्षौं ॐ वषट् ठः ठः''

प्रयोग— (१) शनिवार के दिन यदि द्विज पीपल-वृक्ष के नीचे एक सौ आठ बार मंत्र का जप करता है, तो वह भौतिक रोग तथा आभिचारिक महान् भय-बाधाओं से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

(२) गुरुच को खण्ड-खण्ड करके उसे गौ-दुग्ध में भिगोकर अग्नि में होम करें तो, इससे सभी प्रकार के व्याधियों का शमन होता है।

(३) शंख पुष्पी से हवन करने पर कुष्ठ रोग व अपामार्ग के बीज से हवन करने पर मिर्गी रोग दूर होता है।

(४) उपरोक्त मंत्र के नित्य जप से कारागार में पड़ा व्यक्ति भी मुक्त हो जाता है।

(५) नीचे लिखे मंत्र को १०८ बार ग्रहण में शमी के लकड़ी से हवन करके सिद्ध करें, पुनः भूतादि बाधा से पीड़ित मनुष्य इस मंत्र से अभिमंत्रित भस्म का यदि सेवन करे या सिर पर चढा ले तो वह बाधा रहित हो जाता है।

मंत्र—ॐ क्षौं क्षौं ह्रीं ह्रीं अमुकस्य प्रेतबाधां शान्तय-शान्तय कुरु-कुरु स्वाहा क्षौं ॐ॥ कामाख्या तव दासः नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं।

(६) क्षीर-वृक्ष की समिधाओं एवं त्रयमधु (दूध, दही, घी) से हवन करने पर मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करता है।

(७) मूल मंत्र से खीर द्वारा हवन करके उसे सूर्य को निवेदित करके ऋतुस्नाना स्त्री को भोजन कराये तो अवश्यमेव श्रेष्ठ पुत्र की प्राप्ति होती है।

(८) विल्व वृक्ष की जड़, खीर एवं घी के साथ एक सप्ताह तक हवन किया जाये तो प्रचुर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। वर-कन्या के विवाह में अवरोध होने पर त्रिमधु व लाजा से हवन करें।

(९) वट-वृक्ष की गीली समिधा एवं खीर से हवन करने से एक सप्ताह में अप-मृत्यु भय दूर हो जाता है।

(१०) नवरात्र में मूल मंत्र का जप करने से मनुष्य कालजयी होता है। मन्दार की समिधा के हवन से सर्वत्र विजयी होता है।

॥ कामाख्या-दशाक्षर मंत्र॥

''ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कामाख्यै स्वाहा।''

फतेहपुर सीकरी का संक्षिप्त इतिहास

राजोरगढ़ 'अलवर' से निकले कुछ बड़गूजरों ने जाकर आगरा के पास अपना राज्य स्थापित किया। खावड़ जी सिकरवार ने सन् ५९३ ई० में सीकरी नगर बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया। बाबर के आक्रमण से पहले 'सीकरी' पर बड़गूजर राजपूतों का शाासन था। मुसलमानों ने इसे जीत (फतह) कर इसका नाम 'फतेहपुर सीकरी' रख दिया, किन्तु शीघ्र ही इसे पुनः राजपूतों ने जीत लिया। बाबर के आक्रमण के समय यहाँ का राव, मेवाड़ के महाराणा सांगा का सामन्त था, जो बयाना और खानवा के युद्धों में बड़ी ही वीरता से लड़ा था। कालान्तर अकबर ने दक्षिण की विजय की खुशी में इसपर अपना शिलालेख खुदवाकर लगा दिया और तब से कहा जाने लगा कि यह नगर अकबर ने बसाया था। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक ने ''कौन कहता है अकबर महान था'' नामक पुस्तक में उपरोक्त नगर को सिकरवार राजपूतों के द्वारा बसाया गया सिद्ध किया है। श्री हंसराज भाटिया, भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्थान, नई दिल्ली ने अपनी पुस्तक ''फतेहपुर सीकरी–एक हिन्दू नगर'' में विश्व के २२ इतिहासों से प्रमाणित किया है कि यह नगर सिकरवार राजपूतों का बसाया हुआ है। बाद में मुसलमानों ने जीतकर इसे मुस्लिम आकृति में परिवर्तित कर दिया।

फतेहपुर सीकरी के पतन के बाद यहाँ के सिकरवार क्षत्रिय उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों में फैल गये। अब ये उत्तर प्रदेश के आगरा, हरदोई, गोरखपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, राजस्थान के धौलपुर, बिहार के हजारीबाग, पलामू, गया तथा मध्यप्रदेश के जिला भिण्ड मुरैना में बसते हैं। चम्बल घाटी के दोनों ओर का एक क्षेत्र अभी तक भी सीकड़वाड़ कहलाता है। यहाँ भी सिकरवार अधिक संख्या में बसते हैं। यहाँ के सिकरवार अत्यंत वीर और योद्धा हैं। इनकी तीन शाखायें हैं—

(१) गार्दहिया (२) पार्वतीय (३) बाँकहा सिकरवार।

बाबा गंगेश्वर

''गंगेश्वर'' शब्द गंग+ईश्वर, शब्द से बना है जिसका अर्थ भगवान् शिव है। ''गंगेश्वर'' शब्द के बारे में मत्स्यपुराण के १९३ अध्याय के श्लोक संख्या १४ से २० के मध्य देखने को मिलता है—

''ततो गच्छेत् तु राजेन्द्र गंगेश्वर मनुत्तमम्॥(१४)
श्रावणे मासि सम्प्राप्ते कृष्णपक्षे चतुर्दशी।
स्नानमात्रो नरस्तत्ररुद्रलोके महीयते॥(१५)
पितृणां तर्पणं कृत्वा मुच्यते च ऋणत्रयात्।
गंगेश्वर समीपे तु गंगावदनमुत्तमम्॥(१६)
अकामो वा सकामो वा तत्र स्नात्वा तु मानवः।
आजन्मजनितैः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः॥(१७)

मार्कण्डेय जी कहते हैं राजेन्द्र! तदनन्तर तीर्थ गंगेश्वर की यात्रा करें। वहाँ श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को स्नान मात्र कर लेने से मनुष्य शिव लोक में पूजित हो जाता है तथा पितरों का तर्पण कर देव, पितर और ऋषि इन तीनों ऋणों से मुक्त हो जाता है। गंगेश्वर तीर्थ के समीप गंगावदन नामक श्रेष्ठ तीर्थ है। वहाँ कामना पूर्वक या निष्काम होकर स्नान कर मनुष्य अपने जन्म भर के किए हुए पापों से छुटकारा पा जाता है। इससे संशय नहीं है। उस तीर्थ में स्नान कर मनुष्य को जहाँ शंकर है, वहीं जाना चाहिए। वहाँ पितरों का तर्पण करने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

उपरोक्त 'गंगेश्वर' तीर्थ स्थल नर्मदा नदी के तट पर है जिसके महात्म्य के बारे में बतलाया गया है। बाबा गंगेश्वर के माता-पिता ने उस तीर्थ की महत्ता से अवगत होकर ही शायद उनका नामकरण किया था। कहा गया है कि प्रयागराज में स्नान करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, वह सम्पूर्ण फल यहाँ स्नान व शिव दर्शन से प्राप्त होता है। बाबा गंगेश्वर बचपन से ही शिव एवं शिवा (कामाख्या) के अनन्य भक्त थे। वे एक अग्निहोत्री एवं वैदिक ब्राह्मण थे। ब्राह्मण के सारे लक्षण उनमें विद्यमान थे। बिना सन्ध्या किए एवं माँ कामाख्या तथा शिव को भोग लगाये वे स्वयं अन्न-जल तक नहीं ग्रहण करते थे। वे जहाँ भी जाते थे, अपनी दिनचर्या का निर्वहन करते थे। उनमें एक आदर्श पुरोहित के भी गुण विद्यमान थे। पुरोहित भूत-भविष्य को जानने वाला तथा यजमान का परम हितैषी हो। पुरोहित शब्द चार अक्षरों से बना है—

यथा = पु + रो + हि + त

पु = पुरीष नामक नरक से उद्धार करने वाला।

रो = रोष रहित।

हि = हितैषी, हिंसा रहित।

त = तस्कर (लोभ रहित)

''पुरीषस्य च रोषस्य हिंसायास्तस्करस्यच।
आद्याक्षराणि संगृह्य धाता चक्रे पुरोहितम्॥''

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

(१) पु = नरकों में पुरीष नामक नरक है। पुरोहित शास्त्रोक्त कर्म कराकर यजमान का नरक से उद्धार करता है।

(२) रो = पुरोहित को रोष रहित होना चाहिये। क्रोध व्यक्ति को नरकगामी बनाता है तथा पाप करने के लिए प्रेरित करता है। क्रोध में किया गया कार्य व्यक्ति को पतन की ओर खींचता है। कहा भी गया है—''क्रोध पाप कर मूल''।

(३) हि = विश्व के किसी भी धर्म में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। सबने हिंसा की मुक्तकण्ठ से निंदा की है। पुरोहित किसी का अहित सोच ही नहीं सकता है। सबका हितैषी पुरोहित को होना चाहिए।

(४) त = ''त'' का तात्पर्य तस्करी (चोरी) से है। इसका तात्पर्य यह है कि पुरोहित अपने यजमान द्वारा कराये गये धार्मिक अनुष्ठान में कर्म-लोप न करे। बल्कि शास्त्र-विधि से कर्मकाण्ड कराकर उसका उद्धार करे।

उपरोक्त चारों लक्षण ''बाबा गंगेश्वर'' में था।

बाबा गंगेश्वर की जीवन-यात्रा

बाबा गंगेश्वर चार भाई थे। चारों भाइयों में ये सबसे बड़े सन्तान थे। शेष तीनों भाई क्रमशः बालेश्वर, ताड़केश्वर एवं रामेश्वर थे। बाबा बालेश्वर के वंशज वर्तमान् में उत्तर प्रदेश राज्य के बलिया जनपद में हैं। बाबा ताड़केश्वर के वंशज इसी प्रदेश के गोरखपुर व बस्ती जनपद में हैं। तथा रामेश्वर बाबा के वंशज उड़ीसा राज्य के जगन्नाथपुरी में हैं। बाबा गंगेश्वर के चार संतान थे (१) लक्षराम (२) पलूष (३) पदुम (४) नागेश्वर। बाबा उस समय फतेहपुर सीकरी में निवास करते थे जहाँ पर धामदेव का शासन था। धामदेव के ये कुल पुरोहित थे।

एक बार बाबा के मन में तीर्थयात्रा करने की भावना जगी आवागमन के साधन का अभाव था। चलते-चलते यात्रा के मध्य वे सोनवर्षा नामक स्थान पर पहुँचे जो गहवन में था। सोनवर्षा वर्तमान में बुढवा महादेव से दक्षिण दिशा में है। गहवन का ही वर्तमान् नामक गहमर है जो उत्तरप्रदेश राज्य के गाजीपुर जनपद

के पूर्वी–दक्षिणी छोर पर है। गाजीपुर का प्राचीन नाम गाधिपुरी था। गाधि राजा विश्वामित्र जी के पिता थे जिनकी कुटिया आज भी गंगातट पर है।

सोनवर्षा में रात्रि–विश्राम करने के पश्चात् बाबा पुनः यात्रा प्रारंभ किए। यात्रा के मध्य ही वे चौसा नामक स्थान पर पहुँचे जो वर्तमान में बिहार प्रांत के बक्सर जिले में है। यह एक ऐतिहासिक स्थल है जहाँ शेरशाह सूरी व हुमायूँ का युद्ध हुआ था। यहीं पर कर्मनाशा नदी का मिलन गंगा नदी में हुआ है। चौसा पहुँचने पर वे एक टीला के ऊपर बैठे। थकान के कारण उन्हें निद्रा आ गई। स्वप्न के माध्यम से माँ कामाख्या ने उन्हें अवगत कराया। उन्होंने कहा—''उठो! तुम्हारा राजा (धामदेव) इस समय घोर संकट में है और उसके लिए तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है अपने कर्तव्यों का निर्वहन करो।'' अचानक बाबा की निद्रा भंग हुई और वे तुरन्त यात्रा स्थगित कर फतेहपुर सीकरी के लिए प्रस्थान किए। वहाँ पहुँच कर धामदेव में एवं बाबा में गहन मंत्रणा हुई। धामदेव का सम्बन्ध बाबा से यजमान और पुरोहित का था।

धामदेव का शासन फतेहपुर सीकरी में था। मुगल उस समय उनके ऊपर आक्रमण किए थे। धर्म–विरोधी यवन जीत के उन्माद में अत्याचार करने लगे। प्रत्येक व्यक्ति के सहन की सीमा होती है। धर्म की रक्षा के लिए एवं स्वकुल की मर्यादा के रक्षार्थ धामदेव ने अपने कुल पुरोहित बाबा गंगेश्वर, दैवज्ञ राकेश मुनि, कवि विद्याधर, वैद्य विमल जी कुटुम्बी जनों एवं साथियों तथा सैनिकों सहित राज्य को छोड़ देना ही उचित समझा।

सन्ध्या का समय था। सूर्य अस्ताचलगामी था। अंधकार झाँक रहा था। गोधूलि–मुहूर्त व्यतीत ही होने वाला था। गोधूलि मुहूर्त के बारे में ऐसी मान्यता है कि इसमें किए गये कार्य अश्वयमेव सफल होते हैं। यह सबसे बलवान लग्न है। अनुकूल समय को ध्यान में रखते हुए आगे–आगे बाबा माँ कामाख्या के विग्रह ऊँटनी पर लेकर सभी के साथ चल दिए। सनातन धर्म में यह मान्यता है कि व्यक्ति जब स्थायी रूप से स्थान परिवर्तन करता है तब अपने कुलदेवता को साथ ले जाता है। इसके पूर्व माँ ने इन्हें रात्रि में ही स्वप्न दिया था कि एक बार मुझे यदि जिस स्थान पर रख दोगे मैं वहीं स्थिर हो जाऊँगी। चलते–चलते वे गहवन के शंकरगढ़ में पहुँचे जो वर्तमान् में सकराडीह के नाम से जाना जाता है। वहाँ उन्होंने देखा कि एक चूहा, बिल्ली का पीछा कर रहा है और बिल्ली भाग रही है। इस शकुन को वे मन ही मन भाँप लिए।

माँ कामाख्या की प्रेरणा से बाबा गंगेश्वर ने इस शुभ भूमि को निवास के लिए चुना। उन्हें यह आभास हुआ कि दोनों कुलों की वृद्धि के लिए यह भूमि उपयुक्त है। स्वप्न की बात बाबा ने धामदेव को बताई। शंकरगढ़ (सकराडीह) उस समय घने जंगल के रूप में था जहाँ अनेक जीव-जन्तु निवास करते थे। उसमें हिंसक व अहिंसक दोनों थे। शंकरगढ़ से कुछ दूरी पर ही पूर्व एवं दक्षिण में कर्मनाशा नदी है तथा कुछ ही दूरी पर उत्तर में माँ गंगा है। वहीं शंकरगढ़ पर बाबा ने माँ भगवती की स्थापना की।

शंकरगढ़ खरवारों के अधीन था। उस समय खरवारों का राजा चिरो (शशांक) था। उसके कुल देवता भूल्लन बाबा थे। वे उनकी उपासना करते थे।

बाबा गंगेश्वर एवं धामदेव तथा उनके सैनिकों को देखकर खरवारों ने उन पर हमला कर दिया। दोनों तरफ से भयंकर युद्ध हुआ। अंत में चिरो को पराजय हाथ लगी। धामदेव राव के चचेरे भाई ने चिरो राजा का शिर काटकर थाल में लाकर अपने भ्राता श्री के सामने रख दिया। इसके बाद में कुल पुरोहित 'गंगेश्वर' महाराज ने राजा के रुप में धामदेव राव का राजतिलक किया। यह घटना लगभग 17 मार्च 1527 ई० के बाद की है। खरवार वंश को पराजित करने के पश्चात् धामदेव ने वहाँ अपना गढ़ बनाया। माँ कामाख्या का वहीं एक छोटा सा मंदिर बना तथा बाबा नित्य उनकी पूजा-अर्चना करते थे। धीरे-धीरे दोनों वंश का विस्तार होने लगा। वंश विस्तार के साथ-साथ सोनवर्षा के पास शिव मंदिर की भी स्थापना किए जिसे बुढ़वा महादेव के नाम से जाना जाता है। कर्मनाशा तट पर अवस्थित ग्राम अमौरा में भी बाबा ने पश्चिमी छोर पर एक शिवमंदिर की स्थापना की। बाबा ने धामदेव जी को सोनवर्षा स्थान का परिचय भी बतलाया इसके अतिरिक्त रामदास जी की मठिया जो चित्रकूट से संबंधित है, उसका एवं बाघनारा का भी परिचय कराया। गहवन नाम का राक्षस त्रेताकाल में रहता था जिसका वध दशरथ-पुत्र शत्रुघ्न ने किया था।

(चिरो का कटा शिर राजा धामदेव राव के चचेरे भाई ने लाकर राजा के सामने रख दिया। विजयोपरान्त राजपुरोहित गंगेश्वर बाबा ने अपने राजा का राजतिलक वैदिक मंत्रोच्चारण से किया। यह घटना १७ मार्च १५२७ ई० के बाद की है।)

तारनहार भगवान् वेद-व्यास

महर्षि व्यासजी नारायण के कला अवतार थे। वे महर्षि पराशर के पुत्र तथा शक्ति के पौत्र थे। इनका जन्म कैवर्तराज की पोष्यपुत्री महाभागा सत्यवती के गर्भ से यमुना-द्वीप में हुआ था। इसीलिए इन्हें पाराशर्य और द्वैपायन भी कहा जाता है। श्याम वर्ण के होने के कारण कृष्ण द्वैपायन कहलाये। बदरीवन में रहने के कारण उन्हें बादरायण भी कहा जाता है। इन्हें अंगों और इतिहास सहित सम्पूर्ण वेद और परमात्मतत्त्व का ज्ञान स्वत: प्राप्त हो गया था। कलियुग के मनुष्यों की आयु और शक्तिक्षीण होते देखकर वेदों का व्यास (विभाग) किया। इसीलिए वे वेदव्यास कहलाये। पुराणों को लुप्त होते देखकर इन्होंने पुराणों का प्रणयन किया। अष्टादश पुराणों के अतिरिक्त उप पुराण एवं अनेक ग्रंथों की रचना इन्होंने की है। पंचम वेद अर्थात् महाभारत के भी रचनाकार वेद व्यास जी ही हैं। महाभारत को पंचम वेद या कार्ष्णवेद भी कहा जाता है। श्रुतियों का सारांश महाभारत में देखने को मिलता है।

एक बार महाभारत लिखने से पूर्व व्यासजी ने गणेश जी से इसे लिखने की प्रार्थना की तो गणेश जी ने कहा लिखते समय यदि मेरी लेखनी क्षणभर भी न रुके तो, मैं यह कार्य कर सकता हूँ। मुझे स्वीकार है; व्यास जी ने कहा—किंतु आप भी बिना समझे एक अक्षर भी न लिखें।

कहा जाता है कि भगवान् व्यास ने आठ हजार आठ सौ ऐसे श्लोकों की रचना की है, जिनका ठीक-ठीक अर्थ वे और व्यासपुत्र शुकदेव जी ही समझते हैं। जब गणेश जी ऐसे श्लोकों का अर्थ समझने के लिए कुछ देर रुकते, तब तक व्यासजी और कितने ही श्लोकों की रचना कर डालते थे। इस तरह यह पंचम वेद दोनों के सहयोग से लिपिबद्ध हुआ।

जिस समय परीक्षित् नन्दन जनमेजय के सर्पयज्ञ की दीक्षा लेने का संवाद व्यास जी को मिला तब वे शिष्यों सहित यज्ञ मण्डप में पधारे। उन्हें देखकर जनमेजय बड़े हर्षित हुए। जनमेजय के अनुरोध से व्यासजी ने वैशम्यपायन को महाभारत सुनाने का आदेश दिया।

'व्यासो नारायण: साक्षात्' इस वचन के अनुसार वेद व्यासजी नारायण के अंशावतार हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार भगवान् कृष्ण कहते हैं कि समय के

फेर से लोगों की समझ कम होती है, आयु भी कम होने लगती है, तब प्रत्येक कल्प में सत्यवती के गर्भ से व्यास के रूप में मैं प्रकट होता हूँ और वेद रूपी वृक्ष का विभिन्न शाखाओं के रूप में विभाजन करता हूँ।

धृतराष्ट्र के पुत्रों द्वारा अधर्म पूर्वक पाण्डवों को राज्य से बहिष्कृत कर दिए जाने पर सर्वज्ञ व्यास जी वन में उनके पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने कुन्ती सहित पाण्डवों को धैर्य बँधाया और उनकी एक चक्रा नगरी के समीप एक ब्राह्मण के घर में एक मास तक रहने की व्यवस्था कर दी।

व्यासजी एक मास बाद पुनः पाण्डवों के समीप पहुँचे। बहुत सारे उपदेश देने के पश्चात् महाराज पृषत की पौत्री सती-साध्वी कृष्णा के पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाकर पाण्डवों को उसके स्वयंवर में पांचाल नगर जाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि सती द्रौपदी तुम्हीं लोगों की पत्नी नियत की गई है।

शुद्धात्मा व्यासजी विपत्ति ग्रस्त निश्च्छल पाण्डवों की समय-समय पर पूरी सहायता करते रहे। अरण्यावास के समय एक बार जब युधिष्ठिर अत्यन्त चिन्तित थे, तब त्रिकालदर्शी व्यासजी उनके पास पहुँचे और उन्हें समझाते हुए कहा— भरतश्रेष्ठ! अब तुम्हारे कल्याण का सर्वश्रेष्ठ अवसर उपस्थित हो चला है। तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारे शत्रु शीघ्र ही पराजित होंगे। इस तरह धर्मराज युधिष्ठिर को आश्वस्त करते हुए सर्वसमर्थ व्यासजी ने उन्हें मूर्तिमती सिद्धितुल्य 'प्रतिस्मृति' नामक विद्या प्रदान की, जिसके द्वारा वे देवताओं का दर्शन करने लगे। इतना ही नहीं व्यासजी ने पाण्डवों के हित के लिए और भी अनेक शुभ सम्मतियाँ प्रदान की।

व्यासजी समस्त संसार के गुरु हैं। प्राणियों को परमार्थ का मार्ग दिखाने के लिए ही उनका अवतार हुआ। गुरुरूप में उनकी विशेष आराधना आषाढ़ पूर्णिमा को होती है, जिसे गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं। सारा ज्ञान-विज्ञान वेदों में सूत्र रूप में तथा पुराणेतिहास ग्रंथों में उपबृंहण के रूप में निरूपित है, जिसके द्रष्टा-स्रष्टा वेदव्यासजी हैं, इसीलिए ये वाङ्मयावतार भी कहलाते हैं। सब कुछ ज्ञान-विज्ञान हमें वेदव्यासजी की कृपा से प्राप्त हुआ है, इसीलिए वे कृपावतार भी कहे जाते हैं। समस्त जगत पर उनका महान अनुग्रह है। जितने विस्तार से पुराणों में भगवान् के अवतारों को लीलाचरित्र वर्णित है, वह हमें वेदव्यासजी की कृपा से ही प्राप्त

है, वह चाहे श्रीमद्भागवतपुराण हो, विष्णुपुराण हो या अन्य पुराण हो। भगवान् के अवतारों की इयत्ता न होने की बात करते हुए व्यासजी बताते हैं कि जैसे अगाध सरोवर से हजारों छोटे-छोटे नाले निकलते हैं, वैसे ही सत्यनिधि भगवान् श्रीहरि के असंख्य अवतार हुआ करते हैं। ऋषि, मनु, देवता, प्रजापति, मनुपुत्र और जितने भी महान् हैं सब भगवान् के ही अंश हैं।

परमात्मा की सोलह कलाओं में एक कला अन्न में मिलकर अन्नमश कोष के द्वारा प्रकट हुई। उद्भिज योनि द्वारा परमात्मा की एक कला का विकास होता है। इसी क्रम में परवर्ती जीवयोनि स्वेदज में ईश्वर की दो कला, अण्डज में तीन कला और जराजुय के अन्तर्गत पशु योनि में चार कलाओं का विकास होता है। तदुपरान्त मनुष्य योनि में पाँच कलाओं का विकास होता है। किन्तु यह साधारण मनुष्य तक सीमित है। जिन मनुष्यों में पाँच से आठ कला तक का विकास होता है वे साधारण मनुष्य में न आकर विभूति कोटि में आते हैं। इस प्रकार एक कला से लेकर आठ कला तक शक्ति का विकास लौकिक रूप में होता है। नवम कला से लेकर षोडश (सोलह) कला तक का विकास अलौकिक विकास है जिसे जीव कोटि नहीं अपितु अवतार कोटि कहते हैं। इनमें भी नवम कला से पंद्रहवीं कला तक का विकास अंशावतार कहलाता है एवं षोडश कलाकेन्द्र पूर्ण अवतार के केन्द्र हैं।

महाभारत आदि ग्रंथों में भी व्यासजी ने भगवान् के अवतार कथाओं का वर्णन किया है। इनकी कृपा प्रसाद से ही लोक में भगवान् की लीला कथाओं का ज्ञान हुआ। वेदादि ग्रंथों में तो सूत्ररूप में अवतारों का निरुपण है। पिता पराशर एवं माता सत्यवती धन्य हैं जिन्होंने इस लोक को अमर संतति दिया। व्यासजी की इस जगत पर कितनी कृपा है, यह विचार का विषय है। इतना ही नहीं, वे प्रत्येक कल्प के द्वापर युग में विभिन्न नामों, रूपों में अवतरित होकर अपने वाङ्मय द्वारा लोगों को भगवान् की लीला-कथाओं का ज्ञान कराते हैं। लोग उनके मुखकमल से निःसृत वाङ्मयरूपी सुधा का पान करते हैं—

''यस्यास्यकमलगलितं वाङ्मयमृतं जगत् पिबति।''

(वायुपुराण-१/१/२)

हिमालय के रम्य शिखर पर जहाँ नर-नारायण नाम के दो पर्वत हैं। भागीरथी

के समीप विशाला-बदरी नामक स्थान में भगवान् व्यासजी का आश्रम था। यहीं पर उन्होंने वेदों को चार भागों में विभक्त कर अपने प्रमुख शिष्यों को उन संहिताओं का अध्ययन कराया था। पैल ने ऋग्वेद, वैशम्पायन ने यजुर्वेद, जैमिनि ने सामवेद तथा सुमन्तु ने अथर्ववेद संहिता का सर्व प्रथम पारायण किया था। इसी आश्रम में महाभारत युद्ध के पश्चात् व्यासजी ने लगभग तीन वर्ष में महाभारत की रचना की। इसे उन्होंने अपने पाँचवें शिष्य लोमहर्षण को पढ़ाया था। यह एक विलक्षण ग्रंथ है। इसकी विलक्षणता इस श्लोक से देखा जा सकता है—

''**दशार्थासर्ववेदेषु भारतं तु शतार्थकम्।**''

अर्थात् वैदिक, प्रत्येक ऋचाओं के दस अर्थ है, परन्तु महाभारत के प्रत्येक श्लोक के सौ अर्थ हैं।

वास्तव में चंद्रवंश के दो भूषण हैं—वासुदेव कृष्ण एवं द्वैपायन कृष्ण। भगवान् व्यास ने अपनी साधना रत जीवन सरस्वती नदी के तट पर ही बिताया है। हरियाणा प्रांत के अम्बाला मंडलवर्ती जगाधारी (यमुनानगर) नामक स्थान से लगभग पच्चीस किलोमीटर उत्तर में विलासपुर नामक समृद्ध गाँव है। इसी गाँव का प्राचीन नाम व्यासपुर है। राजकीय अभिलेखों के अनुसार लगभग छः सौ वर्ष पुराना गाँव है। इसी के दक्षिण में व्यास सरोवर है, जिसे जनता व्यास-आश्रम मानती है। इससे कुछ ही दूरी पर सरस्वती नदी है। इसके अतिरिक्त भारत के कई प्रांतों में उनके आश्रमों का भी वर्णन मिलता है जैसे व्यासाश्रम, व्यासगुफा, व्यासटीला, बासम, वेदव्यास वारासेय, व्यासस्थली इत्यादि। मथुरा-आगरा के मध्य, महाकवि सूर के साधनास्थल रुनकता गाँव से छः मील दूर व्यासजी का आश्रम है, जहाँ उनका मंदिर बना है। वाराणसी के पास भी व्यासनगर

व्यासजी सदाचार की प्रतिष्ठा में मातृ-पितृ भक्ति को प्रधान मानते हैं। वे माता को सर्वतीर्थमयी तथा पिता को सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप मानते हैं। इसलिए सब प्रकार से यत्नपूर्वक माता-पिता का पूजन करना चाहिए।

यथा—

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्॥

(पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड)

भारतीय पारम्परिक मान्यता उन्हें अमर मानती है। आज भी वर्षगाँठ के अवसर पर जिन सप्तचिरंजीवियों का स्मरण-पूजन किया जाता है, उनमें व्यासजी एक प्रमुख घटक है—

''अश्वत्थामा वलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः॥''

कदाचित् भगवान् व्यासजी ऐसी कृपा न करते तो लोक भगवतकथा ज्ञान से शून्य ही रहता। ऐसे कृपावतार तथा विशुद्ध विशाल बुद्धि- वैभव से सम्पन्न वेदव्यासजी को बारम्बार नमस्कार है—

''नमोऽस्तुते व्यास विशालबुद्धे।''

महामृत्युञ्जय मंत्र के मृतसंजीवनी होने का रहस्य

एक समय भगवान् शंकर सुरम्य कैलास-पर्वत के शिखर पर भगवती पार्वती सहित विद्यमान थे तभी पति को प्रसन्न देखकर पार्वतीजी ने कहा—हे देव! आपने प्रणव सहित मंत्र का उपदेश दिया, इसलिए प्रणव-स्वरूप को मैं जानना चाहती हूँ। इसका आप वर्णन कीजिए। प्रार्थना को सुनकर शंकरजी ने कहा कि प्रणवार्थ का ज्ञान ही मेरे स्वरूप का ज्ञान है। प्रणव स्वरूप मंत्र सब विद्याओं का बीज है। वह वटवृक्ष सदृश है। वटवृक्ष का बीज छोटा है पर उसमें बहुत विशाल वृक्ष छिपा होता है। ॐकार मेरे मुख से उत्पन्न होने के कारण मेरे ही स्वरूप का बोधक है। यह वाच्य है, मैं वाचक हूँ, यह मंत्र मेरी आत्मा है। इसके स्मरण से मेरा ही स्मरण होता है। मेरे उत्तर के मुख से अकार, पश्चिम के मुख से उकार दक्षिण के मुख से मकार, पूर्व के मुख से बिन्दु और मध्य के मुख से नाद उत्पन्न हुआ है। इन पाँचों मुखों से निर्गत हुए 'ॐ' यह एकाक्षर बना। सम्पूर्ण नाम-रूपात्मक जगत्, स्त्री पुरुषादि भूतसमुदाय एवं चारों वेद-सभी इसी मंत्र में व्याप्त हैं और यह शिवशक्ति का बोधक है।

विश्वेश्वर संहिता ८/१६/२०

प्रो हि प्रकृतिजातस्य संसारस्य महोदधेः।
नवं नावान्तरमिति प्रणवं वै विदुर्बुधाः॥

वि० स० अ० १७/४

अर्थात् (प्र) प्रकृति से उत्पन्न हुए संसार-सागर के लिए (नवम्) यह प्रणव नौका रूप है, इस कारण विद्वत् लोग इसे प्रणव कहते हैं।

प्रः प्रपंचो हि नास्ति यो युष्माकं प्रणवं विदुः
प्रकर्षेण नयेद्यस्मान्मोक्षं वः प्रणवं विदुः ११ (५)

(प्र) प्रपंच (न) नहीं है (वः) तुममें, अर्थात् जिसके जपने से संसार नहीं रहता उसका नाम "प्रणव" है। इस प्रणव को तारक मंत्र कहा जाता है। क्योंकि इस मंत्र द्वारा प्राणी मात्र भव-सागर से तर जाता है। भगवान् शंकर कहते हैं—

"हे देवि! सर्व मंत्रों का शिरोमणि इस ओंकार को ही मैं काशी में प्राण त्याग करने वाले जीवों को मुक्ति हेतु देता हूँ।"

शरीर में आधार, मणिपुर, हृदय, विशुद्धिचक्र, आज्ञाचक्र, शक्ति और शान्ति-ये कलाक्रम से प्रणव के स्थान हैं।

भगवान् शंकर ब्रह्मा-विष्णु से कहते हैं—

अनेन मन्त्रकन्देन भोगो मोक्षश्च सिध्यति।
सकला मन्त्रराजानः साक्षाद् भोगप्रदा शुभाः॥

अर्थात् उस-उस मंत्र से वह-वह सिद्धि होती है, किन्तु प्रणव-मंत्र से सब सिद्धियाँ प्राप्त होती है। यह सकल मंत्रों का मूल है और भोग-मोक्ष दोनों को देनेवाला है।

१०८ करोड़ जप से मनुष्य प्रबुद्ध होकर शुद्ध योग को प्राप्त होता है और शुद्ध योग से निःसन्देह जीव मुक्त हो जाता है।

इस्लाम में भी पाँच नमाजों का विधान है जो शिव के पंचवक्त्र की क्रमशः उपासना है। ईसाई में भी प्रणव का ही स्वरूप (✝) है जो ध्यान से देखने पर शिव लिंग एवं उसके अर्घा जैसा दिखाई देता है। चिकित्सक जन एलोपैथी या होम्योपैथी में RX का व्यवहार सर्व प्रथम करते हैं, तदुपरान्त ही रोगी को औषधि लिखते हैं, जिसका तात्पर्य 'रेफर टू जीसस क्राईस्ट' है। अर्थात् वे भी उस रोगी को भगवान शिव को ही शरणागत कराते हैं।

आगे वर्णित मंत्र में पाँच ॐ (प्रणव) द्वारा उसे सम्पुट किया गया है। पाँचों प्रणव पाँचों मुख के प्रतीक हैं जिनके संयोग से मृत्युंजय मंत्र 'मृत-संजीवनी' का स्वरूप पकड़ लेता है। यह स्पष्ट हो जाता है।

'**एकोऽहं बहुस्याम्**'-परब्रह्म की यह इच्छा होती है और महाप्राण की अलौकिक गति प्रस्तुत होती है। उसका सूचन महाप्राण अक्षर 'ह' से होता है। प्रकृति विकृत होने लगे, पंचतन्मात्रा उद्भूत हों, शब्दगुण आकाश सृष्टि को झेलने के लिए तत्पर हो जाय, उस दृश्य का आभास 'औ' की ध्वनि करा रही है। ज्=जन्म, ऊ=उद्भव-विकास-विस्तार, ँ =०-शून्य-प्रलय। इस प्रकार जूँ सृष्टि की तीनों अवस्थाओं का दिग्दर्शन करा रहा है। सः=पुरुष=विराट्-यहीं तो प्रलय के समय शेष रह जाता है। 'पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्' के साथ यथापूर्वमकल्पयत् इन वाक्यों का स्मरण ऐसे समय क्यों नहीं होगा? ऐसी सृष्टि भूर्भुवः स्वः की त्रिलोकी है। उस त्रिलोकी का निवासी उपासक त्र्यम्बकेश्वर के सामने जपयज्ञ कर रहा है और फलस्वरूप वह सहज ही अपुनरावृत्ति वाली मुक्ति प्राप्त करता है।

आरोग्यता एवं दीर्घायु हेतु महामृत्युञ्जय मंत्र एवं जप-विधान

मृत संजीवनी मन्त्रो मम सर्वोत्तमः स्मृतः।

(सतीखण्ड–शिवपुराण)

शिवपुराण के सतीखण्ड में इसके बारे में विस्तृत भाष्य है। वहाँ शुक्राचार्य जी ने इसे (महामृत्युंजय मंत्र) 'मृतसंजीवनी' कहा है। स्वयं इन्होंने दधीचि को भी इसका उपदेश दिया था। ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृति खण्ड के ५९वें अध्याय में कहा गया है कि भगवान् श्रीकृष्ण ने अंगिरा की पत्नी को मृत्युंजय–ज्ञान दिया था। वैसे तो कई प्रकार के जैसे त्र्यक्षर, पंचाक्षर, शताक्षर आदि कई मृत्युंजय मंत्र हैं परन्तु सर्वाधिक प्रचलित निम्नलिखित मंत्र है, जिसके जप से रोग, अपमृत्युभय, दुःख–दारिद्रय आदि का नाश होता है।

मंत्रः–

ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ सः जूँ हौं ॐ॥

यह मंत्र पाँच ॐ द्वारा सम्पुट है। पाँचों ॐ शिव के पाँचों मुख के प्रतीक हैं। शिवलिंग ॐकार का ही प्रतीक है। किसी भी शिवमंदिर में पूर्वाभिमुख होकर इस दृश्य को समझा जा सकता है। प्रायः उपरोक्त मंत्र के जप का विधान सवा लाख की संख्या में हैं। परन्तु कम से कम ग्यारह हजार से लेकर छियासठ हजार तक भी जप किया जा सकता है। जप समाप्ति के पश्चात् दशांश हवन, दशांश तर्पण एवं दशांश मार्जन एवं दशांश ब्राह्मण भोजन का भी विधान है।

पुरुष देवता के जप की सिद्धि के लिए उसकी शक्ति का मंत्र जप दशांश संख्या में होना चाहिए। अतः महामृत्युंजय मंत्र की सिद्धि के लिए अमृतेश्वरी मंत्र का भी जप अवश्य करना चाहिये।

अमृतेश्वरी मूल मंत्र :

''ॐ श्रीं ह्रीं मृत्युंजये भगवति चैतन्यचन्द्रे हंस संजीविनि स्वाहा''

किसी पवित्र स्थान में या शिवालय में आचमन, प्राणायाम्। गणेश–स्मरण, पूजन–वन्दन के बाद तिथि–वारादि का उच्चारण करते हुए संकल्प करें। तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर विनियोग व न्यास करें। किसी भी कर्म में विनियोग के अभाव में उसका फल न्यून होता है, इसलिए विनियोग अति आवश्यक है।

विनियोग : (हाथ में जल लेकर)

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठ ऋषयः पंक्ति गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि, सदाशिव महामृत्युंजयरुद्रोदेवता, ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजम्, महामृत्युंजय प्रीतये ममाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

कहकर दाहिने हाथ का जल किसी पात्र में गिरायें।

पुनः शरीर के अंगों का निम्न मंत्रों द्वारा स्पर्श करें—

(१) वामदेव कहोल वशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः—	मूर्ध्नि (सिर)
(२) पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमः—	वक्त्रे (मुख)
(३) सदाशिव महामृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमः—	हृदि (हृदय)
(४) ह्रीं शक्तये नमः—	लिंगे (लिंग)
(५) श्रीं बीजाय नमः—	पादयोः (पैर)

तदुपरान्त करन्यास व हृदयादि न्यास निम्न द्वारा करें—

(१) ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं। ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल-पाणये स्वाहा। अंगुष्ठाभ्यां नमः (तर्जनी से अंगूठे को स्पर्श करें), **हृदयाय नमः** (हृदय का पाँचों अँगुलियों से स्पर्श करें)

(२) ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे। ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां/अमुक जीवय। तर्जनीभ्यां नमः (दोनों तर्जनी को अंगूठों से मिलायें), **शिरसे स्वाहा** (सिर का स्पर्श करें)।

(३) ॐ हौं जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिने स्वाहा। मध्यमाभ्यां नमः (अँगूठे से मध्यमा ऊँगली का स्पर्श करें), **शिखायै वषट्** (पाँचों अँगुलियों से शिखा का स्पर्श करें)।

(४) ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात्। ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रौं। अनामिकाभ्यां नमः (अँगूठे से दोनों हाथों के अनामिका ऊंगली का स्पर्श करें)। कवचाय हुम् (दोनों कन्धों को स्पर्श करें)।

(५) ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय। ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय। कनिष्ठकाभ्यां नमः (दोनों अँगूठों से कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श करें) **नेत्रत्रयाय वौषट्** (पाँचों अंगुलियों में से तीन अँगुलियों से नेत्रों का स्पर्श करें)।

(६) ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात्। ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल मां/अमुक रक्ष रक्ष अघोराय। करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः (दोनों हथेलियों को तथा पुनः दोनों के पृष्ठ भाग का स्पर्श करायें)। **अस्त्राय**

फट् (दाहिने हाथ को सिर से घुमाकर हथेली पर तीन बार ताली बजायें)।

विशेष : पहले करन्यास तदुपरान्त उसी मंत्र से हृदयान्यिास करें। तत् पश्चात् मृत्युंजय भगवान् का ध्यान निम्न मंत्र से करें।

हस्ताम्भोजयुगस्थकुंभयुगलादुद्धुत्य तोयं शिरः
सिंचन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ।
अक्षस्त्रंमृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थचन्द्रस्त्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युंजयम्॥

(सतीखण्ड ३८/२४)

ध्यानोपरान्त रुद्राक्ष माला का पूजन कर सर्वप्रथम गुरुमंत्र एक माला जप कर महामृत्युंजय मंत्र का जप प्रारंभ करें। जप समाप्त होने पर निम्न मंत्र द्वारा भगवान् मृत्युंजय के हाथ में जप निवेदन करें—

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर॥

अनुष्ठान में हवन के समय अंत में जायफल से मृत्युंजय मंत्र द्वारा ५ या ग्यारह बार आहुति देवें। मृत्युंजय को जायफल अत्यंत प्रिय है। अंत में कवच-यंत्र का निर्माण कर उसमें गोत्र, पिता का नाम व जिसके लिए जप हो रहा है उसका नाम लिखकर स्वर्ण-रजत या ताम्र के कवच में भरकर गुग्गुल का धूप दिखाकर पुरुष के दायें और स्त्री के बायें भुजा में बाँधना चाहिए।

॥ कवच॥

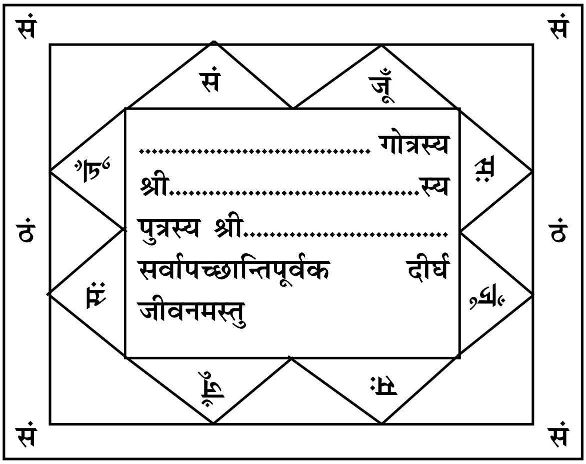

यंत्र लेखन विधि :— भोजपत्र पर अष्टगंध व अनार की कलम से लिखना चाहिए।

॥ मंत्र जागृति हेतवे मृत संजीवनी मंत्र-विद्या॥

मंत्र की जागृति के लिए वशिष्ठ जी द्वारा प्रणीत अधोलिखित मंत्र का विनियोग न्यास, ध्यान सहित कम से कम सात बार पाठ अवश्य करना चाहिए।

विनियोग :—**ॐ अस्य मृतसंजीवनी महामन्त्रस्य ॐ सदाशिव ऋषिः। ॐ गायत्री छन्दः। ॐ परा शक्तिर्देवता। ॐ हं बीजं। ॐ सौं शक्तिः। ॐ हं कीलकं। ॐ श्रीं पराशक्ति प्रीत्यर्थं सर्व मंत्र संजीवनार्थ शीघ्रं उपनाम प्रसिद्धयर्थ जपे विनियोगः।** (कहकर दाहिने हाथ का जल किसी पात्र में गिरायें)।

करन्यास/हृदयादिन्यास	**(दोनों हाथों के अँगूठे से करें)**	**(पाँचों अँगुलियों से करें)**
(१) ॐ हं सां	अंगुष्ठाभ्यां नमः।	हृदयाय नमः
(२) ॐ हं सीं	तर्जनीभ्यां नमः।	शिरसे स्वाहा।
(३) ॐ हं सूं	मध्यमाभ्यां नमः।	शिखायै वषट्।
(४) ॐ हं सैः	अनामिकाभ्यां नमः।	कवचाय हुम्।
(५) ॐ हं सौं	कनिष्ठकाभ्यां नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
(६) ॐ हं सः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ नमो भगवति मंत्रमातृके अक्षमालिके सर्वदा स्फुरसि सर्वहृदि वससि नमस्ते परारूपे। नमस्यन्ते पश्यंती रूपे। नमस्ते मध्यमा रूपे। नमस्ते वैखरी रूपे। सर्व तत्त्वात्मिके। सर्व विद्यात्मिके। सर्व शक्तयात्मिके। सर्व मंत्र शाप विमोचनि। सर्व मंत्र संजीवनि। सर्व देवतात्मिके भवति मंत्र मातृके अक्षमालिके नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

मूलमंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ अं आं इं ईं ह्रीं ह्रैं ह्रीं ह्रीं जूं सः सर्वमंत्रान् संजीवय-संजीवय स्वाहा। ॐ ह्रीं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ उँ ऊँ ऋं ॠं सर्वमंत्र यंत्राणां संजीवनं कुरु-कुरु स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ लृं ॡं ॐ ह्रीं हंसः सोहं रं रं रं सर्व मंत्रान् संजीवय-संजीवय कुरु कुरु स्वाहा। ॐ भूर्भुव स्वः ऊँ एं

ऐं ऊँ ओं औं अं अः ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व मंत्र यंत्र तंत्रादीनां संजीवय संजीवय रं रं रं ठः ठः ठः सर्वमंत्र संजीवन कुरु कुरु स्वाहा। ॐ त्वमाद्यानंत शक्ति स्तवं प्रवाहो जायते त्वया। सास्मृता पूजिता ध्याता योगिनामपि सिद्धिदा। ॐ त्वया वद्धा सर्व देवा भ्रमंति निज कर्मणा। सा तुष्टा सर्व मंत्राणां अमृता सिद्धि दायिनि॥ ॐ मंत्र संजीवनी विद्या वसिष्ठेन च साश्रिता। सिद्धिदा सर्व मंत्राणां सदाशिव प्रसादतः॥ जपादौ वा पाठादौ वा जपान्ते वा पाठान्ते। सप्तवारं पठित्वा तु शीघ्रं सिद्धिं लभेन्नरः॥

संक्षिप्त आचार-संहिता

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा
यद्यप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः।
छन्दांस्येनं मृत्युकाले त्यजन्ति
नीडं शकुन्ता इव जातपक्षाः॥

(वशिष्ठ स्मृति ६/३,, देवीभागवत् ११/२/१)

शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, व्याकरण और ज्योतिष- इन छः अंगों सहित अध्ययन किए हुए वेद भी आचारहीन मनुष्य को पवित्र नहीं करते। मृत्युकाल में आचारहीन मनुष्य को वेद वैसे ही छोड़ देते हैं, जैसे पंख आने पर पक्षी अपने घोंसले को।

आचारवान मनुष्य सदा पवित्र, सुखी और धन्य है। वह इहलोक व परलोक दोनों पर विजय प्राप्त कर लेता है। इसलिए सदाचार का पालन होना चाहिए।

(१) अमावस्या के दिन जो वृक्ष, लता, आदि को काटता है अथवा उसका एक पत्ता भी तोड़ता है, उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। यही नियम संक्रान्ति, ग्रहण, पूर्णिमा के दिन भी लागू होता है।

(२) दोनों सन्ध्याओं के समय जो नींद लेता है, वह रोगी और दरिद्र होता है।

(३) विद्वान् पुरुष धोबी के धोये वस्त्र को अशुद्ध मानते हैं। अपने हाथ से पुनः धोने पर ही वह शुद्ध होता है।

यथा—**रजकैः क्षालितं वस्त्रमशुद्धं कवयो विदुः। हस्तप्रक्षालने चैव**

पुनर्वस्त्रं तु शुद्ध्यति॥ (पद्मपुराण सृ० ५१/२३)

(४) नील में रँगा वस्त्र कदापि न पहनें। उससे स्नान, दान, तप, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण और पंचमहायज्ञ, ये सभी व्यर्थ हो जाते हैं।

स्नानं दानं जपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्पणम्।
वृथा तस्य महायज्ञा नीलीवस्त्रस्य धारणात्॥

(आंगिरसस्मृति १४)

(५) शय्या पर बैठकर भोजन व जल दोनों ग्रहण न करें। हाथ में व खड़े होकर भी भोजन न करें। आसन पर सदैव पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके भोजन करें।

(६) शहद, जल, दूध, घी, दही, खीर और सत्तू को छोड़कर पात्र में परोसे हुए अन्य पदार्थों का भक्षण सम्पूर्ण रूप में नहीं करना चाहिए।

(७) गर्भहत्यारा के देखे हुए, रजस्वला स्त्री से छुए, पक्षी से खाये हुए और कुत्ते से छुए हुए अन्न को नहीं खाना चाहिए।

(८) बायें हाथ से लाया हुआ खाद्य-पदार्थ व पेय पदार्थ नहीं ग्रहण करना चाहिए।

(९) जिस अन्न या भोज्यपदार्थ को किसी ने लाँघ दिया हो, जो लड़ाई-झगड़ा करते हुए तैयार किया गया हो, जिसपर रजस्वला स्त्री की दृष्टि पड़ गयी हो, जिसमें केश या कीड़े पड़ गये हों, जिसपर कुत्ते की दृष्टि पड़ गयी हो तथा जो रोकर या तिरस्कार पूर्वक दिया गया हो, वह अन्न राक्षसों का भाग है।

(१०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इनमें से जिसका अन्न मृत्यु के समय पेट में रहता है, उसी योनि की प्राप्ति होती है।

(११) कुत्ता पालने वाले, मद्य-विक्रेता, धोबी, रंगरेज, नृशंस और जिसके घर में जार हो, उसके अन्न को नहीं खाना चाहिए।

(१२) जब तक अपनी विवाहिता कन्या की संतान न हो, तब-तक पिता को उसके घर का अन्न नहीं खाना चाहिए। ऐसा करने वाला नरक-गामी होता है।

(१३) अंजलि से तथा खड़े होकर जल नहीं पीना चाहिए।

(१४) गाय, भैंस और बकरी के दूध के सिवाय अन्य पशुओं के दूध का त्याग

करना चाहिए।

(१५) लक्ष्मी की इच्छा रखने वाला व्यक्ति भोजन और दूध को ढँक कर रखे।

(१६) ताम्बूल (पान) के पत्ते के अग्रभाग में पत्नी के संग, डंठल में पुत्र के संग द्रारिद्रय निवास करता है। रात्रि में ये तीनों कत्थे में निवास करते हैं। सुरती (तम्बाकू, खैनी) में सदा दारिद्रय निवास करता है। इसलिए पान के पत्ते का अग्रभाग व डंठल तोड़कर केवल दिन में सुरती के बिना देवता को अर्पण करके पान खाना चाहिए। (स्कन्दपुराण, नागरखंड)

(१७) यदि भोजन परोसने वाला व्यक्ति भोजनकर्त्ता को छू दे तो वह भोज्यपदार्थ अभक्ष्य हो जाता है। (ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्ण ८५/१३)

(१८) पैर से आसन खींचकर न बैठें।

यथा—**'नाकर्षेदासनं पदा'** (स्कन्दपुराण ब्रह्म० धर्मा० ६/६८)

(१९) देवयात्रा, विवाह, आदि उत्सव, यज्ञ, युद्ध, बाढ़, पलायन और वन में स्पर्श दोष नहीं होता।

(२०) जो मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके गौ को प्रणाम करता है, वह पाप रहित हो जाता है।

(२१) कुत्ते का स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें।

(२२) चिता के धुएँ से बचकर रहना चाहिए।

यथा–'प्रेतधूमं विवर्जयेत्' (कूर्म पुराण, पद्मपुराण, गरुड़पुराण)

(२३) कहीं से आया व्यक्ति अपने दोनों पैरों को धोये बिना शुद्ध नहीं होता।

(२४) सम्मार्जन (झाड़ना), लीपना (गोबर आदि से), सींचना (गंगाजल, गोमूत्रादि), खोदना (ऊपर की कुछ मिट्टी हटाना) और एक दिन-रात गायों को ठहराना। उपरोक्त पाँच प्रकारों से भूमि की शुद्धि होती है।

(२५) गाय को पेन्हाने में बछड़े का मुख शुद्ध है। फल गिराने में पक्षी की चोंच शुद्ध है। गौएँ मुख से अशुद्ध और पीठ से शुद्ध हैं। बकरे और घोड़े का मुख शुद्ध है। ब्राह्मणों के चरण शुद्ध है, स्त्री का मुख शुद्ध है, प्रसवकाल में बछड़ा शुद्ध है।

(२६) अपवित्र स्थान में उत्पन्न हुए वृक्षों के फल-फूल दूषित नहीं होते।

(२७) आपत्तिकाल में शुद्धि-अशुद्धि का विचार न करें।

(२८) आत्महत्या करने वाले का सूतक (मरणाशौच) नहीं होता।

यथा—**सुरापाः स्वात्मघातिन्यो न शौचोदक भाजनाः॥**

(गरुड़पुराण, आचार० १०६/६)

(२९) विवाह के समय कन्या के ऋतुमती होनेपर कन्या को पंचगव्य मिश्रित जल से स्नान कराकर 'युंजान सूक्त' द्वारा आहुति दिलवाकर विवाह कार्य सम्पन्न करें। निर्णयु-सिंधु में बताया गया है कि मंगलकार्य में कन्या के ऋतुमती (पुष्पवती) होने पर अच्छे मुहूर्त की प्राप्ति न हो तो लक्ष्मी की विधिवत् पूजा कराने के पश्चात् मांगलिक कार्य कराना चाहिए।

(बृहद् दैवज्ञ रंजनम् ११७३-७५/७१)

(३०) यज्ञ में वरण होने पर, व्रत, उत्सव में संकल्प होने पर, विवाह में नांदीमुख श्राद्ध होने पर और श्राद्ध में पाक क्रिया आरंभ होने पर कार्यक्रम का आरंभ माना जाता है। इनके आरंभ होने पर मरणाशौच या जननाशौच का सूतक नहीं लगता। संकट होने पर यज्ञ में २१ दिन, विवाह में १० दिन पूर्व और मुण्डन में ३ दिन पूर्व तथा यज्ञोपवीत संस्कार में ७ दिन पहले नांदी श्राद्ध होता है। (वृहद दैवज्ञ रंजनम् ५१७-१८-१९/७१)

(३१) शवदाह के लिए चाण्डाल (डोम) की अग्नि, अमेध्याग्नि (अपवित्र अग्नि), सूतिकाग्नि, पतिताग्नि और चिता की अग्नि को शिष्ट लोग कभी ग्रहण न करें। बदले में कर्पूर अथवा घी की बत्ती से स्वतः अग्नि तैयार करें। अन्य से अग्नि न लेवें।

यथा— **चाण्डालाग्निरमेध्याग्निः सूतिकाग्निश्च कर्हिचित्।**
पतिताग्निश्चिताग्निश्च न शिष्टग्रहणोचितः॥

(निर्णय सिंधु "देवल")

(३२) लोकाचार या देशाचार का पालन शास्त्र की अवहेलना करके नहीं होना चाहिए। पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार ("विवाहश्मशानयोः ग्रामं प्रविशतात्') शास्त्र की कोई स्पष्ट व्यवस्था उपलब्ध न होने पर अथवा वैकल्पिक व्यवस्था न उपलब्ध होने पर देशाचार या लोकाचार को चुनें। गीता के १६ वें अध्याय के तेईसवें श्लोक में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा है—

यथा— **यः शास्त्र विधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।**
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

(श्रीमद्भगवद्गीता २३/१६)

अर्थात् जो पुरुष शास्त्र की विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता है और परमगति को तथा न सुख को ही प्राप्त होता है।

(३३) घर में मुर्गे और कुत्ते के रहने पर देवता उस घर में हविष्य ग्रहण नहीं करते।

यथा— **कुक्कुटे शुनके चैव हविर्नाशन्ति देवताः।**

(महाभारत अनु० १२७/१६)

(३४) स्वयं जाकर दिया गया दान उत्तम, अपने यहाँ बुलाकर दिया गया दान मध्यम, माँगने पर दिया गया दान अधम और सेवा कराकर दिया गया दान निष्फल होता है। सत्युगादि के दान का क्रम भी यही है।

(३५) अन्य जगह पर किया गया हुआ पाप तीर्थ में नष्ट हो जाता है, पर तीर्थ में किया हुआ पाप वज्रलेप हो जाता है।

(३६) अपने से श्रेष्ठ जनों को दोनों हाथों से चरण स्पर्श करके प्रणाम करें। दाहिना हाथ उनके दाहिने पैर के अँगूठे पर तथा बायाँ हाथ उनके बाएँ पैर के अँगूठे पर रहना चाहिए। एक हाथ से किया प्रणाम, जन्म-जन्मान्तर के पुण्यों को धो देता है।

(३७) अस्त होते हुए सूर्य-चंद्र दर्शन रोगदायक हैं।

यथा— **अस्तकाले रविं चन्द्रं न पस्येद् व्याधिकारणम्।**

(ब्रह्मवैवर्तपुराण श्रीकृष्ण ७५/२४)

(३८) अग्नि, देवप्रतिमा, ब्राह्मण, गुरु, राजा, स्नातक, आचार्य, ध्वजा, गौ एवं उसके बछड़े को बाँधने वाली रस्सी, रोगी, यज्ञ में दीक्षित मनुष्य, इनको नहीं लाँघना चाहिए।

(३९) मनुष्य को चाहिए कि वह सर्प, अग्नि, सिंह और अपने कुल में उत्पन्न व्यक्ति का अनादर न करें, क्योंकि ये सभी बड़े तेजस्वी होते हैं।

यथा— **सर्पश्चाग्निश्च सिंहश्च कुलपुत्रश्च भारत।**
नावज्ञेया मनुष्येण सर्वे ह्येतेऽतितेजसः॥

(महाभारत, उद्योगपर्व ३७/५९)

(४०) जहाँ अपूज्य लोगों का आदर होता है और पूज्यजनों का निरादर होता

है, वहाँ दुर्भिक्ष, मरण और भय—ये तीनों उपद्रव होते हैं।

यथा— **अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते।**
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

(स्कन्दपुराण, मा० के० ३/४५)

(४१) जहाँ राजा, धनी, वेदज्ञ ब्राह्मण, वैद्य, आचार और देश—ये अपने से विरुद्ध प्रतीत हों, वहाँ एक दिन भी नहीं रहना चाहिए।

(४२) दीपक, शय्या और आसन की छाया, कपास की लकड़ी का दातुन और बकरी की धूल का स्पर्श इन्द्र की भी लक्ष्मी को हर लेते हैं। इसलिए इनको स्पर्श करके हाथ धोने का विधान है।

(४३) स्वयंवर-विधि से जिन कन्याओं का विवाह हुआ है, वे सभी (सीता, दमयन्ती, द्रौपदी आदि) जीवन भर दुःखी रही हैं। अतः यह विधि शास्त्रोक्त होते हुए भी सुखप्रद नहीं है।

(४४) घर में फूटे बर्तन और टूटी खाट नहीं रखनी चाहिये ये क्रमशः दरिद्रता ही लाते हैं।

(४५) यदि किसी ने स्त्री से बलात्कार पूर्वक भोग कर लिया है अथवा वह चोर के हाथ में पड़ गयी हो तो भी अपनी स्त्री का परित्याग न करे। उसके त्याग का विधान नहीं है। ऋतुमती होने पर वह शुद्ध हो जाती है।

(स्कन्दपुराण, का० खण्ड ४०/४७)

(४६) गुरु को बहुत विचार करके ही किसी को शिष्य बनाना चाहिए अन्यथा शिष्य के दोष के कारण गुरु नरक में जा सकता है। जिस प्रकार कि मंत्री का पाप राजा को, स्त्री का पाप पति को और शिष्य का पाप गुरु को होता है।

(४७) एक मात्र पति ही स्त्रियों का गुरु है। अतः स्त्री को पति के अतिरिक्त किसी को गुरु नहीं बनाना चाहिए।

यथा— **'पतिरेव गुरुः स्त्रीणाम्'** (ब्रह्मपुराण ८०/४८)

(४८) आर्द्रा नक्षत्र पर जब सूर्य रहता है तब तीन दिन तक पृथ्वी ऋतुमती रहती है उस समय जो पृथ्वी खोदते हैं, उन्हें ब्रह्महत्या लगती है। मरने पर चार युगों तक कृमिदंश नरक की प्राप्ति होती हैं। भूकम्प एवं ग्रहण समय में

भी पृथ्वी न खोदें।

यथा— **अम्बुवाच्यां भूकरणं यः करोति च मानवः।**
स याति कृमिदंशं च स्थितिस्तत्र चतुर्युगम्॥

(देवीभागवत् ९/१०/१४/२८)

(४९) अग्नि को कभी मुख से नहीं फूँकना चाहिए; परन्तु अग्निहोत्र के समय अग्नि को मुँह से फूँककर प्रज्वलित करना चाहिए क्योंकि मुख से ही अग्नि का प्राकट्य हुआ है। लौकिक अग्नि में मुँह का प्रयोग न करें।

(५०) मनुष्य देवकार्य में तो ब्राह्मण की परीक्षा न करे, पर श्राद्ध, पितृकार्य में योग्य ब्राह्मण का चयन करें। क्योंकि 'पितरों वाक्यमिच्छन्ति भावमिच्छन्ति देवताः।' अर्थात् पितर वाक्य एवं कर्म शुद्धि चाहते हैं, देवता लोग भावशुद्धि चाहते हैं।

(५१) देव कार्य में युग्म एवं पितृ कार्य में अयुग्म ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। अत्यन्त धनी होने पर भी श्राद्धकर्म में विस्तार न करें।

(५२) श्राद्ध एवं हवन के समय केवल दाहिने हाथ का प्रयोग करें। अर्थात् पिण्डदान एवं आहुति में। तर्पण में दोनों होने चाहिए।

यथा— **श्राद्धे हवनकाले च पाणिनैकेन निर्वपेत्।**

(ब्रह्मपुराण ६०/५५, नारदपुराण ५६/६२-६३)

(५३) यज्ञ समाप्ति पर दक्षिणा तत्काल देवें। ऐसा नहीं करने पर दक्षिणा की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है और यजमान का सम्पूर्ण कर्म भी निष्फल हो जाता है। (ब्रह्मवैवर्तपुराण)

(५४) धूम्रपान या नशा का सेवन करने वाले ब्राह्मण को कदापि दान न देवें।

यथा— **धूम्रपानरते विप्रे दानं कुर्वन्ति ये नराः।**
ते नरा नरकं यान्ति ब्राह्मणा ग्राम शूकराः॥

(पद्मपुराण, धर्मशास्त्रांक पृ० ३७१)

(५५) व्रत दिन से दूसरे दिन पूर्वाह्न में पारणा का विधान है—
"**उपवासेषु सर्वेषु पूर्वाह्ने पारणा भवेत्।**" (देवल), जन्माष्टमी, अनन्तचतुर्दशी, ऋषिपंचमी आदि जैसे गणितागत तिथि वाले व्रत को छोड़कर, जहाँ तक संभव हो पारणा व्रत तिथि में नहीं करना चाहिए। अगले सूर्योदय के बाद

वाले तिथि में करें।

(५६) व्रत सन्निपात् अर्थात् दो व्रतों के एक साथ आने पर अर्थात् किसी व्रत के पारणा के दिन ही दूसरा व्रत यदि आ पड़े तो वहाँ व्रतान्त भोजन के पदार्थों को सूँघकर छोड़ देना चाहिए। ऐसा करने से पहिले व्रत की पारणा भी हो जाती है और अग्रिम व्रतोपवास भंग भी नहीं होता। शास्त्रानुसार अन्न का आघ्राण (सूँघना) भक्षण एवं अभक्षण दोनों है।

(५७) सात पीढ़ी तक के लोग सपिण्ड, उसके बाद सात पीढ़ी तक सकुल्य एवं उसके बाद के लोग सगोत्र कहे जाते हैं। सपिण्डी मरणाशौच में दस दिन में शुद्ध होते हो, सकुल्य तीन दिन में तथा सगोत्री स्नान-मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। (निर्णय सिंधु-१०५८)

(५८) जो मरा न हो और उसके मरण की खबर सुनकर उसकी उर्ध्व-दैहिक क्रिया कर दी गई हो, उक्त व्यक्ति यदि जीवित आ जाय तो घी से उसे स्नान कराकर पुनः जातकर्म संस्कार करें। (अ० क० प० १५१)

(५९) ब्रह्मपुराण के अनुसार निमंत्रित ब्राह्मण को जननाशौच या मरणाशौच नहीं होता क्योंकि निमंत्रित ब्राह्मण में एवं श्राद्ध कर्म प्रारंभ होने पर उनमें पितर लोग निवास करते हैं। (नि० सि० पृ० ७१८)

(६०) खेत में खड़ी-शस्य
छिलकायुक्त-अन्न
छिलका रहित - आमान्न (सीद्धा)
(आग में पके अन्न - सिद्ध अन्न कहे जाते हैं।

(६१) शव के मुखाग्नि के समय सात परिक्रमाएँ वामावर्त होती हैं।

(६२) खोए हुए व्यक्ति की प्रतीक्षा १२ वर्ष तक करें। इसके बाद कुश से बने हुए देह का दाह करावें। तीन रात अशौच करके श्राद्ध करें। पिता के गुम होने पर पन्द्रह साल के बाद पुतला बनाकर कार्य करें।

(महानिर्वाण तंत्र-५१८)

(६३) मृत्यु तिथि में उदयातिथि नहीं ली जाती है। अंतिम श्वास-परित्याग के समय विद्यमान तिथि को ही मृत्यु-तिथि माना जाता है।

(६४) ध्वज पर देवताओं के वाहन, चिह्न एवं दण्ड ध्वज के रंग :—

देवता	चिन्ह	रंग	दण्ड
विष्णु	गरुड़	पीला	सोने का
शिवजी	वृष	श्वेत	चाँदी का
ब्रह्माजी	हंस	कमल-रंग	ताम्र का
सूर्यदेव	व्योम	पंचरंगी	सोने का
सोम	नर	श्वेत	चाँदी का
यम	भैंसे का	कृष्ण	लोहे का
बलदेव	फाल सहित हल	श्वेत वर्ण	चाँदी का
कामदेव	मकरध्वज	रक्तवर्ण	त्रिलोह
इन्द्रदेव	हाथी	अनेक वर्ण	सोने का
दुर्गा	सिंह	लाल	सर्वधातु
उमा	गोधा (गोह)	रक्त	सोने
रैवत	अश्व	रक्त	सोने का
वरुण	कच्छप	सफेद	चाँदी
वायु	हरिण	कृष्ण	सोने का
गणपति	मूषक	शुक्लवर्ण	ताँबे का
ब्रह्मर्षियों/ऋषियों	कुश	श्वेत	चाँदी का
कार्तिकेय	मयूर	चित्रवर्ण (चितकबरा)	त्रिलोह
नैऋत्य	प्रेत	काला	मणियों का
कुबेर	मानवपाद	लाल	

(भविष्य पुराण-१५५-५६)

६५. ब्राह्मण अज्ञान से जननाशौच या मरणाशौच का भोजन कर ले तो प्रत्येक वर्ण के लिए जैसे ब्राह्मण के यहाँ भोजन करने पर दो हजार, क्षत्रिय के यहाँ भोजन करने पर तीन हजार, वैश्य के यहाँ पाँच हजार तथा शूद्र के यहाँ भोजन करने पर आठ हजार गायत्री-मंत्र का जप करे।

(पराशर स्मृति १७, १८, १९/११)

६६. पत्नी का श्राद्ध पति तभी कर सकता है जब उसे कोई पुत्र न हो। पुत्र यदि हो तो पति न करें।

६७. मकर राशि पर जब सूर्य एवं चंद्र हों अर्थात् माघ की अमावस्या जिस

दिन हो, उस समय तीनों लोकों में गया श्राद्ध दुर्लभ माना गया है। (वायु पुराण पृ० ३०२)

६८. गोदान के अभाव में केवल मूल्य, वस्त्र एवं सुवर्ण ही ग्राह्य है। मूल्य देने पर-ऊर्ध्वास्या, वस्त्र देने पर भवितव्या एवं सुवर्ण देने पर वैष्णवी कहकर संकल्प करें। (महाभारत-षष्ठभाग)

६९. कोढ़ी व्यक्ति के मृत्यु पर शव को जल में प्रक्षेप कर पुतलदाह कर सारी क्रिया करें। (निर्णय सिन्धु-१२७५)

७०. विवाह प्रकरण में नांदीश्राद्ध से लेकर मण्डप उठाने तक श्राद्ध का भोजन, नदी लाँघना आदि कर्म नहीं करना चाहिए। इसके पूर्व या पश्चात् कोई शास्त्रीय बाधा नहीं है।

७१. विवर्जयेत् लौह पात्रं सदा देवार्चनं अग्नि होमं च। अर्थात् लोहे के पात्र में हवन व पूजन सदैव वर्जित है।

७२. **आर्तिक्ये तु यद् द्रव्यं आचार्यं तन्निवेदयेत्।**
मोहाद् नापिते दत्वा, पूजापुण्याच्च्युतो भवेत्॥

(रामेन्द्र संहिता)

अर्थात् आरती में चढ़ा हुआ द्रव्य आचार्य का है। पूजन व आरती में प्रयुक्त दक्षिणा का अधिकारी नापित नहीं होता उसे केवल न्यौछावर ग्राह्य है। उससे पूजा का पुण्य क्षय होता है।

७३. जानु, पैर, हाथ, वक्ष, सिर, वाणी, दृष्टि और बुद्धि से किया गया प्रणाम साष्टांग प्रणाम है।

७४. दूर स्थित, जल के बीच, दौड़ते हुए, क्रोध युक्त, नशे में पागल तथा पूजा की तैयारी व पूजा करते हुए लोगों को प्रणाम न करें।

७५. **स्नातश्च वरुणस्तेजो जुह्वतोऽग्निः श्रियं हरेत्।**
भुञ्जानस्य यमस्त्वायुस्तस्मान्न व्याहरेत् त्रिषु॥ (वृद्धमनु)

स्नान करते समय बोलने वाले के तेज को वरुण, हवन करते समय बोलने वाले के 'श्री' को अग्नि एवं भोजन करते समय बोलने वाले की आयु को यम हरण कर लेते हैं। उपरोक्त कर्मों में मौन रहें। केवल हवन में 'स्वाहा' का उच्चारण करें।

गोदान में सर्वोत्तम 'उभयमुखी' गोदान

शास्त्रों में विशेषकर उभयमुखी गोदान का विशेष महत्त्व है। यह दुर्लभ संयोग है। इसके बारे में भविष्य पुराण में लिखा है। भगवान् श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से कहते हैं—महाराज! जब तक बछड़े का पैर प्रसव के समय भीतर हो तथा केवल सिर बाहर हो, उस समय वह गौ मानो साक्षात् सप्तद्वीपवती पृथ्वी है। पुराणों में तो लिखा है कि इसकी परिक्रमा से पृथ्वी की सम्पूर्ण परिक्रमा का फल मिलता है। ऐसी उभयमुखी गौ-दान का फल अनन्त है। यज्ञ एवं दान से जो फल प्राप्त होता है, वह फल केवल उभयमुखी गोदान से ही प्राप्त हो जाता है और दाता का उद्धार हो जाता है। गाय के सींगों को स्वर्ण से, खुरों को चाँदी से तथा पूँछ को मोती की मालाओं से अलंकृत कर जो उभयमुखी धेनु का दान करता है, वह गौ और बछड़े के शरीर में जितने रोम हैं, उतने ही हजार वर्षों तक स्वर्ग में पूजित होता है तथा अपने पितरों का उद्धार कर देता है। दुर्बल एवं अंगहीन गौ, दक्षिणा से रहित दान नहीं करना चाहिये।

(भविष्य पु० अ० १५८)

यज्ञ से ही जग का कल्याण संभव है

हमारे धर्मशास्त्रों में अनेक प्रकार के यज्ञों की चर्चा है। परन्तु यहाँ जिस यज्ञ की चर्चा है वह व्यक्ति, परिवार, समाज व पूरी सृष्टि के लिए कल्याणकारी है। यज्ञ के अभाव में सृष्टि का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ की बड़ी महिमा बतलाई गई है। यज्ञ सभी कर्मों में श्रेष्ठ है। यज्ञों वै श्रेष्ठतम कर्म। यज्ञ को सूर्य के समान तेज: स्वरूप कहा गया है।

ब्राह्मणों ग्रंथों में प्रजापति को परमात्मा माना गया है, तथा यज्ञ को प्रजापति कहा गया है अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध तक प्रजापति के आराधन के लिए है। प्रजापति और यज्ञ ये दोनों प्रजा के रक्षक हैं। अग्नि में जो हवि आहुति के रूप में दी जाती है वह वायु के सहारे सूर्य की ओर जाती है। तदुपरान्त पूरे अन्तरिक्ष में व्याप्त हो जाती है। सूर्य के प्रभाव से मेघ-मण्डप के साथ मिश्रित होकर हवि नीचे उतरकर वर्षा करती हैं, जिससे अन्न-फल उत्पन्न होते हैं और इनसे प्रजा का पोषण होता हैं। इसके अतिरिक्त पार्थिव पदार्थ, आकाशस्थ वायु और सूर्य-रश्मि आदि शुद्ध होते हैं। हवि से देवगण तृप्त होते हैं तथा वे मनुष्य का कल्याण करते हैं। जिस प्रकार धूम्रपान करने वाला व्यक्ति धूम्रपान से तृप्त हो जाता है उसी तरह देवगण यज्ञ के धुएँ की सुगन्ध से तृप्त होते हैं। यज्ञ के फल से ही स्वर्ग आदि की भी प्राप्ति संभव है।

जो कुछ सृष्टि में हो रहा है, उसका उत्तमांश यज्ञ कहलाता है। वर्ष में ३६० दिन होते हैं तथा मानव-शरीर में भी ३६० हड्डियाँ होती हैं। उसी तरह अग्नि-चयन में भी ३६० ईंटे चुनी जाती हैं। यज्ञ से ही सृष्टि-नियमन का ज्ञान होता है।

इस तरह अनेकानेक मार्गों से यज्ञ, मानव-कल्याण करता है, विश्व की शांति और सुव्यवस्था में सहायता पहुँचाता है। इसीलिए ब्राह्मण ग्रंथों में यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया गया है। यज्ञ से मनुष्य पाप-रहित हो जाता है। मंत्र पाठ से चित्त शान्त होता है तथा मन सबल होता है। यज्ञ और मन्त्रोचारण से सारा वायुमण्डल ही परिवर्तित हो जाता है तथा यज्ञ निखिल विश्व में धर्मचक्र गतिशील हो जाता है। पृथ्वी, आकाश और मानव जाति को उन्नत और पावन बनाने का नाम यज्ञ है। यज्ञ के मुख्य रूप से २१ भेद हैं।

शतपथ ब्राह्मण में सृष्टि विज्ञान का रहस्य छिपा हुआ है। "**अग्ने वैं धूमो जायते......वृष्टि।**" अर्थात् अग्नि से धूम्र उत्पन्न होता है, धूम्र से मेघों का निर्माण होता है, और उनसे वर्षा होती है। मेघों के निर्माण में वायु की प्रमुख भूमिका होती है। मरुत् (मानसून) ही वृष्टि पर राज्य करते हैं। शुद्ध-अन्न-जल से शरीर शुद्ध और स्वस्थ रहता है। इसीलिए कहा गया है कि—"**वृष्टिकामो यज्ञेत्**" अर्थात् वर्षा की इच्छा वाले पुरुष यज्ञ करें।

स्वर्गलोक के बारे में कहा गया है कि एक तेज घोड़ा हजार दिनों में जितना चलता है, उतना ही दूर पृथ्वी से स्वर्ग है। यथा—"**सहस्राश्वीने वा इतः स्वर्गोलोकः**" स्वर्ग प्राप्ति के लिए देवताओं ने भी श्रम, यज्ञ, तपस्या, आहुतियों का ही सहारा लिया है। शतपथ ब्राह्मण में यहाँ तक कहा गया है कि यज्ञकर्त्ता अर्थात् अग्निहोत्री जन्म और मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जाता है। यज्ञ के द्वारा ही चरू उत्पन्न होने पर भगवान् राम सहित चारों भाइयों का जन्म हुआ। देवी भागवत् में भी गायत्री खण्ड में इसका स्पष्ट उल्लेख है कि अमुक-अमुक समिधाओं द्वारा व्यक्ति प्रज्वलित अग्नि में एक निश्चित संख्या में आहुति देकर रोग, अपमृत्यु भय, अभिचार कर्म एवं ग्रहबाधादि से छुटकारा पा सकता है। गोपथ ब्राह्मण के उत्तरार्द्ध में कहा गया है कि—"**ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते।**" ऋतुओं के बदलने पर व्याधियाँ बढ़ती हैं और यज्ञीय अग्नि ही इन व्याधियों के कीटाणुओं को मारती है। असुर समूह ऋषि-मुनियों के यज्ञ को ही विध्वंश करते थे। यज्ञ के अभाव में आसुरी शक्ति बलवती होती है तथा पृथ्वी पर अराजकता फैल जाती है। अतः किसी भी मूल्य पर, यज्ञ के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए, इसकी रक्षा होनी चाहिए तथा इसको वर्तमान् में भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

ऋषि, छन्द, देवता एवं विनियोग का महत्त्व

वेदांग छः है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ है, व्याकरण मुख है, निरुक्त कान है, छन्द पैर है तथा ज्योतिष नेत्र है। वेदार्थ का ज्ञान होने के लिए ऋषि, छन्द, देवता एवं विनियोग को जानना अति आवश्यक है। जो ऋषि, देवता, छन्द और विनियोग का ज्ञान प्राप्त किए बिना वेद का अध्ययन, अध्यापन, हवन, यजन, याजन आदि करते हैं, उनका सब कुछ निष्फल हो जाता है। याज्ञवल्क्य और व्यास ने अपनी स्मृतियों में इसका उल्लेख किया है।

ऋषि—ऋषिर्दर्शनात् अर्थात् मंत्र को देखने वाले या साक्षात्कार करने वाले को ऋषि की संज्ञा दी गई है। जैसा कि ऋषयोः मंत्रद्रष्टारः। ऋषि सात प्रकार के बतलाये गये हैं। जिन ऋषियों ने जिन सूक्त का आविष्कार किया, उनका या उनके वंश का सूक्त के ऊपर नाम रहता है। सम्पूर्ण मानव जाति ऋषियों के ही वंशज हैं। ऋषियों में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण हैं।

छन्द—जो मनुष्यों को प्रसन्न करे और यज्ञादि की रक्षा करे उसे छन्द की संज्ञा दी गई हैं। मुख्य छन्द २१ हैं। २४ अक्षर से लेकर १०४ अक्षर तक सब छन्द की श्रेणी में आते हैं।

देवता—निरुक्तकार की रचना है—

"**देवो दानाद् द्योतनाद् दीपनाद् वा।**"-दैवतकाण्ड (१.५) लोकों में भ्रमण करने वाला, प्रकाशित होने वाले या भोज्य आदि सारे पदार्थ को देने वाले को देवता कहा गया है। इन्होंने तीन प्रकार के देवताओं की कल्पना की है—पृथ्वी-स्थानीय अग्नि, अन्तरिक्ष-स्थानीय वायु वा इन्द्र और द्युस्थानीय सूर्य। इनके ही नामों की स्तुतियाँ की गयी हैं। आर्य लोग प्रत्येक जड़ पदार्थ का एक अधिष्ठाता देवता मानते हैं। मीमांसा तो मंत्र में ही देवत्व शक्ति का अनुभव करती हैं। विष्णुपुराण के मत से ११ रुद्र १२ आदित्य, ८ वसु प्रजापति और वषट्कार ये कुल ३३ देवता हैं। सायणाचार्य के अनुसार देवता तो ३३ ही हैं पर उनके महिमा को बताने के लिए ३३३९ देवताओं का उल्लेख हैं। शतपथ ब्राह्मण में ८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य आकाश और पृथ्वी ये ३३ देवता बतलाये गये हैं। इस ब्रह्माण्ड में मूलशक्ति एक ही है जिसे ईश्वर कहा जाता है। इसी मूल सत्ता के विकास सारे देवता हैं।

विनियोग—जिस कार्य के लिए मंत्र का प्रयोग होता है, उसे विनियोग कहा जाता है। मन्त्र में अर्थान्तर या विषयानन्तर होने पर भी विनियोग के द्वारा अन्य कार्य में उस मंत्र को विनियुक्त किया जा सकता है, पूर्वाचार्यों का ये मत है। इससे यह प्रतीत होता है कि शब्दार्थ से भी अधिक आधिपत्य मन्त्रों पर विनियोग का है। भविष्यपुराण में विनियोग की चर्चा करते हुए कहा गया है कि बिना इसके प्रयोग के फल में न्यूनता होती है।

इस प्रकार ऋषि, छन्द, देवता एवं विनियोग हमारे लिए कितना महत्त्वपूर्ण हैं, इसे सहज ही समझा जा सकता है।

यज्ञाहुति के अनन्तर करणीय

प्रज्वलित अग्नि में आहुति देने के बाद जब यज्ञ शेष हो जाता है तब सावधानी पूर्वक अपने दोनों हाथों को मिट्टी से अवश्य धोना चाहिए क्योंकि हमारे दोनों हाथ में लगा हुआ आज्यांश, यदि किसी तरह हमारे द्वारा भक्षण हो जाता है तो सारे किये-कराये नष्ट हो जाते हैं। इससे संबंधित एक छोटी सी घटना बाल्मीकि-रामायण में मिलती है जो निम्न है—

एक कुत्ता नगर के रास्ते पर सोया था। एक ब्राह्मण उसी रास्ते से जा रहे थे। कुत्ता आहट पाकर उठ बैठा तब तक ब्राह्मण ने भय से उसे एक डण्डा मार दिया। वह डण्डा उसके कमर में लगा। अगले दिन कुत्ता श्रीराम के दरबार में न्याय के लिए उपस्थित हुआ। रामजी ने उसकी सारी बातें सुनी। उसने कहा कि वह बेकसूर है और ब्राह्मण देवता ने उसके कमर पर डण्डा चला दिया। श्रीराम जी ब्राह्मण को दण्ड देने से घबड़ा रहे थे। वे सोचने लगे कि क्या किया जाये? राम-राज्य में अन्याय भी नहीं होना चाहिए तथा दूसरी तरफ ब्राह्मण को दण्ड देना भी अपराध है। यह सोचकर उन्होंने कुत्ते से ही पूछा कि बताओ उन्हें क्या दण्ड दिया जाय? कुत्ते ने कहा कि आप न्यायालय के आसन से हट जायँ। श्रीराम जी आसन से हट गये और कुत्ता उस पर बैठ गया। दरबार खचाखच सभासदों से भरा था। बैठते ही उसने फैसला सुनाया कि इन ब्राह्मण देवता को किसी शिवमंदिर का पुजारी नियुक्त किया जाय। इस आश्चर्य जनक निर्णय को सुनकर सभी दंग रह गये। भरत, लक्ष्मण, श्रीराम इत्यादि ने उससे पूछा कि अपकार के बदले तूने उपकार किया, यह तो कोई सजा है नहीं? इसपर कुत्ते ने अपनी पूर्व जन्म की कथा सुनाई—"मैं पूर्व जन्म में बड़ा पवित्र ब्राह्मण था। नित्यप्रति हवन करता था। हवनोपरान्त मैं हाथ नहीं धोता था। जाड़े के दिनों मे मेरे नाखूनों में घी लगा रहता था। घर पहुँचने पर पत्नी गरम-गरम भोजन देती थी। हाथ डालने पर सभी खाद्य पदार्थ में नाखून का घी मिश्रित हो जाता था। शिव निर्माल्य भक्षण करने का फल हुआ कि मैंने कुत्ते की योनि में जन्म लिया। पण्डित जी भी जब शिव मन्दिर के पुजारी होंगे तो इन्हें हमेशा शिव निर्माल्य खाने का अवसर प्राप्त होगा और उसके बाद मरणोपरान्त कुत्ते की योनि में जन्म लेंगे। पुनः इनके ऊपर जब कोई डण्डे से प्रहार करेगा तब इन्हें उसका दर्द पता चलेगा।

उपरोक्त निर्णय को सुनकर सभी दंग रह गये।

"सभी यज्ञों में सरल एवं प्रभावी बलिवैश्व यज्ञ"

सभी यज्ञों में सरल एवं प्रभावी यज्ञ बलिवैश्व यज्ञ है। यह सुख, शांति एवं समृद्धि का द्वार खोल देता है। गीता में भगवान कृष्ण का कहना है कि यज्ञ करने वाला कभी दरिद्र नहीं रहता। शास्त्रानुसार सूर्य एवं अग्नि प्रत्यक्ष देवता हैं तथा अग्नि सूर्य के ही अंश हैं। अग्नि की उपासना सूर्य की उपासना है। भगवान की यह प्रतिज्ञा है कि यज्ञ करने वाले को कभी ऋणी नहीं रहने देते।

बड़े-बड़े यज्ञों में अनेकों खर्च होते हैं। वर्तमान में तो यह और कठिन होता जा रहा है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने एक सुगम दैनिक यज्ञ 'बलिवैश्व यज्ञ' शुरु की। इसका पूरा नाम 'बलि-वैश्व-देव' है। बलि अर्थात् बलिदान, वैश्व का तात्पर्य समस्त विश्व के जड़-चेतन के लिए। देव अर्थात् देवताओं के लिए।

वैश्व देव विहीना ये अतिथ्येन बहिष्कृया।
सर्वे ते नरकं यान्ति काक योनि व्रजन्ति च॥

(प० स्मृति १। ४९)

जो बलिवैश्व नहीं करते और अतिथि सत्कार से विमुख रहते हैं। वे नरक में पड़ते हैं और कौवे की योनि में जन्म लेते हैं। ऐसा पराशर जी का कथन है।

प्राचीन काल में ग्राम देवता को वर्ष में एक दिन नैवेद्य लगाया जाता था। सभी घरों से मिष्ठान द्वारा अग्नि में पाँच-ग्रास आहुति दी जाती थी। मंत्र लोग नहीं जानते थे पर क्रिया अवश्य करते थे। यह बलि वैश्व का ही स्वरूप था। आज भी औरतें रोटी या चावल बनाते समय सर्व प्रथम अग्नि को अर्पण करती हैं। यह भी एक बलिवैश्व का उदाहरण है। बलि वैश्व यज्ञ में सर्वप्रथम स्नानादि करके भोजन बनाने का विधान है। बिना नमक-मिर्च वाला बना हुआ चावल (भात) या रोटी एक कटोरी में रखकर उसमें थोड़ा शुद्ध घी और चीनी या गुड़ मिला लें। पुनः चूल्हे या गैस के चूल्हे पर एक ताम्र-पात्र रखकर, पाँच आहुति गायत्री मंत्र पढ़कर देना चाहिए। शेष कटोरी में जो भी बच जाये, उसे प्रसाद समझ कर परिवार के सदस्यों को भोजन करते समय थोड़ा-थोड़ा परोसना चाहिए। यह क्रिया प्रतिदिन करना चाहिए। पाँच आहुति देने के पश्चात् ताम्र-पात्र के चारों तरफ "**ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः**" बोलकर जल घुमा दें।

आहुति देते समय निम्न मंत्रोच्चारण करना चाहिए—

(१) ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। इदं ब्रह्मणे इदं न मम।

(२) ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं...................... प्रचोदयात्।
इदं देवेभ्यः इदं न मम।

(३) ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं .... प्रचोदयात्
इदं ऋषिभ्यः इदं न मम।

(४) ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं .... प्रचोदयात्।
इदं नरेभ्यः इदं न मम।

(५) ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं .... प्रचोदयात्।
इदं भूतेभ्यः इदं न मम।

वह छोटा सा यज्ञ मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव ला सकता है, ऐसा शास्त्रों का वचन है।

धरा की कामधेनु 'गायत्री'

गायत्री मंत्र एक ऋग्वैदिक मंत्र है। ऋग्वेद संहिता के तृतीय मंडल के देवता सूक्त की ऋचा दस में सविता देवता से बुद्धि को प्रेरणा देने के लिए प्रार्थना किया गया है। इसे ही गायत्री मंत्र कहा जाता है। गायत्री छन्द के कारण, इसका नाम गायत्री पड़ा है। उस ऋचा में व्याहृति रहित केवल '**तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।** बस इतना ही मंत्र है। दूसरी तरफ यजुर्वेद संहिता में ३६वें अध्याय में 'भूर्भुवः स्वः' जोड़कर इसे दिखलाया गया है। सर्व प्रथम ॐ लगा देने से इसे मंत्रत्व प्राप्त हो जाता है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है—

'**बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।** (१०। ३५)

अर्थात् गायन करने योग्य श्रुतियों में मैं बृहत्साम और छन्दों में गायत्री छन्द हूँ।

गायत्री मंत्र एक जीवन-दायिनी प्रार्थना है। 'गायत्री' शब्द का अर्थ जो गाने वाले की रक्षा करे (गायन्तं त्रायते इति गायत्री) वही गायत्री है। अतः यह एक रक्षिका मंत्र भी है। इसका विधि पूर्वक जप करने से व्यक्ति ब्रह्ममय हो जाता है। द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के लिए यह कामधेनु है। ऐतरेय ब्राह्मण में इसे साक्षात् ब्रह्म की संज्ञा दी गई है। इन्हें 'वेदमाता' की भी संज्ञा दी गई है। बृहदारण्यक उपनिषद् में गायत्री मंत्र को सूर्यमंत्र (सावित्री) कहा गया है। वराहपुराण में इन्हें सरस्वती कहा गया है। मत्स्यपुराण में शतरुपा कहा गया है। पद्मपुराण में गायत्री को ब्रह्मा जी की पत्नी कहा गया है।

गायत्री मंत्र में कुल चौबीस अक्षर होते हैं। ये चौबीस अक्षर साधक में चौबीस शक्तियों को जागृत करते हैं। इस 'गौ' में यह विशेषता है कि इसके समीप जो भी कामना लेकर जाता है, उसकी कामना अवश्य पूरी होती है। यह मनुष्य के कष्टों का निवारण कर कामधेनु गौ की भाँति साधक के कामना को पूर्ण करती है। यह सद्बुद्धिदायक मंत्र है। व्यक्ति के विचारों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करती है। इसकी साधना से शरीर में और मन में सतोगुण की वृद्धि होने लगती है। सतोगुण की वृद्धि से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, स्वार्थ, आलस्य, व्यसन, व्यभिचार, छलप्रपंच, पाखण्ड, चिंता, भय, शोक, आदि दोष

निर्मूल होने लगते हैं। यह आयु, प्राण, शक्ति, कीर्ति, सद्बुद्धि धन-ऐश्वर्य आदि प्रदान करने वाली है। महापुरुष लोग इसकी प्रशंसा करते नहीं थकते हैं। यथा—

पराशर जी का कथन है—समस्त जप सूक्तों तथा वेद मंत्रों में गायत्री मंत्र परम श्रेष्ठ है। वेद और गायत्री की तुलना में गायत्री का पलड़ा भारी है। भक्तिपूर्वक गायत्री का जप करने वाला पवित्र बन जाता है। वेद, पुराण, उपनिषद्, इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात् भी जो गायत्री रहित है, वह ब्राह्मण नहीं है।

विश्वामित्र का मत है—'गायत्री के समान चारों वेदों में कोई मंत्र नहीं है। सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, जप, तप गायत्री मंत्र की एक कला के बराबर भी नहीं है।

वशिष्ठ जी का कथन है—मन्दमति, कुमार्गगामी और अस्थिरमति वाले लोग भी गायत्री के प्रभाव से उच्चपद को प्राप्त करते हैं, फिर सद्गति होना निश्चित है। आत्मलाभ के लिए इससे बड़ा दूसरा उपाय नहीं है।

महर्षि व्यासजी कहते हैं—जिस प्रकार पुष्प का सार शहद, दूध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है। सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान है। गंगा शरीर को निर्मल करती है, गायत्री रूपी ब्रह्म-गंगा से आत्मा पवित्र होती है। जो गायत्री छोड़कर अन्य उपासनायें करता है, वह पकवान छोड़कर भिक्षा माँगने वाले के समान मूर्ख है। काम्य सफलता और तप की वृद्धि के लिए गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।

नारदजी का मत है—गायत्री भक्ति का ही स्वरूप है। जहाँ भक्ति रूपी गायत्री है, वहाँ श्रीनारायण का निवास होने में, कोई संदेह नहीं है।

भारद्वाज ऋषि कहते हैं—ब्रह्मा आदि देवता भी गायत्री का जप करते हैं। वह ब्रह्म का साक्षात्कार कराने वाली है। अनुचित काम करनेवालों के दुर्गण, गायत्री के कारण छूट जाते हैं। गायत्री से रहित व्यक्ति शूद्र से भी अपवित्र है।

याज्ञवल्क्य जी का कथन है—'एक ओर तराजू पर षट् अंगों सहित वेद और दूसरी तरफ गायत्री को तौला गया तो गायत्री का पलड़ा भारी रहा। वेद का सार उपनिषद्, उपनिषद् का सार व्याहृतियों सहित गायत्री है। गायत्री वेदों की जननी है, पाप रहित करने वाली है, उससे अधिक पवित्र करने वाला मंत्र अन्य कोई नहीं है और न आगे होगा। गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं केशव के समान कोई श्रेष्ठ देव नहीं है तथा गायत्री के सामन कोई मन्त्र नहीं है।

चरक ऋषि का कथन है—जो ब्रह्मचर्य पूर्वक गायत्री की उपासना करता

है और आँवले के ताजे फलों का सेवन करता है, वह दीर्घ जीवी होता है।

इस तरह अनेक महापुरुषों ने गायत्री की महिमा का वर्णन किया है जिनमें जगद्‌गुरु शंकराचार्य, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी करपात्री जी, स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी, कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, मालवीय जी एवं महात्मा गाँधी आदि हैं।

प्राचीन काल में गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, अनसूया, अरुन्धती, देवयानी, अहल्या, कुन्ती, वृन्दा, तारा मन्दोदरी, दमयन्ती, द्रौपदी, लोपामुद्रा, शकुन्तला, पिंगला, रोहिणी, भद्रा, गान्धारी, सीता, देवहूति, पार्वती, अदिति, शैव्या, सत्यवती आदि महासतियाँ वेदज्ञ और गायत्री उपासक रही हैं। सावित्री ने तो एक वर्ष तक गायत्री का जप करके वह शक्ति प्राप्त की थी, जिससे वह अपने मृत-पति सत्यवान के प्राण को यमराज से लौटा सकी। गायत्री की साधना से साधक को आत्म-बल प्राप्त होता है।

प्राचीन काल में गायत्री गुरु मंत्र था। मूल्यवान वस्तु की प्राप्ति सहज ही नहीं होती। इस मंत्र की सबसे बड़ी विशेषता है कि नियत विधि से साधना न करने पर भी साधक की हानि नहीं होती है। कुछ न कुछ लाभ ही प्राप्त होता है। शाबर एवं नवग्रहों के मंत्रों के अतिरिक्त सभी मंत्र कीलित हैं। मंत्रों को कीलित इसलिए किया गया कि भविष्य में इसका कोई दुरुपयोग न करे। जो उसका उत्कीलन जानता है, वही उससे लाभान्वित हो सकता है। कीमती खजाने पर ताले व पहरेदार होते हैं।

पुराणों में ऐसा वर्णन मिलता है कि एक बार गायत्री को वशिष्ठ और विश्वामित्र ऋषियों ने शाप दे दिया कि—"उसकी साधना निष्फल होगी।" इतनी बड़ी शक्ति के निष्फल होने से हाहाकार मच गया, तब देवताओं ने प्रार्थना किया कि इन शापों का विमोचन होना चाहिए। अन्त में ऐसा मार्ग निकाला गया कि जो शाप विमोचन करके गायत्री की साधना करेगा, उसको सफलता अवश्य मिलेगी। गायत्री को ब्रह्मा, वशिष्ठ, विश्वामित्र एवं शुक्राचार्य जी ने शाप दिया था।

ब्रह्मापुत्र वशिष्ठ जी कोई साधारण नहीं थे। वशिष्ठ का अर्थ ही होता है—"विशेष रूप से श्रेष्ठ" प्राय: ऐसी मान्यता है कि जिसने गायत्री का जप सवा करोड़ किया है, उसे ही वशिष्ठ की पदवी दी जाती है। वास्तव में यदि आज

भी कोई गायत्री का सवा करोड़ जप कर लेवे तो उसके अन्दर भी शाप एवं आशीर्वाद देने की शक्ति झलकने लगेगी। वशिष्ठ जी इसी तरह भगवान राम के कुलगुरु के पद पर नहीं थे। वशिष्ठ के शाप विमोचन का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार के वशिष्ठ से ही गायत्री साधना की शिक्षा लेनी चाहिए। वैसे ही लोग सच्चे पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं। विश्वामित्र जी ने भी गायत्री पर अपना ताला लगा दिया था। जो विश्व (संसार) का मित्र हो वही विश्वामित्र कहलाने का अधिकारी हो सकता है। जो परमार्थी उदार, सत्पुरुष एवं कर्तव्यनिष्ठ हो वही सच्चा विश्वामित्र है।

तात्पर्य यह है कि साधना परोपकार के लिए है, किसी का अहित हो, इसके लिए कदापि नहीं है। रावण सिद्ध पुरुष था पर वह विश्वामित्र नहीं था, इसीलिए उसकी साधना उसे पतन की ओर ले गई। वशिष्ठ, विश्वामित्र, शुक्राचार्य जैसे गुरु के निर्देशन में ही इनकी साधना फलीभूत होगी। इसमें भी अपनी श्रद्धा एवं विश्वास, ये दो प्रधान हैं। इन दोनों की उत्पत्ति योग्य गुरु के माध्यम से ही संभव है। भगवान् दत्तात्रेय ने तो अपने जीवन में चौबीस गुरु किये थे।

गायत्री और यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत (जनेऊ) को 'ब्रह्मसूत्र' भी कहा गया है। सर्व प्रथम यज्ञोपवीत धारण करते समय वेदारंभ संस्कार में गायत्री मंत्र ही उच्चारित किया जाता है। यज्ञोपवीत के बिना व्यक्ति शूद्र के समान है। यज्ञोपवीत साक्षात् गायत्री का एक तरह से मूर्ति ही है। यज्ञोपवीत में तीन धागे होते हैं तथा गायत्री में भी तीन चरण हैं। प्रथम-**'तत्सवितुर्वरेण्यं',** द्वितीय-**भर्गो देवस्य धीमहि,** तृतीय चरण-**'धियो यो नः प्रचोदयात्'।** यज्ञोपवीत में तीन प्रकार की ग्रन्थियाँ और एक महाग्रन्थि भी होती है। महाग्रन्थि प्रणव (ॐ) है तथा तीन ग्रन्थियाँ (भूः भुवः स्वः) व्याहृतियाँ हैं। प्रणव का संदेश है कि परमात्मा सर्व व्यापक है। अतः लोक सेवा निष्काम भाव से करना चाहिए तथा विचारों को स्थिर रखना चाहिए। 'भूः' का तात्पर्य शरीर नश्वर है। इस का प्रयोग सत्यकर्मों में करे तथा विषयों से इसे दूर रखें। भुवः का तात्पर्य यह है कि पापों के विरुद्ध रहने वाला, मनुष्य होते हुए भी देवता है तथा वह सबसे बुद्धिमान है क्योंकि वह जीवन में पवित्र आदर्शों को अपनाता है। स्वः का तात्पर्य, विवेक द्वारा सत्य को पहचाने तथा संयम और त्याग की

नीति का आचरण करने लिए स्वयं उद्यत रहें तथा दूसरों को भी प्रेरित करें।

गायत्री गीता के अनुसार यज्ञोपवीत के नौ धागे भी हमें कुछ सन्देश देते हैं जो नौ रत्नों से भी मूल्यवान हैं, जो निम्न है—

प्रथम तन्तु—जीवन-विज्ञान की जानकारी प्राप्त करना तथा लोभ-मोह, जीवन-मृत्यु एवं सांसारिक विषयों को समझना एवं उनसे दूर रहना।

द्वितीय तन्तु—शक्ति का संचय करना एवं उसका सदुपयोग करना।

तृतीय तन्तु—विचारों की उन्नति पर ध्यान देना एवं श्रेष्ठता के लिए प्रयत्नशील रहना।

चतुर्थ तन्तु—मन-बुद्धि एवं शरीर से निर्मल रहना। निर्मलता सर्वतोसुखी होनी चाहिए तथा संतुष्टि की भावना होनी चाहिए।

पंचम तन्तु—संसार के तत्त्वों को पहचानना एवं बुराइयों से दूर रहना। अर्थात् दृष्टि की पवित्रता।

षष्ठम तन्तु—सद्‌गुणों का अपने अन्दर विकास करने के लिए प्रयत्नशील रहना। विनय, शिष्टाचार, उदारता, ईमानदारी, सेवा सहयोग, परिश्रम इत्यादि को प्राथमिकता देना।

सप्तम तन्तु—देश, काल, परिस्थिति एवं जनहित को ध्यान में रखते हुए विवेक-पूर्ण निर्णय लेना। विवेकी व्यक्ति उलझनों से दूर निकल जाता है।

अष्टम तन्तु—जीवन में संयम का परिचय देना। भोग-विलास की वस्तुओं से दूर रहना। जीवनी शक्ति का विचार शक्ति का, भोगेच्छा का तथा श्रम का संतुलन बनाकर चलना।

नवम तन्तु— सेवा की भावना। सेवा से उन्नति होती है। सेवा से व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति होती है। धर्मशास्त्र का कहना है कि जिनके पास यज्ञोपवीत और गायत्री मिश्रित अध्यात्मिक नवरत्न है, वे इस धरा पर कुबेर सदृश है।

यज्ञोपवीत की संरचना

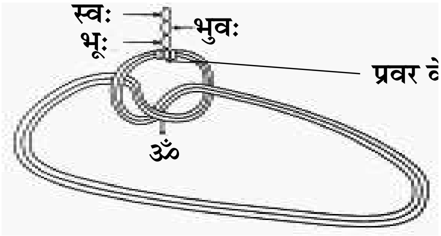

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों का अर्थ

ॐ — ब्रह्म

भूः — प्राणस्वरूप

भुवः — दु:खनाशक

स्वः — सुख स्वरूप

तत् — उस

सवितुः — तेजस्वी, प्रकाशवान

वरेण्यं — श्रेष्ठ, वरण करने योग्य

भर्गो — पाप नाशक

देवस्य — दिव्य को, देनेवाले को

धीमहि — धारण करें

धियो — बुद्धि को

यो — जो

नः — हमारी

प्रचोदयात् — प्रेरित करें

मूल मंत्र — **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों की शक्तियाँ एवं उनसे लाभ—

गणेश, नृसिंह, विष्णु, शिव, कृष्ण, राधा, लक्ष्मी, अग्नि, इन्द्र, सरस्वती, दुर्गा, हनुमान, पृथ्वी, सूर्य, राम, सीता, चन्द्रमा, यम, ब्रह्मा, वरुण, नारायण, हयग्रीव, हंस एवं तुलसी।

(१) गणेश – सफलता, बुद्धि–वृद्धि एवं विघ्नों का नाशक।

(२) नृसिंह – पराक्रम, वीरता, आक्रमण से रक्षा, पुरुषार्थ।

(३) विष्णु – पालन शक्ति, आश्रितों की रक्षा, योग्यताओं की वृद्धि।

(४) शिव – कल्याण, आत्मपरायणता, कल्याण की वृद्धि।

(५) कृष्ण – योगशक्ति, क्रियाशीलता, अनासक्ति, सरसता।

(६) राधा – प्रेम–दृष्टि, ईर्ष्या रहित।

(७) लक्ष्मी – धन, पद, यश एवं सांसारिक वस्तुओं की उपलब्धता।

(८) अग्नि – तेज वृद्धि, शक्ति एवं क्षमता वृद्धि, प्रतिभाशाली।

(९) इन्द्र - रक्षा शक्तियुक्त, सांसारिक बाधाओं से रक्षा।

(१०) सरस्वती- ज्ञान-वृद्धि, मेधा की वृद्धि, दूरदर्शिता, विवेकशीलता।

(११) दुर्गा - दमन, विघ्न, शत्रु एवं दुष्टों का दमन एवं मनोविकार का दमन।

(१२) हनुमान् - निष्ठा, कर्तव्य परायणता, विश्वासी, सेवाभाव एवं संयम।

(१३) पृथ्वी - गाम्भीर्य, क्षमाशीलता, दृढ़ता, धैर्य।

(१४) सूर्य - प्राणशक्ति, निरोगता, ऊर्जा, दीर्घजीवन।

(१५) राम - मर्यादा, सहिष्णुता, धर्म का रक्षा करना, मैत्री, संयम।

(१६) सीता - तपशक्ति, पवित्रता, सात्विकता, शील, नम्रता।

(१७) चन्द्रमा - शान्ति, शीतलता, काम, क्रोध, लोभ, मोह का निवारण।

(१८) यम - काल को ध्यान में रखकर समय का सदुपयोग, जागरुकता, मृत्यु से निर्भयता।

(१९) ब्रह्मा - उत्पादकता, सृष्टि के कल्याण हेतु अग्रसर होना।

(२०) वरुण - रस शक्ति, भावुकता, सरलता, कोमलता, माधुर्य।

(२१) नारायण - आर्दशवादिता, श्रेष्ठता, उच्चाकांक्षी होना, उज्ज्वल चरित्र एवं पथ-प्रदर्शकता।

(२२) हयग्रीव - साहस, उत्साह, शूरता, पुरुषार्थ।

(२३) हंस - विवेक, उज्ज्वल कीर्ति, सत्-असत् का निर्णय, सत-संगति, पारदर्शिता तथा उत्तम आहार-विहार।

(२४) तुलसी - सेवाशक्ति, पतिव्रत, पत्नीव्रत, आत्मशांति, परोपकारी।

जिस व्यक्ति में उपरोक्त गुणों में जिसकी अधिकता हो, उसे उस शक्ति वाले देवता की आराधना कल्याणकारी सिद्ध होगा।

वाल्मीकि रामायण की रचना का मूल आधार गायत्री मंत्र है। वाल्मीकि रामायण में कुल चौबीस हजार श्लोक है। एक-एक अक्षर की व्याख्या स्वरूप एक-एक हजार श्लोक है।

गायत्री के ऋषि, छन्द एवं देवता

(१) ऋषि — वामदेव, अग्नि, वशिष्ठ, शुक्र, कण्व, पराशर, विश्वामित्र, कपिल, शौनक, याज्ञवल्क्य, भारद्वाज, जमदग्नि, गौतम, मुद्‌गल, वेदव्यास, लोमश, अगस्त्य, कौशिक, वत्स, पुलस्त्य, माण्डूक, दुर्वासा, नारद और कश्यप।

(२) छन्द— गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप, जगती, अतिजगती, शक्वरी, अतिशक्वरी, धृति, अतिधृति, विराट् प्रस्तार, पंक्ति, कृति, प्रकृति, विकृति, संस्कृति, अक्षरपंक्ति, भू, भुवः स्वः और ज्योतिष्मती।

(३) देवता — अग्नि, प्रजापति, सोम, ईशान, सविता, आदित्य, बृहस्पति, मैत्रावरुणि (वशिष्ठ), भग, अर्यमा, गणेश, त्वष्ट्रा, पूषा, इन्द्राग्नि, वायु, वामदेव, मैत्रावरुणि, विश्वेदेवा, मातृका, विष्णु, वसु, रुद्र, कुबेर, अश्विनीकुमार।

भिन्नपाद गायत्री-मंत्र

शास्त्रों में शीघ्र मंत्र सिद्धि के लिए भिन्नपाद गायत्री मंत्र का वर्णन है। उसकी उपासना के बिना ब्राह्मण कर्म फलहीन है। इसके बारे में कहा गया है—

अछिन्नपादा गायत्री ब्रह्महत्या प्रयच्छति।
भिन्नपादातुं गायत्री ब्रह्महत्या व्योपहति॥

प्रत्येक पद के बाद अपनी कामनानुसार ॐ, ऐं, ह्रीं, श्रीं प्रयुक्त किया जा सकता है।

सर्वशांति हेतु—

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ
भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

विद्याप्राप्ति हेतु —

ॐ की जगह '**ऐं**' लक्ष्मी प्राप्ति हेतु **ॐ** की जगह '**श्रीं**', कामनासिद्धि हेतु '**ह्रीं**', वशीकरण हेतु '**क्लीं**' एवं शत्रुनाश हेतु '**क्रीं**' के द्वारा भिन्नपाद गायत्री मंत्र के प्रयोग का विधान है।

लघु गायत्री मंत्र— **ॐ भूर्भुवः स्वः।**

चतुष्पाद - ॐ भूर्भुव स्वः .... प्रचोदयात् परोरजसे सावदोम्।

पंचपाद्गायत्री - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं परोरजसे सावदोम्।

षट्पदागायत्री (ब्रह्म)—ॐ भूर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ परोरजसे सावदोम्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ॐ ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

त्रिशक्ति शताक्षरी गायत्री मंत्रः—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

वेदों का सार दस-प्रणव-युक्त गायत्री—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ।

याज्ञवल्क्य जी के पूछने पर ब्रह्मा जी ने गायत्री के विषय में निम्न बातें बताई —

गायत्री का गोत्र - सांख्यायन

गायत्री के वर्ण — बत्तीस (चतुष्पदा)

गायत्री के पाद — चार पाद हैं, पर अन्त के पाद की गणना न होने से त्रिपदा है।

त्रिपदा गायत्री के अक्षर —चौबीस

वेदानुसार गायत्री पाद —प्रथमपाद-ऋग्वेद। द्वितीयपाद-यजुर्वेद। तृतीयपाद-सामवेद। चतुर्थवाद-अथर्ववेद। गायत्री की कुक्षि - कुल आठ हैं।

(१) पूर्व दिशा (२) दक्षिणा दिशा, (३) पश्चिम दिशा, (४) उत्तर दिशा, (५) उर्ध्व दिशा (ऊपर), (६) अधः दिशा (नीचे), (७) अंतरिक्ष दिशा, (८) अवन्तर दिशा।

गायत्री के शिर — सात शिर हैं—

(१) व्याकरण, (२) शिक्षा, (३) कल्प, (४) निरुक्त, (५) ज्योतिष, (६) पुराण, (७) उपनिषद्।

गायत्री के रूप—पूर्व-सन्ध्या गायत्री, मध्यमा-सावित्री, पश्चिमा-सरस्वती।

तीनों गायत्री की वेशभूषा-बाला गायत्री-रक्तवर्णा, रक्त वस्त्रा। सावित्री-श्वेत वर्णा एवं सरस्वती कृष्णवर्णा। गायत्री के हृदयादि-गायत्री का हृदय विष्णु, शिखा रुद्र, कवच-ब्रह्मादिक। नारायणोपनिषद के अनुसार ब्रह्माजी गायत्री के शिर हैं।

(अथ पंचगव्य विधानम्)

पंचगव्य तैयार करने की विधि

पराशर-स्मृति के अनुसार पंचगव्य पाँच पदार्थों से तैयार होता है। इसमें गोदुग्ध, गो-दधि, गोघृत, गोमूत्र एवं गोबर, इन पाँच वस्तुओं का एक निश्चित मात्रा से मंत्र द्वारा मिश्रण होता है। विशेष कर इसमें देशी गाय के द्रव्यों का ही महत्त्व है। इसके औषधीय गुणों से रोग, ग्रह-बाधा एवं ऊपरि बाधादि दूर हो जाते हैं। पंचगव्य के पाँच पदार्थों में क्रमशः पाँच देवताओं का निवास माना गया है—

गो-दुग्ध — चंद्रमा
गो-दधि — वायु
गो-घृत — सूर्य
गो-मूत्र — वरुण
गोबर — अग्नि

पंचगव्य के द्रव्यों की मात्रा :—

गो-दुग्ध — सात चम्मच।
गो-दधि — तीन चम्मच।
गो-घृत — एक चम्मच।
गो-मूत्र — एक चम्मच।
गोबर-अर्द्ध — अंगुष्ठ-तुल्य।

उपरोक्त द्रव्यों को इसी अनुपात में लेकर किसी मिट्टी के पात्र में मंत्र द्वारा तैयार करें। यदि अधिक हो तो क्रमशः सभी द्रव्यों को द्विगुण या तीन गुणा कर लेवें।

मिट्टी के पात्र के अतिरिक्त ताम्र या स्वर्ण पात्र में भी तैयार किया जा सकता है। निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए क्रमशः उन पदार्थों को पात्र में डालकर उनका कुशाओं से आलोडन करें—

गोमूत्र — 'गायत्री मंत्र' पढ़कर डालें।
गो-दुग्ध — 'पयः पृथिव्यां' मंत्र द्वारा डालें।
गो-दधि — 'दधिक्राब्णो अकारिषं०' पढ़कर डालें।

गो-घृत — 'तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामना०' पढ़कर डालें।

गोबर — 'गंधद्वारा दुराधर्षां' पढ़कर डालें।

कुशोदकम् — 'देवस्य त्वा सवितुः०' बोलकर डालें।

उपरोक्त विधि से तैयार पंचगव्य ही प्रायः प्रयोग करना चाहिए। यदि पंचगव्य प्राशन करना हो तो उसे कपड़े से छानकर तब प्रयोग करें। यह रासायनिक प्रक्रिया अपने आप में एक विशिष्ट शक्ति रखता है। यह प्रयोग अनुभूत है।

स्वस्तिक

(दैवी शक्ति का भंडार)

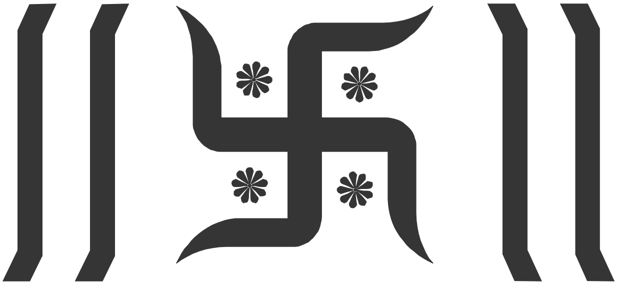

बाँयी ओर की दो लकीरों में ऋद्धि एवं लाभ का तथा दाहिनी ओर की दो लकीरों में शुभ व बुद्धि (सिद्धि) का आवाहन होता है। बीच की चार बिंदुओं में अग्नि कोण में शिव, वायव्य में दुर्गा, नैऋत्य में सूर्य एवं ईशान में विष्णु का आवाहन-पूजन होता है। लकीरों को अंकित करने पर ऋद्धि, लाभ एवं शुभ, बुद्धि (सिद्धि) लिखने की आवश्यकता नहीं है।

नदिया एक घाट बहु-तेरे

या विद्या शिवकेशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी
या पंच प्रणवादिरेफ नलिनी, या चित्कला मालिनी
या ब्रह्मादि पिपीलीकान्त तनुषु प्रोता जगत् साक्षिणी
सा पायात् पर देवता भगवती श्री राज राजेश्वरी॥

यह एक विडम्बना ही है कि मनुष्य-स्वर्ग-मोक्ष की कामना करता है तो देवता लोग मृत्युलोक अर्थात् मानवलोक में जन्म लेने के लिए तरसते हैं। तुलसी दास जी ने स्पष्ट लिखा है—

बड़े भाग मानुषतन पावा। सुर दुर्लभ सद्ग्रंथनि गावा॥

विभिन्न धर्मों का जन्म परमात्मा की एकता और अनेकता में मतैक्य न होने के कारण हुआ है। कुछ परमात्मा को साकार तो कुछ निराकार मानते हैं। तुलसी, सूर, मीरा, रामकृष्ण परमहंस आदि ने साकार रूप में देखा तो वहीं कबीर, रहीम ने निराकार रूप में देखा। प्रश्नोपनिषद् के अनुसार यह सम्पूर्ण सृष्टि विशेषकर मानव समाज, प्राणतत्व एवं रयितत्व से बना है। जिसमें वीर्य, बुद्धि, तर्क, ज्ञान, विवेक की प्रधानता होती है। वे प्राणतत्व के अन्तर्गत आते हैं। ये सूर्य से संबंधित हैं। जिन प्राणियों में भावना, करुणा, दया, भय, उद्वेग एवं जलीय तत्वों की प्रधानता होती है वे रयितत्त्व के अन्तर्गत आते हैं। ये चंद्रमा से संबंधित हैं।

अत: जो बुद्धितत्व, प्राणतत्व प्रधान होता है वह तर्कशील परिणामदर्शी होता है। उसे सद्गुरु निराकार ब्रह्म की उपासना का उपदेश देते हैं एवं उसकी प्राप्ति के लिए दर्शन, वेद, उपनिषद्, गीता द्वारा मार्गदर्शन करते हैं। वह साधक ज्ञान, योग, ध्यान, समाधि द्वारा परा-अपरा, ब्रह्म-जीव, माया, सत-असत् एवं मिथ्या को सम्यक् रूप से जानकर ब्रह्मभाव से अपने आपको स्थिर करके परमानन्द को प्राप्त कर लेता है।

दूसरा जो भावना प्रधान होते हैं, वे भावना की डोर परमात्मा से जोड़कर भक्ति एवं प्रेम तत्त्वद्वारा विभिन्न भावनाओं और आस्थाओं द्वारा भगवान् को प्राप्त करते हैं। जिनके हृदय में करुणा, दया, प्रेम की बहुलता होती है, जो यह मानते हैं कि परमात्मा आस्था का विषय है, भावना से युक्त है, अत: यह तर्क व बुद्धि से परे है, उस परमात्मा को प्रेम-मार्ग द्वारा एवं नवधा भक्ति द्वारा स्वयं को

शरणागत करके साकार विग्रह की उपासना करके आनंदित होते हैं।

गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है—

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

(अ० १८, श्लोक ६६)

सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर।

दूसरी तरफ गीता में ही भगवान ने कहा है कि हे अर्जुन! सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण वे प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं। इन गुणों के कारण ही जीवात्मा अपने कर्मानुसार दिशा व दशा तय करता है। इन तीनों उपरोक्त गुणों के कारण ही ब्रह्म सगुण कहा गया है। जब वह कोई रूप पकड़ता है तो सगुण या साकार हो जाता है तथा सूक्ष्म या अदृश्य रूप में विद्यमान रहता है तो निर्गुण या निराकार कहा जाता है। उपरोक्त श्लोक में स्वयं भगवान कृष्ण कहते हैं कि सभी को छोड़कर मात्र मुझे (निर्गुण) स्वरूप का भजन कर, मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा। किन्तु दूसरी तरफ इन्द्र के बदले गोबर्द्धन पूजा के लिए ब्रजवासियों को प्रेरित करते हैं। त्रेता में वही कृष्ण राम रूप में अवतरित होकर रामेश्वरम् में भगवान् शिव की पूजा करते हैं। पिता के श्राद्ध में पितरों को पिण्डदानादि करते हैं। गीता के सोलहवें अध्याय के तेइसवें श्लोक को देखने पर पता चलता है कि शास्त्र के विरुद्ध इच्छा से मनमाना आचरण करनेवाला सिद्धि, परमगति और सुख से वंचित रह जाता है—

यथा—

यः शास्त्र विधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥

ब्रह्म के सगुण रूप में अवतरित होने के अनेक कारण हैं—

(१) धर्म की स्थापना एवं अधर्म के विनाश के लिए।

(२) विप्र, धेनु, सुर एवं संतों की रक्षा के लिए।

(३) देवता एवं श्रुतियों की रक्षा के लिए।

(४) भक्तों को सुख देने के लिए तथा मर्यादा की स्थापना एवं धर्म-

परम्पराओं को पोषित करने के लिए।

यहाँ केवल सनातन धर्म ही स्वीकार करता है कि परमात्मा भक्तों के लिए गर्भ के माध्यम से भी अवतरित होता है। शेष सभी धर्मों के लोग इसे असत्य मानते हैं। वे सभी देवदूत, फरिश्ता, नवी, ईश्वर तक तो मानते हैं पर स्वयं ईश्वर किसी का पुत्र बने, यह स्वीकार नहीं करते। यद्यपि कि शुक्ल यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के मंत्र को देखा जाय तो उपरोक्त बात की पुष्टि हो जाती है।

यथा—

प्रजापतिश्चरति गर्ब्भेऽअन्तर जायमानो बहुधा व्विजायते।
तस्य योनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्नह तस्थुर्ब्भुवनानिविश्वा॥

जैसे तिल में तेल, दूध में मक्खन, माचिस में अग्नि अदृश्य रहती है। तिल को पेरने से, दूध को दही बनाकर मथने से तथा माचिस की तिल्ली के घर्षण क्रमशः तेल, मक्खन व अग्नि प्रकट होती है वैसे ही वह जो ब्रह्म निर्गुण निराकार होकर जगत् को धारण करते हैं एवं उसका संचालन करते हैं, वही अतिशय प्रेम-पूर्वक प्रार्थना, अनुरोध, अनुनय-विनय पर प्रकट होकर सगुण रूप धारण करते हैं। भगवान् शिव उत्तरकाण्ड में रामचरित मानस में परमात्मा के सगुण-निर्गुण दोनों स्वरूपों की स्तुति करते हैं—

जय सगुन निर्गुन रूप, रूप अनूप भूप सिरोमने।

जीव जब गर्भ से बाहर निकलता है तो वह पशुतुल्य संस्कारहीन होता है। यद्यपि कि गर्भ में ही तीन संस्कार करने का विधान है। उस पशुवत् जीव को मानव बनाने हेतु तथा देवता एवं परमात्मा से मिलाने के लिए तीन शास्त्रीय विधान बनाये गये हैं—

(१) कर्म अर्थात् कर्मकाण्ड।

(२) उपासना काण्ड।

(३) ज्ञानकाण्ड।

(१) कर्मकाण्ड—इसके लिए वेद में अस्सी हजार मंत्र हैं जो हमें निर्देशित करते हैं कि हमारा जीवन सम्यक् रूप से आचरित होवे। हम सबल व स्वस्थ रहें। हमारी व्यक्तिगत्, सामाजिक व पारिवारिक एवं राष्ट्रीय जीवन उच्च से उच्चतम उत्कृष्टता को प्राप्त करे।

(२) उपासनाकाण्ड—इसके लिए वेदों में सोलह हजार मंत्र हैं।

उप+आसना, इति उपासना। परमात्मा के समीप अपने आप को ले जाना या परमात्म सत्ता को पाने का लक्ष्य रखना यह उपासना का लक्ष्य है।

(३) ज्ञानकाण्ड—उसके लिए वेद में चार हजार मंत्र हैं। इसमें ब्रह्म क्या है? जीव क्या है? माया क्या है? इसका निरुपण किया गया है। जीव सद्गुरु की कृपा में एवं निर्देशन में सम्यक् अध्ययन करके योग, ध्यान, समाधि द्वारा परमात्म तत्त्व में अपनी वृत्तियों को स्थिर कर लेता है तथा परमानन्द तत्व में लीन हो जाता है। जीव ही शिव हो जाता है। कैवल्य मोक्ष इसे ही कहा जाता है। इसी को '**शिवोऽहम्**' व इस्लाम में धर्म '**अनलहक**' कहा जाता है।

सगुणोपासना में भक्त पति, प्रियतम, पुत्र, सखा आदि विभिन्न भावों का आश्रय लेकर भगवान् की छवि को हृदय में बसाकर दोनों का एकीकरण करता है। तुलसी, सूर, मीरा, रसखान, शबरी, गिद्ध आदि इसके उदाहरण हैं। वह भगवान को सर्वस्व मानकर उनकी लीला, गुण, चरित्र का गायन कर, मंत्र-जप आदि का सहारा लेकर, पूजन-अर्चन द्वारा परमगति या परमधाम को प्राप्त कर लेता है। वह परमात्मा से कामना करता है—

अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहउ निर्वान।
जनम जनम रति राम पद, यह वरदान न आन॥
कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमिदाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागेहु मोहि राम॥

इस मार्ग का अनुसरण रयि तत्व वाले ही करते हैं। ये लोग अपना जीवन तो धन्य करते ही हैं, अपने आचरण से अनेक लोगों का मार्गदर्शन करके उनके जीवन को धन्य बनाते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि भक्ति, प्रेम, साधना, समर्पण का मार्ग योग, ध्यान, समाधि से कहीं अति सरल है एवं साध्य है। एक विद्युत बल्ब को जलते हुए देखकर कोई भी सहज ही अनुमान लगा सकता है कि बिजली है तथा उसके प्रकाश का अनुभव कर सकता है, उसे देख सकता है किन्तु विद्युत तार के बिजली को तो कठिनाई से जाँच करके ही समझा जा सकता है कि—विद्युत-धारा प्रवाहित हो रही है। उसे देखा नहीं जा सकता है। यही स्थिति माचिस की तिल्ली व जलती हुई अग्नि का है। एक निर्गुण है तो दूसरा सगुण है। आस्था के सामने तर्क बेकार है। धर्म में परमात्मा के लिए तर्क का कोई स्थान नहीं है। वह तर्क

से परे है। रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में भी तुलसीदास जी ने लिखा है—

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

सगुणोपासना से साधारण जन भी परमगति को प्राप्त कर सकते हैं किन्तु निर्गुणोपासना लाखों में या करोड़ों में से कोई एक ही कर सकता है।

ॐ शान्तिः! ॐ शान्तिः!! ॐ शान्तिः!!!

आचार्य पं० जयप्रकाश उपाध्याय
ग्रा० व पो०—अमौरा, गाजीपुर
संरक्षक—
गंगेश्वर जन कल्याण समिति
गहमर, गाजीपुर, उ०प्र० (भारत)
महामंत्री—
गंगेश्वर जन-कल्याण युवा मंच
अमौरा, गाजीपुर, उ०प्र० (भारत)

वन्दे गोमातरम्

‘**गावो विश्वस्य मातरः**’ गाय पूरे विश्व की माता है। दूसरी तरफ ‘**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**’ इन दोनों सूक्तियों में बहुत बड़ा अन्तर है। एक पूरे विश्व की माता की ओर संकेत करती है तो दूसरी व्यक्तिगत या किसी राष्ट्र की ओर संकेत करती है। यह कोई आवश्यक नहीं है कि अमरीका का रहने वाला भारत माता से प्रेम करे। किन्तु गो माता तो पूरे विश्व के लिए आदरणीय व पूज्यनीय हैं। आज से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व सनातन धर्म था। ईसाई धर्म लगभग एक्कीस सौ वर्ष पूर्व का है तथा ईस्लाम धर्म लगभग चौदह सौ वर्ष पूर्व का है। इनके पूर्व सभी सनातन धर्मावलम्बी थे। अपनी माँ से भी गो माता श्रेष्ठ हैं। अपनी माँ अधिक से अधिक दो वर्ष तक बच्चे को दुग्ध-पान कराती है, परन्तु गोमाता तो आजीवन तथा अनेक व्यक्तियों का भरण-पोषण करती है। अतः गोमाता की महिमा अपार है।

‘गौ, ब्राह्मण, वेद, पतिव्रतानारी, सत्यवादी, निर्लोभी पुरुष तथा दानी-ये सात लोग पृथ्वी को धारण कर रखे हैं’। इनमें भी प्रथम स्थान गौ का है। भारत अन्य राष्ट्रों से भिन्न है तो उपरोक्त सातों के कारण ही। भगवान भी यदि धरा पर अवतरित होते हैं तो उसमें एक प्रमुख हेतु गौमाता भी है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने ‘रामचरितमानस’ में स्पष्ट लिखा है—‘**बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार**’। अर्थात् परमात्मा के अवतार के कारण ये मुख्य चार है, जिनमें गो माता भी हैं।

सनातन धर्म में ब्राह्मण पंचभूत, अतिथि, आत्मा, देवप्रतिमा तथा गौ-इन सबको पूजन करने का विधान है। हमारा कोई भी ऐसा धार्मिक कृत्य नहीं है, जिसमें पंचामृत व पंचगव्य की आवश्यकता न हो। प्रायः सभी मंगल कार्यों में एवं श्राद्धादि में भी गोदान किया जाता है। गौ की परिक्रमा करने से सभी तीर्थों व देवताओं की प्रदक्षिणा सम्पन्न हो जाती है। प्राचीन काल में एक-एक ऋषियों के आश्रम में हजारों, लाखों गायें रहती थीं। हमारे शास्त्र कहते हैं कि गौ माता धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों पुरुषार्थों को देने वाली है। पुराणों में लिखा है कि संसार में सर्व प्रथम वेद, अग्नि, गौ एवं ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई। ये चारों यज्ञ के अंग हैं। इसमें भी गौ, अग्नि एवं ब्राह्मण इन तीनों की जाति एक ही

है। देहाती कहावत भी है कि—‘बाभन-बछिया’। प्रजापति ब्रह्मा जी ने इन तीनों की उत्पत्ति यज्ञ के लिए किया। ये तीनों यज्ञ के पूरक हैं। ब्राह्मण में मंत्र है, तो अग्नि में तेज है और गाय में आज्य (हविष्य) हैं। इन तीनों का समन्वित रूप ही यज्ञ का आधार है। गौएँ लक्ष्मी की जड़ हैं। इनमें तैंतीस कोटि देवताओं का निवास माना गया है—

गायें ही अन्न और हविष्य देने वाली हैं। स्वाहा और वषट्कार सदा इनमें ही प्रतिष्ठित होते हैं। ये अमृत का आधार हैं। धरा पर यदि किसी को अमृत कहा गया है, तो वह है गो-दुग्ध। गो समुदाय जहाँ निर्भयता पूर्वक बैठकर सांस लेता है, उस स्थान की ‘श्री’ बढ़ जाती है तथा वह भूमि शुद्ध हो जाती है। गौवें स्वर्ग के लिए सोपान हैं। ये स्वर्ग में भी पूजी जाती हैं। गौ सेवक के मुक्ति के द्वार खुल जाते हैं।

‘गीता गंगा च गायत्री गौश्च गोविन्द एव च।
सनातनस्य धर्मस्य पंचप्राणाः प्रकीर्त्तिताः॥

गीता, गंगा, गायत्री मंत्र, गौमाता एवं गोविन्द ये पाँच, सनातन धर्म के प्राण हैं। सभी सम्प्रदायों में जप का विधान है। जप में माला को गोमुखी में रखकर जपने का विधान है। गायत्री जप में तो सर्व प्रथम सुरभि मुद्रा का ही प्रदर्शन करते हैं। नैवेद्य अर्पित करते समय अमृतत्व के आधार के लिए धेनुमुद्रा की अनिवार्यता है। देवी पूजन में तो अवश्य ही धेनु मुद्रा का प्रयोग किया जाता है। गोमुख, गोदावरी, गोधूम, गोपाल, गोधूलि, गोरोचन, गोशाला, गोकुल, गोलोक, गोदावरी, गौतम, गोवर्धन, गोमती आदि शब्द गोमाता से ही सम्बन्ध रखते हैं।

ऋग्वेद के अनुसार—

माता रुद्रांणां दुहिता वसूनां गुं स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मां गामनागामदितिं वधिष्ट॥

(ऋग्वेद ८। १९। १५)

गौ शत्रुओं को रुलाने वाले वीर मरुतों की माता, वसुओं की कन्या, अदिति के पुत्रों की बहिन और अमृत का तो मानो केन्द्र ही हैं। इसलिए विवेकी पुरुष इस अवध्य गौ का वध न करें।

अपरोक्त ऋचा का प्रयोग विवाह-संस्कार में कन्यादान के समय होता है।

'गो' शब्द अनेकार्थी है। गच्छति इति गौः। अर्थात् जो गतिशील है, वही गौ है। विश्व के अन्तर्गत पदार्थों का वाचक 'गो' शब्द है।

स्वः। पृश्निः। नाकः। गौः। विष्टप्। नमः। ये छः पद द्युलोक तथा सूर्यके वाचक हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि 'गो' स्वर्गलोक, द्युलोक एवं सूर्य से सम्बन्धित है। 'गो' का अर्थ किरण भी होता है। नक्षत्रों का नाम भी 'गो' है। पृथ्वी को भी 'गो' कहा गया है। पृथ्वी भी गतिशील है। 'गो' का अर्थ इन्द्रियाँ भी हैं। निघण्टु के अनुसार हीरा, रत्न सुवर्ण आदि खनिज पदार्थ भी 'गो' कहलाते हैं। भूमि से उत्पन्न सभी पदार्थ 'गो' की श्रेणी में आते हैं। परन्तु यहाँ जिस 'गो' की चर्चा की गई है, उसकी महिमा अपार है। यह चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है। यह स्वयं सूखी घास खाकर हमारे लिए अमृत प्रदान करती है। हमारे शास्त्रों में इनका एक अलग ही लोक है जिसे 'गोलोक' कहा जाता है ऐसा वर्णन आया है। सारा लोक 'गो' में ही प्रतिष्ठित है। गौओं के सींग का जल सारे पापों का नाश करता है। गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत एवं गोरोचन, इनका सेवन कष्ट एवं दुःखादि का नाशक है। श्राद्धादि में तो वैतरणी नदी पार उतरने के लिए गोदान की महत्ता अलग ही है। रातभर उपवास करके पंचगव्य एवं कुशोदक का पान करने से म्लेच्छ भी शुद्ध हो जाता है। गोमती विद्या का तो जप महान फलदायी है। नित्य गोदर्शन एवं गोस्पर्श अनेक पापों का नाश करता है।

भगवान शिव तो स्वयं साक्षात् नील-वृषभ है। इससे संबंधित एक पौराणिक कथा भी है। भगवान शिव एक बार ब्रह्मतेज सम्पन्न ऋषियों का कुछ अहित कर बैठे। ऋषियों ने उन्हें श्राप दिया। श्राप के भय से वे गोलोक गये और सुरभि

माता का स्तवन करने लगे। बहुत देर तक स्तवन करने के पश्चात् वे सुरभि की परिक्रमा कर उनके देह में प्रविष्ट कर गये। माता सुरभि ने उन्हें गर्भ में धारण कर लिया। इधर शिव के न होने से जगत् में हाहाकार मच गया। देवताओं ने स्तवन कर ब्राह्मणों के माध्यम से गोलोक को प्रस्थान किया। वहाँ उन्होंने सूर्य के समान तेजस्वी 'नील' नामक सुरभि- सुत को देखा। उनके सारे अंग लाल थे, मुख और पूँछ पीले थे तथा खुर और सींग सफेद थे। वही चतुष्पाद धर्म थे एवं पंचमुख हर थे। देवताओं ने विविध-प्रकार से उनकी स्तुति की। ऋषियों द्वारा तथा देवताओं द्वारा स्तुति करने पर साक्षात् 'नील' रूपी महादेव ने उन्हें प्रणाम किया। पुनः ब्राह्मणों ने उन्हें वरदान दिया कि मृत प्राणी के एकादशाह के दिन लील वृषभ को उसके वाम भाग में चक्र और दक्षिण भाग में त्रिशूल अंकित कर गायों के समूह में छोड़ दिया जायेगा तो वह जगत् का कल्याण करेगा।

गोलोक सबसे ऊपर रहता है। गायें ही यज्ञ की अधिष्ठाता हैं जिससे देवता गण तृप्त होते हैं। इनके बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता हैं। ये हव्य एवं कव्य दोनों को देती हैं जिससे देव-पितृगण दोनों तृप्त होते हैं। इनके व्यवहार में शठता, कपटता नहीं होती हैं। ये बड़ी ही सरल हैं। ये सदा पवित्र कर्मों में लिप्त रहती हैं। इसीलिए इनका लोक सभी लोकों से ऊपर होता हैं।

गोदावरी नदी को दक्षिण भारत का गंगा कहा जाता है। इस नदी की उत्पत्ति गोमाता के कारण ही हुई है। ऐसा ब्रह्माण्डपुराण के गौतमी माहात्म्य में देखने को मिलता है। गौतम ऋषि ब्रह्मगिरि के आश्रम में रहते थे। एक बार घोर सूखा पड़ा। चारों तरफ हाहाकार मच गया। मुनिवर वशिष्ठ एक दिन कुछ ऋषियों सहित गौतम मुनि के आश्रम पर पहुँचे। महर्षि गौतम ने उनका अभिनन्दन किया। अन्न देकर उनके प्राणों की रक्षा की। वे प्रतिदिन अन्न उगाते थे जो ऋषियों के आहार के काम आता था। इसके पीछे उनकी कठोर तपस्या थी। वे गायत्री के उपासक थे।

एक बार कैलास पर्वत पर पार्वती जी ने शंकर जी से कहा कि आप गंगाजी को सिर पर और मुझे अपने वाम भाग में रखकर मेरा अपमान कर रहे हैं। शंकर जी उनके बातों पर ध्यान नहीं दिये। दुखित होकर पार्वती जी अपने आज्ञाकारी पुत्र गणेश जी को व्यथा सुनायी। माता के दुःख से दुखित होकर गणेश जी अग्रज कार्तिकेय सहित गौतम ऋषि के आश्रम पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने

ऋषियों से कहा कि अब अकाल समाप्त हो गया है। पृथ्वी अन्न-जल से परिपूर्ण हो गई है। अब आप लोगों को यहाँ ठहरना उचित नहीं है। यह जानकर ऋषिगण चलने को तैयार हुए तबतक गौतम ऋषि ने उनसे कहा—अकाल में मैंने अन्न देकर आपलोगों के प्राणों की रक्षा की है। यहाँ कुछ समय तक और ठहरें। अभी यहाँ से जाना उत्तम नहीं है। गौतम के अनुरोध को सुनकर ऋषियों ने अपना निर्णय बदल दिया।

इधर गणेश जी ने कार्तिकेय से कहा कि—आप गाय का रूप पकड़ कर गौतम ऋषि के खेत में चले जायँ तथा जैसे ही ऋषि की दृष्टि आप पर पड़े, आप गिर पड़ें, जिससे पता चले कि मृत्यु हो गयी है। कार्तिकेय ने ऐसा ही किया। ऋषि की दृष्टि पड़ते ही गौ के रूप में कार्तिकेय धराशायी हो गये।

यह दृश्य देखकर ऋषिगण वहाँ से चलने लगे और बोले—कि यहाँ एक क्षण भी ठहरना पाप है—क्योंकि यहाँ गो-बध हुआ है। गौतम ऋषि के आग्रह करने पर ऋषि गण बोले कि आप भी भगीरथ की भाँति श्रीगंगाजी को लाकर इस स्थल को पवित्र करें तो हमलोग यहाँ ठहर सकते हैं।

ऋषियों की बात सुनकर महर्षि गौतम त्र्यम्बक पर्वत पर तपस्या करने लगे। तपस्या से प्रसन्न होकर शंकरजी ने उन्हें गंगाजी को देने का वचन दिया और कहा कि यह गंगा गौतमी और गोदावरी के नाम से प्रसिद्ध होगी।

इतना कहकर उन्होंने गंगाजी को गौतम के हाथों दे दिया। गौतम प्रसन्न होकर अपने आश्रम लौट आये। वहाँ पर गंगाजी तीन धाराओं में विभक्त हो गयी। प्रथम धारा मृत गौ को जीवित कर दक्षिण की ओर सागर में मिल गयी। दूसरी धारा पाताल में प्रवेश कर गयी तथा तीसरी धारा आकाश-मार्ग द्वारा स्वर्ग को चली गई। दक्षिण सागर में मिलने वाली धारा गंगा, गोदावरी और गौतमी नाम से प्रसिद्ध हुई।

गायों की जातियाँ

त्रीणि वै वशाजातानि विलिप्ती सूतवशा वशा।
ताः प्रयच्छेद् ब्रह्मभयः सोऽनाव्रस्कः प्रजापतौ।

(अथर्ववेद १२। ४४। ४७)

गायों की तीन जातियाँ हैं—

(१) विलिप्ती :—इनका शरीर चिकना होता है।

(२) सूतवशा :—सेवक के सामने रहने पर ही वश में रहती है।

(३) वशा : जो सबके वश में रहे।

उपरोक्त तीनों गोदान के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी गयी हैं। ये सारी बातें वर्तमान में देशी गायों के लिए ही है। इसके अतिरिक्त तीन और गायें हैं—

(१) अ-वशा—जो कभी वश में न रहे। हमेशा उछल-कूद करे तथा दूध न निकालने दे।

(२) भीमा, भीमतमा—जो देखने व बर्ताव में भी भयानक हो।

(३) वशानां वशतमा—सबसे सीधी हो। कामधेनु इसी की श्रेणी में आती है। जो इच्छानुसार दिन में कई बार दूध दे वही कामधेनु है।

उपरोक्त छः श्रेणियों में 'अवशा' एवं 'भीमा, भीमतमा' को छोड़कर शेष चारों गायें दान के योग्य हैं। सुपात्र को दी हुई गई कपिला गाय तो मनुष्य के सारे पापों को नष्ट कर उसके सात पीढ़ियों का उद्धार कर देती है। बछड़े सहित कपिला गौ के दान का तो महत्त्व ही कुछ और है। इनके दर्शन और नमस्कार से सभी पाप से मुक्ति मिल जाती है। गो सेवा से तो संपति, संतति, सुख, भोग, ऐश्वर्य एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। लोक-परलोक दोनों सुधर जाते हैं। भगवान कृष्ण को गोचारण में बड़ा ही आनन्द आता था। गाय चराने जाने के लिए तो वह माँ यशोदा से हठ कर बैठते थे। सर्वप्रथम जो पाँच गायें उत्पन्न हुई थीं उनके नाम—नन्दा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला एवं बहुला है।

यथा—

नन्दा सुभद्रा सुरभिः सुशीला बहुला इति।
एता लोकोपकाराय देवानां तर्पणाय च॥

उपरोक्त पाँचों गौएं समस्त लोकों के कल्याणार्थ एवं देवताओं को तृप्त करने के लिए अविर्भूत हुई थीं। पुनः देवताओं ने इन्हें महर्षि जमदग्नि, भारद्वाज, वशिष्ठ, असित और गौतम मुनि को दे दिया। ये सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली कामधेनु हैं।

आदि गौ सुरभि देवी का उपाख्यान

एक समय भगवान श्रीकृष्ण राधा सहित गोपांगनाओं से घिरे हुए पुण्य वृंदावन में गये। कौतुहल वश थक जाने के बहाने किसी एकान्त स्थान में बैठ

गये। उनके मन में दूध पीने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसी क्षण उन्होंने अपने वाम भाग से लीला पूर्वक सुरभि गौ को प्रकट किया। बछड़ा भी उस गौ के साथ था। गौ का थन दूध से भरा था। बछड़े का नाम मनोरथ था। उस सवत्सा गौ को सामने देखकर श्रीदामा ने एक नये बर्तन में उसका दूध निकाला। वह दूध अमृत ही था। भगवान् श्रीकृष्ण ने उस दूध को पीया। जिस भाँड़ से वे दूध पी रहे थे वह धरती पर गिरकर फूट गया। दूध चारों ओर फैल गया जिससे एक सरोवर का निर्माण हुआ। उस सरोवर की लम्बाई चौड़ाई सौ-सौ योजन थी। वही वह सरोवर गोलोक में क्षीर सरोवर के नाम से प्रसिद्ध है। भगवान् श्रीकृष्ण की इच्छा से वहाँ घाट बन गये। वहाँ असंख्य कामधेनु गौएँ प्रकट हों गई। जितनी गौएँ थीं, उतने ही गोप भी उनके रोमकूप से निकल आये। पुनः उन गौओं से बहुत सी संतानें हुई जिनकी गणना संभव नहीं है। इसी सुरभि देवी से ही गौओं की सृष्टि कही जाती है, जिससे जगत् व्याप्त है। उस समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुरभि देवी की पूजा की थी। दीपावली के दूसरे दिन भी भगवान् ने देवी सुरभि की पूजा की थी। सुरभि देवी का षडाक्षर मंत्र 'ॐ सुरभ्यै नमः' है। इसका जप एक लाख का है। एक लाख जप करने पर मंत्र सिद्ध होकर भक्तों के लिए कल्पवृक्ष का काम करता है।

(देवी भागवत्)

कपिला गौओं की उत्पत्ति और उनकी महिमा एवं उनके अनेक रंग होने का कारण

जिस प्रकार नदियों में गंगा श्रेष्ठ है उसी तरह गायों में कपिला गाय उत्तम मानी जाती है। सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा जी ने दक्ष को यह आज्ञा दी कि 'तुम प्रजा की सृष्टि करो' किन्तु प्रजापति दक्ष ने प्रजा के हित के लिए सर्व प्रथम उनकी आजीविका का ही निर्माण किया। उन्होंने प्रजावर्ग की आजीविका के लिए उस समय अमृत का पान किया। अमृत पीकर जब वे पूर्ण तृप्त हो गये, तब उनके मुख से सुरभि (मनोहर) गन्ध निकलने लगी। सुरभि गन्ध निकलने से 'सुरभि' नामक गौ प्रकट हो गयी। उस सुरभि ने अनेक सौरभेयी नाम वाली गौओं को उत्पन्न किया। ये गौएँ सृष्टि के लिए माता के समान थी। मानो चारों ओर दूध की नदियाँ बहने लगीं। दूध से फेन निकलने लगा।

एक दिन भगवान् शंकर पृथ्वी पर खड़े थे। उसी समय सुरभि के एक बछड़े के मुँह से फेन निकलकर उनके सिर पर गिर पड़ा। इससे वे कुपित हो उठे और अपने ललाट जनित नेत्र से मानो रोहिणी को भस्म कर डालेंगे, इस तरह उसकी ओर देखने लगे। रुद्र का वह भयंकर तेज जिन-जिन कपिलाओं पर पड़ा उनके रंग नाना प्रकार के हो गये। जैसे सूर्य बादलों को अपनी किरणों से बहुरंगा बना देते हैं, उसी प्रकार उस तेज ने उन सभी गौओं को नाना वर्ण वाली कर दिया। परन्तु जो गौएँ भय से भागकर चंद्रमा की शरण में चली गयीं वे उसी वर्ण की रह गयीं।

रुद्र के क्रोध को देखकर दक्ष प्रजापति ने कहा कि प्रभो! आपके ऊपर अमृत का छींटा पड़ा है गौओं का दूध बछड़ों के पीने से जूठा नहीं होता। जैसे चंद्रमा अमृत का संग्रह करके फिर उसे बरसा देता है उसी प्रकार ये रोहिणी गौएँ अमृत से उत्पन्न दूध देती है। जैसे वायु अग्नि, सुवर्ण, समुद्र और देवताओं का पीया हुआ अमृत-ये वस्तुएँ उच्छिष्ट नहीं होती, उसी प्रकार बछड़ों के पीने पर उन बछड़ों के प्रति स्नेह रखने वाली गौ भी उच्छिष्ट नहीं होती। तात्पर्य यह है कि दूध पीते समय बछड़े के मुँह में गिरा हुआ झाग अशुद्ध नहीं माना जाता। ऐसा कहकर बहुत सी गौएँ प्रजापति ने महादेव जी को भेंट किया। महादेव जी प्रसन्न हुए। उन्होंने वृषभ को अपना वाहन बनाया और उसी की आकृति में अपने ध्वज को चिन्हित किया, इसीलिए उन्हें 'वृषभध्वज' कहा जाता है। तदन्तर देवों ने उनको पशुओं का अधिपति बना दिया और गौओं के बीच में उनका नाम वृषभांक एवं पशुपति रखा। इस प्रकार कपिला गौएं अत्यन्त तेजस्विनी हैं और शान्त वर्ण वाली हैं। इसी से दान में उन्हें गौओं में प्रथम स्थान दिया गया है। भगवान् शिव सदा गौओं के साथ रहते हैं। इसीलिए गोशाला में मंत्र-जप का विधान है। गोशाला में मंत्र-जप से कई गुना फल मिलता है।

द्वारा-महाभारत (अनु०पर्व)

गोबर एवं गोमूत्र में लक्ष्मी जी का निवास

गोबर से घर-आँगन लीपने की पुरानी परम्परा है। पक्के आवास होने के कारण आज यह धीरे-धीरे दम तोड़ रहा है। आज भी गाँवों में पूजन-पाठ में गोबर से गौरी बनाने की पुरानी परम्परा है। भोले-भाले ग्रामीण लोग इसका

कारण तो नहीं जानते हैं परन्तु इस परम्परा का पालन दृढ़ता से करते हैं। गोबर में एवं गोमूत्र में लक्ष्मी जी का निवास है। इससे संबंधित पौराणिक कथा भी है। युधिष्ठिर महाराज को भी यह शंका थी, जिसका निवारण भीष्म पितामह जी करते हैं।

एक समय की बात है, लक्ष्मी जी ने मनोहर रूप धारण कर गायों के समूह में प्रवेश किया। उनके रूप-वैभव को देखकर गायें आश्चर्य में पड़ गयीं और वे पूछ बैठीं कि देवी आप कौन हैं? लक्ष्मी जी ने कहा कि गौओं! तुमलोगों का कल्याण हो। इस जगत् में मैं लक्ष्मी नाम से प्रसिद्ध हूँ। मेरे ही आश्रय में रहने के कारण इन्द्र, सूर्य, चंद्र, विष्णु, वरुण और अग्नि आदि देवता आनन्द भोगते हैं। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष मेरे सहयोग पाकर ही सुखद होते हैं। मेरा अतुलित प्रभाव है। मैं तुम लोगों के अन्दर निवास करना चाहती हूँ। तुम लोग मेरा आश्रय पाकर श्री सम्पन्न हो जाओ। लक्ष्मी जी के मुँह से ऐसा सुनकर गौएँ बोलीं देवी तुम चंचला हो तथा घमंडी भी हो। इसलिए हम तुम्हें नहीं चाहती। हमलोगों का शरीर तो इसी तरह हृष्ट-पुष्ट है। तुम्हारी जहाँ इच्छा हो जाओ। हमलोग तुम्हारा अपमान नहीं करती केवल तुम्हारा त्याग कर रही हैं। तुम स्थिर कहीं नहीं रहती।

यह सुनकर लक्ष्मी जी दु:खी हुईं और कहने लगीं कि तुम लोग महान सौभाग्यशालिनी व परोपकारिणी हो। मैं भी तुम्हारी शरण में आयी हूँ। मुझमें कोई दोष नहीं है। तुम लोगों के किसी भी एक अंग में मुझे जगह मिल जाये तो मैं उसमें रहना चाहती हूँ। लक्ष्मी जी के ऐसा कहने पर गौएँ बोलीं—शुभे! अवश्य ही हमें तुम्हारा सम्मान करना चाहिए। तुम हमारे गोबर और गोमूत्र में निवास करो क्योंकि ये दोनों वस्तुएँ पवित्र है। तभी से लक्ष्मी जी गौओं के गोबर एवं गोमूत्र में निवास करने लगीं।

विभिन्न संप्रदायों में गोमाता का स्थान

१- **बौद्ध**—भगवान् बुद्ध करुणा के अवतार व सत्य अहिंसा के पुजारी थे। सम्राट अशोक के शिलालेखों में गाय-बैल आदि प्राणियों की हत्या न होने की आज्ञाएँ मिलती हैं। ब्रह्मदेश (वर्मा) के विजयपुर में सन् १३५० ई० के आस-पास सीहसूर नामक राजा राज्य करते थे। उनके प्रधानमंत्री का एक ग्रंथ 'लोकनीति' है जिसमें लिखा गया है—

गोणहि सब्ब गिहीनं, पोसका भोगदायका।
तस्मा हि माता पितू व, मानये सक्करेभ्य च॥
ये च खादन्ति गोमंसं, मानुमंसं व खादये॥

(लोकनीति-७)

अर्थात् गृहस्थों को भोग देने वाले और पालन-पोषण करने वाले गो-बैल हैं। माता-पिता की भाँति उनका पूजन व आदर करें। जो गो मांस खाते हैं वे अपनी माँ का मांस खाते हैं।

सम्राट हर्षवर्द्धन तो अपने राज्य में प्राणी-हिंसा करने वाले को कठोर दण्ड देते थे। उनके राज्य में मांस भक्षण बंद था। भगवान् बुद्ध गाय-माता के प्रति अपार श्रद्धा रखते थे। जैसे माता-पिता, भाई और दूसरे कुटुम्ब परिवार के लोग हैं, वैसे ही गायें भी हमारे लिए हैं।

यथा—

यथा माता पिता भ्राता अञ्ञे वापि च जातका।
गावो न परमा मित्ता यासु जायन्ति ओसधा॥

उनका कहना था कि गायें अन्न, बल, स्वर्ण तथा सुख देने वाली हैं। इन बातों को जानकर ही लोग गाय को नहीं मारते थे। गाय के प्रति बौद्ध धर्मावालंबियों में अपार श्रद्धा है। लोकनीति पुस्तक में लिखा भी है—

ये च खादन्ति गोमंसं, मातुमंसं च खादये।
मतेसु तेसु गिज्झानं ददे सोते व वाहये॥

अर्थात् जो गोमांस खाते हैं, वे अपनी माता का मांस खाते है। गाय के मर जाने पर गृद्धों को दे देवें या नदी में बहा दें।

इस प्रकार बौद्ध धर्म में भी गो हिंसा के लिए कहीं स्थान नहीं है। यात्रा में गव्य पदार्थों का सेवन बुद्ध बतलाते थे। एक बार एक भिक्षु को कवल की बीमारी हुई तो भगवान् बुद्ध ने उसे गोमूत्र का काढ़ा पीने को कहा। शातवाहनों का जिस समय दक्षिण में राज्य था उस समय के सिक्कों पर तो गो का चित्र रहता था। कुषाण वंश के प्रथम वासुदेव के सिक्कों पर शिव एवं नन्दी के चित्र थे। मालवों के सिक्कों पर बैठे हुए नन्दी का चित्र है।

२. जैन—जिस तरह से बौध-धर्म ने हिंसा का विरोध किया है उसी तरह जैनधर्म में भी मिलता है। इनके अहिंसक भाव को देखकर मुसलमान बादशाहों

ने इनके तीर्थ स्थलों में प्राणी हत्या न होने के आदेश दिये थे। जैनी लोग अपनी सम्पत्ति की गणना गौओं की संख्या से करते थे। व्रज एवं गोकुल में वे गायों को मापते थे। एक व्रज या गोकुल का माप दस हजार गायों में था। महाशतक की पत्नी रेवती के लिए उसके पति को आठ गोकुल (अस्सी हजार) गायें दहेज में मिली थीं।

३. ईसाई—बौद्धधर्म की भाँति यहूदी और ईसाई लोग भी पशुयज्ञ के विरूद्ध हैं। यहूदी लोग तो गाय बैल का बड़ा आदर करते थे। उनके आहार में मुख्यतया दूध, दही, घी ही था। माम्रा के देवदूतों को इब्राहीम ने मक्खन दिया और लड़ाई पर जाते हुए दाऊद अपने साथ 'चीज' की बर्फियाँ ले गये थे। जहाँ गाय के दूध और मधु की विपुलता होती है, वहीं ये स्वर्ग का अनुभव करते थे। यहूदी भक्तों की यह धारणा है कि याकूब ने एक बछड़े को मारकर उसकी माँ को कष्ट दिया था, इसी से उसका पुत्र यूसुफ उससे बिछुड़ गया था। यहूदियों में पशुयज्ञ का भी प्रचलन था। यशया, अमास, होशेय आदि प्रवक्ताओं ने अहिंसा का प्रचार प्रसार किया।

'जो बैल की हत्या करता है, वह मनुष्य की हत्या करता है'

(वशया ६५। ३-४)

'मैं यज्ञ का नहीं बल्कि दया का भूखा हूँ।'

(होशेय ६-६)

ईसा तो कहते थे कि मैं यज्ञ बंद करने के लिए अवतरित हुआ हूँ, क्योंकि यज्ञ में पशुबलि होती हैं। बाइबल में वृष को देव स्वरूप माना गया है। एक बार ईसा यहूदियों के त्यौहार पर जेरूसलम गये, वहाँ उन्होंने मंदिरों में गाय-बैल, भेड़, ऊंट, कबूतर आदि देखा है। उन्होंने रस्सी बटकर एक कोड़ा बनाया तथा सभी पशुओं को वहाँ से भगा दिया।

४. इस्लाम—इस्लाम शब्द अरबी के सलम धातु से निकला हुआ है। इसका अर्थ है 'किसी को कष्ट न देना। 'कुरान इस्लाम धर्म की भीत्ति है। कुरान के अनुसार दया को ही धर्म माना गया है। सज्जनता और दयालुता ईमान की दो धाराएँ हैं। कुरान में गाय का जूठा जल पवित्र माना गया है जबकि हिन्दू धर्म में अपवित्र। बैल के सींग पर पृथ्वी है। वह जब पृथ्वी को एक सींग से दूसरे सींग पर लेता है तो हिलती है और भूकम्प आता है। खुदा ने चौपाया इसलिए बनाया है कि

वह तुम्हारा बोझ ढोये और तुम्हारे लिए भोज्य पदार्थ के रूप में फल, अन्न, सब्जियाँ आदि हैं। आदम और हव्वा जब स्वर्ग से निकाले गये तो उनको एक मुट्ठी गेहूँ और एक जोड़ी बैल मिले थे। हरे वृक्ष काटने वाले, मनुष्य खरीदने वाले, जानवर को मारने वाले तथा परायी स्त्री से दुष्कर्म करने वाले को खुदा मुआफ नहीं करता खुदा उसी पर दया दिखाते हैं जो उनके बनाये जानवरों पर दया दिखाता है।

हरगिज नहीं पहुँचते अल्लाह के पास उसके गोश्त और खून। हाँ, पहुँचती है उसके पास तुम्हारी परहेजगारी। (कुरान-शरीफ सूर ए हज)

पैगम्बर साहब उदार और दयालु थे। मौलाना फारुकी अपनी पुस्तक 'बरकत और हरकत' में लिखते हैं कि नब्बे गायों से सोलह साल में केवल चार सौ पचास गायें ही पैदा नहीं होती, बल्कि हजारों रुपये के दूध, खाद आदि भी प्राप्त होते हैं। अत: गाय धन की रानी है। स्वयं पैगम्बर ने 'नाशियात हादी' नामक पुस्तक में लिखा है कि गाय के दूध और घी तुम्हारी सेहत के लिए है। उसका गोस्त हानिकारक है। १९१० ई० में मिस्त्र सरकार ने फतवा जारी किया था कि 'कोई व्यक्ति बकरीद के पर्व पर एक भेड़ से अधिक जानवर का वध नहीं कर सकता'। सुरात ए हज' में लिखा है कि खुदा तुम्हारी कुर्बानी में जानवर का मांस और लहू नहीं चाहता। वह केवल तुम्हारी पवित्रता चाहता है।

प्रारंभ में मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं के भावनाओं का आदर करते हुए गोवध पर फरमान जारी किया था। एक विशेष प्रकार का कर लगाये थे जिसका नाम 'जजारी' था। यह कर दो सौ वर्षों तक चला। फिरोजशाह तुगलक के शासन काल में यह खत्म हुआ। मुस्लिम बादशाहों ने गोवध करने वालों को प्राणदण्ड तक दिये हैं। एक व्यक्ति ने बादशाह से पूछा कि क्यों गिद्ध अधिक दिनों तक जीवित रहता है जबकि बॉज कम दिनों तक। बादशाह ने जवाब दिया गिद्ध किसी को दु:ख न देकर मरे जानवर को खाता है जबकि बाँज पक्षी बेरहमी से मारकर खाते हैं। औरंगजेब कट्टर इस्लाम का समर्थक था पर दूध पीता था तो गाय का ही।

मुसलमानी शासन के अंत होने के बाद उस धर्म के आचार्यों और नेताओं ने जो फतवे जारी किये वह निम्न है—

(क) गाय की कुर्बानी करना इस्लाम धर्म का नियम नहीं है।

(फतवे हुमायूनी भाग १, पृ० ३६०)

(ख) बकरे व भेड़ की कुर्बानी, गाय की कुर्बानी से अच्छी है।

(दारउल मुखतियार भाग ४, पृ० २२८)

(ग) गाय की कुर्बानी यदि कोई छोड़ देता है तो धर्म विरुद्ध काम नहीं करता। यह अर्थात् गाय की कुर्बानी आवश्यक और नैमित्तिक नहीं है।

(लखनऊ के मौलाना हयी का फतवा)

(घ) न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गौ की कुर्बानी का समर्थन करती है। (हकीम अफजल खाँ)

(ङ) मुसलमान गाय न मारे। यह हदीश के विरुद्ध है।

(मौलाना हयात साहब, खानखाना हाली, समद साहब)

मुसलमानों में अनेक ऐसे कवि हुए जो मुक्त हृदय से गोवध का विरोध करते थे। रहीम, जायसी, कबीर इत्यादि।

'मांस-मांस सब एक है, जस खस्सी तस गाय'
दिन भर रोजा रहत है, रात काटते गाय।
एक खून एक बंदगी, कैसे खुशी खुदाय॥

(कबीर)

बेहतर यही है कि फेर ले आँखों को गाय से।
क्या फायदा है रोज की इस हाय हाय से।
कमजोरियों को रोक दें जोरो को क्या करे?
मुस्लिम हटे तो फौज के गोरों से क्या करें?
मुँह बंद हो सकेगा मुसलमाँ शरीफ का।
चस्का मगर न जायगा साहब से बीफ का।

(कविवर अकबर)

भारत सम्राट हुमायूँ गोमांस भक्षण का विरोधी था। गो-विषयक इस्लाम के उपदेश निम्न है।'

(क) उल्लामा जलालुदीन सेवती लिखते हैं 'गाय का गोश्त मर्ज और उसका दूध और मक्खन शिफा है।'

(ख) हजरत आयशा फर्माती हैं—'गाय का दूध दवा, उसका मक्खन शिफ़ा

(आरोग्यदायक) और गोश्त सरासर मर्ज है।'

(ग) हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध शासक शाह बाबर ने अपने राज्य काल में गो वध बंद कर दिया था। इसका सबूत उस वसीयत नामा में मिलता है, जो भोपाल के कुतुबनामा खास में मौजूद है। (अखबार तोहफ-ए-हिन्द नौ जुलाई सन् १९२३)

(घ) शरीफ मक्का ने गोबध बंद कर दिया (खैरब) बरकत मौलाना फर्रूखी लिखित।

(ङ) मौलाना अब्दुल बारी साहब मरहुम फिरंगीमहली ने भी गाय की कुर्बानी बंद करने के लिए फतवा जारी किया था।

(तोहफ-ए-हिन्द बिजनैर १५-११-१९२२)

चीन की चाय, अरब की काफी, रूस का बोडगा, ईरान की शराब उनके राष्ट्रीय पेय कहे जा सकते हैं, परन्तु भारतवर्ष का राष्ट्रीय पेय दूध, दही और मट्ठा ही हो सकता है। पित्त प्रकृति वालों के चित्त सात्त्विक होते हैं तो उनलोगों के लिए सबसे उत्तम पेय मधुर रस ही है। आयुर्वेद भी कहता है कि—

'देहे पित्तं गेहे वित्तं, चित्तं कृष्णाम्बुजे'

अर्थात् शरीर पित्त प्रधान हो, घर में द्रव्य हो तथा चित्त श्रीकृष्ण के चरणों में लगा रहे। यही जीवन सार्थक है और यह सब गोपाल एवं गोमाता के बिना संभव ही नहीं है। यह चिन्तनीय विषय है कि ''गाय कटेगी बचेगा कौन?, गाय बचेगी मरेगा कौन?। यह मानव शरीर है तथा इसकी आंतरिक संरचना अन्न, फल, दुग्ध, घी इत्यादि पचाने के लिए हुई है, दाँतों की संरचना भी मनुष्य की, मांसाहारी प्राणियों से भिन्न है। शाकाहारी प्राणी स्वस्थ होते हैं। मांसाहार गरिष्ठ होता है तथा रोग को निमंत्रित करता है।

जिये कौन जब मरती गाय?
मरे कौन जब जीती गाय?

(द्वारा—कल्याण (गो-अंक)

गोबीज मंत्रम्

'गो' यह मंत्र गो प्रणव भी है तथा एकाक्षर भी है। यह सब सिद्धियों को देने वाला है। इसके पुरश्चरण का विधान चार लाख मंत्र का है। इसके एक करोड़ जप से वाक् सिद्धि हो जाती है। जापक शाप व आशीर्वाद देने में समर्थ हो जाता

है। दस करोड़ जपने से सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती है। शंकर जी पार्वती से गोतंत्र में कहते हैं—

''कोटिमन्त्रजपाद्देवि वाचासिद्धिमवाप्नुयात्॥
शापानुग्रहकारी च यद्वदेत्तद् भवेद् ध्रुवम्।
दशकोटिजपाद्देवि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्॥
जीवनमुक्तो महादेवि मम तुल्यो भवेन्नरः।
न पुनर्भवनं तस्य मृते मय्येव लीयते॥

'गो' पंचाक्षर मंत्रम्- '**ॐ गों गोभ्यो नमः॥**

विधि—न्यास-विनियोग पूर्वक दस हजार जपने से कामार्थ सिद्धि, एक लाख जपने से दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति तथा एक करोड़ जपने से इच्छा सिद्धि एवं दस करोड़ जपने से सर्व सिद्धि प्राप्त होती है।

'गो' गायत्री मंत्रम्—

'**ॐ गों जगदम्बायै विद्महे चतुष्पायै धीमहि। सा नो धेनुः प्रचोदयात् गों।**

यह गों गायत्री महाविद्या कही जाती है। पराशर जी के पितामह वशिष्ठ जी ने इसकी साधना की थी। यह साक्षात् ब्रह्मशक्ति प्रदान करने वाली तथा महान पातक को हरने वाली है। इसका विधिवत पाँच वर्ष तक जप करने वाला समस्त सिद्धियाँ प्राप्त कर लेता है तथा अंत में शिवलोक को प्राप्त करता है।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

यह यंत्र अत्यंत प्रभावी है। केसर, गोरोचन अथवा कुंकुम से भोजपत्र पर लिखकर गुग्गुल की धूप देकर गौ के गले में बाँधे तो दूध अधिक देगी तथा नजर से भी सुरक्षित रहेगी। इसके साथ यदि 'गोमती विद्या' व 'गोकवच' का पाठ किया जाये तो विशेष लाभ होगा।

१- **गो दुग्ध का माहात्म्य**—गोदुग्ध प्राणप्रद, पौष्टिक, रक्तपित्तनाशक और रसायन है। इनमें काली गाय का दूध सर्वोत्तम है। इसमें सात्त्विक बल होता है। इसको सर्वदा छान कर ही पीना चाहिए। यह मृत्युलोक का अमृत है।

२- **गो दधि का माहात्म्य**—सभी दहियों में गाय का दही श्रेष्ठ है। यह उत्तम, बलकारक, सुपाच्य, स्वादिष्ट, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, वात-नाशक तथा हितकारी है।

३- **गो घृत का माहात्म्य**—'घृतं वै देवानामन्नम्' यह देवों का अन्न व प्राणियों का जीवन है। इसके होम से देवता लोग संतुष्ट होते हैं। वेदों में तो अखण्ड सौभाग्य एवं धन, पुत्र, आरोग्य आदि की प्राप्ति हेतु पतिव्रता सौभाग्यवती स्त्रियों के लिए गोघृत से बने हुए काजल को लगाने का विधान है। घी विष को भी नष्ट करता है। जातकर्म में घी-मधु चटाने का विधान है। अन्नस्थ दोष दूर करने के लिए भोज्य पदार्थों में घी देने का विधान है। बासी अन्न में भी घी लगाने से शुद्ध हो जाता है। ग्रहण काल में घी डाले हुए अन्न दूषित नहीं होते। गोघृत बुद्धि, कांति, स्मरण शक्ति तथा बल बुद्धि का कारक है। इसमें भी देशी गाय का घी सर्वोत्तम है।

४- **गोमूत्र का माहात्म्य**—'गोमूत्रे विद्यते गंगा' गोमूत्र में गंगाजल विद्यमान है। गोमूत्र उदररोग, श्वाँस, प्रमेह, मधुमेह, अजीर्ण तथा जलोदर के लिए अचूक औषधि है। कुष्ठ रोग और हृदय रोग, के लिए यह रामबाण है। काली गाय के मूत्र को पन्द्रह दिनों तक पीने से गले में सुन्दर स्वर उत्पन्न होता है। पेट के कीड़े गोमूत्र के पान से मर जाते हैं। प्रसूता स्त्री के लिए गोमूत्र उत्तम है।

५- **गोमय का माहात्म्य**—गोमूत्र से सने गोबर को पृथ्वी में डालने से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। गोबर में लक्ष्मी जी का निवास है। इसीलिए गोबर से वृद्धि को प्राप्त हुए अन्न को गोधूम (गेहूँ) कहा जाता है। गोबर की खाद से कपास की खेती सर्वोत्तम होती है। विद्युत प्रवाह गोबर को पारकर दूसरे द्रव्य में प्रवेश नहीं कर सकता है। पूजनादि पवित्र कर्मों में गोबर से घर लीपने का विधान है। गेहूँ में गोबर की भस्म डालकर रखने से 'घुण' के कीटाणु नहीं लगते हैं। दशविध स्नान में गोबर का भी स्नान है। वनों में चरने वाली देशी नस्ल की गाय ही उपयुक्त है।

६- **गोतक्र (मट्ठा) का माहात्म्य**—गाय का तक्र (मट्ठा) त्रिदोषनिवारक, पथ्यों में उत्तम, दीपन, रुचिकारक। मेधाजनक तथा बवासीर व अतिसार रोग में हितकारी है। वह इन्द्र के लिए भी दुर्लभ है।

यथा—**तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।**

भोजनोपरान्त तक्र का सेवन अमृत तुल्य है।

७- **गोनवनीत (मक्खन) का माहात्म्य**—गाय का मक्खन हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सौन्दर्यकारक, अग्निप्रदीपक, बल व पुष्टिदायक है। भगवान् कृष्ण तो स्वयं इसके लिए व्यग्र रहते थे। बचपन में उनके हाथों में मक्खन रहता था। मक्खन के लिए वे चोरी तक करते थे।

८- **गोरज (धूलि) का माहात्म्य**—गोमाता के वास्तविक अध्यात्मिक स्वरूप का वैशिष्ट्य गोधूलि से ही प्रकट होता है। भगवान् कृष्ण अंगराज के रूप में गोरज का ही प्रयोग करते थे। गोधूलि लग्न का महत्त्व तो सर्व-विदित है। बारह प्रकार के स्नानों में गोरज स्नान का भी विधान है। अनन्तानन्त देवताओं की अधिष्ठात्री गोमाता की चरणधूलि सर्वथा वन्दनीय होने के कारण सिर पर धारण योग्य है।

एकादशी-पारण में गोमाता का स्थान

मार्गशीर्ष की दोनों एकादशी का पारण द्वादशी में गोमूत्र से, पौष की दोनों एकादशी का पारण गोमय से, माघ में दूध से, फाल्गुन में गोदधि से, चैत्र में गोघृत से, वैशाख में कुशोदक से, ज्येष्ठ की एकादशी को तिल से, एकादशी में आषाढ़ की एकादशी की पारणा यवचूर्ण से, श्रावण में दुर्वादल से, भाद्रमास में कुष्माण्ड से, आश्विन में गुड़ से तथा कार्तिक में बिल्वपत्र या तुलसीपत्र से करें। किसी भी व्रत में पारण व ब्राह्मण भोजन से व्रत की समाप्ति होती है। गोवंश की क्षति होने से गव्य पदार्थों के अभाव में यज्ञ का नाश होगा। यज्ञ के नष्ट होने से हव्य प्राप्ति न होने के कारण देवताओं का विनाश होगा। पुनः नाना तरह की आसुरी शक्तियाँ उपद्रव कर सम्पूर्ण चराचर जगत् का विनाश करेंगी। गोवंश का संरक्षण एवं संवर्धन केवल सनातन धर्मावलंबियों का ही नहीं, अपितु पूरे मानव जाति का कर्तव्य है। गाय से बहुत पैसे प्राप्त किए जा सकते हैं किन्तु पैसे से गाय उत्पन्न नहीं की जा सकती है।

जमानियाँ एक दृष्टि में—

समयकी तीव्र गति में भी जमानियाँ पर कुछ विहंगम् दृष्टि डालने पर लगा कि इस दृष्टि में स्थिरता लाने के लिए हमें अतीत के झरोखों में झाँकना ही होगा जिससे जमानियाँ के धार्मिक, पौराणिक, भौगोलिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक सामाजिक और ऐतिहासिक स्वरूप को देखकर इसका वर्तमान संदर्भों में उचित मूल्यांकन किया जाय। जमानियाँ सामयिक दृष्टि में कितना आगे या पीछे है यह तो समय ही तय करेगा परन्तु हम जमानियाँ के कुछ तथ्यों और सूचनाओं को शब्द चित्रों के माध्यम से सामने रखने का एक छोटा प्रयास कर सकते हैं।

भारतवर्ष के पूर्वी उत्तर प्रदेश में अफीम-कारखाना और अफीम की खेती के लिए प्रसिद्ध गाजीपुर जनपद में जमानियाँ एक ऐसा तहसील है जो पतित-पावनी गंगा और पौराणिक नदी 'कर्मनाशा' के भू-भाग पर है। यह वाराणसी, चंदौली से भी जुड़ा है। इसका पूर्वोत्तर भाग (महाईच परगना) प्राचीन भू-अभिलेखों और मानचित्रों में जमानियाँ का एक अंग रहा है। मुहम्मदाबाद तहसील को भी इससे अलग नहीं देखा जा सकता है क्योंकि इसके भी कई गाँव पहले से जमानियाँ परगना के अंग रहे हैं। यदि लोकसभाई क्षेत्र से देखें तो इसका विस्तार बलिया जनपद के सीमा तक है। यह बिहार राज्य के भी दो जनपद—बक्सर, व कैमूर को स्पर्श करता है। यह पूर्णरूपेण भोजपुरी अंचल है। भूमि समतल व उपजाऊ है। अपनी नैसर्गिकता के कारण इस भूमि ने देश-विदेश की महाविभूतियों को भी अपनी ओर आकृष्ट किया है।

पं० दीनदयाल उपाध्याय—हावड़ा रेल मार्ग पर (पूर्व-मध्य रेलवे) जमानियाँ रेलवे स्टेशन भी है जो पं० दीनदयाल उपाध्याय जं० से लगभग ४० किमी पूर्व है। यहीं से ही गाजीपुर जनपद की सीमा भी प्रारंभ होती है। लगभग ३० किमी परिवृत्त में इसका विस्तार है। मुख्य रूपसे जमानियाँ स्टेशन और जमानियाँ नगरपालिका दो भागों में विभक्त है। इसकी लम्बाई ८ किमी के आस-पास है। जनसंख्या ६० हजार व मतदाता लगभग २५ हजार हैं। औद्योगिक विकास के नाम पर आज भी यह शून्य अंक प्राप्त किया है, पुनरपि आज भी विकास की संभावनाओं को यह समेट कर रखा है। इस क्षेत्र में एक ऐसा भी गाँव है जिसे राष्ट्र की सेवा में सबसे अग्रणी माना जाता है। यह गाँव एशिया का सबसे बड़ा

गाँव है जिसका नाम है—'गहमर'। इसका प्राचीन नाम गहवन था अर्थात् घनघोर जंगल। भारत में प्रसिद्ध दो ही स्थान पर माँ कामाख्या का मंदिर है—एक आसाम राज्यके कामरूप में और दूसरा गहमर ग्राम के पश्चिम तथा करहियाँ ग्राम के उत्तर में सकराडीह स्थान पर। इस मंदिर की स्थापना फतेहपुर सीकरी से आए पुरोहित एवं यजमान 'बाबा गंगेश्वर' और 'धामदेव' (घाघूदेव) ने किया था। इसके पूर्व यहाँ चीरो राजा का शासन था। यहीं से ही पराशर गोत्रीय बाबा गंगेश्वर के वंशज और सीकरवार क्षत्रियोंके वंशज चौरासी गाँवों में फैले हुए हैं। माँ कामाख्या धाम पर नवरात्रि और सावन महीने में अभूतपूर्व भक्तों का मेला लगता है। उपरोक्त मंदिर के ईशान कोण में बाबा गंगेश्वर की प्रतिमा-स्थापन का संकल्प चौरासी के सम्मानित बंधुओं द्वारा पूर्ण हुआ।

उपरोक्त धार्मिक स्थल सरकारी अभिलेखों में भी अंकित है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् गाजीपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद विश्वनाथ सिंह 'गहमरी' ने संसद भवनमें इस अंचल की गरीबी का चित्रण कर तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू को भी भावुक कर दिया। गोपाल राम गहमरी को उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द का केवल पूर्ववर्ती ही नहीं माना जाता है बल्कि उन्हें जासूसी साहित्य के जनक के रूप में भी जाना जाता है। वास्तव में गहमर गाँव संपूर्ण भारत के लिए राष्ट्रीय गौरव का विषय है क्योंकि यह गाँव राष्ट्रीय सेवा में अपना सर्वोपरि स्थान रखता है। डॉ० कपिलदेव द्विवेदी गहमर के ही थे जिन्होंने लगभग ३ दर्जन पुस्तकों की रचना संस्कृत में की। वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण से सम्मानित किया। चालीस खण्डों में रचित 'वेदामृतम्' उनकी अमूल्य धरोहर है। सामवेद और अथर्ववेद उन्हें कण्ठस्थ था।

भोजपुरी क्षेत्र में भोलानाथ 'गहमरी' से शायद ही कोई अपरिचित हो। भोजपुरी गीतों के एक भाव प्रवण गीतकार हैं। भोलानाथ जी गहमर गाँव के थे, पर कर्मक्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) रहा है। उन्होंने अपने गीतों के माध्यम से विविध भावों को शिल्पात्मक अभिव्यक्ति दी, जैसे—शृंगारिक, श्रमगीत, लोकगीत, निर्गुण, देशप्रेम, माटी के गंधमादन गीत प्रभृति। उनकी प्रतिभा को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी व फिराक गोरखपुरी जैसे मनीषियों ने बहुमानता दी है। 'बयार

पुरवईया' उनकी प्रथम गीत कृति थी, जिसकी भूमिका आचार्य द्विवेदी ने ही लिखी थी। वहीं सभी गीत इतने मधुर हैं कि गायन की दृष्टि से मानो गंगा की अविरल धारा में उतरती संध्या में किसी ने दीपदान कर दिया हो या किसी ने तुलसी के चौरे पर संझवत दिखा दी है या कार्तिक की अल् सुबह गंगा स्नान कर आयी माँ ने सोते हुए बेटे के माथे पर आशीष का हाथ रख दिया हो। अगर कहें तो महेन्दर मिश्र की भाव परम्परा के कवि हैं—भोलानाथ गहमरी।

'**भीजै जो कजरा तो भीजै हो, कहीं भीजै न गजरा**' यह एक प्रतीक्षा गीत है जिस पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मुग्ध थे। फिराक साहब तो इस गीत को सुनकर आश्चर्यचकित थे कि कबीर के बाद भी भोजपुरी में ऐसा निर्गुण गाने वाला माटी पुत्र है जो मन की अलख सरंगी पर यह गाता है—'**केवना खेतवा में लुकइलू आहे बालम चिरई।**' यह भाव की निर्वेद पीठिका है जहाँ कबीर गाते हैं—'**के तोरा संग जाई भँवरवा।**'

आज उन लोगों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए जो समाज में भोजपुरी के नाम पर अश्लीलता परोस रहे हैं।

गाजीपुरके साहित्यिक जगत् में जमानियाँ के गहमर गाँव की चर्चा तब तक अपूर्ण है जब तक डॉ० आनन्द मोहन उपाध्याय की चर्चा न हो। पराशर गोत्रीय गंगेश्वर वंशीय ब्राह्मण वंश में जन्में डॉ० उपाध्याय के पिता स्व० पं० हरद्वार उपाध्याय राधाकृष्ण गुप्त आदर्श विद्यालय इण्टर कालेज दिलदारनगर गाजीपुर के प्राचार्य थे, जिनके अनुशासन की गूँज पूरे पूर्वांचल में थी। उस कालखण्ड के विद्यार्थी आज भी उनकी चर्चा ससम्मान करते हैं। डॉ० उपाध्याय का जन्म सन् १९६० ई० में हुआ था। इन्होंने राँची विश्वविद्यालय से 'रेणु के उपन्यासों का लोकतांत्रिक अध्ययन' पर शोध और 'मध्ययुगीन रहस्यवाद' विषय पर डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की, तदुपरान्त श्रम मंत्रालय के खान सुरक्षा महानिदेशालय में राजभाषा अधिकारी के रूप में कुछ वर्षों तक कार्य करने के बाद मानव संसाधन मंत्रालय में भी एक संगठन में अपनी पहचान बनाये। ललित निबन्धकार एवं मध्ययुगीन रहस्यवाद के अध्येता के रूप में आप प्रतिष्ठित हैं। आपकी प्रकाशित कृतियाँ—ज्योति कलश छलके, सुधियों के चंदन वन में, रेणु के उपन्यासों का लोकतांत्रिक अध्ययन एवं मध्ययुगीन रहस्यवादियों के प्रवृत्तियों के मूलस्रोत प्रमुख हैं।

गहमर गाँव में ही एक 'बघवा टोला' है जो कभी भारत भूषण पं० शीतल प्रसाद उपाध्याय की जन्मभूमि रहा है। इनके पिता पं० दिक्पाल उपाध्याय एक कुलीन परिवार से थे। जिस प्रकार गाजीपुर अंचल के दुखहरन दास, रामचरित उपाध्याय, गोपालराम गहमरी, डॉ० राही मासूम रजा, डॉ० कुबेरनाथ राय एवं विवेकी राय का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है उसी तरह भारतभूषण पं० शीतलप्रसाद उपाध्याय का हिन्दी पत्रकारिता एवं गद्य-पद्य साहित्य में स्थान है। कालाकांकर नरेश राजारामपाल सिंह के द्वारा सन् १८८५ ई० में हिन्दी का दैनिक पत्र 'हिन्दोस्थान' हनुमंत प्रेस से प्रकाशित होने लगा जिसके प्रधान संपादक पं० मदनमोहन मालवीय जी थे। इनके विद्वान् सहयोगियों में पं० शीतल उपाध्याय भी एक थे। कालान्तर कुछ काल खण्ड तक संपादन का भी कार्य आपके द्वारा संपन्न हुआ। उपरोक्त प्रेस से आपकी कुछ रचनाएँ भी प्रकाशित हुई जिनमें 'शीतल समीर', शीतल सुमिरनी' प्रमुख हैं। पंडित जी की वाणी और विचारों में अच्छा समन्वय था। रचनाओं में खड़ी बोली, भोजपुरी और अवधी भाषा का प्रमुख स्थान था। भाषा सरल, सुबोध और व्यवहारिक थी। आप आडंबर से कोशों दूर रहना पसन्द करते थे। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आपकी पंक्तियों में झलकता है—

सरि है नहि काम विभूत रमे बनि हैं नहि भाल त्रिपुण्ड दिये।
हरिहैं नहि पाप प्रयाग गया अघ दूर न ह्वै उपवास किये॥
करिहै न कछु हित कंठी कमण्डल मूढ़ वृथा धरे माल हिये।
तरिहै भवसागर 'शीतल' या तन से मन से हरि नाम लिये॥

(शीतल-सुमिरनी से)

कुछ कालखण्ड तक आप रीवाँ रहे पुनः कालाकांकर, अवधपुर, पीलीभीत और काशी भी रहे घोर कलिकाल में काशी में मुक्ति के नाम पर चल रहे आडम्बर पर भी आपकी लेखनी मुखर रही है—

देखली तोरि काशी (बाबा) दशासुमेध मनी करनिका,
जग जानत अघनाशी।
तहाँ विराजत विश्वनाथ जी, गिरजापति अविनाशी।
नहिं जप जोग नहीं घर त्यागी, राड़ साड़ सेवत सन्यासी॥
ठगहोर मग ठगत गवारन, कहि न जात गुंडन बदमाशी।
पूँछ धराय के पंडा मूड़त, लिखत बही में करवट काशी॥

(शीतल-सुमिरनी से)

हिन्दी के उत्थान में आपके प्रयास हेतु 'भारत भूषण' की उपाधि से आपको अलंकृत किया गया। हिन्दी जासूसी उपन्यास के जनक 'गोपाल राम गहमरी' के प्रेरणास्रोत आप ही रहे हैं। सन् १९३० ई० में पैतृक निवास गहमर में ही आप का शरीर शांत हुआ जिसे 'बघवा कोठी' के नाम से आज भी जाना जाता है, जहाँ अंग्रेजों के समय में भी इस कोठी में उनके अधिकारियों को ठहरने की व्यवस्था होती थी। वर्तमान में 'शीतल भवन' का शिलालेख आज भी मिलता है। गहमर के ही स्व० बद्रीनाथ उपाध्याय जी कुछ काल खण्ड तक चौरासी के अध्यक्ष रहे हैं। ऐसे पूज्य लोग चौरासी के अनमोल रत्न हैं जिनका यह वंश चिर ऋणी रहेगा।

भवन के शिखर को देखकर लोग प्रशंसा करते नहीं थकते किंतु नींव के ईंट की मौन बलि को भूल जाते हैं। स्व० राधेश्याम सिंह जी का जन्म गहमर गाँव में ही सन् १९०६ ई में ठाकुर शिवबहाल सिंह नामक एक कृषक परिवार में हुआ। प्रारंभिक जीवन कष्टमय रहा और शिक्षा भी मात्र छठवीं तक हुई। इसके बाद आपने गाजीपुर में करघे पर कपड़ा बुनने का भी कार्य किया। आपके जीवन में स्वामी सहजानंद और वीर नेपोलियन की वाणी 'गया, देखा और फतह किया' का विशेष प्रभाव पड़ा। आप १७ वर्ष की अवस्था में कलकत्ता पदार्पण किए। आपमें अद्भुत लगन और कर्मठता थी। शुभचिंतकों ने अर्थोपार्जन हेतु नौकरी की सीमा में बांधने का असफल प्रयास किया। एकबार कलकत्ता जाने से पूर्व १८५७ के स्वतन्त्रता सेनानी मैगर सिंह के गाँव गहमर में स्वामी सहजानंद सरस्वती का पदार्पण हुआ। भीड़ को चीरते हुए अचानक एक बालक स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जेल जाने को तैयार हुआ। यह दृढ़ता देखकर स्वामीजी ने पीठ थपथपाते हुए आशीर्वाद दिया कि—

तुम्हारा अदम्य साहस एवं देश-सेवा की भावना तुम्हें विशिष्ट नेतृत्व प्रदान कर महान बनाएगी। वही बालक आगे चलकर 'ठाकुर राधेश्याम सिंह' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कठिन परिश्रम के बाद ठाकुर राधेश्याम सिंह ने सर्वप्रथम कलकत्ता में 'गाजीपुर जिला एसोसिएशन, कलकत्ता' की स्थापना की। १२ जनवरी १९६५ को आपकी अध्यक्षता में गाजीपुर जाने के लिए गंगा नदी पर एक सेतु बनाने का प्रस्ताव तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष पं० कमलापति त्रिपाठी एवं मुख्यमंत्री हेमवती नंदन बहुगुणा को कलकत्ता के एक होटल में एक चाय पार्टी में दिया गया। उस समय त्रिपाठी जी ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया और कहा कि आवश्यकता हुई तो सत्याग्रह भी करूंगा। वही सेतु आज 'वीर

अब्दुल हमीद सेतु' के नाम से जाना जाता है। सन् १९४२ की क्रांति में आपने छिपकर रहने वाले लगभग १४ स्वतंत्रता सेनानियों की महीनों तक सेवा भी की। गाजीपुर में 'स्वामी सहजानंद सरस्वती विद्यापीठ' की स्थापना में आपने तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग भी किया। ठाकुर राधेश्याम सिंह के सुयोग्य पुत्र ठाकुर रमाकांत सिंह ने भी उपरोक्त विद्यापीठ को आर्थिक सहयोग का वचन दिया तथा कालान्तर उपरोक्त एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष भी रहे।

गंगा तटपर अवस्थित अत्यन्त प्राचीन नगरी जमदग्निपुरी (जमानियाँ) जहाँ माता रेणुका के पाँचवें गर्भ से भगवान् परशुराम अवतरित हुए। इतिहास के अनुसार भगवान् परशुराम का जन्म स्थली भी इसे माना जाता है। यद्यपि कि इनके जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में मतैक्य का अभाव है। राजा गाधि की नगरी गाधिपुरी (गाजीपुर) में महर्षि विश्वामित्र का जन्म माना जाता है। एक तरह से ऋषियों की तपोभूमि। अपनी प्रबल आस्था के कारण सकलडीहा के राजा वत्ससिंह ने हरपुर नामक स्थान में लगभग २५० वर्षों पूर्व भगवान् परशुराम का एक मंदिर स्थापित करवाया था जहाँ आज भी वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को विशाल जन समुदाय परशुराम जयंती महोत्सव में भाग लेता है। परशुरामजी का जन्म भी अक्षय तृतीया को हुआ था। गंगा नदी अपने उद्गम स्थल गंगोत्री से गंगासागर के मध्य में जमानियाँ में ही उत्तराभिमुख हुई है। चक्रमण करती हुई गंगा जिस स्थान से उत्तराभिमुख हुई है, उस स्थान को चक्काबाँध कहा जाता है। यहाँ चक्रेश्वर महादेव का भी एक मंदिर है। एकल उत्तराभिमुख गंगा का एक अलग ही अपना धार्मिक महत्त्व है।

बौद्ध धर्मावलंबी सम्राट अशोक का शिलालेख युक्त स्तंभ जमानियाँ से पूर्व लठिया ग्राम में है। इतिहासकारों और पुरातत्त्ववेत्ताओं की दृष्टि में इस स्तम्भ का उतना ही महत्त्व है जितना सारनाथ (वाराणसी) के 'अशोक स्तंभ का। इस स्थान पर प्रतिवर्ष २ फरवरी को लाखों देशी-विदेशी बौद्ध मतावलंबियों की उपस्थिति में 'लठिया महोत्सव' का भव्य आयोजन होता है और यह कई दिनों तक चलता है।

एक कालखण्ड ऐसा भी था जब गहरवार वंश के प्रतापी राजा मदनचंद ने इसी जमदग्निपुरी को अपनी अस्थाई राजधानी बनाई। इसे बनारस के समतुल्य खड़ा करने की दिशा में राजा ने इसका नामकरण 'मदन बनारस' किया। कुछ

लोगों की मान्यता है कि चेरि राजाओं ने इसका नाम मदन बनारस रखा है। 'मदनपुरा' नामक गाँव बिल्कुल जमानियाँ के समीप है। 'मदन बनारस' जो जमानियां का पुराना नाम है, वह यहाँ के भू-राजस्व अभिलेखों में आज भी मिलता है।

बाबरनामा के अनुसार अपनी विजय यात्राओं के मध्य बाबर ने जमदग्निपुरी अर्थात् मदन बनारस के गंगा-किनारे अपनी सैनिक छावनी भी डाली थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी जमानियाँ-गाजीपुर अंचल का भ्रमण किया था और वह यहाँ के पराक्रमी लोगों से मिला था। उसे यह समझ में आया कि यह तपोभूमि पराक्रमी और शूरवीरों की है। उसने चीनी भाषा में इसका नाम 'चेन चू' रखा। अर्थात् गाजीपुर-जमानियाँ।

'चंद्रकांता' और 'भूतनाथ' जैसे तिलिस्मी साहित्य के रचनाकार बाबू देवकी नन्दन खत्री की जन्मभूमि जमानियाँ ही है। संभवतः कालान्तर ये अन्यत्र चले गये। जिन तिलिस्मी सुरंगों की चर्चा उनकी पुस्तक में है वे सुरंगे जमानियाँ से होकर कमालपुर होते हुए विजयगढ़ किले तक जाती थीं। जमानियाँ नगरपालिका में उदासीन पंथ का एक अखाड़ा आज भी है जहाँ सिक्ख पंथ के गुरु गोविन्द सिंह की पत्नी ने गुरुमुखी लिपि में एक आदेश लिखा था जो आज भी सुरक्षित है।

जमानियाँ अंचल का ग्राम बारा मुगल बादशाह 'हुमायूँ और 'शेरशाह सूरी' के ऐतिहासिक युद्ध 'चौसा युद्ध' का साक्षी है जहाँ शेरशाह ने हुमायूँ को पराजित किया था और हुमायूँ किसी तरह जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। इस स्थान पर पौराणिक नदी 'कर्मनाशा' पतित-पावनी गंगा में अपना विलय करती है।

अलीकुल 'जमन' जो मुगलों का सिपहसालार था, वह तत्कालीन मदन बनारस में बस गया। बाद में इसी मदन बनारस का नाम बदलकर जमन खाँ के नाम पर जमानियाँ किया गया।

जमानियाँ क्षेत्र का दिलदारनगर गाँव ऐतिहासिक किंवदंतियां समेटे है जहाँ नल-दमयन्ती का एक विशाल तालाब और कोट (ऊँचा टीला) आज तक सुरक्षित है। जो पूर्व में दमयन्तीनगर था। पूर्व मध्य रेलवे का महत्वपूर्ण जं० दिलदारनगर है जहाँ रेलवे पटरी के मध्य प्रसिद्ध 'माँ सायर' का मंदिर है, जिसको स्थानान्तरित करने के लिए अंग्रेजी सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी और अंत में मंदिर वहीं रह गया। आज भी वहाँ पटरी टेढ़ी है। दुष्कर कार्य दिलदारनगर जं० को मऊ रेलखंड से जोड़ने का था जिसको पूर्व भाजपा सांसद एवं रेल राज्य मंत्री 'मा०

मनोज सिन्हा' ने अपने अथक प्रयास से सफलता के द्वार तक पहुँचाया।

लार्ड कार्नवालिस ने गंगा के उत्तर में ही अपनी अंतिम साँसें ली जिनका मकबरा आज भी पर्यटकों के लिए कौतूहल का विषय है। जमानियाँ परगना के पूर्वी छोर पर कर्मनाशा के तट पर देवल ग्राम में अघोरपंथी 'बाबा कीनाराम' का मठ है जहाँ दर्शन हेतु लोग पहुँचते हैं। उन्हीं की स्मृति में देवल से ठीक पश्चिम लगभग २ किमी०, ग्राम अमौरा में बाबा कीनाराम जूनियर हाई स्कूल की स्थापना हुई है। इसी गाँव के क्षेत्रीय पत्रकार स्व० पं० श्याम कुमार उपाध्याय जो एक साधारण ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। इनसे शायद ही कोई अपरिचित होगा। इन्होंने इस क्षेत्र में अपनी लेखनी से विकास की गंगा बहाने का पुरजोर प्रयास किया। ग्राम देवल में कर्मनाशा तट पर उ० प्र० और बिहार राज्य को जोड़ने वाला सेतु इनके सफल प्रयास का अनूठा उदाहरण है। चौरासी के पराशर गोत्रीय गंगेश्वर वंशीय ब्राह्मणों के वंशवृक्ष की पुस्तक 'गंगेश्वर जीवन दर्शन' के लेखक ज्योतिषाचार्य राम प्रकाश उपाध्याय की पावन जन्मभूमि अमौरा ही है जो जमानियाँ में ही आता है। आयुर्वेद से जुड़ी औषधीय पौधों की खेती अमौरा निवासी श्रीरंगबहादुर सिंह के यहाँ होती है जिनसे पूरा प्रदेश व देश परिचित है। प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर इन्हें पुरस्कृत भी किया जा चुका है। इन्होंने सिद्ध कर दिया कि कृषि आज भी उत्तम है।

चौरासी के प्रथम अध्यक्ष स्व० कमलापति उपा० भी यहीं के थे जिनके नेतृत्व की लोग आज भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। उनके पश्चात ग्राम करहियाँ के स्व० शिवपूजन उपा० ने कुशलतापूर्वक चौरासी की अध्यक्षता की।

स्वामी विवेकानन्द इसी जनपद के गंगातट पर अवस्थित महान संत पवहारी बाबा के आश्रम में पधारे थे। शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने से पूर्व उन्होंने उस महान् संत का आशीर्वाद प्राप्त किया था। तैलंग स्वामी से भी उन्होंने मृत्यु के रहस्य को समझा था। तैलंग स्वामी (वाराणसी में) भैरवी साधना में अद्वितीय थे जो लगभग ३५० वर्ष की आयु में इस संसार से विदा हुए।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की साहित्य-सृजन यात्रा का एक अविस्मरणीय पड़ाव रहा है, जमानियाँ-गाजीपुर। जहाँ वे गुलाबों की सुगन्ध से बँधे रहे। गाजीपुर का गुलाब जल भारत वर्ष में अपनी सुगन्ध के लिए प्रसिद्ध है। कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने यहीं पर एक पुस्तक 'मानसी' की रचना भी कर डाली। गाजीपुर की स्मृतियाँ उनके मानस-पटल पर बनी रहीं।

संस्कृत विद्वान् पंडित रामनारायण मिश्र द्वारा संस्कृत में लिखी पुस्तक 'जमदग्नि पंचतीर्थ माहात्म्य' जमानियाँ के धार्मिक एवं सांस्कृतिक गौरव का एक संक्षिप्त संकलन है। यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई जिसका हिन्दी अनुवाद जुनैदपुर निवासी पं० राजनारायण शास्त्री ने किया।

सीतापट्टी के नागाबाबा और चोचकपुर के मौनी बाबा का धाम ठीक जमानियाँ घाट के सामने पड़ता है। ये दोनों स्थान आज भी लोगों के श्रद्धा के केंद्र हैं।

साहित्यकार गुरु भक्त सिंह 'भक्त' और कवि उस्मान की कर्मभूमि जमानियाँ उनके साहित्य सृजन के लिए प्राण-वायु के समान रहा है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय कवि 'रामधारी सिंह दिनकर' के लिए जमानियाँ का ग्राम कूँसी एक तीर्थ-स्थल से कम नहीं था क्योंकि वहाँ के प्रख्यात संस्कृतज्ञ 'पं० रामगोविन्द त्रिवेदी' से उन्होंने आशीर्वाद प्राप्त करना आवश्यक समझा। पं० त्रिवेदी जी के दर्शनार्थ तत्कालीन उ० प्र० के मुख्यमंत्री डॉ० संपूर्णानन्द पालकी के सहारे कूँसी पहुँचे। जीवन के अंतिम पड़ाव में वाराणसी चिकित्सालय में डॉ० सम्पूर्णानन्द एवं कमलापति त्रिपाठी पं० त्रिवेदी जी से मिलने पहुँचे। त्रिवेदी जी की कुछ अद्वितीय रचनायें हैं—'दर्शन परिचय, वैदिक साहित्य, ईश्वर सिद्धि, ऋग्वेद संहिता आदि।

संपूर्ण जमानियाँ क्षेत्र मुगलकालीन धर्मांतरण का विशेष शिकार रहा। यहाँ बलात् इस्लाम स्वीकार करने वालों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। परिणाम स्वरूप एक क्षेत्र के जाति विशेष ने इस्लाम स्वीकार कर अपने को मुसलमान (पठान) घोषित कर लिया। उस क्षेत्र को कमसार कहा जाता है। इनका विस्तृत विवरण 'कमसारनामा' नामक पुस्तक में है जिसके संकलनकर्ता रेवतीपुर के 'सुहैल खाँ' हैं। इसी अवधि में नवाबों और जमींदारों की भी उत्पत्ति हुई। जमानियाँ नगर के प्राचीन खण्डहर इस बात के प्रमाण हैं।

पावन गंगा-तट पर बसे प्राचीन बलुआ घाट सदियों से जीवन की अंतिम साँस लेने वालों के हजारों-हजारों बन्धु-बान्धवों के मुखसे निकला हुआ श्रीराम नाम सत्य है' का मूक साक्षी है, साथ ही यह श्रावण मास में अहोरात्र गंगाजल ले जाने वाले काँवरियों के 'बोलबम' की ध्वनि से गुंजायमान रहता है। सावन में यहाँ हरि और हर के नामों का अद्भुत उद्घोष सुनाई देता है।

भोजपुरी फिल्मों (चलचित्रों) को दिशा देने वाले महान अभिनेता 'नजिर

हुसैन' का परिचय किसी को देने की आवश्यकता नहीं है। वे भी उसियाँ गाँव के निवासी थे। फिल्मी दुनियाँ से पूर्व वे सुभाषचंद्र बोस की 'आजाद हिन्द फौज' का भी हिस्सा रह चुके हैं। कुछ दिनों तक रेलवे में फायरमैन का भी कार्य इन्होंने किया है। युद्धबंदी के रूप में ये कुछ कालखण्ड कारागृह में भी व्यतीत कर चुके हैं। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में इनका नाम अमर है। लगभग छियासठ वर्ष की उम्र में १६-१०-१९८७ ई० को इनका निधन हुआ।

जमानियाँ से जुड़ी तहसील मुहम्मदाबाद और सैदपुर की महाविभूतियों यथा संत शिवनारायण, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, डॉ० मुख्तार अंसारी, डॉ० राही मासूम रजा और उपराष्ट्रपति मा० हामिद अंसारी पर तथा पाकिस्तान को धूल चटाने वाले 'वीर अब्दुल हमीद' पर भी हमें गर्व है। वर्तमान में तो जमानियाँ एक विधान सभा का भी रूप ले चुका है। इस विधान सभा की जनसंख्या लगभग दस-बारह लाख है तथा मतदाताओं की सूची में उनकी संख्या लगभग चार लाख से ऊपर है। इस विधान सभा में एक नया तहसील 'सेंवराई' बना जिसका श्रेय पूर्व सपा सरकार के पर्यटन मंत्री मा० ओम प्रकाश सिंह को जाता है। जमानियाँ को जनपद बनाने की माँग वर्षों से उठ रही है जिस पर सरकार मौन है। निश्चित रूप से जमानियाँ को उसका गौरव दिलाने हेतु राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं औद्योगिक दृष्टि से बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।

‘रामचरितमानस माला’

तुलसीकृत ‘रामचरितमानस’ झोपड़े से लेकर बड़े-बड़े प्रासादों तक उत्तर भारत के हिन्दू मात्र के गले का हार है। इसकी रचना लगभग १५८४ ई० में काशी में हुई थी। लोकभाषा में होने से सर्वसाधारण पर इसका व्यापक प्रभाव है। इसकी भाषा अवधी है परन्तु ब्रज और भोजपुरी भाषा का भी प्रभाव है। मुगलकाल में हिन्दूधर्म पर विपत्ति के बादल थे। वेदादिशास्त्र का अध्ययन नहीं के बराबर हो गया था तब इस ग्रंथ ने उत्तर भारत में एक नया प्राण डाल दिया। महाभारत की तरह ही इस ग्रंथ ने एक संहिता का रूप धारण कर लिया।

रामचरितमानस मूलतः काव्य है। यह काल की सीमा को पार कर अब भौगोलिक सीमा को भी पार कर चुका है। यह यूरोप, अमेरिका जैसे दूरवर्ती देशों में समादर प्राप्त कर रहा है। इसमें निगमों की नैगमिकता, पुराणों की पौराणिकता, अध्यात्म रामायण की भक्ति, योगवासिष्ठ का दर्शन, महाभारत का पराक्रम और वाल्मीकि का दिव्य मानव के मानवीय जीवन के उतार-चढ़ाव का सम्यक् समावेश है। यह इच्छा पूर्ण करने में कल्पवृक्ष से भी बढ़कर है। यह सदैव मंगल वस्तु ही प्रदान करता है। इसका मन्त्रवत् जब पारायण किया जाता है और जब अनुकूल परिणाम आते हैं तो लोग चकित रह जाते हैं। वेद-पुराण, उपनिषद, वेदांग, महाभारत, गीता आदि आम जनता के वश की बात नहीं है। सामान्य से लेकर विशिष्ट मानव के लिए यह कल्पवृक्ष से भी बढ़कर है।

रामचरितमानस के पाठ की कई विधियाँ हैं। कुछ लोग मास पारायण करते हैं, कुछ लोग नवाह्न पारायण तो कुछ लोग अहोरात्र पारायण करते हैं। सभी में व्यक्ति अपनी कामनानुसार चौपाई का संपुट लगाकर पाठ करते हैं। कुछ लोग तो ‘हनुमानचालीसा’ के चौपाई का सम्पुट लगाकर पाठ करते हैं। कामना के अनुसार एक सौ आठ चौपाइयों को संग्रह करने का प्रयास किया गया है जिसमें ‘हनुमानचालीसा’ के भी कुछ चौपाई हैं। इस अर्थ प्रधान युग में मनुष्य की इच्छाएं असीम हैं। उसी को ध्यान में रखकर यह छोटा-सा प्रयास है।

जहाँ सदैव रामचरितमानस का पाठ होता है, वहाँ से विपत्तियाँ किनारा कर लेती हैं। घर में सुख-शांति रहती है। एक चौपाई कई मंत्रों के समान है। रामचरितमानस एक प्रकार से मंत्रों का सागर है। देखने में पढ़ने में सरल और

प्रभाव गंभीर! रामचरितमानस संसार में जीना सिखाती है और गीता संसार से जाना सिखाती है। श्रीरामकी राजनीति में शास्त्र की प्रतिष्ठा है और रावण की राजनीति में शस्त्र की प्रतिष्ठा है। लंका में जबतक विभीषण जैसे राम भक्त रहे, तब-तक लंका पर कोई आँच नहीं आई। विभीषण द्वारा लंका त्यागने के पश्चात् ही उसका सर्वनाश तय हो गया। भगवान् श्रीराम पशु को भी मनुष्य बनाने की क्षमता रखते थे। जैसे बन्दरों और पक्षियों को भी सखा, तात आदि से संबोधित करते थे तो दूसरी ओर रावण मामा मारीच को भी पशु (हिरण) बनाया। श्रीराम भारत के प्राण हैं तो रामचरित मानस भारत की धड़कन है।

मानस के चौपाइयों में से जिनको संपुट में रखना है, उनसे सर्वप्रथम एक सौ आठ बार हवन सामग्री से हवन करना पड़ता है। यदि लंकाकाण्ड की चौपाई हो तो शनिवार को हवन करें, यदि सुन्दरकाण्ड की चौपाई हो तो मंगलवार को हवन करें। अन्य काण्डों के चौपाइयों का किसी भी दिन हवन किया जा सकता है। इस विधि से सिद्ध चौपाई द्वारा संपुट पाठ करने पर व्यक्ति मनोवांछित फल अवश्य प्राप्त करता है।

रामचरितमानस में चौपाइयों को ढूढ़ने के लिए प्रत्येक चौपाई के नीचे के कुछ अंकों को समझना होगा।

यथा—

'महाबीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना॥'

(१-१७-१०)

यहाँ १ का तात्पर्य बालकाण्ड, १७ का तात्पर्य सत्रहवाँ दोहा और १० का तात्पर्य दसवाँ चौपाई है। इसी तरह किसी भी चौपाई को आसानी से देखा जा सकता है।

रामचरितमानस-माला (हनुमानचालीसा सहित)

१. खोयी वस्तु की प्राप्ति हेतु—

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥

(१-१३-७)

२. सबकी कृपा प्राप्ति हेतु—

गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी॥

(१-१५-३)

३. हनुमानजी की कृपा हेतु—

महाबीर बिनवउँ हनुमाना। राम-जासु जस आप बखाना॥

(१-१७-१०)

४. माँ जानकी की कृपा हेतु—

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधानकी॥

(१-१८-७)

५. विचार शुद्ध हेतु—

ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥

(१-१८-८)

६. विपत्ति नाश के लिए—

राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुखदायक॥

(१-१८-१०)

७. श्रीराम की कृपा हेतु—

बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥

(१-१९-१)

८. विष नाश हेतु—

नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

(१-१९-८)

९. बिगड़ी बनाने हेतु—

राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥

(१-२४-३)

१०. हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए—

सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू॥

(१-२६-६)

११. घोर कलिकाल में मुक्ति हेतु—

राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता॥

(१-२७-६)

१२. कलियुग में मुक्ति हेतु—

राम कथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई॥

(१-३१-७)

१३. दरिद्रता निवारण हेतु—

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के॥

(१-३२-८)

१४. असाध्य कार्य साध्य करने हेतु—

मंत्र महामनि विषय ब्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के॥

(१-३२-९)

१५. त्रिदोष शांति हेतु—

त्रिविध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन॥

(१-३५-१०)

१६. विघ्न विनाश हेतु—

सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही॥

(१-३९-५)

१७. संकट नाश हेतु—

जौं प्रभु दीनदयालु कहावा। आरति हरन बेद जसु गावा॥

(१-५९-६)

१८. विद्या-प्राप्ति एवं प्रतियोगिता में सफलता हेतु—

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी॥

(१-१०५-६)

१९. सिद्धि हेतु—

बंदउँ बालरूप सोइ रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू॥

(१-११२-३)

२०. मंगल कार्य हेतु—

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥

(१-११२-४)

२१. अज्ञानता दूर करने हेतु—

राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा॥

(१-११६-५)

२२. निर्गुण ब्रह्म को मानने वालों के लिए—

राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना॥

(१-११६-८)

२३. विपत्ति दूर करने एवं सुख की प्राप्ति हेतु—

नाथ कृपाँ अब गयउ बिषादा। सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा॥

(१-१२०-३)

२४. ब्रह्महत्या दोष की शांति हेतु—

तपबल बिप्र सदा बरिआरा। तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा॥

(१-१६५-३)

२५. उत्तम संतान प्राप्ति हेतु—

जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई॥

(१-१९३-५)

२६. नामकरण संस्कार के समय—

सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥

(१-१९७-६)

२७. जीविका प्राप्ति हेतु—

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥

(१-१९७-७)

२८. सद्गति हेतु—

जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी॥

(१-२००-२)

२९. विद्या प्राप्ति हेतु—

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई॥

(१-२०४-४)

३०. ग्राम-नगर-राष्ट्र की सुख-शांति हेत—

जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा।

(१-२०५-५)

३१. देवी की कृपा हेतु—

देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥

(१-२३६-२)

३२. मनोकामना पूर्ति हेतु—

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी॥

(१-२३६-७)

३३. मनोकामना पूर्ति हेतु—

सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे।

(१-२३७-४)

३४. पितर दोष निवारण हेतु—

बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे॥

(१-२५५-७)

३५. गणपति की प्रसन्नता एवं विघ्न नाश हेतु—

गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा॥

(१-२५७-७)

३६. प्रीतिभोज (विवाह) के समय—

सोहति सीय राम कै जोरी। छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी॥

(१-२६५-७)

३७. आकर्षण हेतु—

जेहिं कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू॥

(१-२५९-६)

३८. चिंता मुक्ति हेतु—

जय रघुबंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू॥

(१-२८५-१)

३९. कुशल-क्षेम हेतु एवं विवाह हेतु—

भुवन चारि दस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू॥

(१-२९६-३)

४०. नकारात्मक शक्तियों को दूर करने के लिए—

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं॥

(१-३१५-१)

४१. उपनयन (जनेऊ) संस्कार के समय—

पीत जनेउ महाछबि देई। कर मुद्रिका चोरि चितु लेई॥

(१-३२७-५)

४२. सास-बहू में प्रेम बढ़ाने के लिए—

सासु ससुर गुर सेवा करेहू। पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू॥

(१-३३४-५)

४३. किसी भी मंगल कार्य के प्रारंभ में—

सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगलमूल सगुन भए नाना॥

(१-३३९-८)

४४. पितर दोष निवारण हेतु—

देव पितर पूजे बिधि नीकी। पूजीं सकल बासना जी की॥

(१-३५१-१)

४५. पूर्ण समर्पण हेतु—

नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी॥

(१-३६०-६)

४६. खेद नाश एवं मंगल-कामना हेतु—

जब तें राम ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए॥

(२-१-१)

४७. मंगल कार्य के समय—

बिप्र साधु सुर पूजत राजा। करत राम हित मंगल काजा॥

(२-७-२)

४८. कर्णबेध और उपनयन संस्कार के समय—

करनबेध उपबीत बिआहा। संग संग सब भए उछाहा॥

(२-१०-६)

४९. विपत्ति काल में शिव की कृपा हेतु—

आसुतोष तुम्ह अवढर दानी। आरति हरहु दीन जनु जानी॥

(२-४४-८)

५०. देव और पितृ दोष शांति हेतु—

देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं। राखहुँ पलक नयन की नाईं॥

(२-५७-१)

५१. अखण्ड सौभाग्य हेतु—

अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गंग जमुन जल धारा॥

(२-६९-८)

५२. पुत्र-सुख हेतु—

पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुतु होई॥

(२-७५-१)

५३. विदेश यात्रा से पूर्व—

चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई। चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई॥

(२-८३-२)

५४. मोक्ष हेतु—

सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू। तेहि श्रम यह लौकिक ब्यवहारू॥

(२-८७-८)

५५. मोक्ष या सद्गति हेतु—

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा॥

(२-१०१-३)

५६. मनोकामना पूर्ण होने पर—

नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥

(२-१०२-५)

५७. तीर्थ से वापस आने पर—

आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥

(२-१०७-५)

५८. राम-मंदिर की प्रतिष्ठा के समय—

सफल सकल सुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू॥

(२-१०७-६)

५९. तीर्थ में जाने से पूर्व—

जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं। तिन्ह समान अमरावति नाहीं॥

(२-११३-३)

६०. पति से प्रेम हेतु—

पारबती सम पतिप्रिय होहू। देबि न हम पर छाड़ब छोहू॥

(२-११८-१)

६१. पाप-मुक्ति हेतु—

राम-राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥

(२-१९४-५)

६२. तरण–तारण हेतु—

बारक राम कहत जग जेऊ। होत तरन तारन नर तेऊ।

(२–२१७–४)

६३. मंगल कार्य सम्पन्न होने के समय—

रघुपति भगति सुमंगल मूला। नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला॥

(२–२४३–७)

६४. सामाजिक प्रतिष्ठा हेतु—

राम सनेह सरस मन जासू। साधु सभाँ बड़ आदर तासू॥

(२–२७७–४)

६५. अधिकारी या स्वामी की अनुकूलता हेतु—

देखेउँ पाय सुमंगल मूला। जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला॥

(२–३००–३)

६६. सन्मार्ग पर लाने हेतु—

गुरु पितु मातु स्वामि सिख पालें। चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें॥

(२–३१५–५)

६७. उलझन से मुक्ति हेतु—

रामकृपाँ अवरेब सुधारी। बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी॥

(२–३१७–३)

६८. राम कृपा होने पर—

नाथ सकल साधन मैं हीना। कीन्ही कृपा जानि जन दीना॥

(३–८–४)

६९. भगवत् कृपा हेतु—

यह बर मागउँ कृपा निकेता। बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता॥

(३–१३–१०)

७०. भगवत् कृपा–प्राप्ति हेतु—

अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती। सब तजि भजनु करौं दिन राती॥

(४–७–२१)

७१. मरणासन्नावस्था में शांति से प्राण निकले—

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं॥

(४–१०–३)

७२. ज्ञान प्राप्ति हेतु—

छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित अति अधम सरीरा॥

(४-११-४)

७३. सबके कल्याण हेतु—

उमा राम सम हित जग माहीं। गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं॥

(४-१२-१)

७४. वर्षा हेतु—

बरषहि जलद भूमि निअराएँ। जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ॥

(४-१४-३)

७५. मुकदमा आदि में विजय हेतु—

पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥

(४-३०-४)

७६. असाध्य को साध्य बनाने हेतु—

कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥

(४-३०-५)

७७. गृह प्रवेश आदि में सफलता हेतु—

प्रबिसि नगर/भवन कीजै सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥

(५-५-१)

७८. शत्रु को मित्र बनाने हेतु—

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

(५-५-२)

७९. श्रीराम जानकी की कृपा हेतु—

अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥

(५-१७-३)

८०. विपत्ति से मुक्ति हेतु—

दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥

(५-२७-४)

८१. मंगल कार्यों के समय—

जासु सकल मंगलमय कीती। तासु पयान सगुन यह नीती॥

(५-३५-५)

८२. परिवार में एकता हेतु—
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥
(५-४०-६)

८३. भक्ति प्राप्ति हेतु—
अब कृपाल निज भगति पावनी। देहु सदा सिव मन भावनी॥
(५-४९-७)

८४. शिवपूजन या शिवमंदिर की स्थापना-समय—
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा॥
(६-२-६)

८५. मस्तिष्क पीड़ा दूर करने हेतु—
हनूमान अंगद रन गाजे। हाँक सुनत रजनीचर भाजे॥
(६-४७-६)

८६. शत्रु पर विजय हेतु—
कर सारंग साजि कटि भाथा। अरि दल दलन चले रघुनाथा॥
(६-६८-१)

८७. संसार या सर्वत्र विजय प्राप्ति हेतु—
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥
(६-८०-११)

८८. धन-संपदा प्राप्ति हेतु—
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं। सुख संपति नाना बिधि पावहिं॥
(७-१५-३)

८९. रोग-ब्याधि से मुक्ति हेतु—
दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
(७-२१-१)

९०. परस्पर प्रीति हेतु—
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
(७-२१-२)

९१. भातृ-प्रेम में वृद्धि हेतु—
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती॥
(७-२५-३)

९२. हनुमान जयंती पर—

हनूमान सम नहिं बड़ भागी। नहिं कोउ राम चरन अनुरागी॥

(७-५०-८)

९३. श्रीराम की कृपा हेतु—

राम चरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनै पारा॥

(७-५२-२)

९४. भवबन्धन से मुक्ति हेतु-(क)—

भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा॥

(७-५३-३)

९५. भवबन्धन से मुक्ति हेतु (ख)—

उपजइ राम चरन बिस्वासा। भव निधि तर नर बिनहिं प्रयासा॥

(७-५५-९)

९६. जन्मोत्सव पर—

जन्म महोत्सव देखउँ जाई। बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई॥

(७-७५-४)

९७. रामनवमी के पावन अवसर पर—

प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा। देखउँ बालबिनोद अपारा॥

(७-८१-८)

९८. श्रीराम की प्रसन्नता हेतु—

जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू। मो पर करहु कृपा अरु नेहू॥

(७-८४-७)

९९. जन्मपत्रिका में मारक दशा होने पर—

कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही। सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही॥

(७-८८-१)

१००. गुरु पूजन या गुरुपूर्णिमा पर—

गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई॥

(७-९३-५)

१०१. कलिकाल में मुक्ति हेतु—

कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना। एक अधार राम गुन गाना॥

(७-१०३-५)

१०२.जन्मोत्सव पर—

बालकरूप राम कर ध्याना। कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना॥

(७-११३-७)

१०३.दु:ख से मुक्ति हेतु—

राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें॥

(७-१२०-९)

१०४.रोग नाश हेतु—

राम कृपाँ नासहिं सब रोगा। जौं एहि भाँति बनै संजोगा॥

(७-१२२-५)

१०५.ब्रह्म पिशाच दोष शांति हेतु—

अब जनि करहि बिप्र अपमाना। जानेसु संत अनंत समाना॥

(७-१०९-१२)

१०६.भूतादि ऊपरि बाधा की शांति हेतु—

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥

(हनुमान चा० २४)

१०७.रोग-दु:ख नष्ट होने के लिए—

नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥

(हनुमान चा० २५)

१०८.हनुमानजी की कृपा हेतु—

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

(हनुमान चा० ३७)

द्वितीय भाग

चौरासी (चतुरशीतिः) के ग्रामों की सूची

१.	अमौरा	१४३
२.	उपाध्याय सागर	१४५
३.	एकवनी	.....
४.	कम्हरियाँ	१४८
५.	कर्जी	१४९
६.	कमधरपुर	१५५
७.	करहियाँ	१६२
८.	करजाँव	.....
९.	कल्याणपुर	१७४
१०.	किनरचोला	१७९
११.	खुदुरा (पथरा)	१८१
१२.	गर्रा	१८४
१३.	गहमर	१८६
१४.	गोड़सरा	२३३
१५.	गंगापुर	२३५
१६.	चंदा	२३६
१७.	गोपालपुर	.....
१८.	चकरहसी	.....
१९.	चौबेपुर	२३९
२०.	चपरांग	.....
२१.	ढोढ़ी	.....
२२.	डरवन	२४१
२३.	डुगरपुरा	२४२
२४.	ढोड़ाडीह	२४६
२५.	तेतरिया	२४७
२६.	देवल	२५५
२७.	नईकोट	.....
२८.	नगसर	२५५
२९.	नाद	२५६
३०.	पचौरी	२५७
३१.	पड़ियारी	२६१
३२.	पंडितपुरा	२६३
३३.	पानापुर	२६२
३४.	बगाढ़ी	२६५
३५.	बगहीं	२६८
३६.	बरनाँव	२७१
३७.	बासनपुर	२७३
३८.	बारा	२७४
३९.	भगीरथपुर	२७५
४०.	भदोखरा	२७६
४१.	भेकास	.....
४२.	भरखरा	२७८
४३.	मझरियाँ	२८३
४४.	मदनपुरा	२९७
४५.	मनोहरपुर	२९८
४६.	मठियाँ	३०६
४७.	मनिया	३०९
४८.	मैनपुरा	३१०
४९.	सकास	३११
५०.	सातों अवन्ती (चपरांग)	३१४
५१.	सिसौड़ा	३१५
५२.	सिझुआँ	३१६
५३.	सियरुआ	३२०
५४.	सेवई	३२१
५५.	सेवराई	३२२
५६.	वाराणसी	.....
५७.	वसुदेवा	.....
५८.	हाटा	३२६
५९.	घटिकन	.....
६०.	बड़ुई	.....

चौरासी के ग्रामों का वंश-वृक्ष

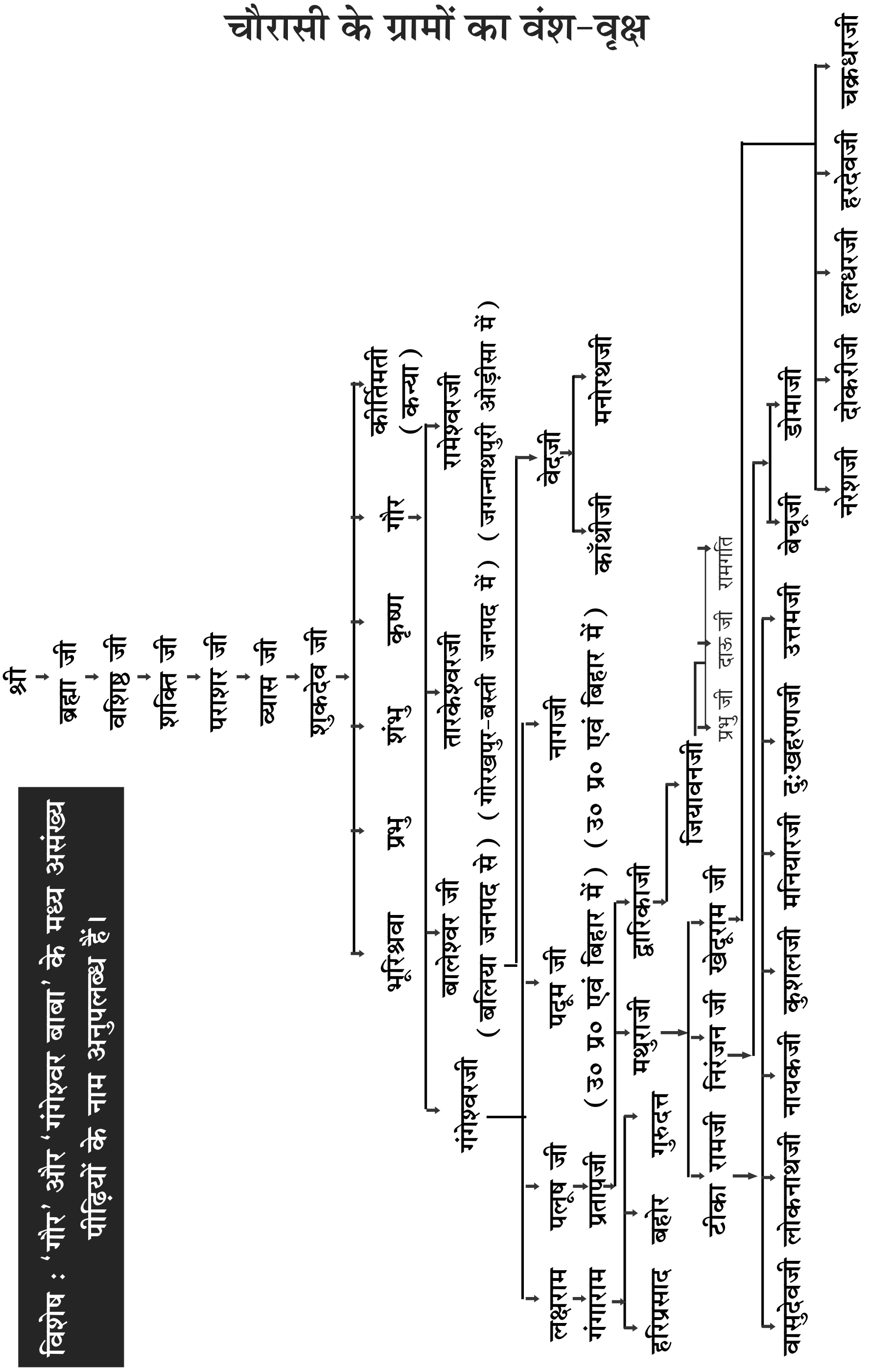

विशेष : 'गौर' और 'गंगेश्वर बाबा' के मध्य असंख्य पीढ़ियों के नाम अनुपलब्ध हैं।

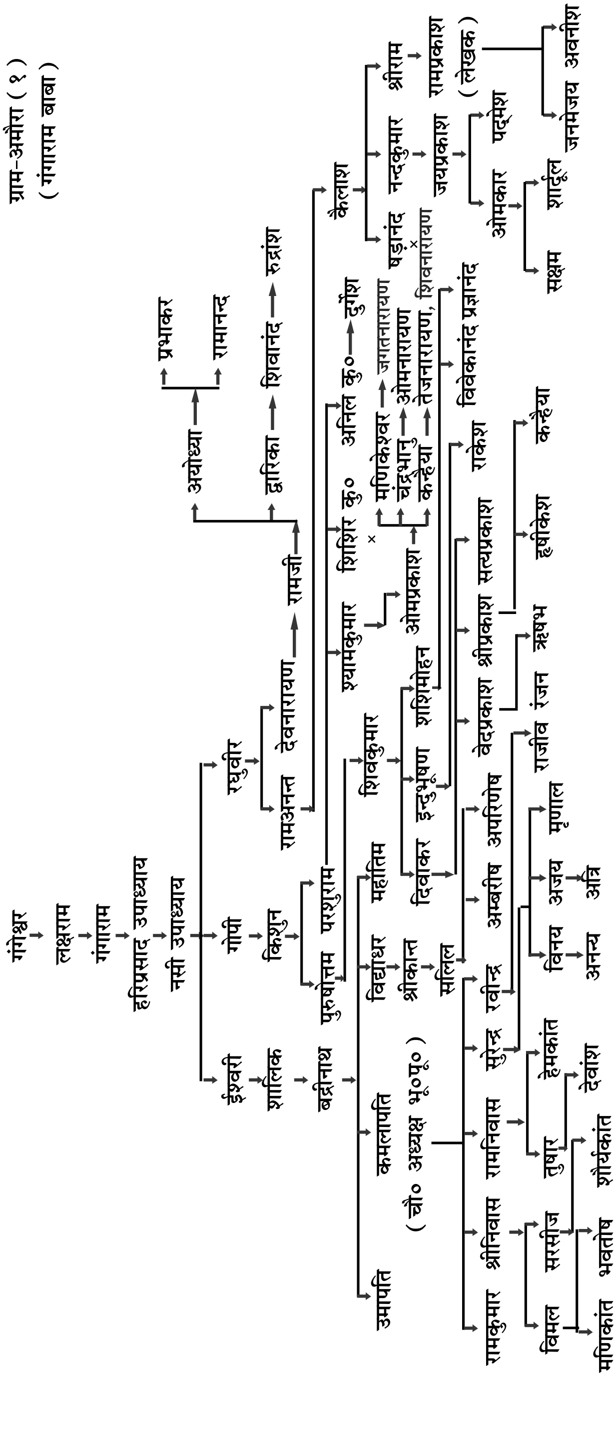
ग्राम-अमौरा (१)
(गंगाराम बाबा)
गंगेश्वर
लक्षराम
गंगाराम
हरिप्रसाद उपाध्याय
नसी उपाध्याय
ईश्वरी
गोपी
रघुवीर
शालिक
किशुन
रामअनन्त
देवनारायण
रामजी
अयोध्या
प्रभाकर
रामानन्द
द्वारिका
शिवानंद
रुद्रांश
बद्रीनाथ
पुरुषोत्तम
परशुराम
कैलाश
षड़ानंद
नन्दकुमार
श्रीराम
जयप्रकाश
रामप्रकाश
(लेखक)
जनमेजय
अवनीश
ओमकार
पद्मेश
सक्षम
शार्दूल
श्यामकुमार
शिशिर कु०
अनिल कु०
दुर्गेश
ओमप्रकाश
मणिकेश्वर
जगतनारायण
चंद्रभानु
ओमनारायण
कन्हैया
तेजनारायण, शिवनारायण
उमापति
कमलापति
(चौ० अध्यक्ष भू०पू०)
विद्याधर
महातिम
शिवकुमार
श्रीकान्त
दिवाकर
इन्दुभूषण
शशिमोहन
सलिल
विवेकानंद
प्रज्ञानंद
रामकुमार
श्रीनिवास
रामनिवास
सुरेन्द्र
रवीन्द्र
अम्बरीष
अपरिणोष
वेदप्रकाश
श्रीप्रकाश
सत्यप्रकाश
राकेश
विमल
सरसीज
तुषार
हेमकांत
विनय
अजय
मृणाल
राजीव
रंजन
ऋषभ
हृषीकेश
कन्हैया
मणिकांत
भवतोष
शौर्यकांत
देवांश
अनन्य
अत्रि

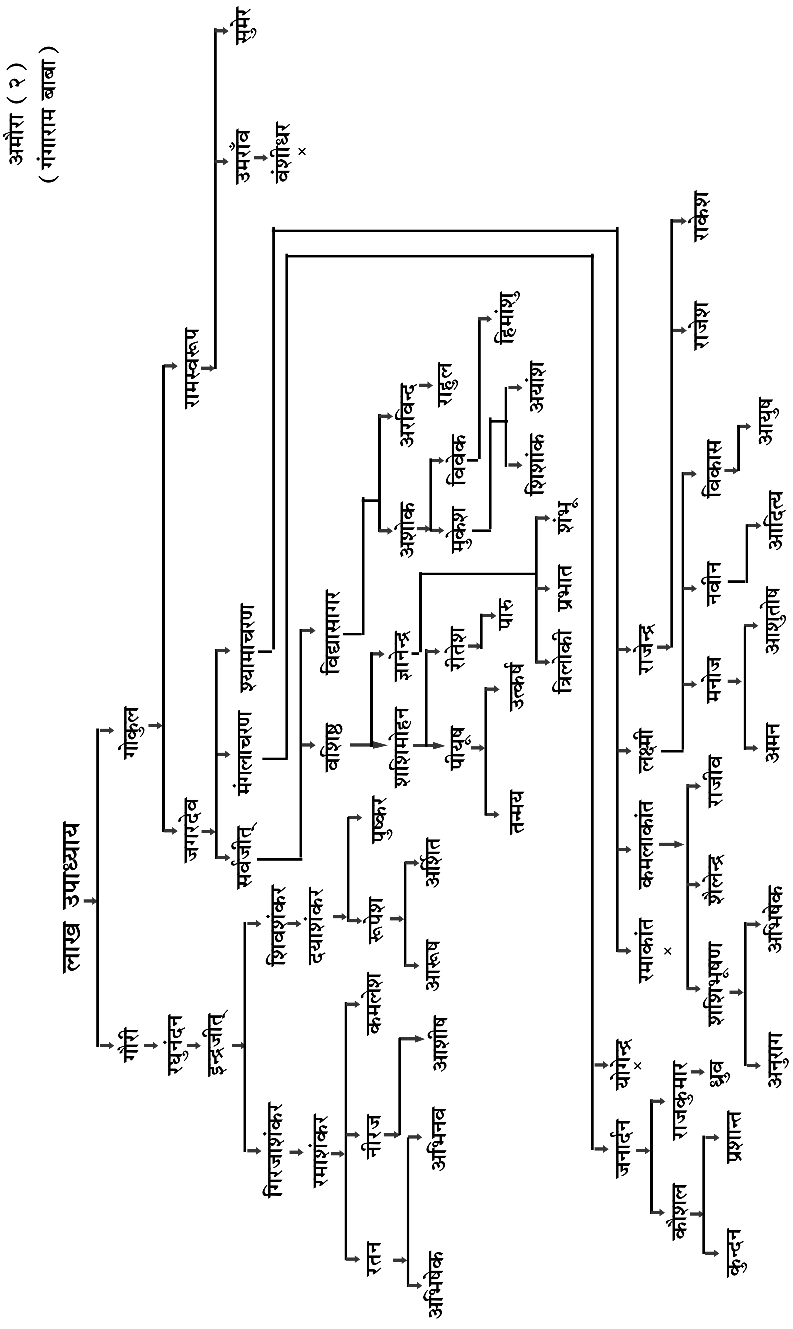
अमौरा (२)
(गंगाराम बाबा)
लाख उपाध्याय
गौरी
गोकुल
रघुनंदन
इन्द्रजीत
गिरजाशंकर
शिवशंकर
रमाशंकर
दयाशंकर
रतन
नीरज
कमलेश
रूपेश
पुष्कर
अभिषेक
अभिनव
आशीष
आरूष
अर्शित
जगदेव
रामस्वरूप
उमराँव
वंशीधर ×
सुमेर
सर्वजीत
मंगलाचरण
श्यामाचरण
वशिष्ठ
विद्यासागर
शशिमोहन
ज्ञानेन्द्र
अशोक
अरविन्द
राहुल
पीयूष
रीतेश
तन्मय
उत्कर्ष
पारु
त्रिलोकी
प्रभात
शंभू
मुकेश
विवेक
शिशांक
अयांश
हिमांशु
जनार्दन
योगेन्द्र ×
रमाकांत ×
कमलाकांत
लक्ष्मी
राजेन्द्र
कौशल
राजकुमार
ध्रुव
कुन्दन
प्रशान्त
शशिभूषण
शैलेन्द्र
राजीव
अनुराग
अभिषेक
मनोज
नवीन
विकास
अमन
आशुतोष
आदित्य
आयुष
राजेश
राकेश

(नाग बाबा)

ग्राम-उपाध्याय सागर (१), बिहार

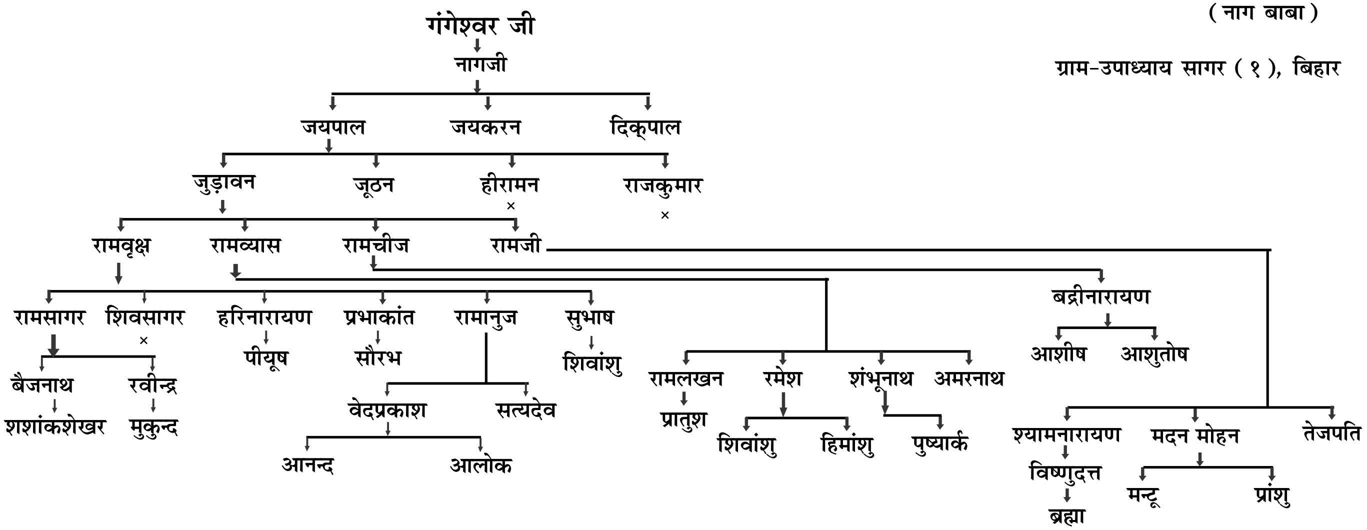

(नाग बाबा)

ग्राम-उपाध्याय सागर (२), बिहार

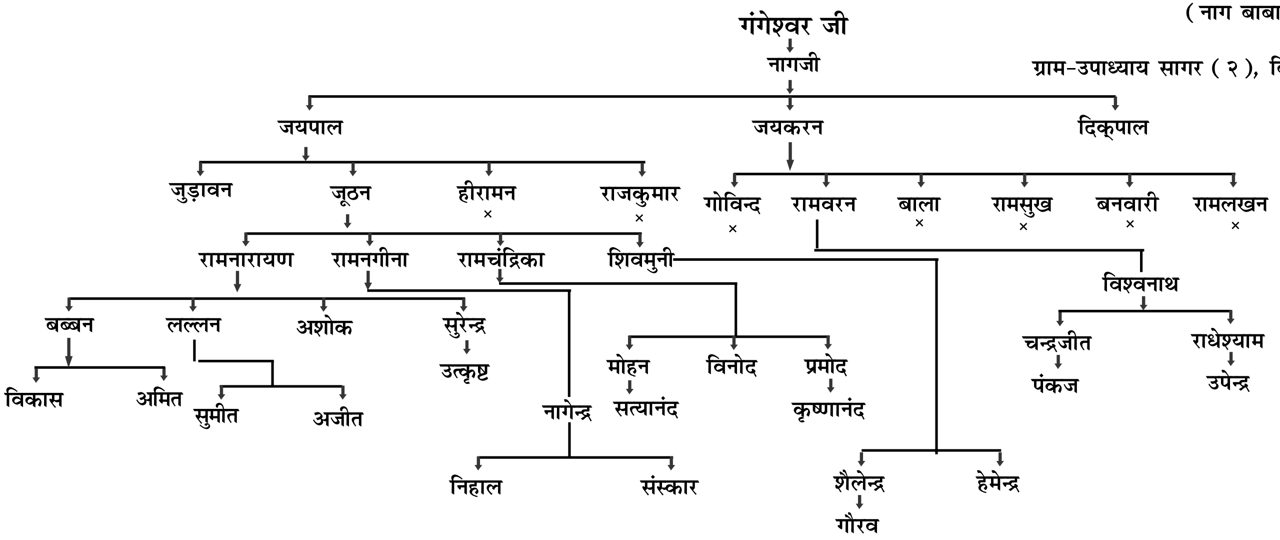

(नाग बाबा)

ग्राम-उपाध्याय सागर (३), बिहार

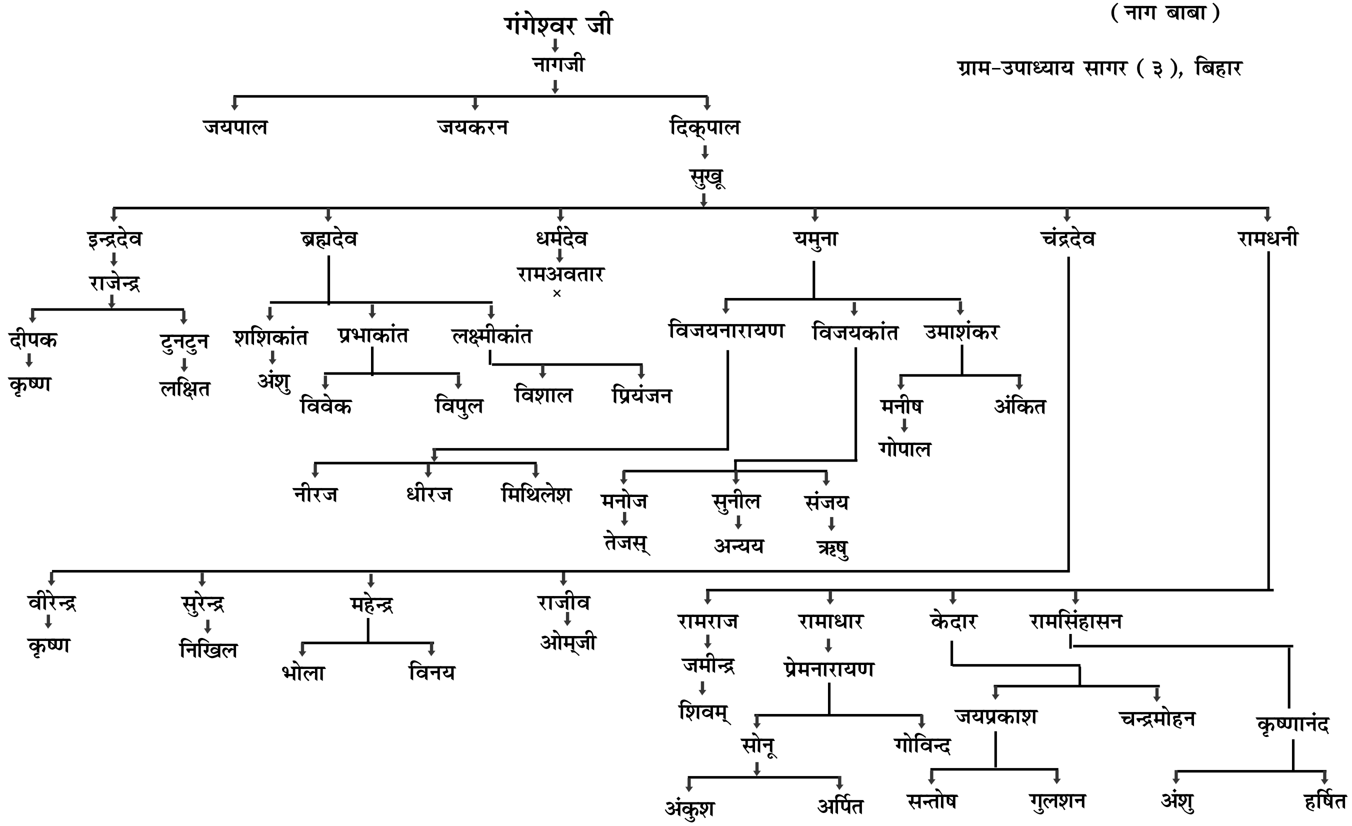

(पदुम बाबा)

ग्राम-कम्हरियाँ

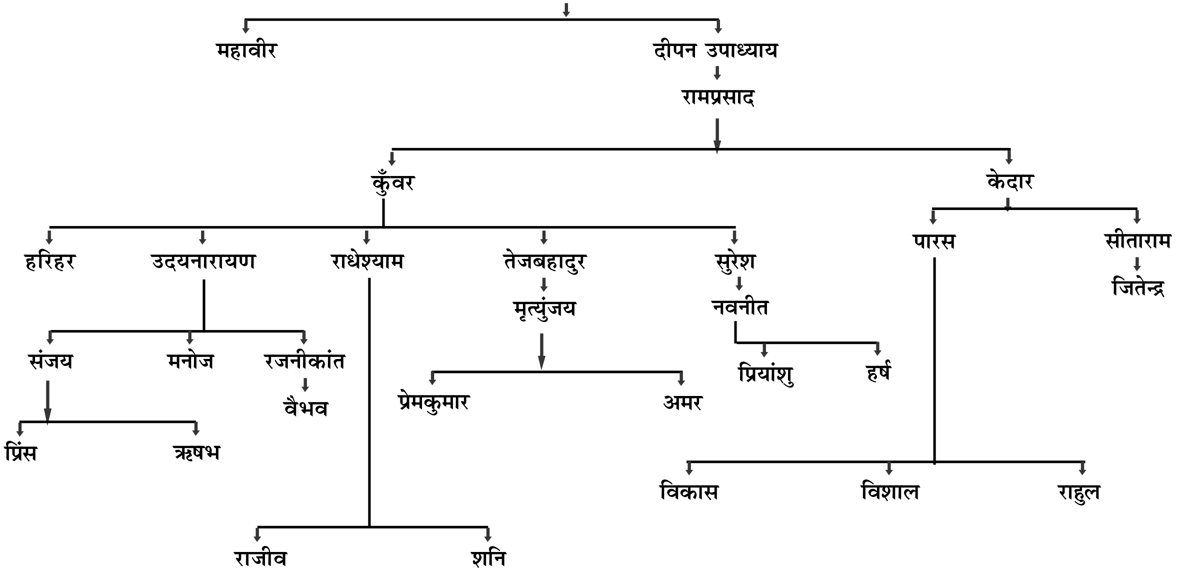

(पलुष बाबा)

ग्राम-कर्जी (१)

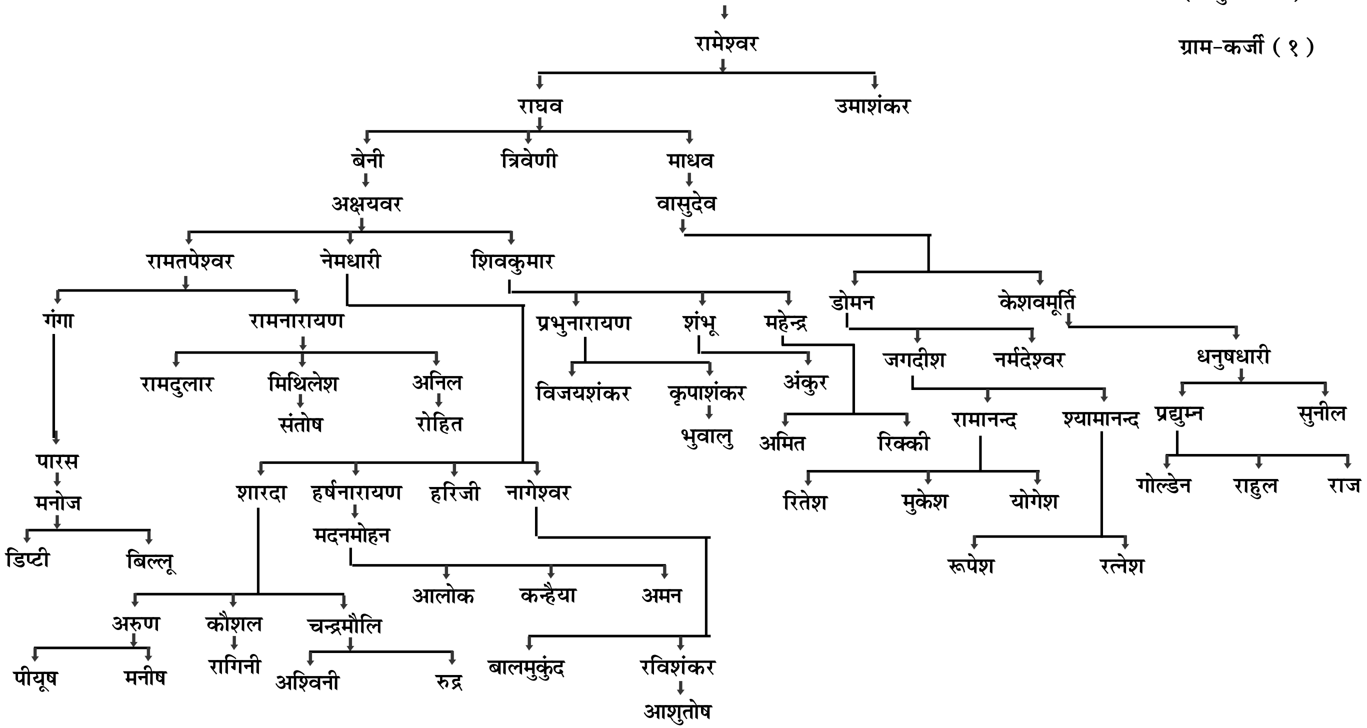

(पलुष बाबा)

ग्राम-कर्जी (२)

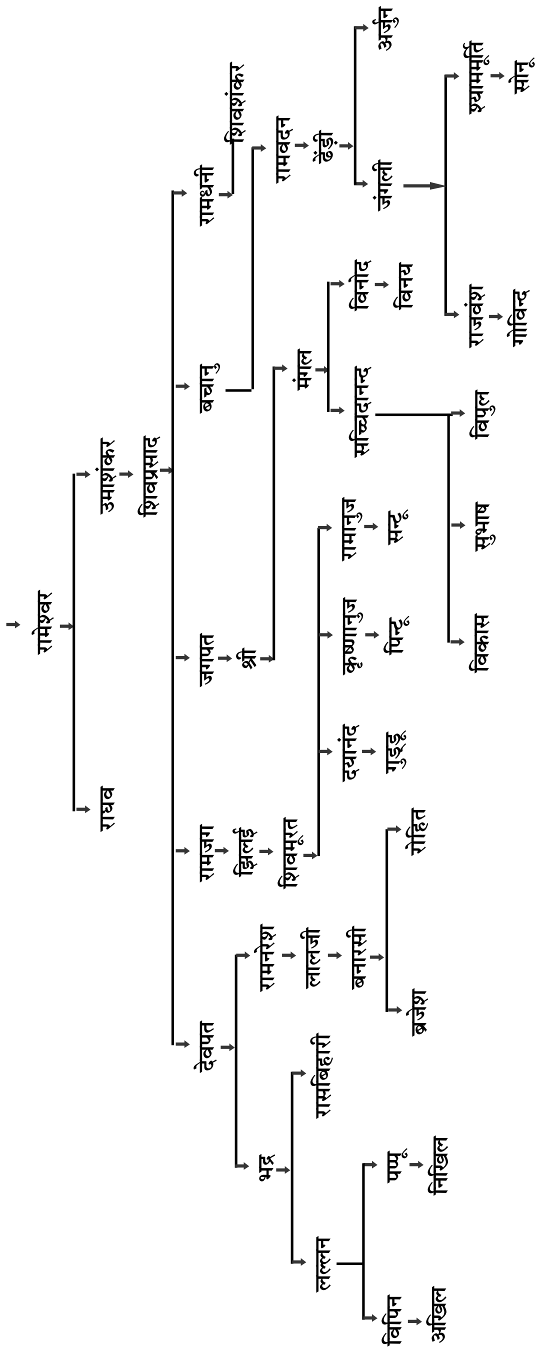

(पलुष बाबा)

ग्राम-कर्जी (३)

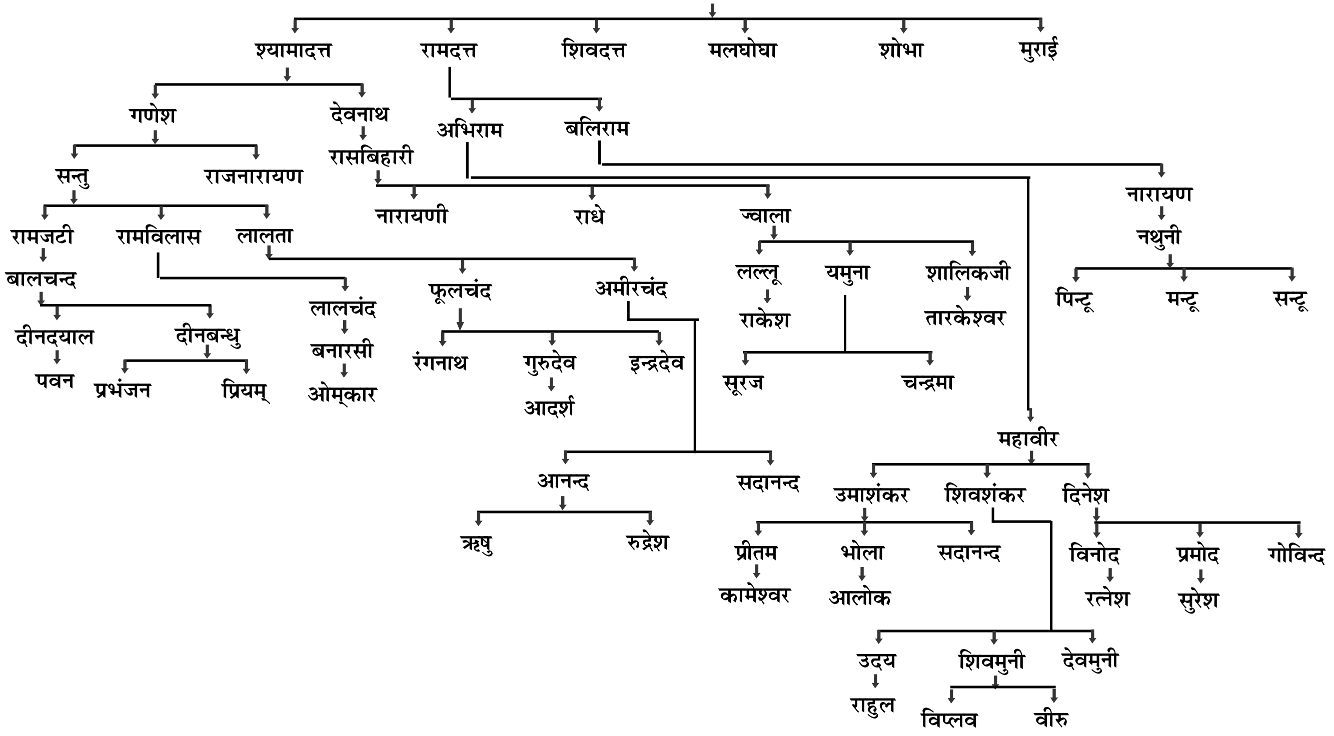

(पलुष बाबा)

ग्राम-कर्जी (४)

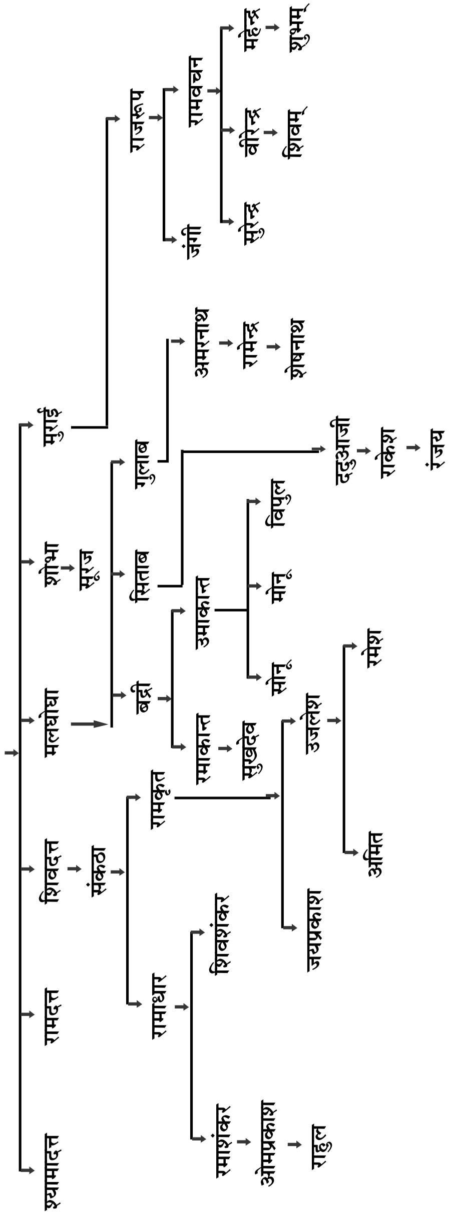

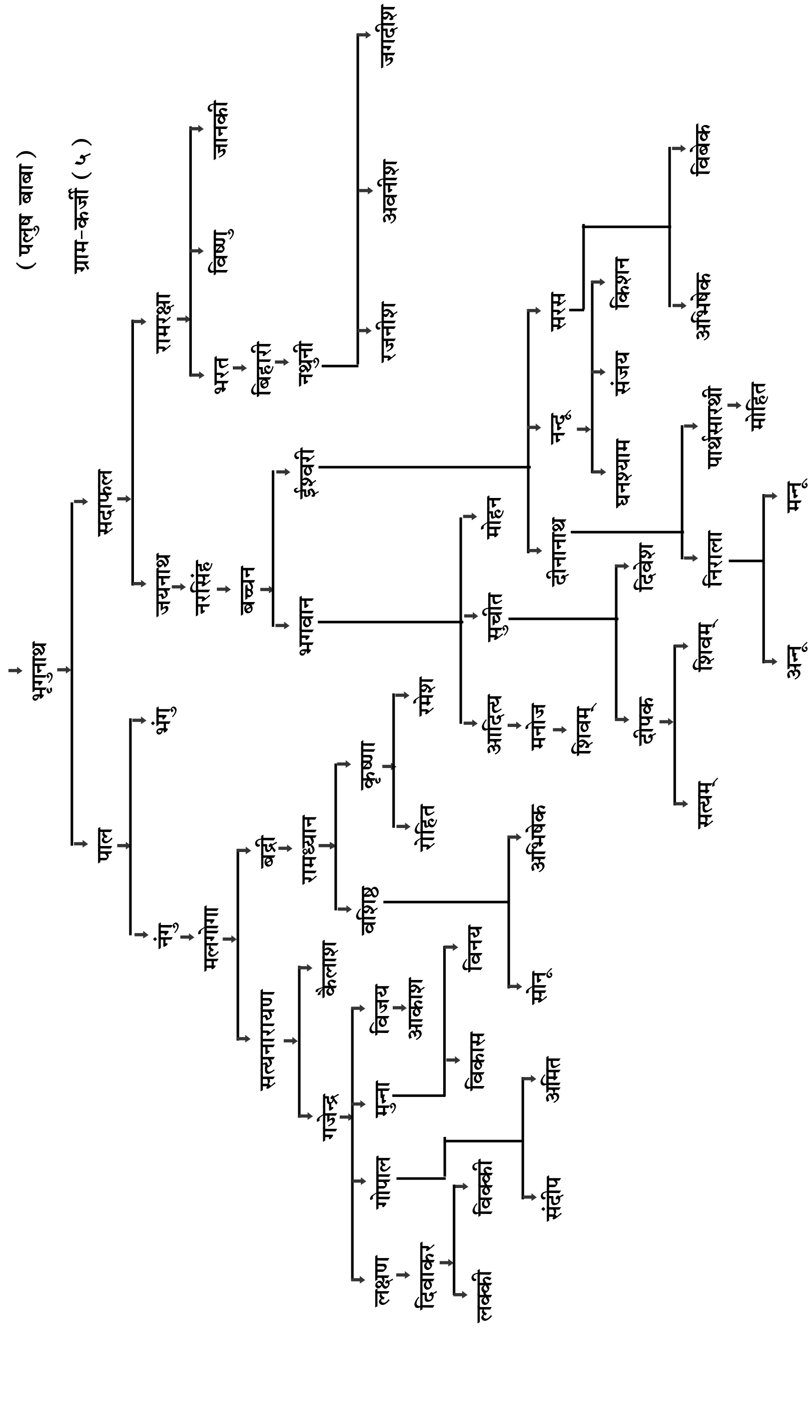

(पलुष बाबा)
ग्राम-कर्जी (५)
भृगुनाथ
सदाफल
पाल
रामरक्षा
जयनाथ
भंगु
नंगु
भरत
विष्णु
जानकी
बिहारी
नथुनी
रजनीश
अवनीश
जगदीश
नरसिंह
बच्चन
ईश्वरी
भगवान
सरस
नन्दू
दीनानाथ
किशन
संजय
घनश्याम
अभिषेक
विवेक
पार्थसारथी
मोहित
निराला
मन्नू
अन्नू
मोहन
सुचीत
आदित्य
द्विवेश
दीपक
शिवम्
सत्यम्
मनोज
शिवम्
मलगोगा
बद्री
सत्यनारायण
रामध्यान
कृष्णा
रमेश
रोहित
वशिष्ठ
अभिषेक
सोनू
कैलाश
गजेन्द्र
विजय
आकाश
मुन्ना
विनय
विकास
गोपाल
अमित
संदीप
लक्ष्मण
दिवाकर
विक्की
लक्की

(पलुष बाबा)

ग्राम-कर्जी (६)

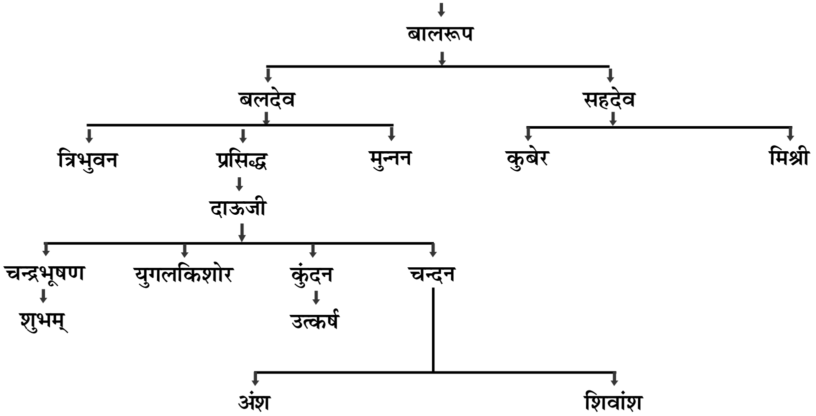

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर, बिहार (१)

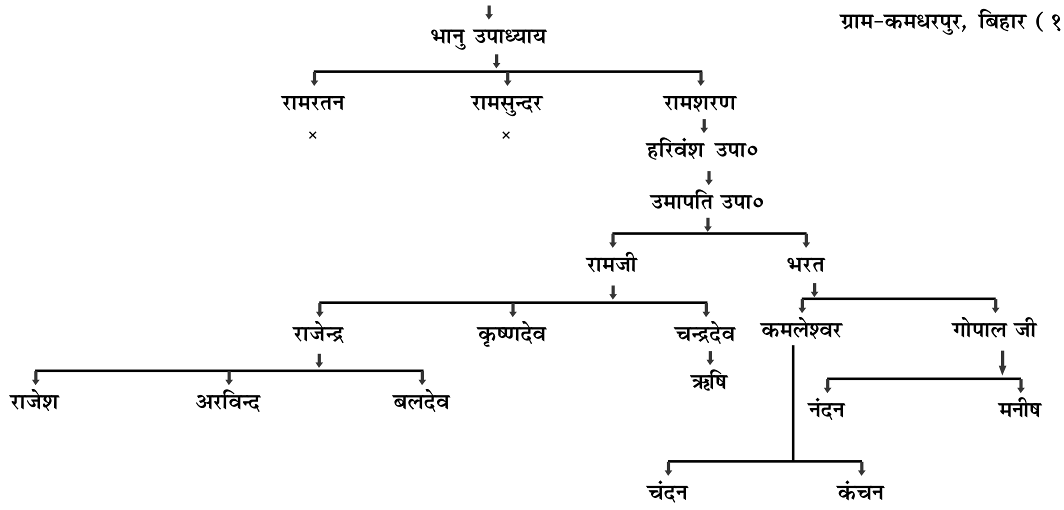

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर-बिहार (२)

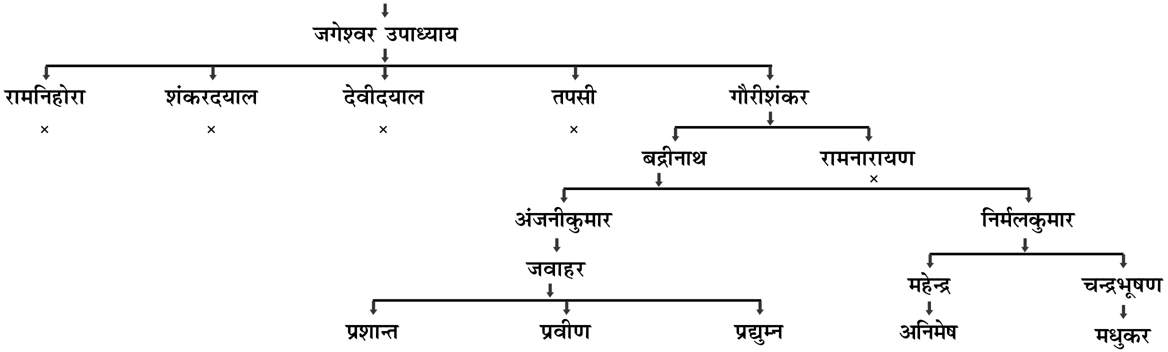

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर-बक्सर, बिहार (३)

- ठाकुर उपाध्याय
  - अधि
    - गति
      - बसन
        - चंद्रिका
          - चंद्रहास
            - रामानुज
              - सुधीर
              - सुशील
              - नीरज
              - धीरज
            - तेजनारायण ×
            - श्यामजी
              - राहुल
              - रवि
              - हरिओम्
              - श्रीओम्
          - श्रीनिवास
            - सुरेन्द्र
              - विकास
              - प्रिन्स
          - रंगनाथ ×
          - यदुनाथ
            - सुनील
            - अनिल
        - तलूकराज ×
        - रामकँवल ×
        - चंद्रजीत्
          - अनिरुद्ध
            - सम्पत्
              - चंद्रभानु
              - आर्यन
            - विनोद ×
            - संतोष
              - आयुष
              - दीपक
            - राकेश
              - अयान

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर-बक्सर, बिहार (४)

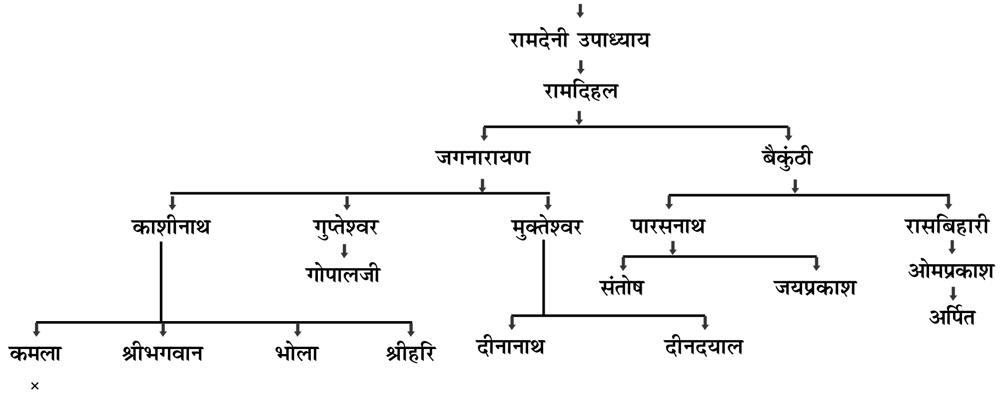

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर-बक्सर, बिहार (५)

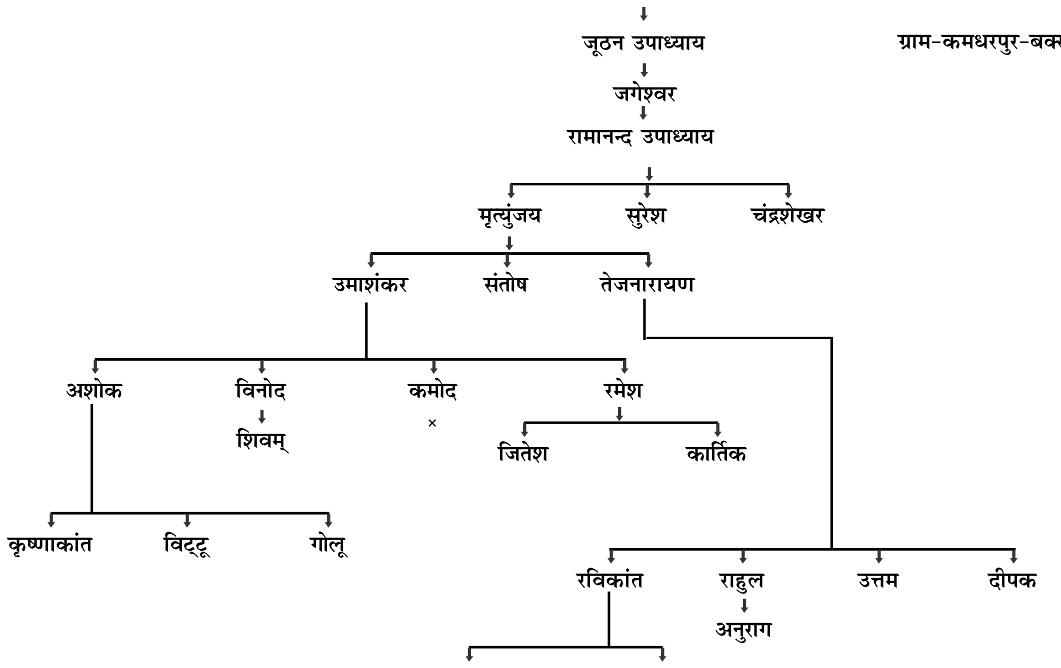

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर-बक्सर, बिहार (६)

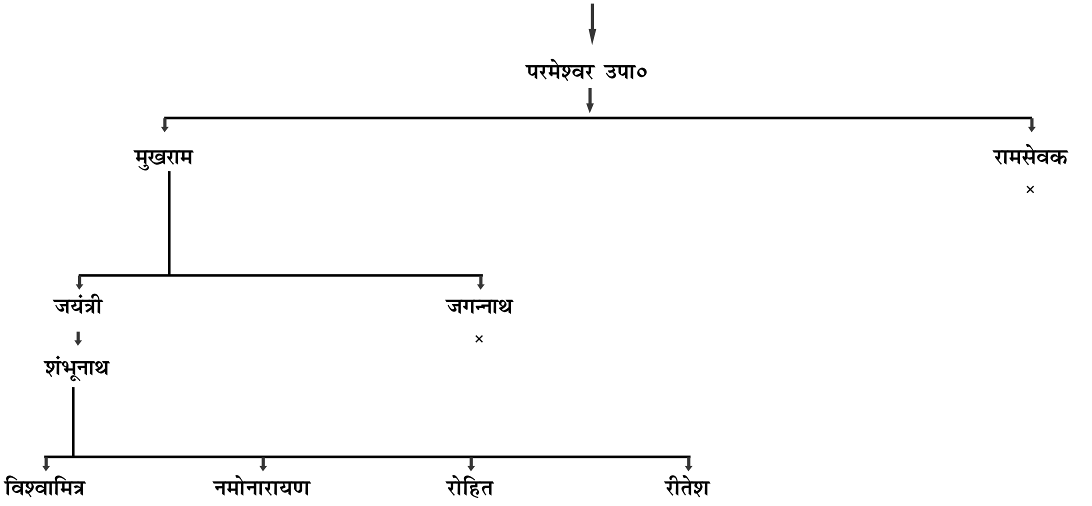

(पदुम जी)

ग्राम-कमधरपुर-बक्सर, बिहार (७)

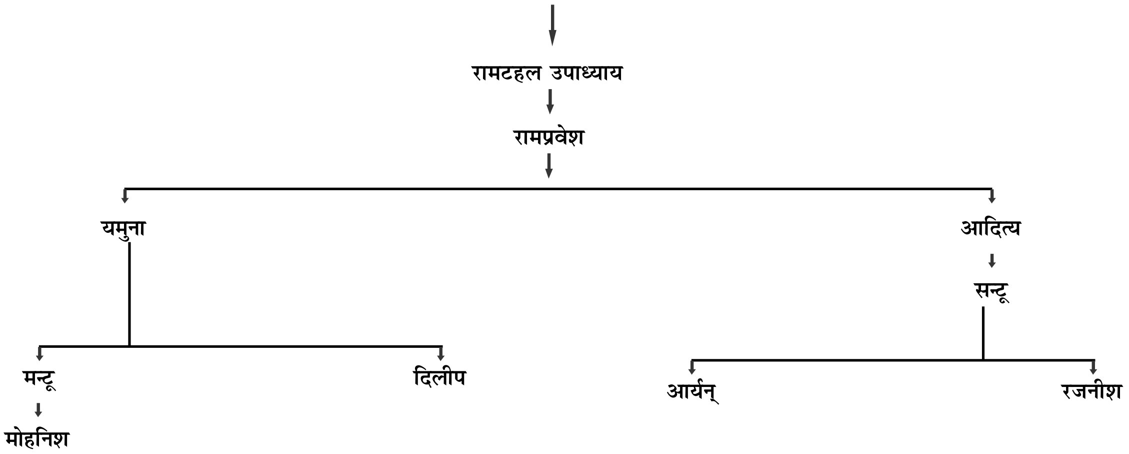

(नाग बाबा)

ग्राम-करहियाँ (पूर्व) (१)

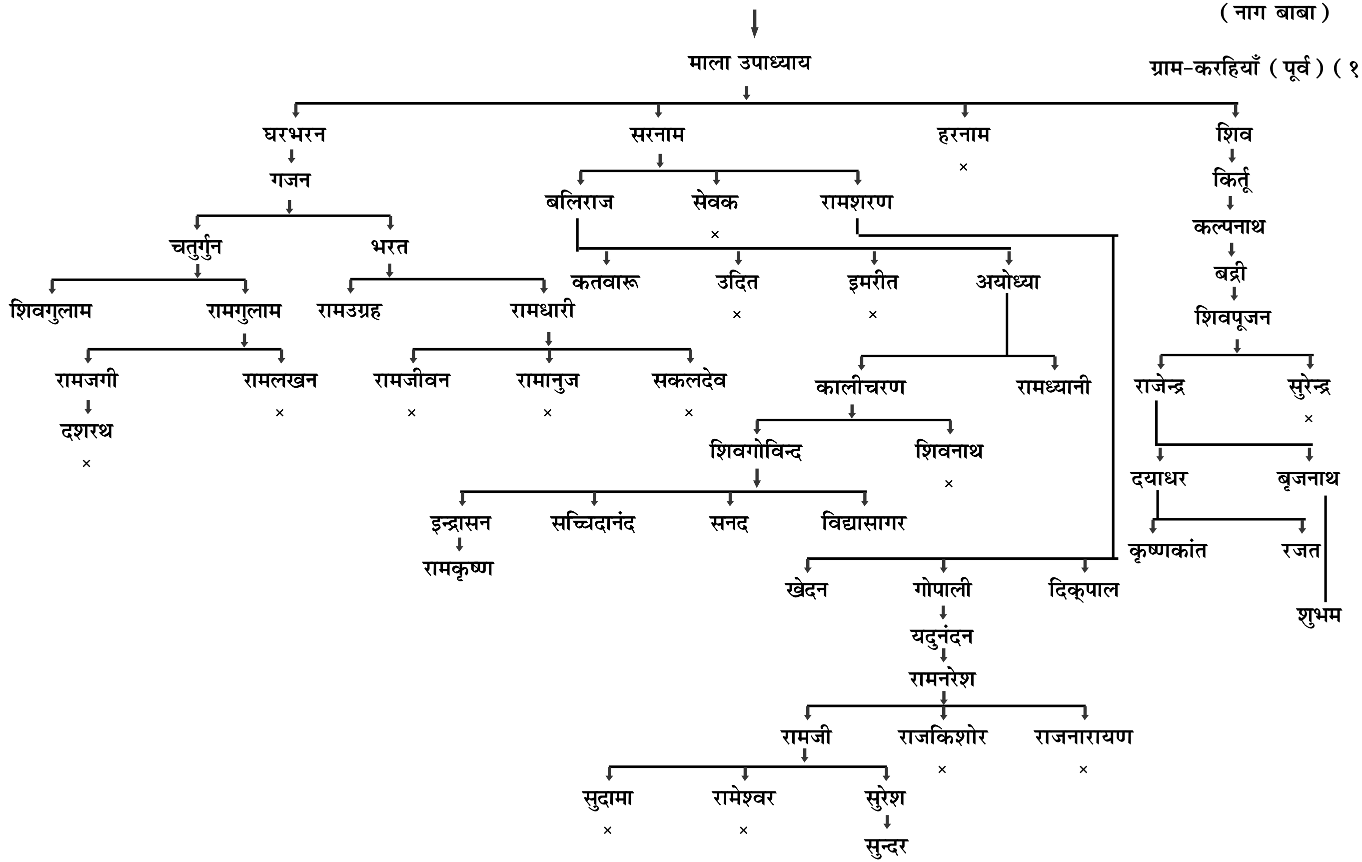

(नाग बाबा)

ग्राम-करहियाँ (पूर्व) (२)

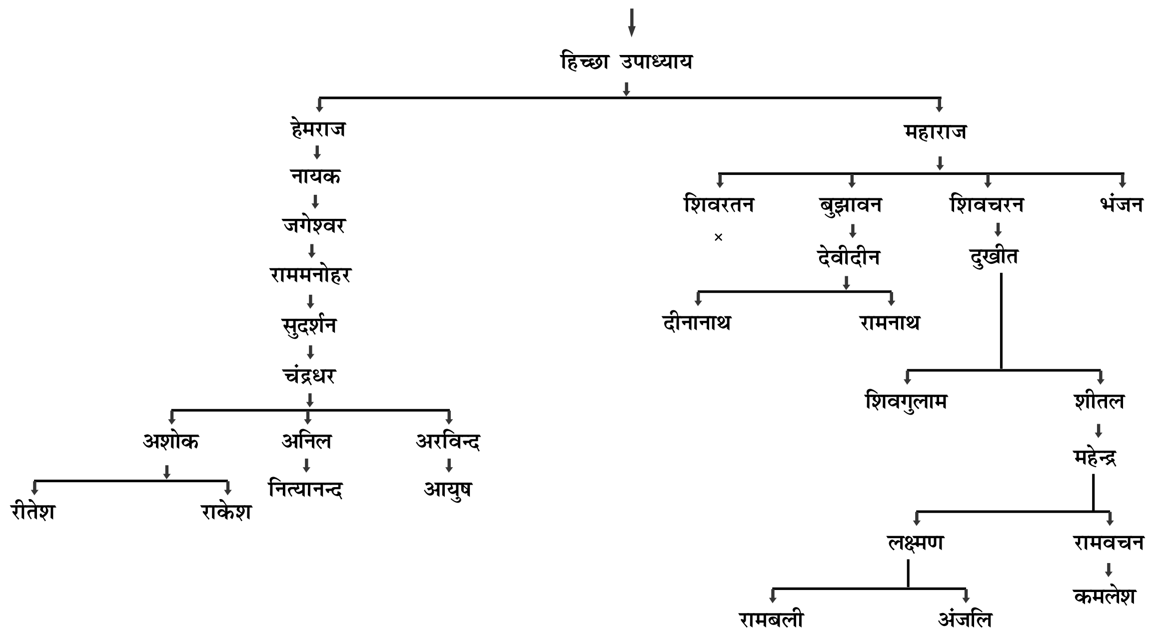

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (३)

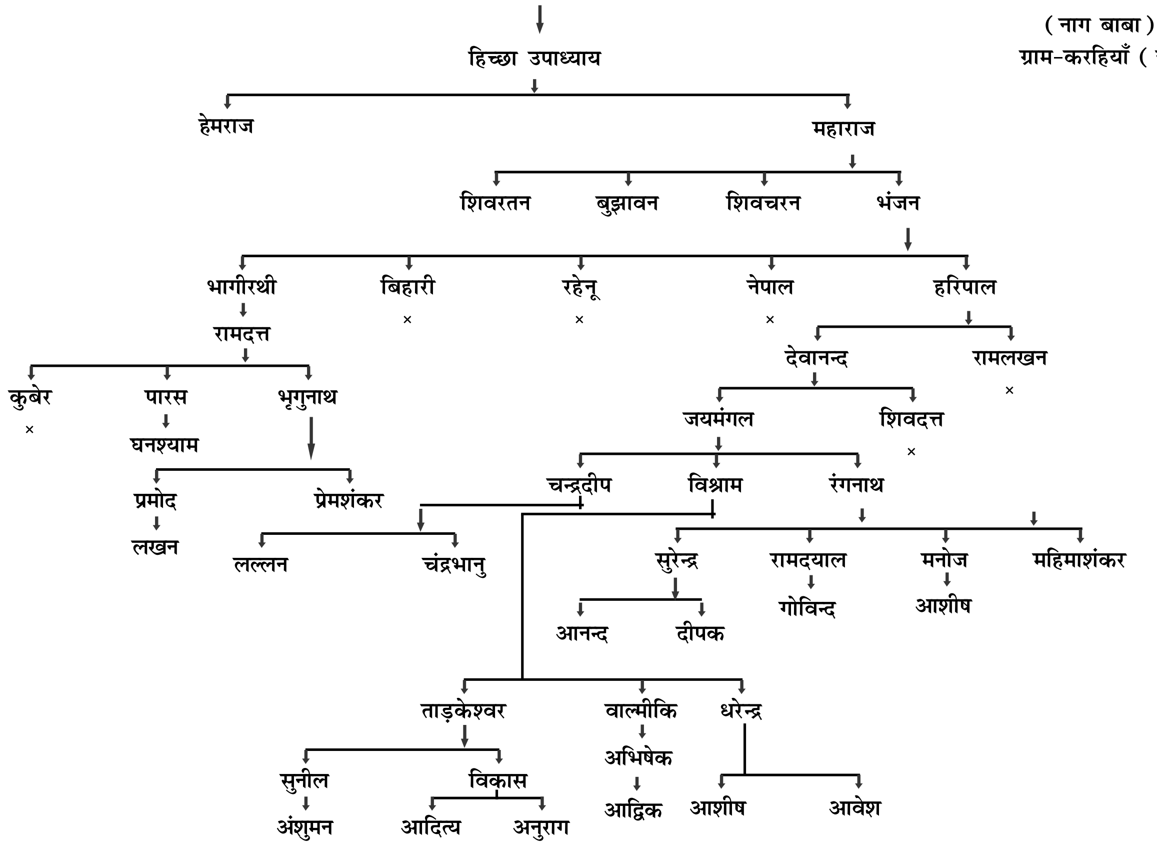

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (४)

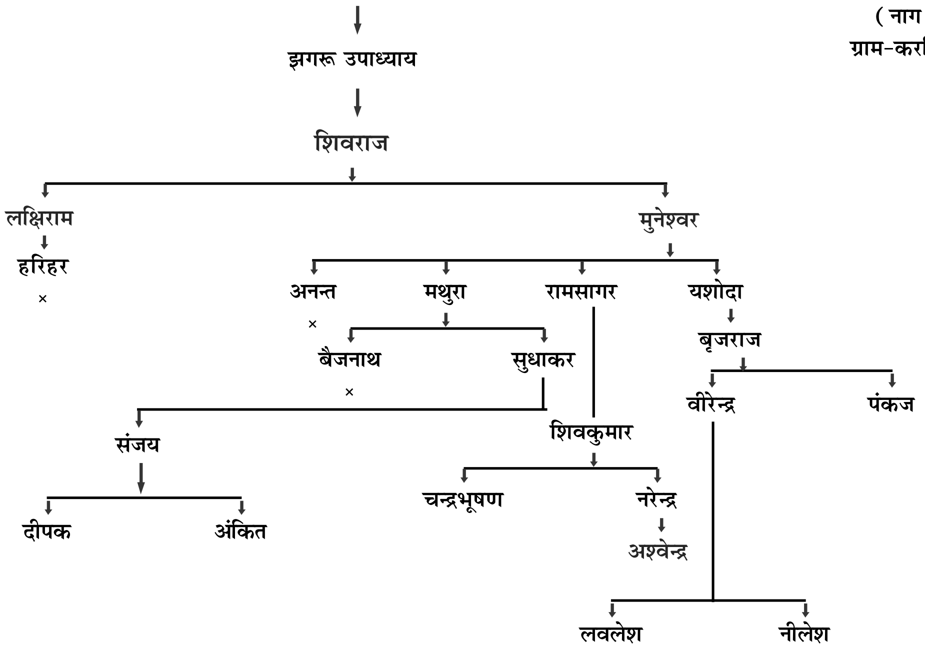

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (५)

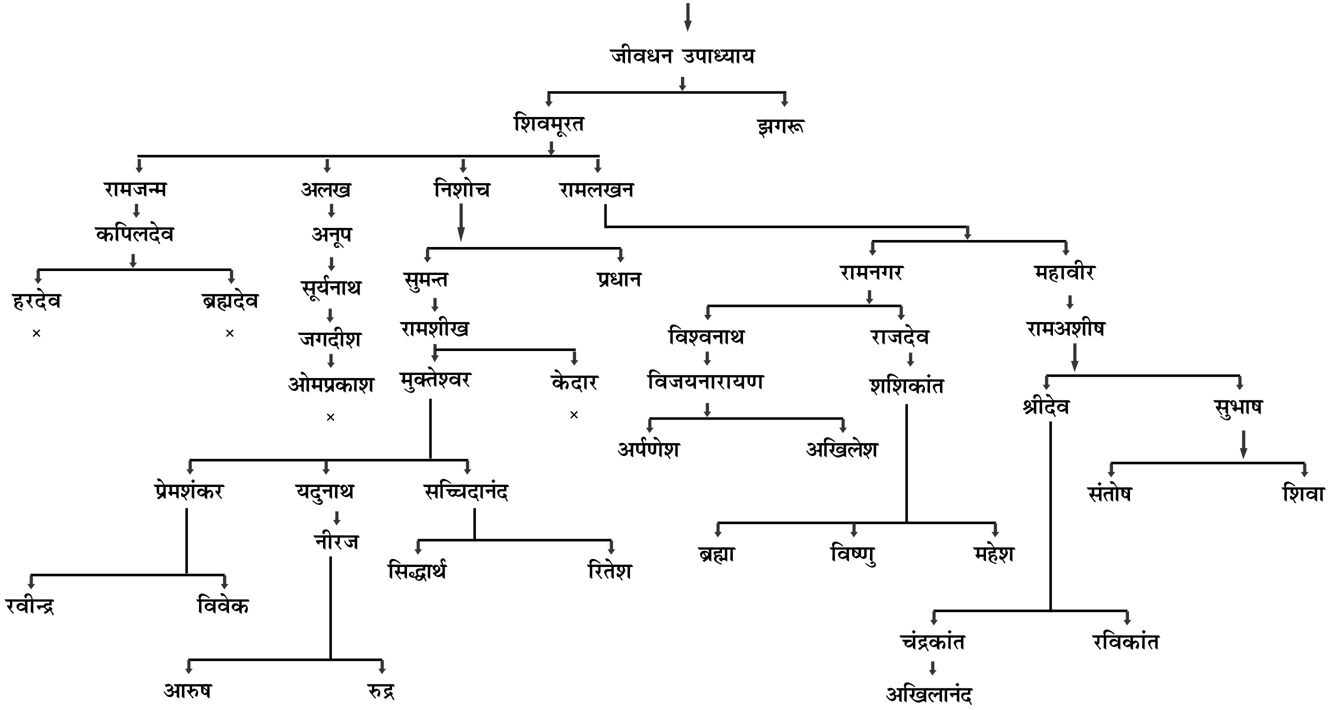

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (६)

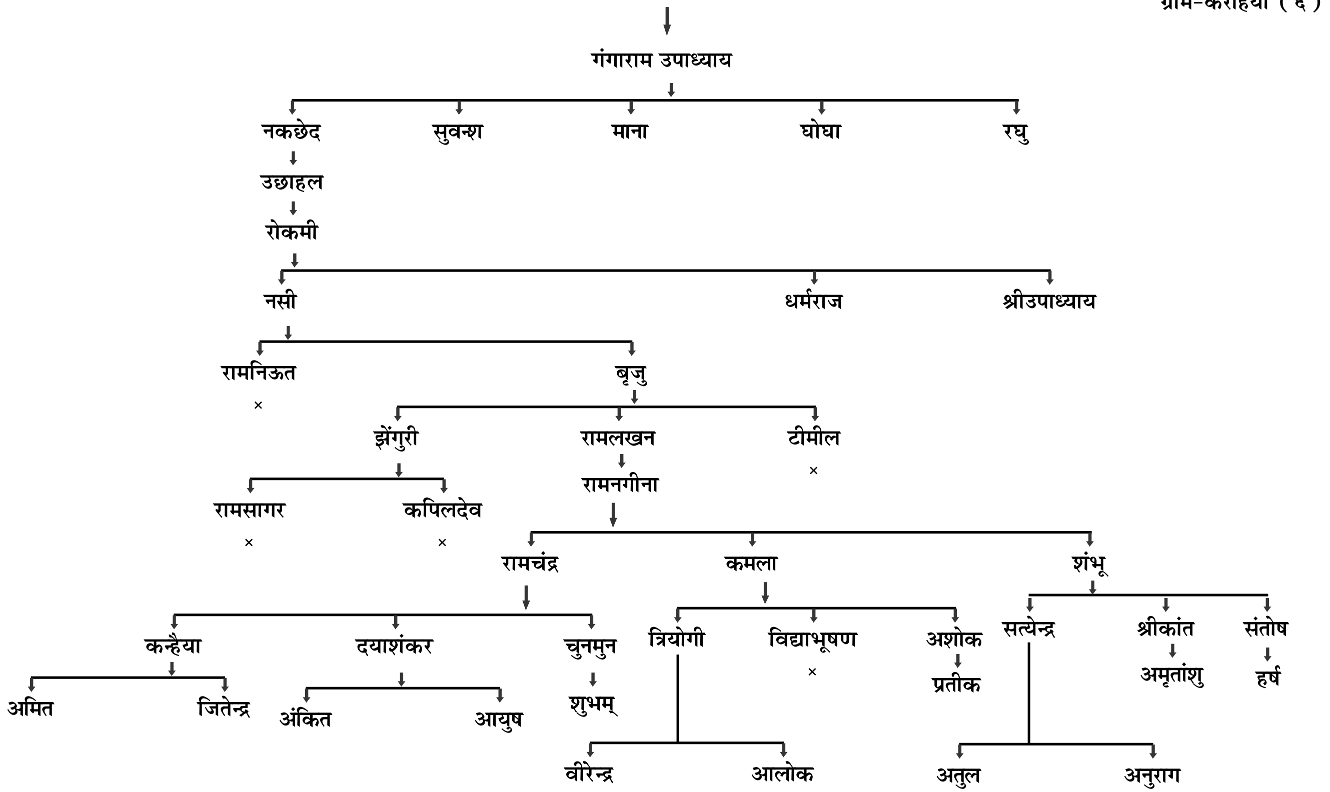

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (७)

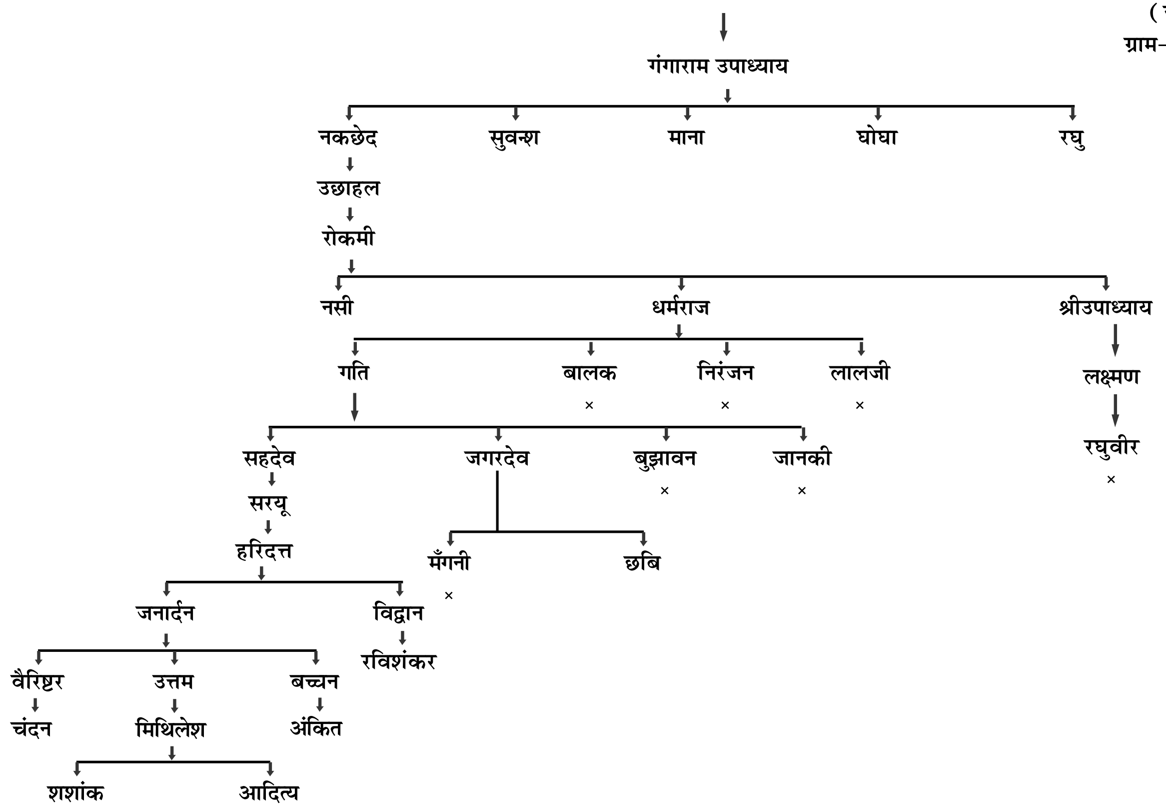

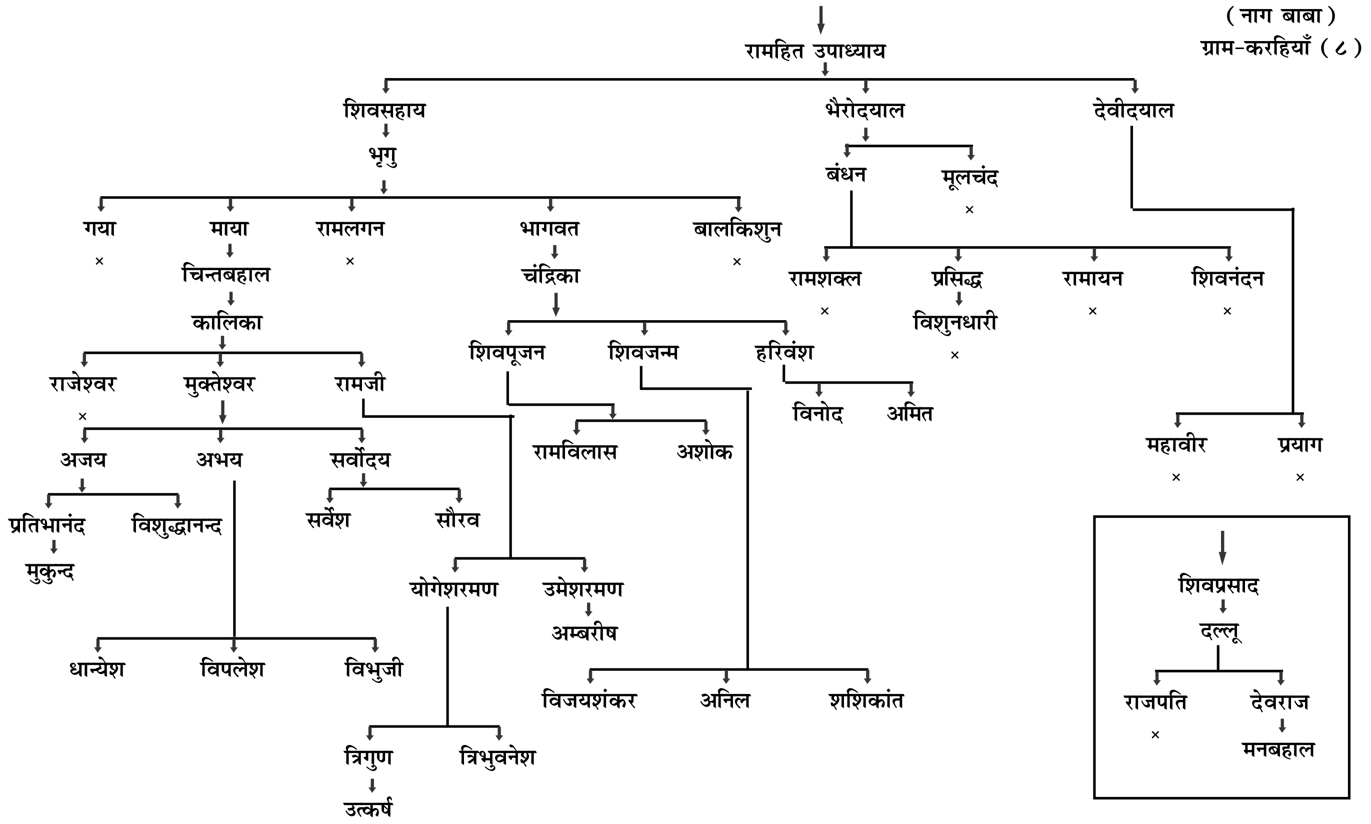
(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (८)
रामहित उपाध्याय
शिवसहाय
भैरोदयाल
देवीदयाल
भृगु
बंधन
मूलचंद
×
गया
×
माया
चिन्तबहाल
कालिका
रामलगन
×
भागवत
चंद्रिका
बालकिशुन
×
रामशक्ल
×
प्रसिद्ध
विशुनधारी
×
रामायन
×
शिवनंदन
×
शिवपूजन
शिवजन्म
हरिवंश
विनोद
अमित
राजेश्वर
×
मुक्तेश्वर
रामजी
रामविलास
अशोक
महावीर
×
प्रयाग
×
अजय
अभय
सर्वोदय
प्रतिभानंद
मुकुन्द
विशुद्धानन्द
सर्वेश
सौरव
योगेशरमण
उमेशरमण
अम्बरीष
धान्येश
विपलेश
विभुजी
विजयशंकर
अनिल
शशिकांत
त्रिगुण
उत्कर्ष
त्रिभुवनेश
शिवप्रसाद
दल्लू
राजपति
×
देवराज
मनबहाल

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (९)

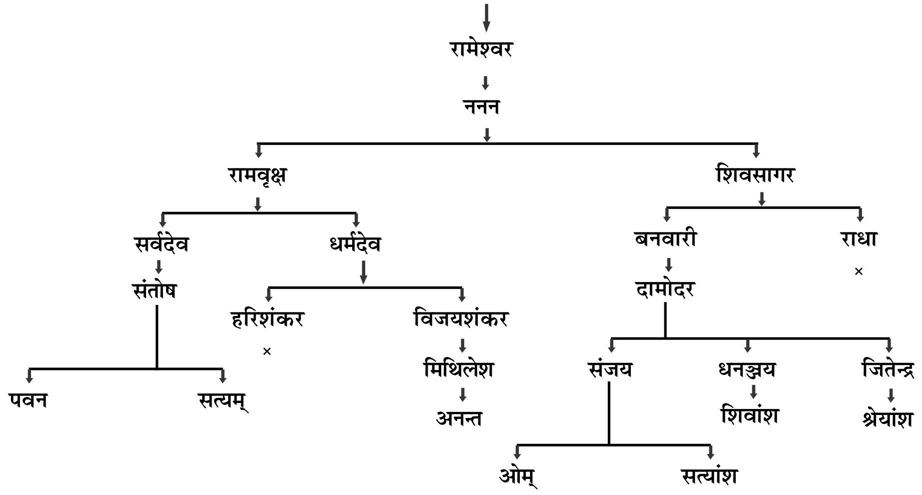

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (१०)

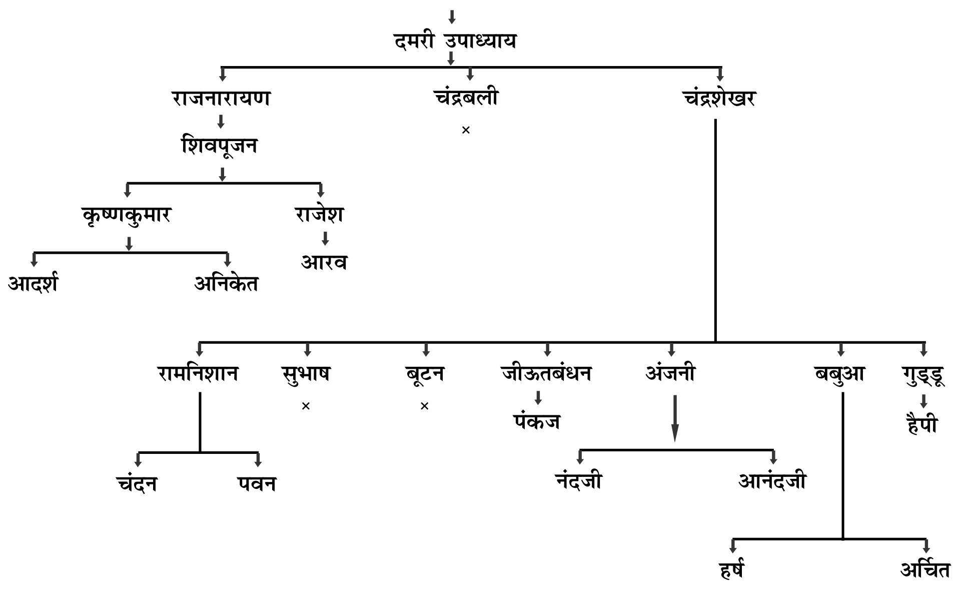

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (११)

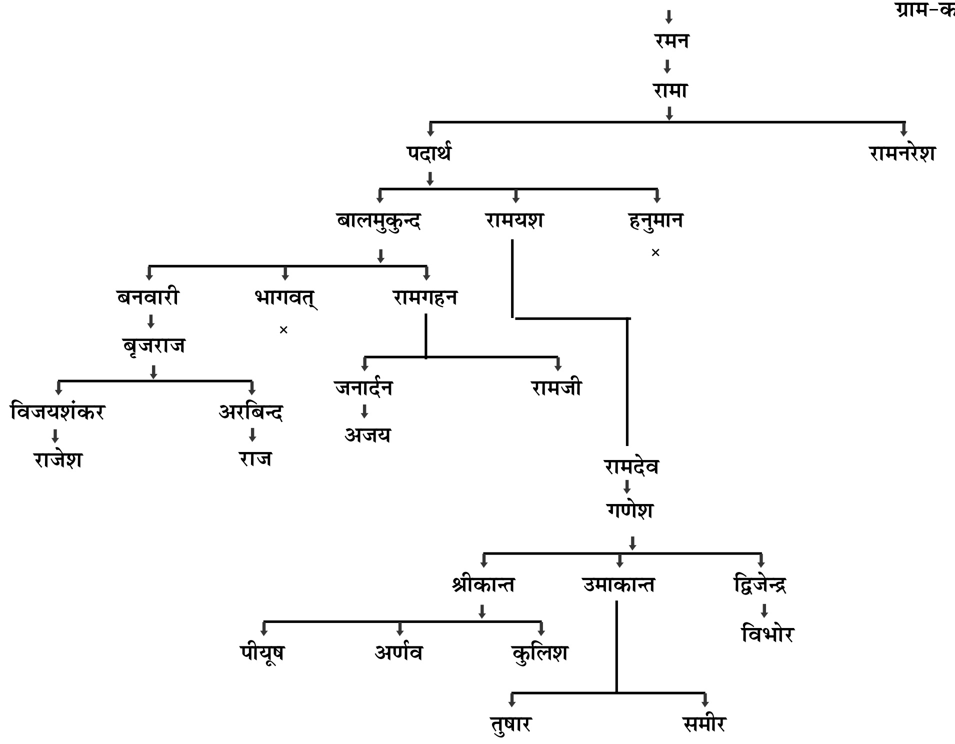

(नाग बाबा)
ग्राम-करहियाँ (१२)

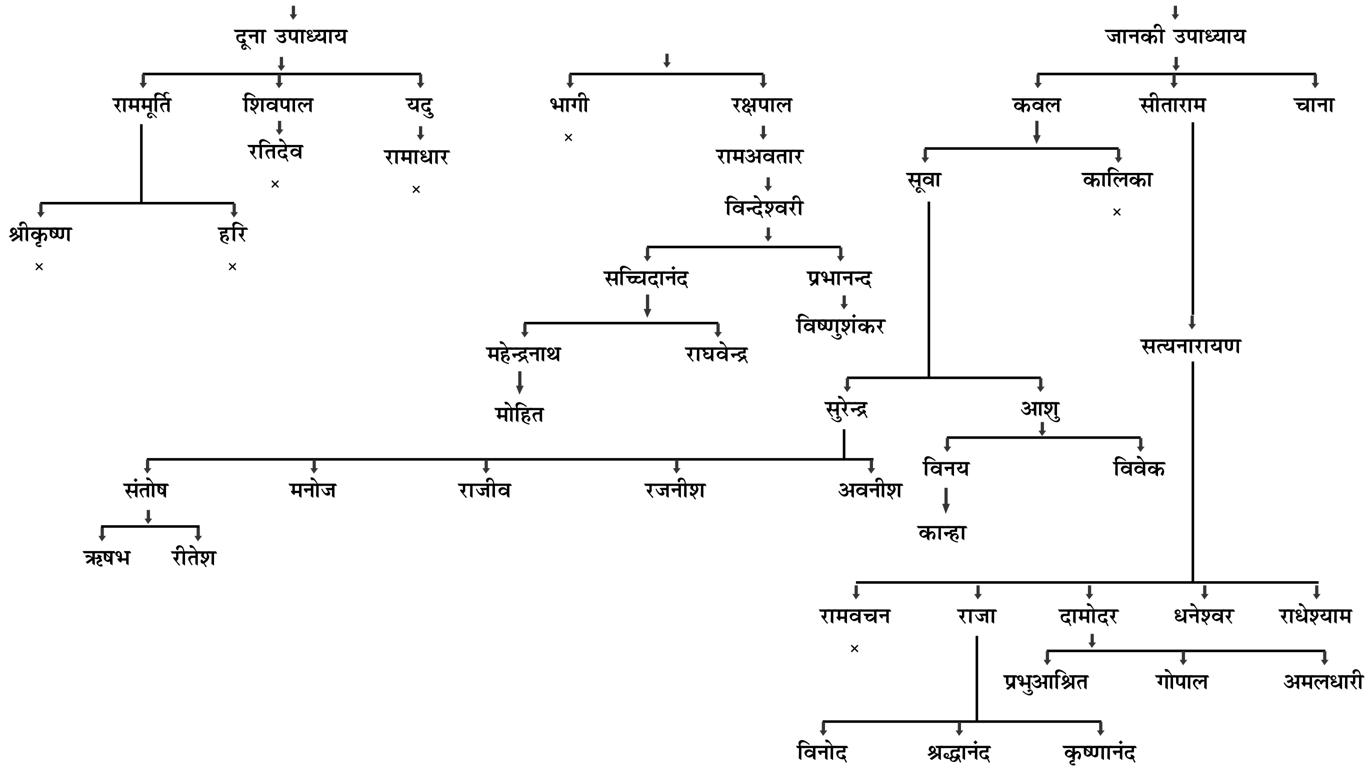

ग्राम-कल्याणपुर, बिहार (१)
(पदुम बाबा)

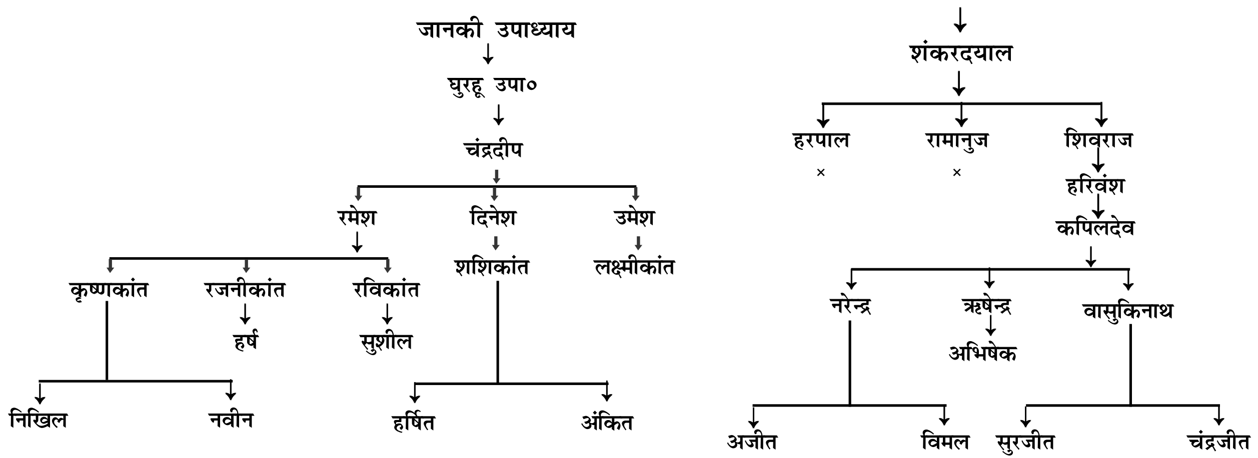

ग्राम-कल्याणपुर, बिहार (४)
(पदुम बाबा)

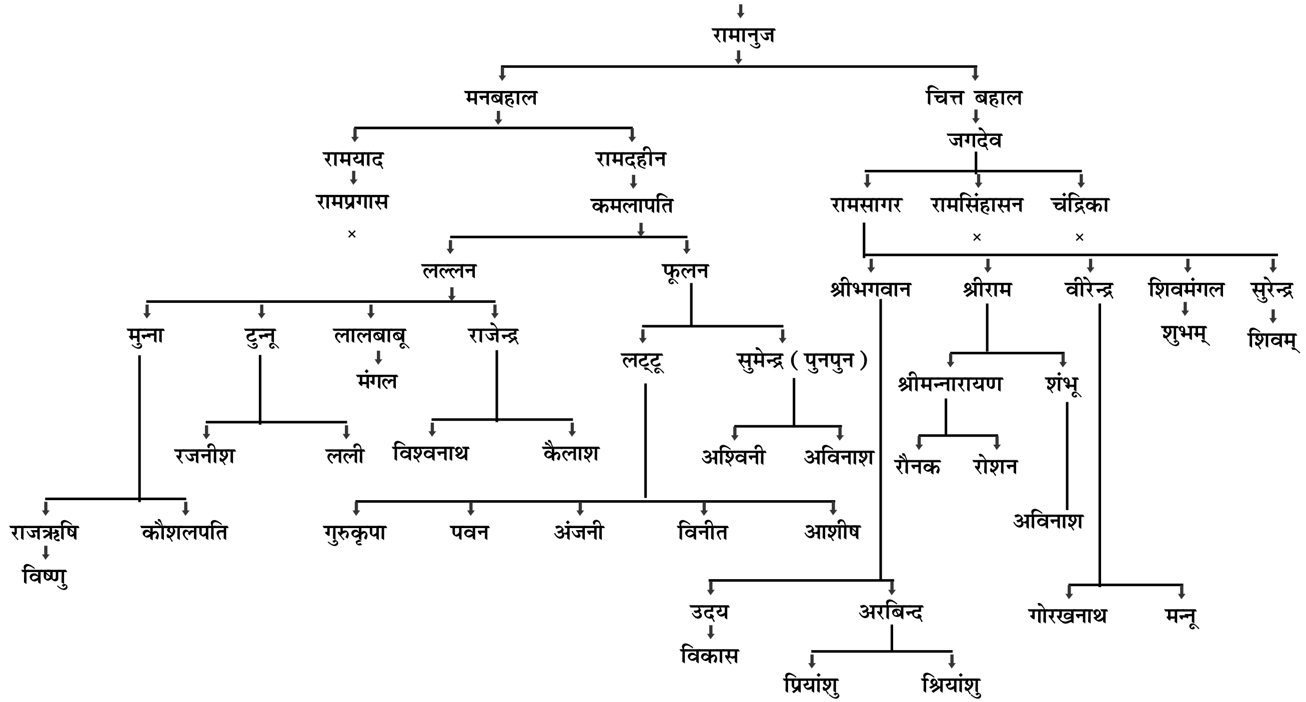

ग्राम-कल्याणपुर, बिहार (५)
(पदुम बाबा)

- गोपालजी
  - रामगृही
    - साधुशरण
      - गोविन्दजी
        - अरबिन्द
      - नर्मदेश्वर
        - सिद्धेश्वर
          - रोहित
        - कमलेश्वर
          - रीतेश
          - अभिषेक
        - विनोद
          - आदित्यराज
  - रामनरेश
    - संतशरण
      - अवधेश
        - गंगेश्वर
          - किशु

- महावीर
  - रामनगीना
    - राजाराम
      - प्रद्युम्न
        - प्रियांशु
    - शिवाधार
      - पवन
        - प्रखर
      - आनंद
      - अंजनी
    - ओमप्रकाश
      - शैलेश

- रामदेनी
  - जगदीश
    - ×

ग्राम-कल्याणपुर, बिहार (२)
(पदुम बाबा)

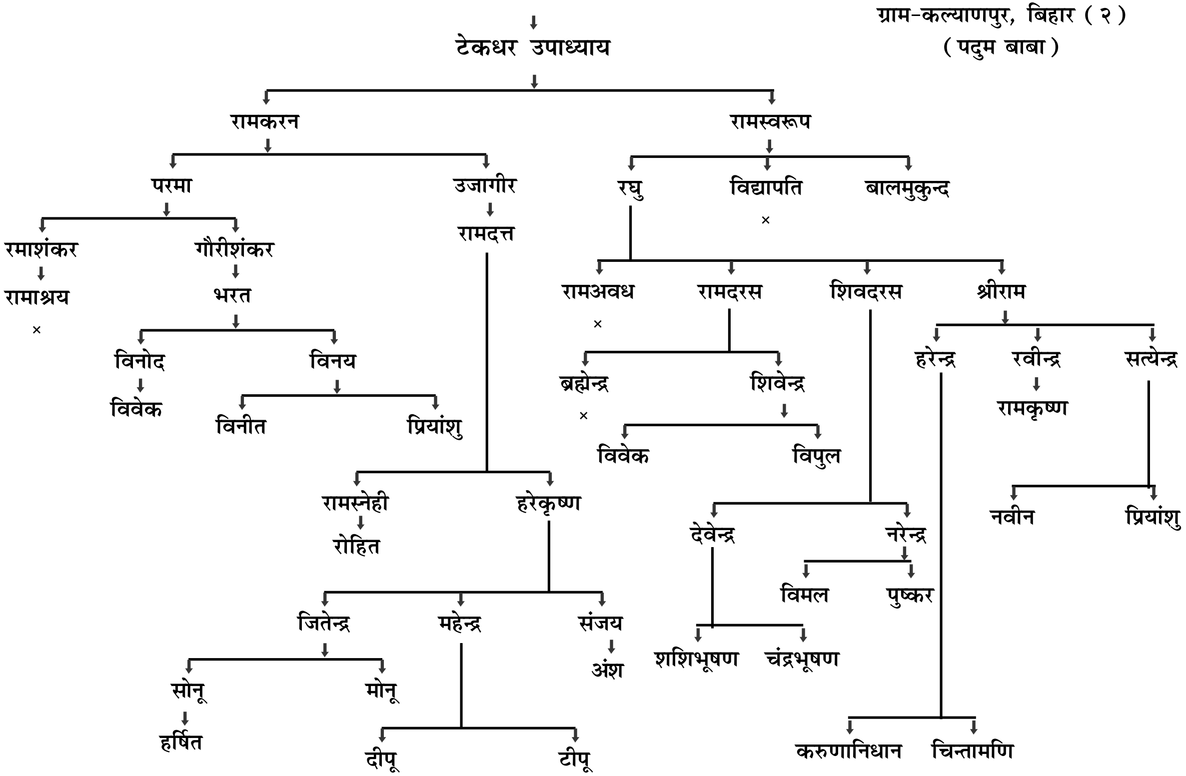

ग्राम-कल्याणपुर, बिहार (३)
(पदुम बाबा)

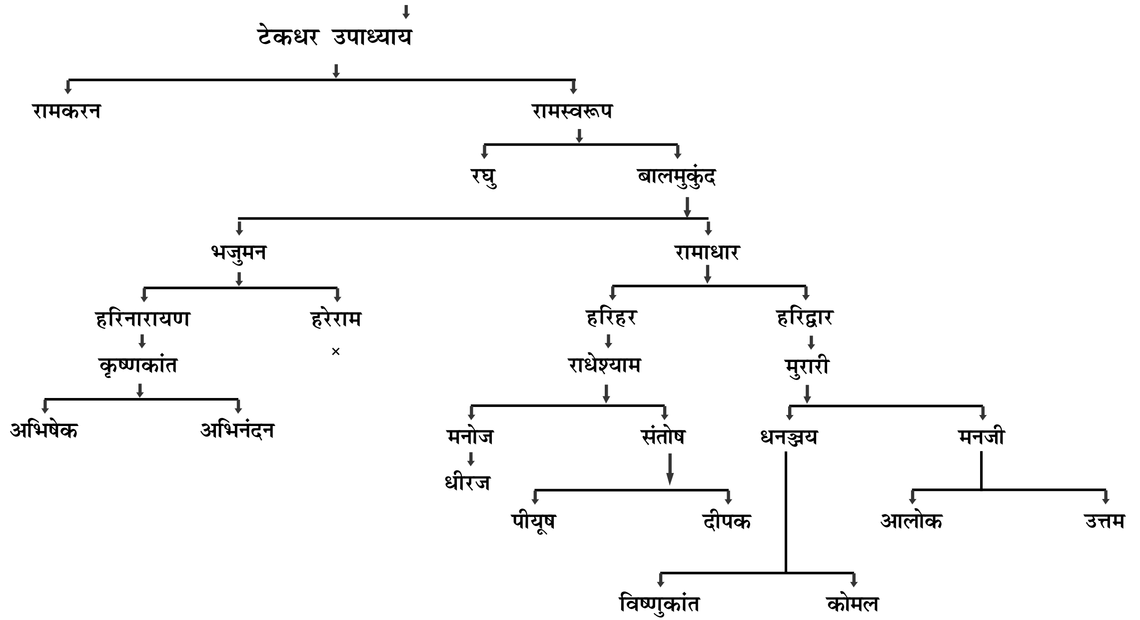

ग्राम-किनरचोला, रोहतास, बिहार

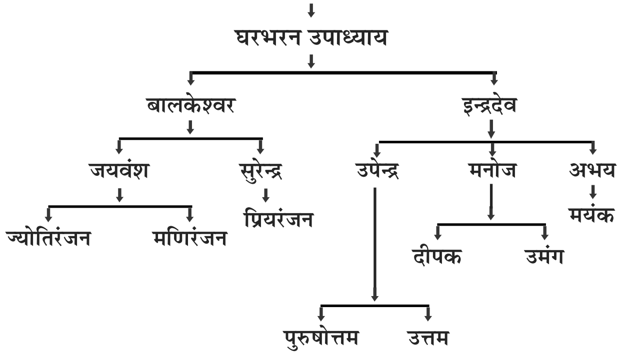

ग्राम-खुदुरा-उ०प्र० (१)
(नागबाबा)

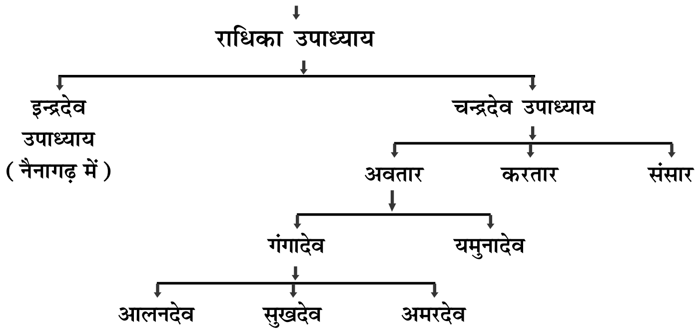

ग्राम-खुदुरा-पथरा (२)
(नागबाबा)

- आलनदेव उपाध्याय
  - बंधन
    - मनबहाल
      - शिवगोविन्द
        - बनवारी
          - रामप्रवेश
            - कृष्ण
            - राकेश
          - सुनील
            - आनंद
        - रामाधार ×
        - सूर्यनाथ
          - कमला
            - रवि
          - तेजनारायण
      - श्यामा ×
    - शिवरतन
      - जानकी
        - रामअवतार
          - केशव
            - दीपक
    - द्वारिका
      - कल्पनाथ
        - जगन्नाथ
          - शम्भूनाथ
            - नमोनारायण
              - निखिलआनन्द
              - नमनानन्द
            - अभयनारायण
          - हृदयनारायण
            - निर्भय
            - आनन्द
              - शौर्य
          - श्रीमन्नारायण
            - शशिभूषण
    - मेघवरन ×
  - निधि
    - गनपति
      - गुलाब
        - कैलाश
          - श्रीनिवास
            - निरंजन
              - कान्हा
          - प्रवीण
            - आदित्य
        - अवधेश
          - आलोक
            - आयुष
          - विनय
            - बासु
            - संकल्प
    - बेचू ×

ग्राम-खुदुरा-पथरा (३)
(नागबाबा)

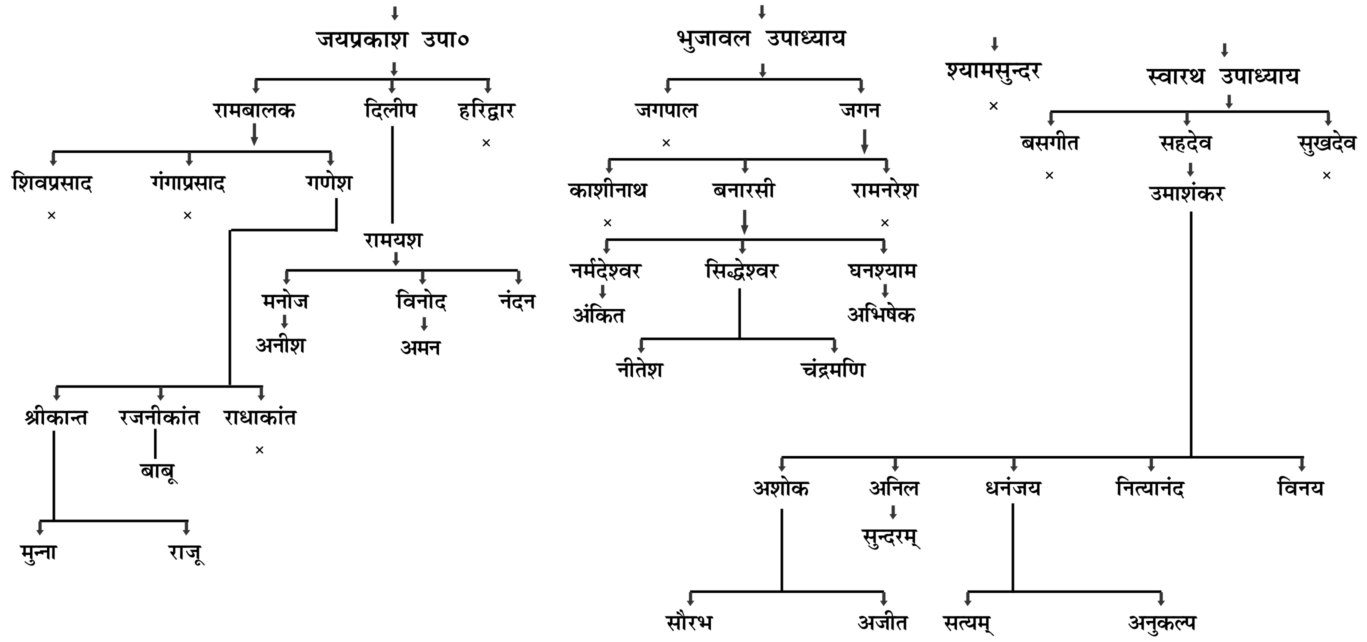

ग्राम-खुदुरा-पथरा (४)
(नागबाबा)

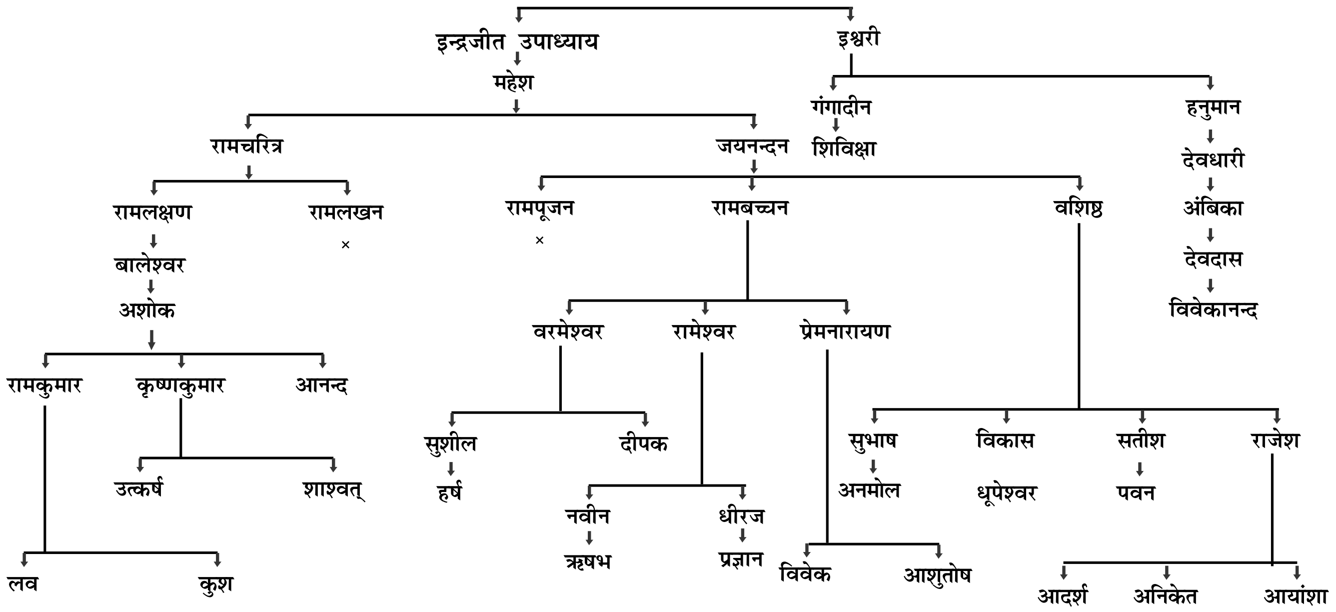

गर्रा-१ (बिहार)
(टीकाकाराम बाबा)

नन्दू उपाध्याय

- राधा उपाध्याय (डुगुरपुरा से)
  - मधुसूदन
    - मंगलचरण
      - अरुण कुमार
        - बाबू
      - सुनील
        - मोहित
      - पवन
        - निखिल
  - बलिराम
    - सिद्धनाथ
      - विजयशंकर
        - आशुतोष
        - विष्णुकांत
        - विधिकांत
    - अवधेश
      - धनजी
      - राहुल
      - अभिषेक
  - सूर्यदेव ×
  - चन्द्रदेव ×
  - बबुआन
    - विवेकानंद
      - विनयरंजन
        - आदित्य
      - बृजभूषण
    - श्रीनाथ ×
    - जितेन्द्र
      - इन्द्रजीत
    - जयप्रकाश
      - शिवम्
- श्यामरथी (डुगुरपुरा में)
  - विभीषण
    - रामदुलार
      - चुन्नू
    - रामप्रवेश
      - राकेश
      - शुभम
      - गोलू
- ब्रह्मदेव (डुगुरपुरा में)
  - उमाशंकर
    - प्रमोद
      - विष्णु

गर्रा-२ (बिहार)
(टीकाकाराम बाबा)

- **वासुदेव उपाध्याय**
  - रामसहाय
    - देवराज
      - महादेव
        - सीताराम
          - कपिलदेव (गहमर से)
            - ताड़केश्वर
              - रविशंकर
                - कृष्णानन्द
              - रजनीकांत
                - शिवम्
            - मिथिलेश
              - दिवेश
            - अवधेश (भोला)
              - नीरज
              - धीरज
            - गगन
              - अंकित
              - अंकुर
          - कैलाश
          - दीनानाथ
          - रामानाथ
      - सहदेव ×
      - रामदास

कुशल बाबा (गहमर) (१)

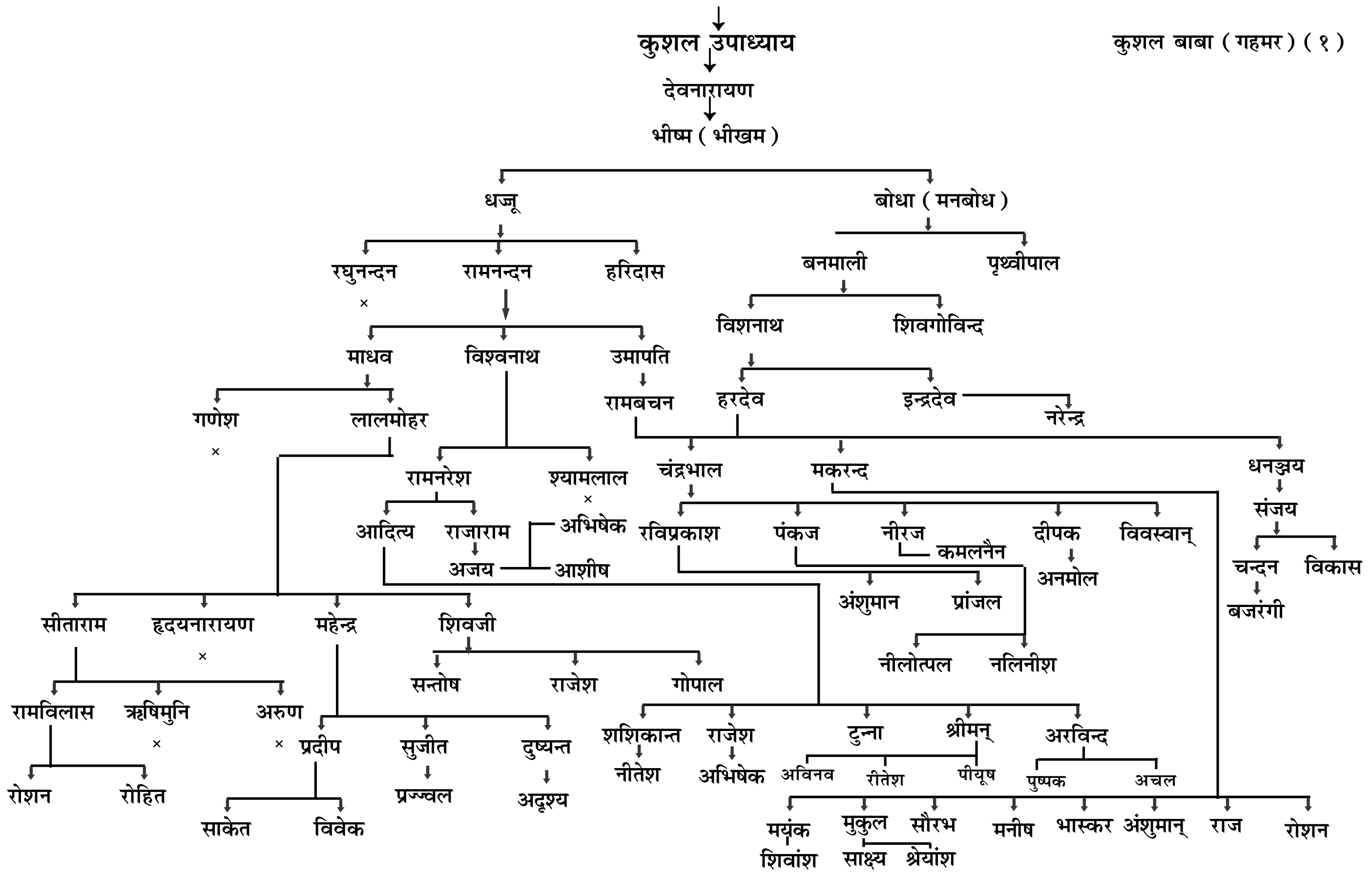
कुशल उपाध्याय
देवनारायण
भीष्म (भीखम)
धज्जू
बोधा (मनबोध)
रघुनन्दन
रामनन्दन
हरिदास
बनमाली
पृथ्वीपाल
विशनाथ
शिवगोविन्द
माधव
विश्वनाथ
उमापति
हरदेव
इन्द्रदेव
गणेश
लालमोहर
रामबचन
नरेन्द्र
रामनरेश
श्यामलाल
चंद्रभाल
मकरन्द
धनञ्जय
आदित्य
राजाराम
अभिषेक
अजय
आशीष
रविप्रकाश
पंकज
नीरज
कमलनैन
दीपक
विवस्वान्
अनमोल
संजय
चन्दन
विकास
बजरंगी
अंशुमान
प्रांजल
सीताराम
हृदयनारायण
महेन्द्र
शिवजी
नीलोत्पल
नलिनीश
सन्तोष
राजेश
गोपाल
रामविलास
ऋषिमुनि
अरुण
प्रदीप
सुजीत
दुष्यन्त
शशिकान्त
राजेश
टुन्ना
श्रीमन्
अरविन्द
नीतेश
अभिषेक
अविनव
रीतेश
पीयूष
पुष्पक
अचल
रोशन
रोहित
प्रज्ज्वल
अदृश्य
साकेत
विवेक
मयंक
शिवांश
मुकुल
सौरभ
साक्ष्य
श्रेयांश
मनीष
भास्कर
अंशुमान्
राज
रोशन

कुशल बाबा (गहमर) २

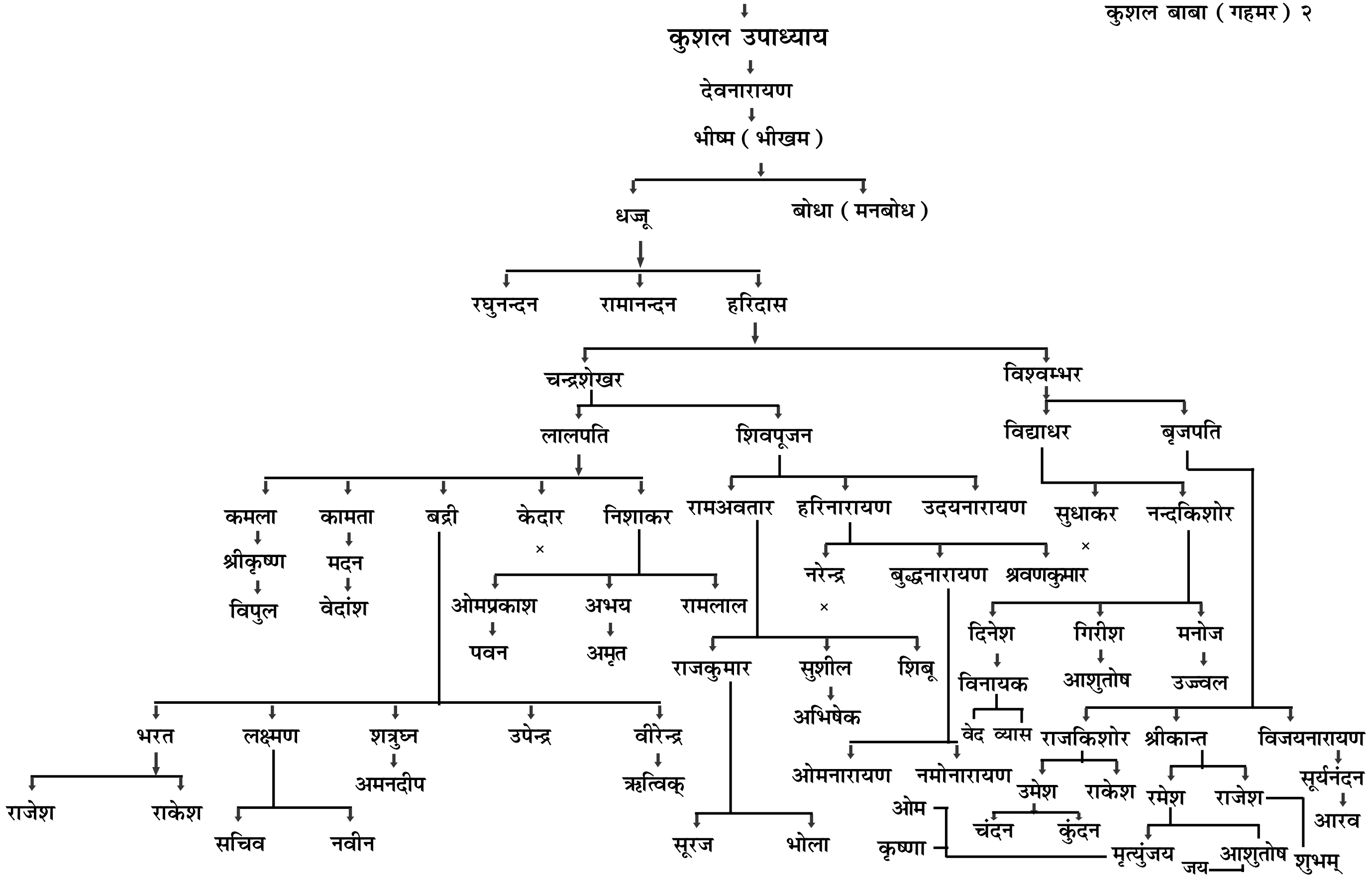
कुशल उपाध्याय
देवनारायण
भीष्म (भीखम)
धज्जू
बोधा (मनबोध)
रघुनन्दन
रामानन्दन
हरिदास
चन्द्रशेखर
विश्वम्भर
लालपति
शिवपूजन
विद्याधर
बृजपति
कमला
कामता
बद्री
केदार
निशाकर
रामअवतार
हरिनारायण
उदयनारायण
सुधाकर
नन्दकिशोर
श्रीकृष्ण
विपुल
मदन
वेदांश
×
ओमप्रकाश
अभय
रामलाल
पवन
अमृत
नरेन्द्र
बुद्धनारायण
श्रवणकुमार
×
×
राजकुमार
सुशील
शिबू
अभिषेक
दिनेश
गिरीश
मनोज
विनायक
आशुतोष
उज्ज्वल
वेद
व्यास
भरत
लक्ष्मण
शत्रुघ्न
उपेन्द्र
वीरेन्द्र
अमनदीप
ऋत्विक्
राजेश
राकेश
सचिव
नवीन
सूरज
भोला
ओमनारायण
नमोनारायण
ओम
कृष्णा
राजकिशोर
श्रीकान्त
विजयनारायण
उमेश
राकेश
रमेश
राजेश
सूर्यनंदन
आरव
चंदन
कुंदन
मृत्युंजय
जय
आशुतोष
शुभम्

खेदूराम बाबा, ग्राम-गहमर (१)

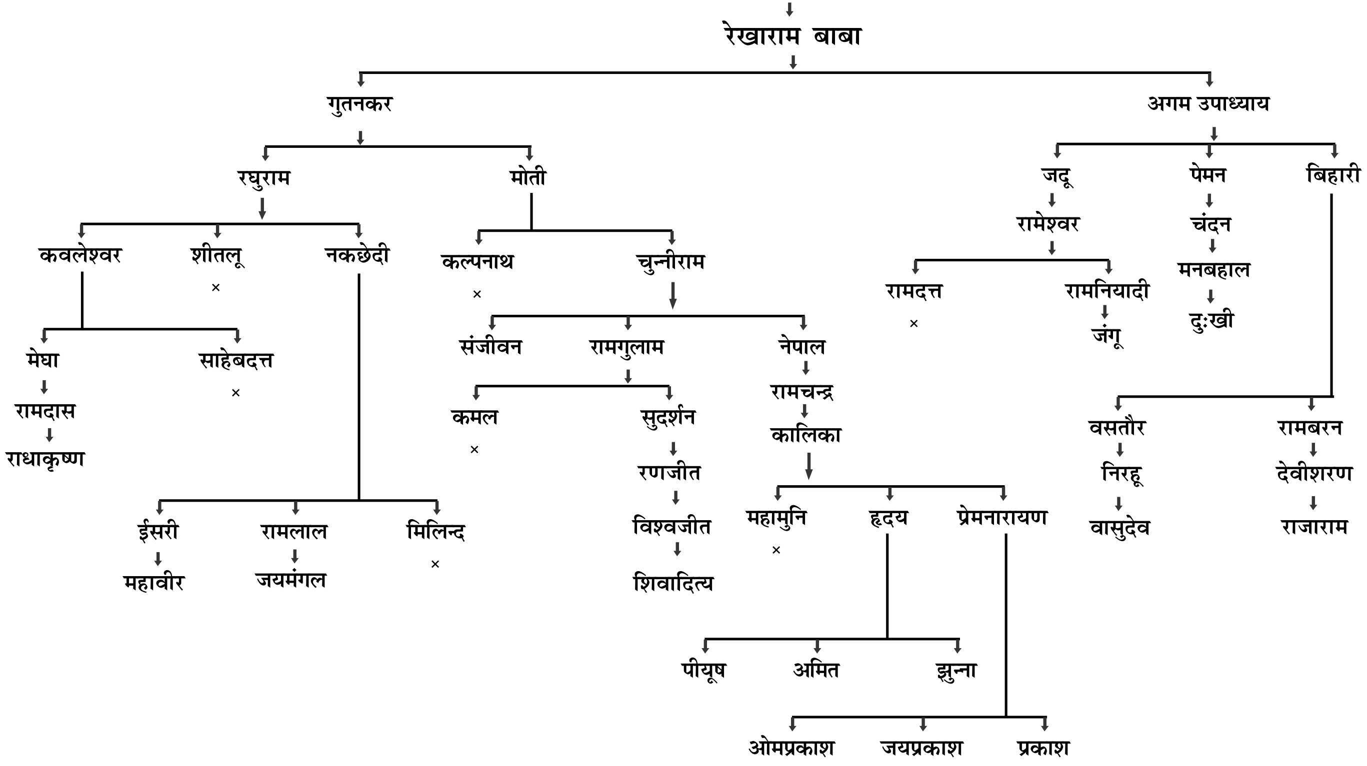

खेदूराम बाबा, ग्राम-गहमर (२)

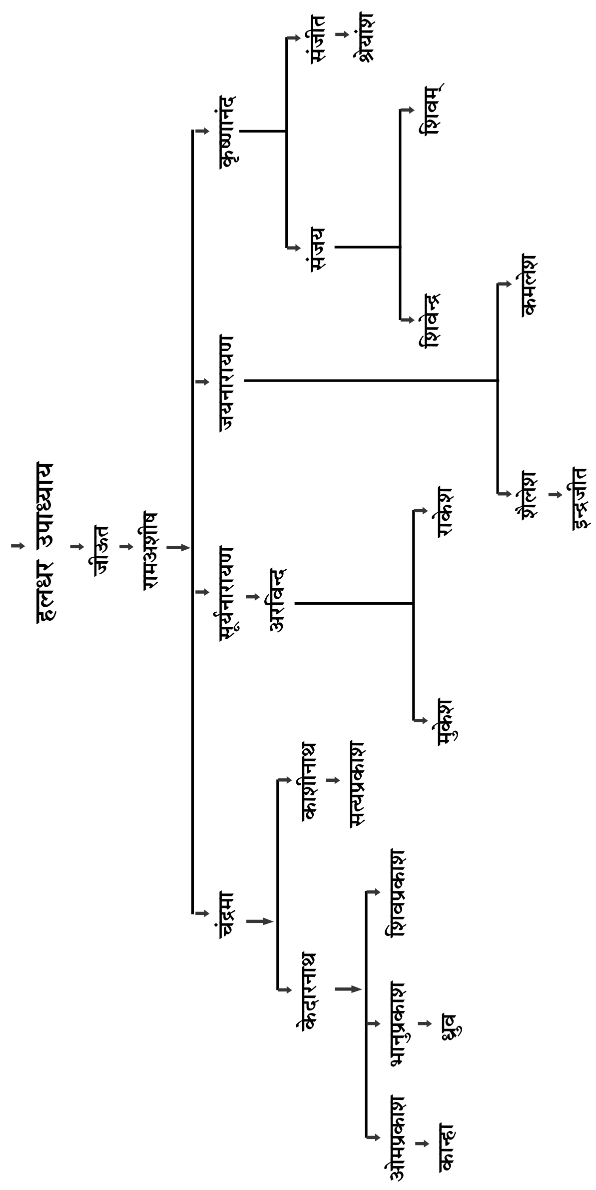

खेदूराम बाबा, ग्राम-गहमर (३)

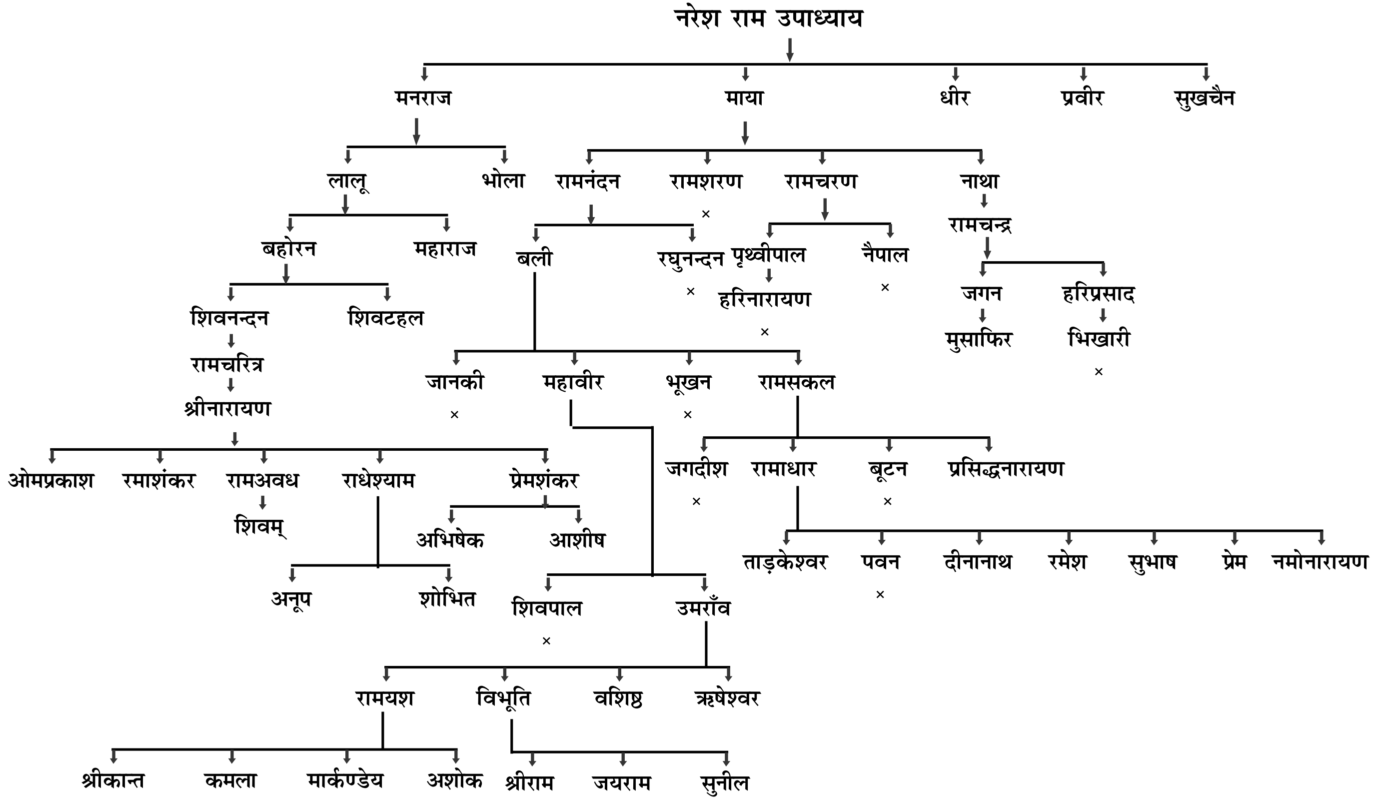

खेदूराम बाबा, ग्राम-गहमर (४)

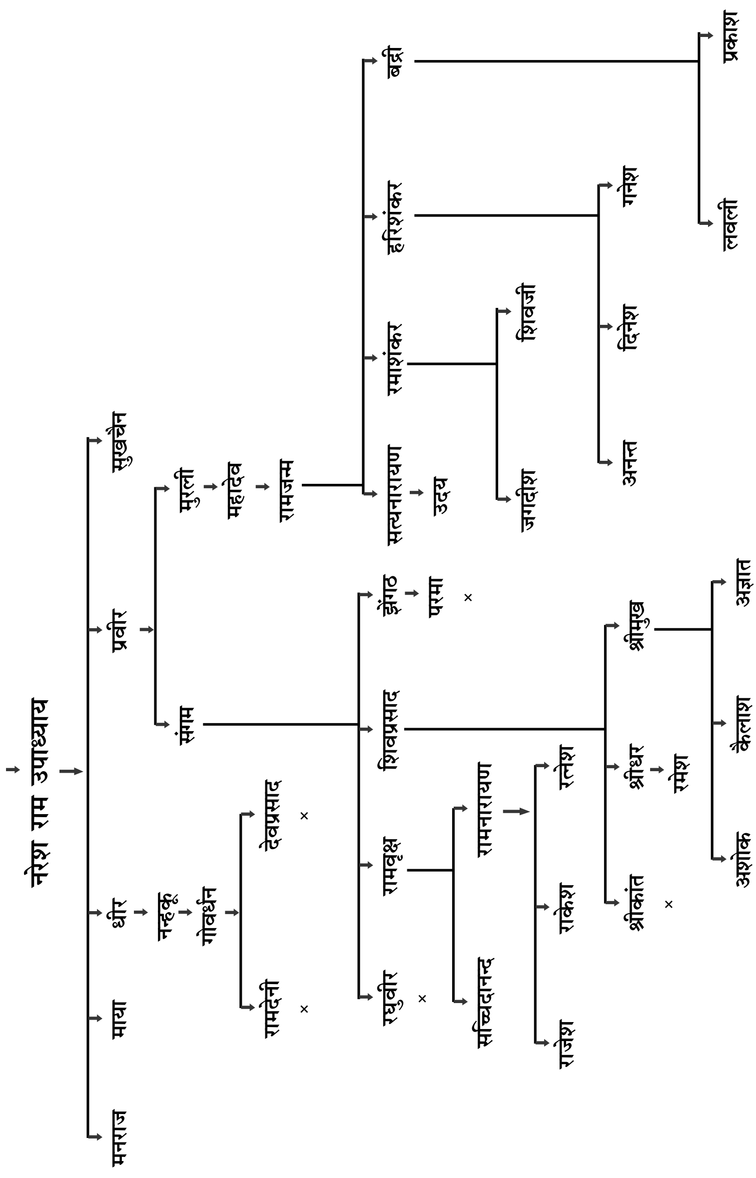

खेदूराम बाबा, ग्राम-गहमर (५)

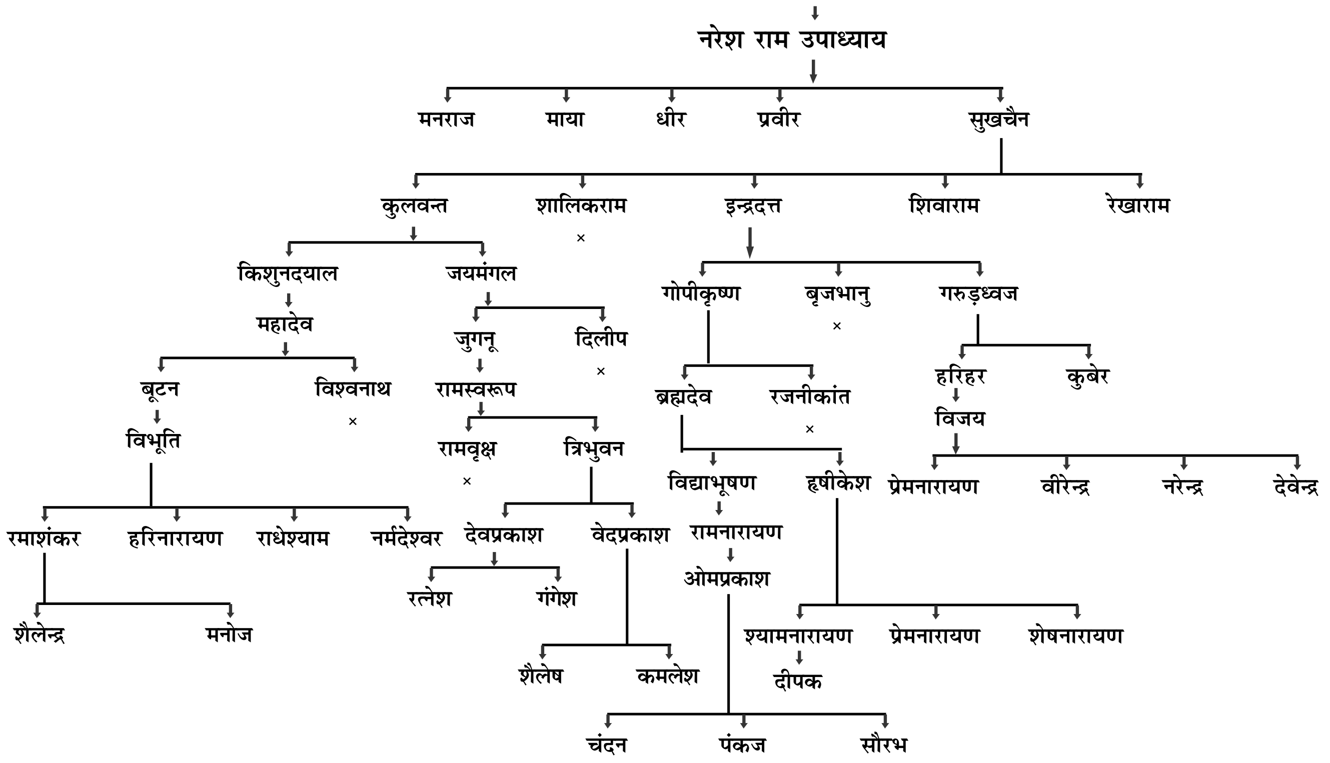

खेदूराम उपाध्याय (गहमर) (६)

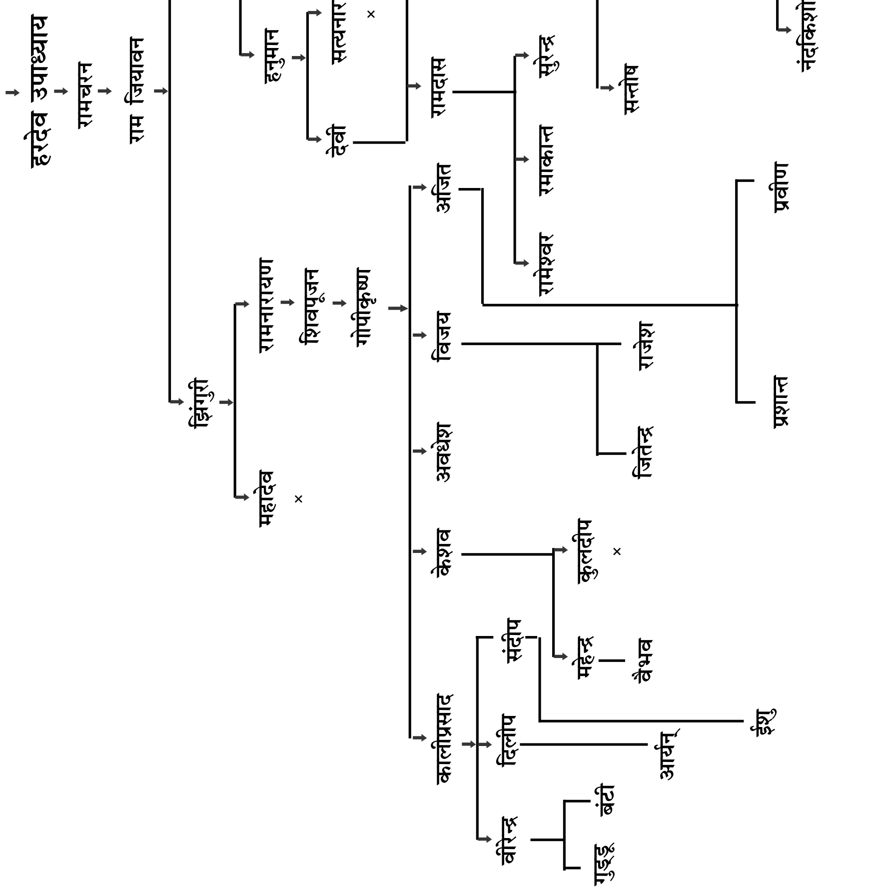

खेदूराम बाबा, ग्राम-गहमर (७)

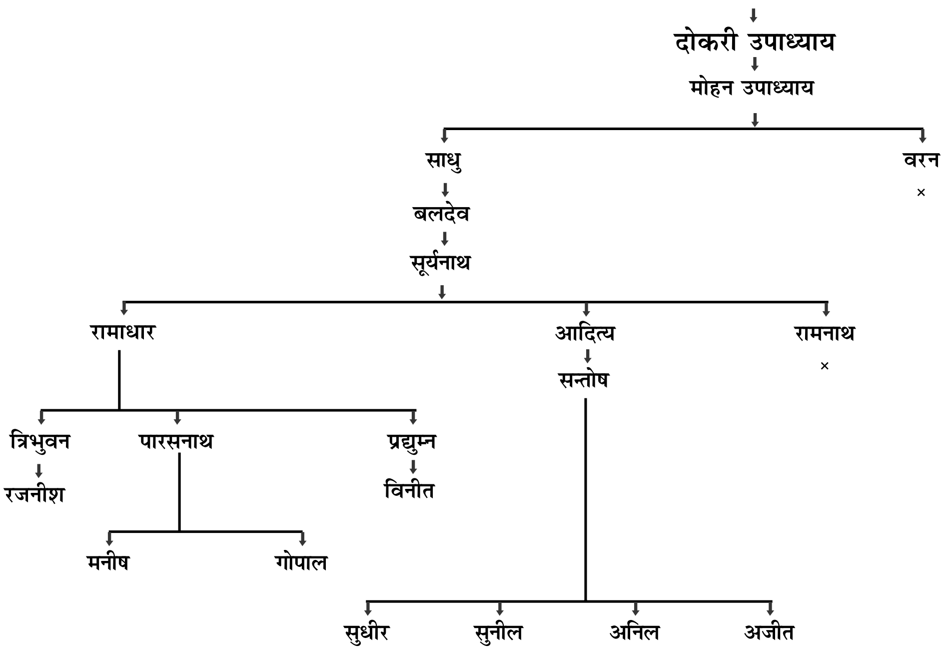

खेदूराम बाबा (ग्राम-गहमर ८)

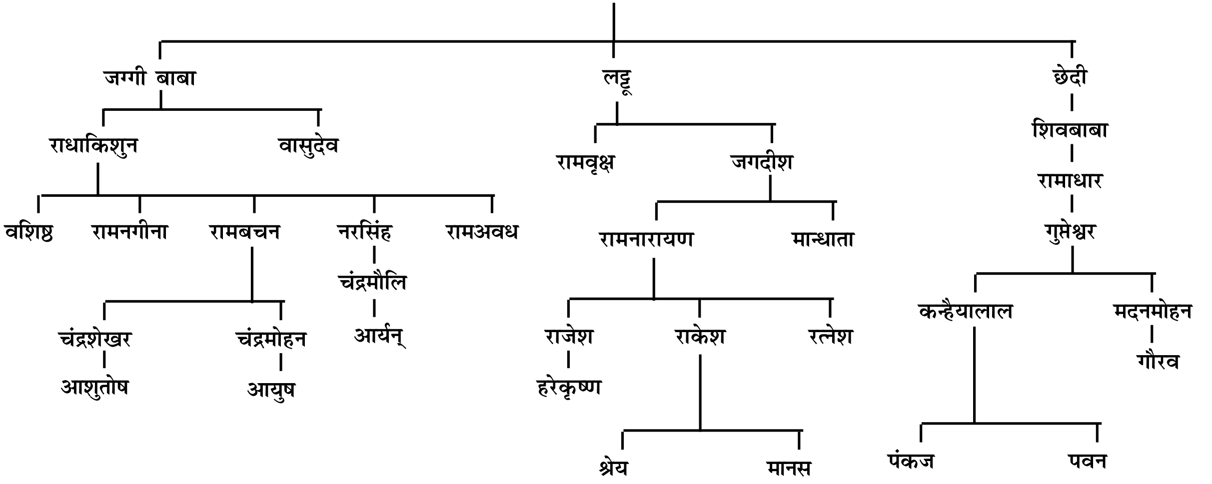

गहमर (खेदूराम बाबा ९)

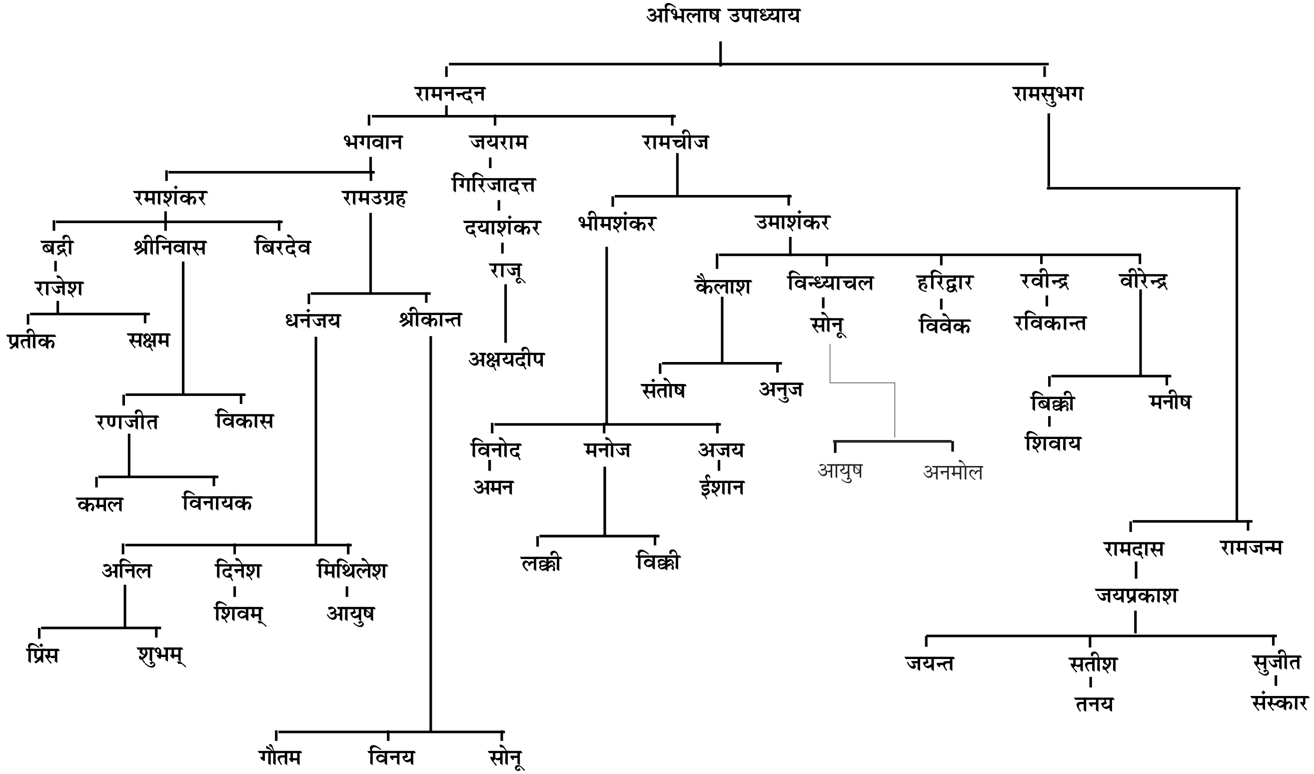

(गंगाराम बाबा) (१) गहमर, गाजीपुर

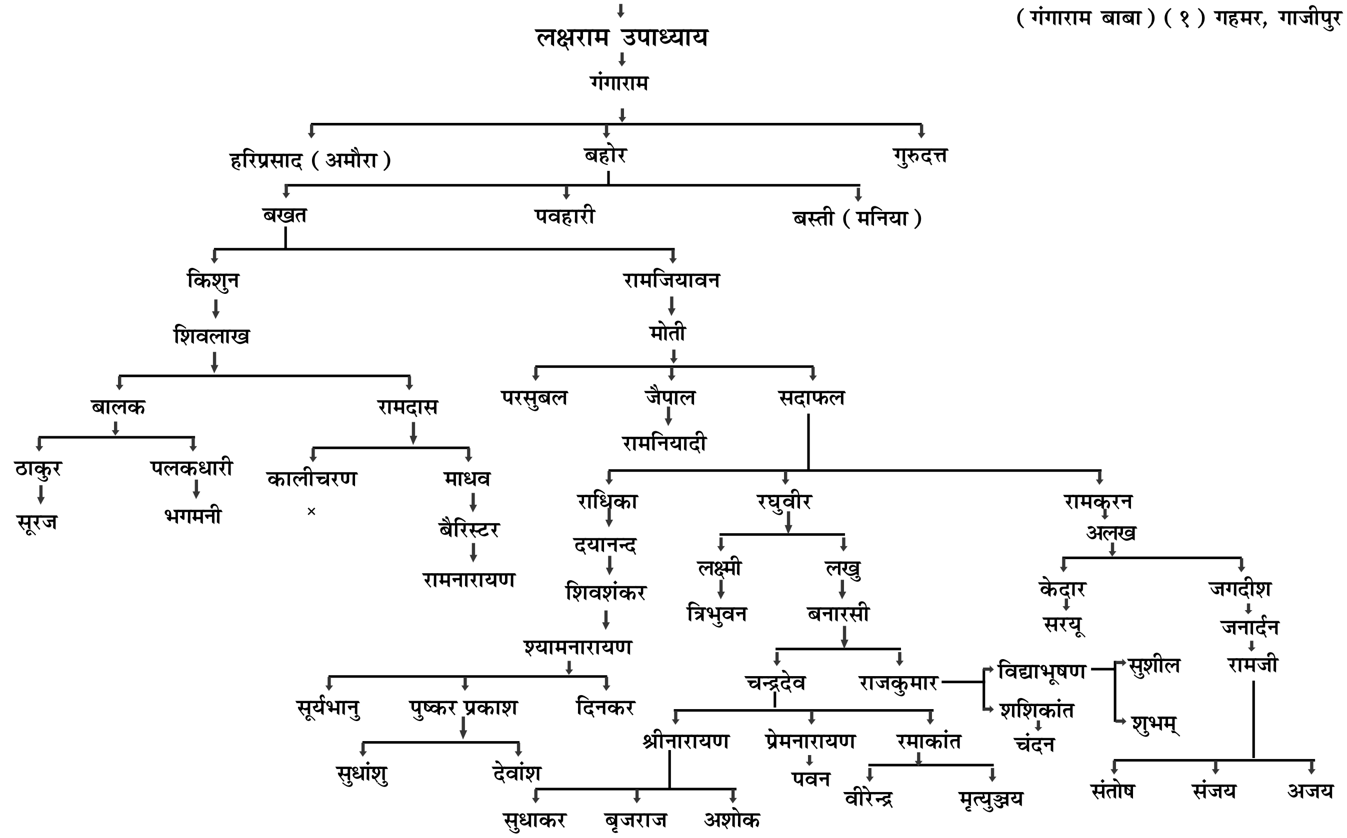

गंगाराम बाबा (२)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

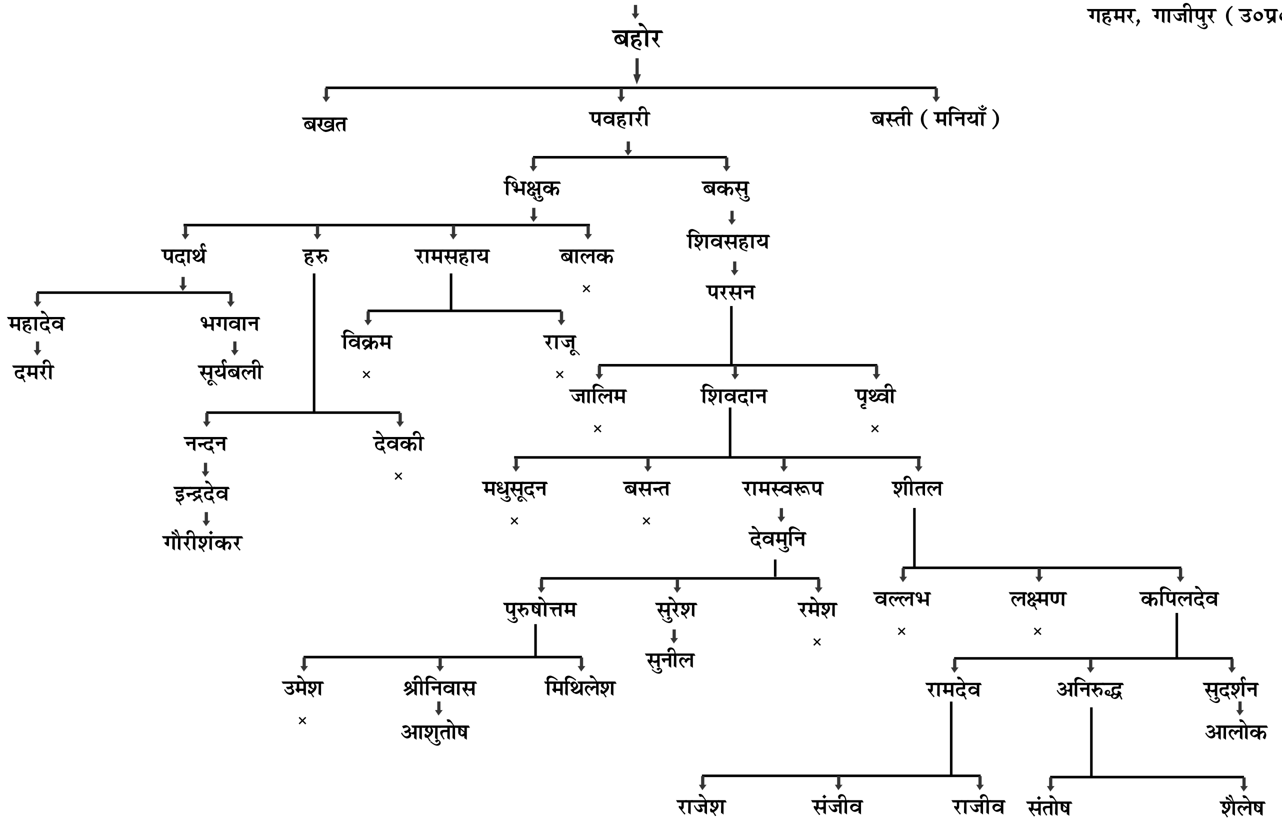

गंगाराम बाबा (३)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

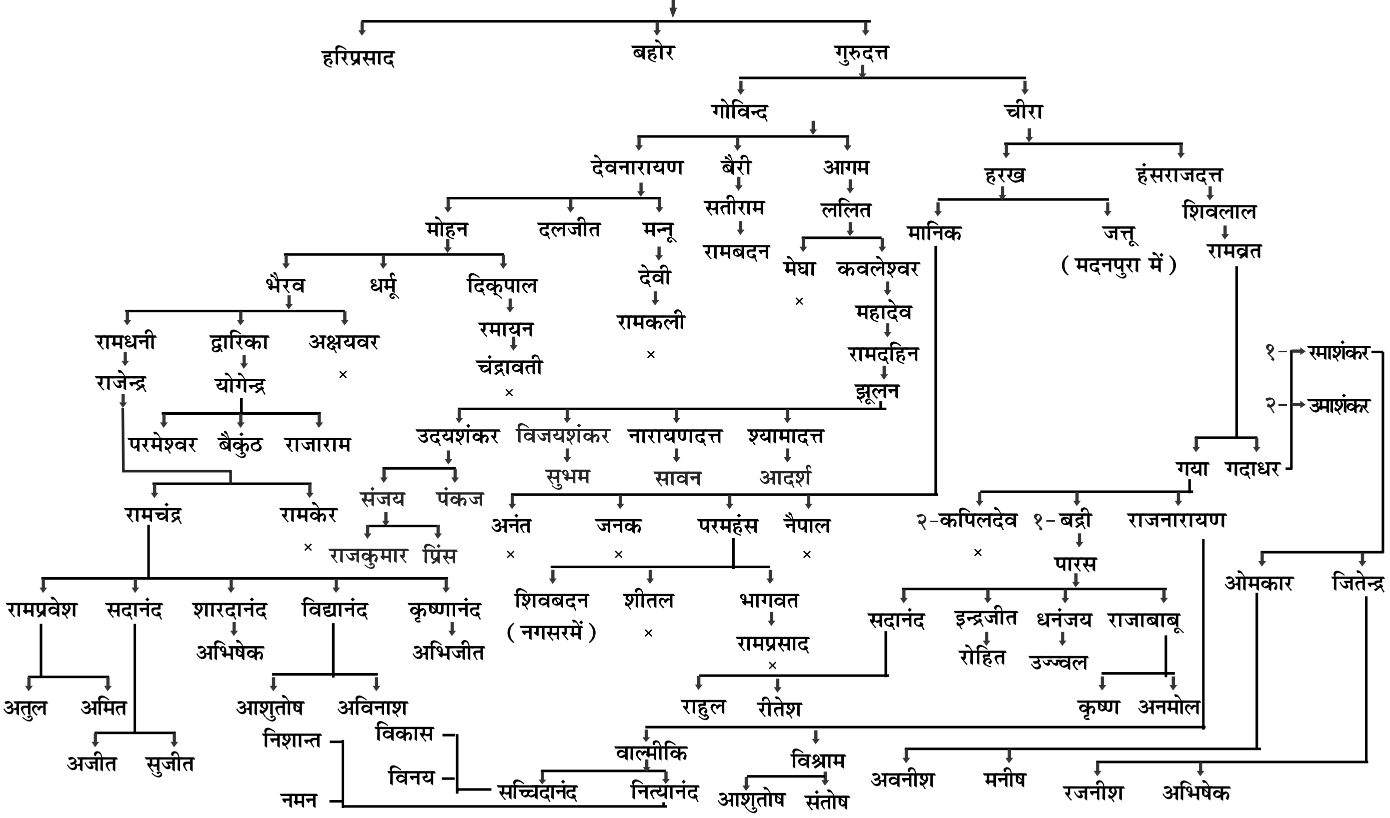

जियावन बाबा (१)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

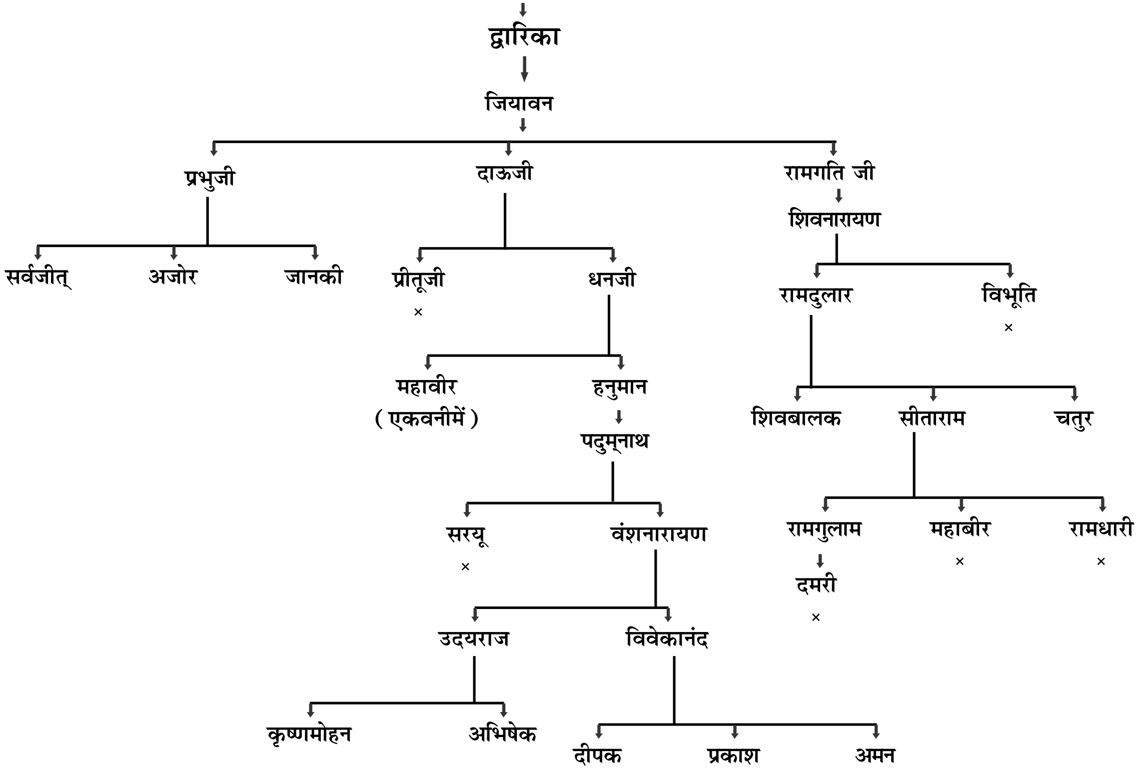

जियावन बाबा (२)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

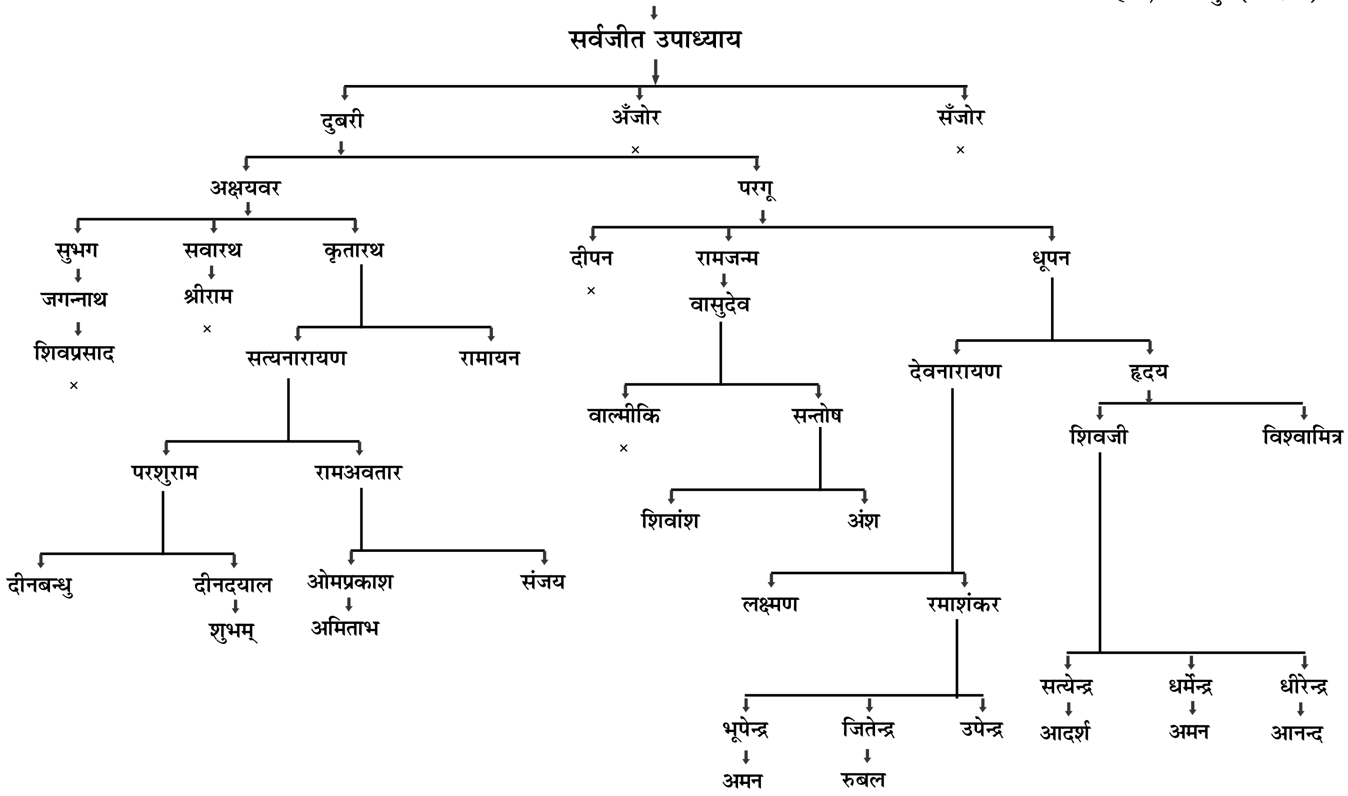

जियावन बाबा (३)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

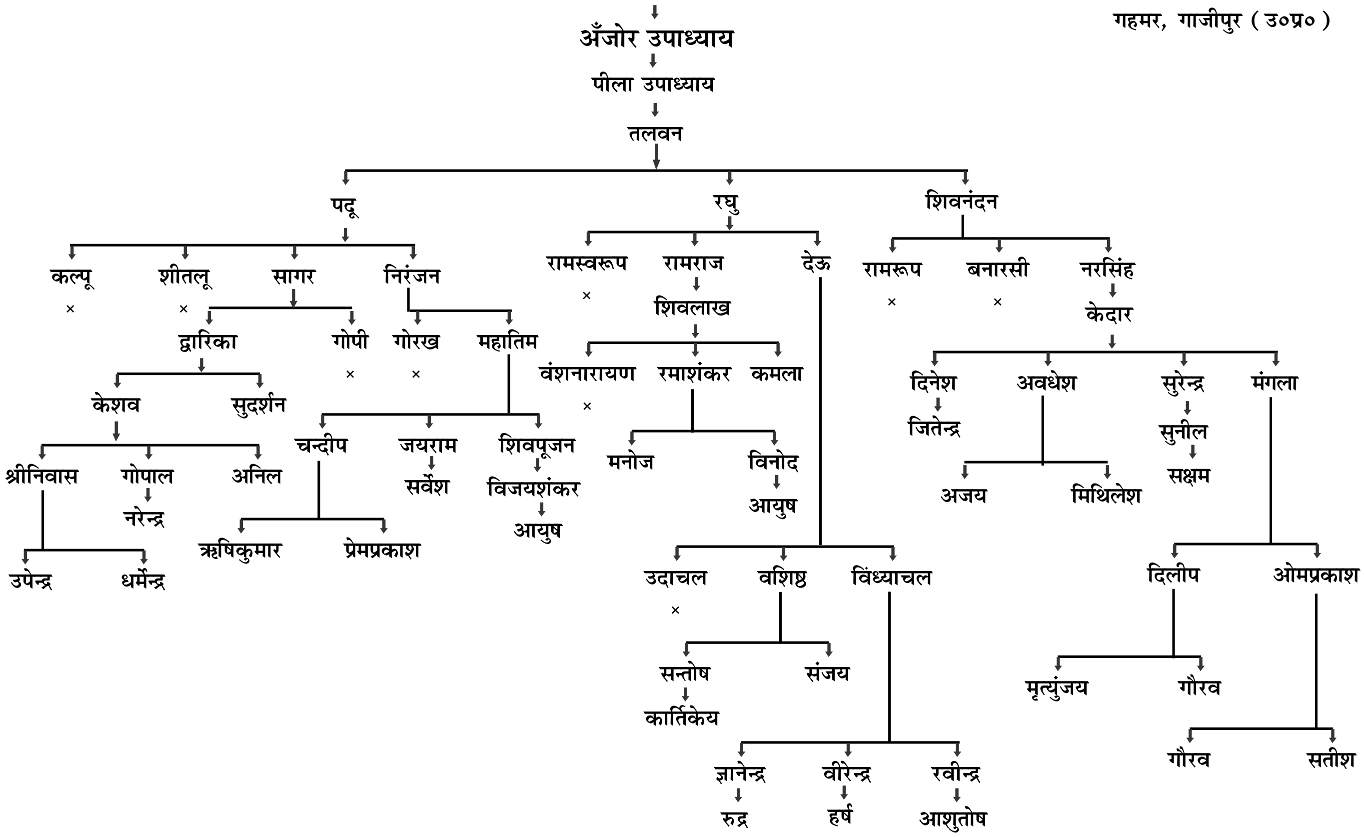

जियावन बाबा (४)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

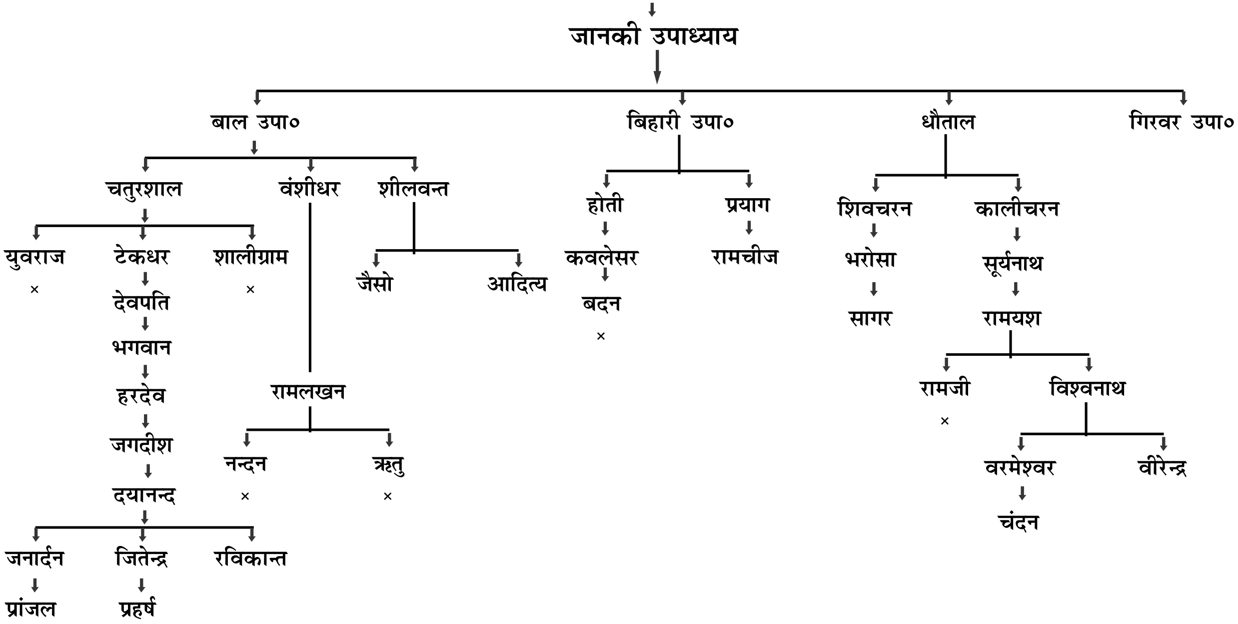

जियावन बाबा (५)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

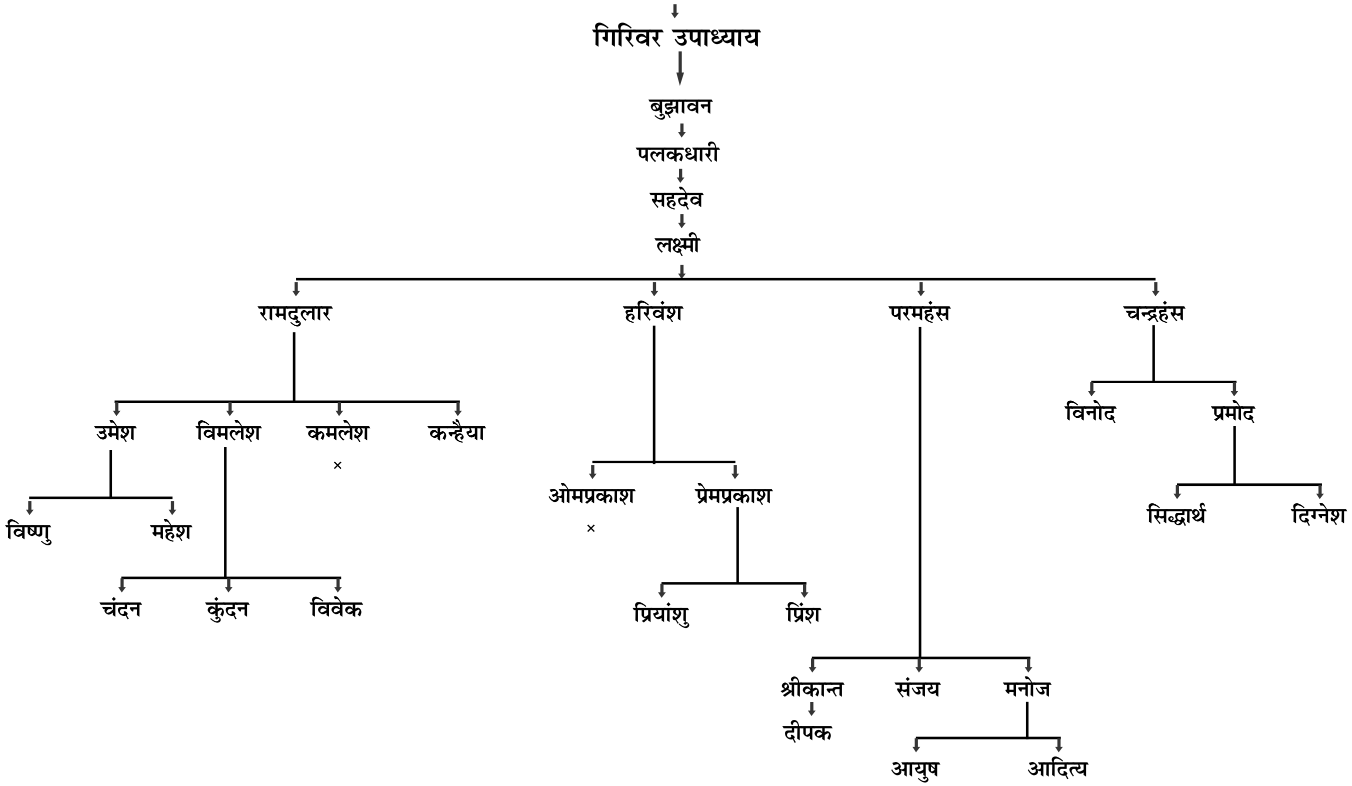

जियावन बाबा (६)
गहमर, गाजीपुर (उ०प्र०)

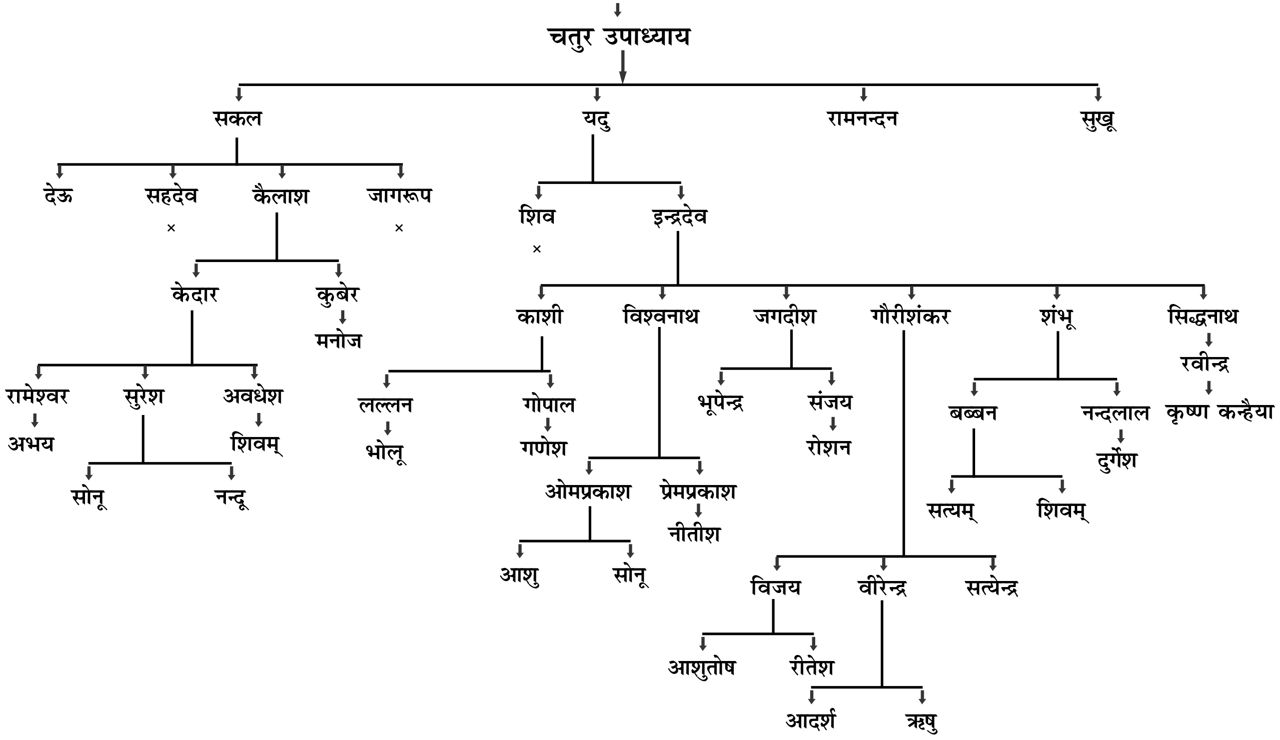

गहमर

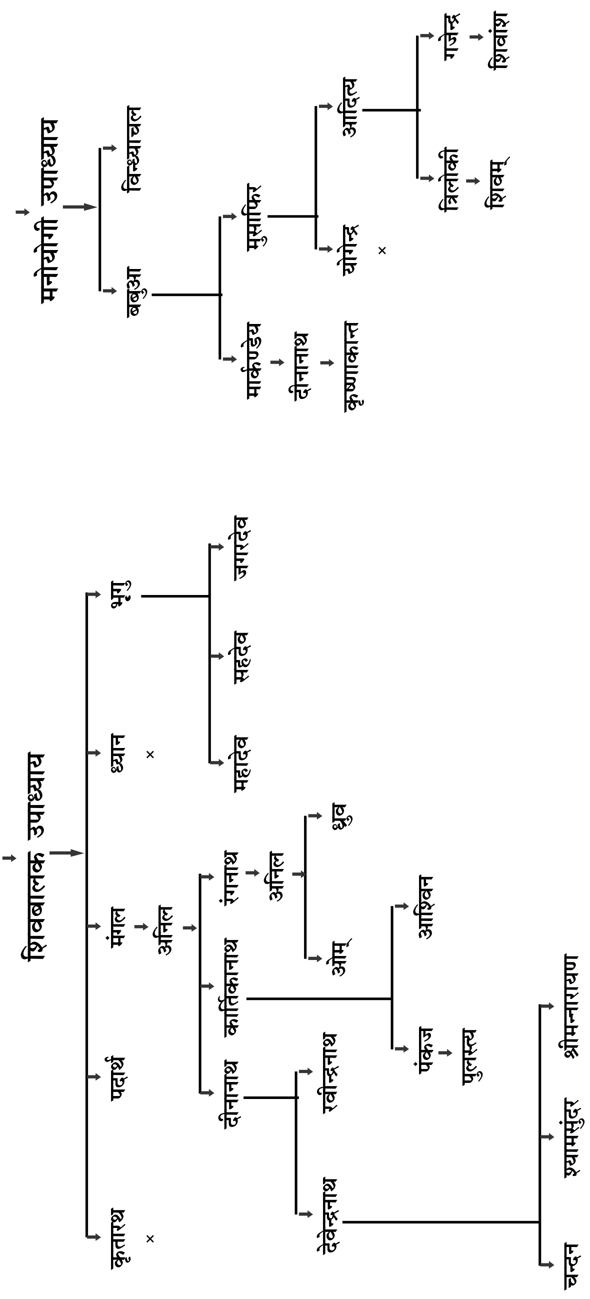
मनोयोगी उपाध्याय
बबुआ
विन्ध्याचल
मार्कण्डेय
दीनानाथ
कृष्णाकान्त
मुसाफिर
योगेन्द्र
आदित्य
त्रिलोकी
शिवम्
गजेन्द्र
शिवांश
शिवबालक उपाध्याय
कृतारथ
पदार्थ
मंगल
अनिल
ध्यान
भृगु
दीनानाथ
कार्तिकानाथ
रंगनाथ
अनिल
ओम्
ध्रुव
रवीन्द्रनाथ
देवेन्द्रनाथ
पंकज
पुलस्त्य
आश्विन
चन्दन
श्यामसुंदर
श्रीमन्नारायण
महादेव
सहदेव
जगदेव

गहमर (गाजीपुर)

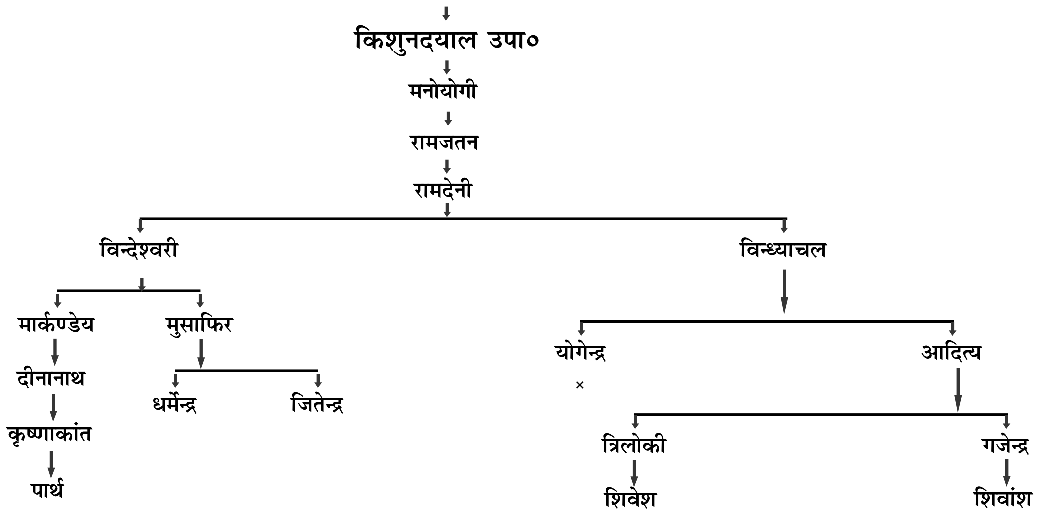
किशुनदयाल उपा०
मनोयोगी
रामजतन
रामदेनी
विन्देश्वरी
विन्ध्याचल
मार्कण्डेय
मुसाफिर
दीनानाथ
धर्मेन्द्र
जितेन्द्र
कृष्णाकांत
पार्थ
योगेन्द्र
×
आदित्य
त्रिलोकी
गजेन्द्र
शिवेश
शिवांश

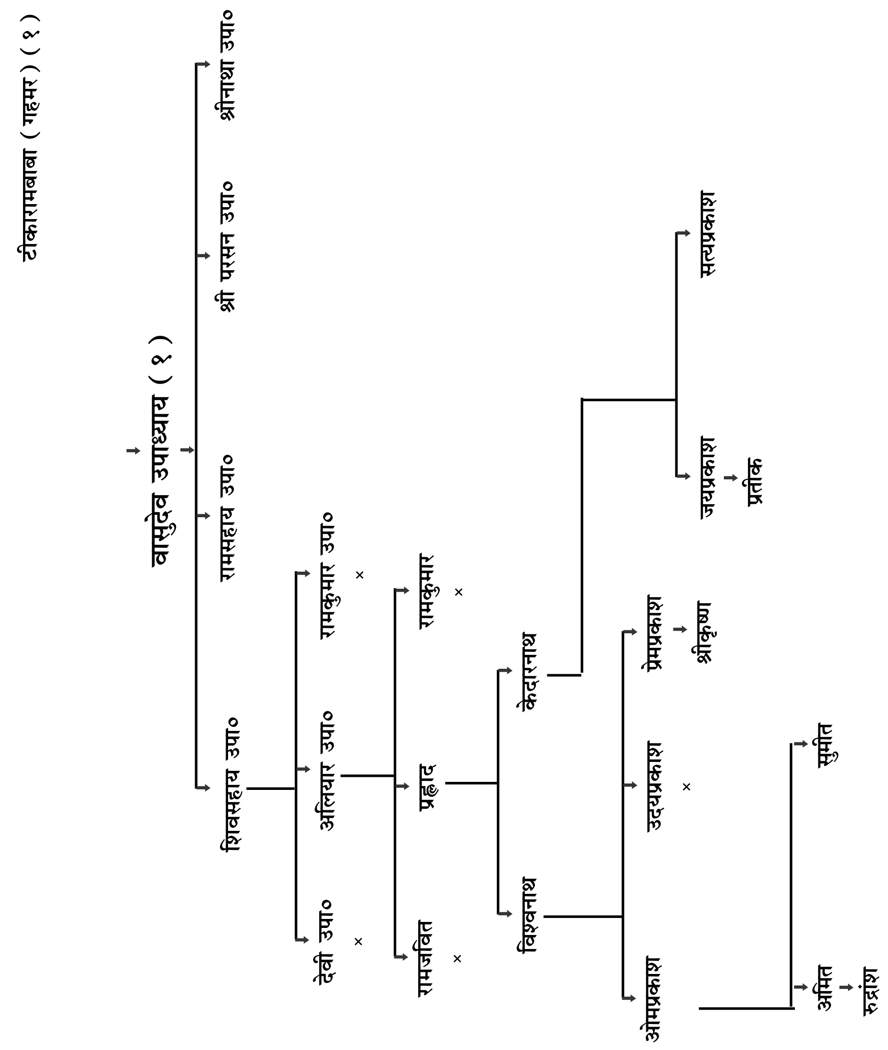
टीकारामबाबा (गहमर) (१)
वासुदेव उपाध्याय (१)
शिवसहाय उपा०
रामसहाय उपा०
श्री परसन उपा०
श्रीनाथा उपा०
देवी उपा०
अलियार उपा०
रामकुमार उपा०
रामजवित
प्रह्लाद
रामकुमार
विश्वनाथ
केदारनाथ
ओमप्रकाश
उदयप्रकाश
प्रेमप्रकाश
श्रीकृष्ण
जयप्रकाश
प्रतीक
सत्यप्रकाश
अमित
रुद्रांश
सुमीत

टीकारामबाबा (गहमर) (२)

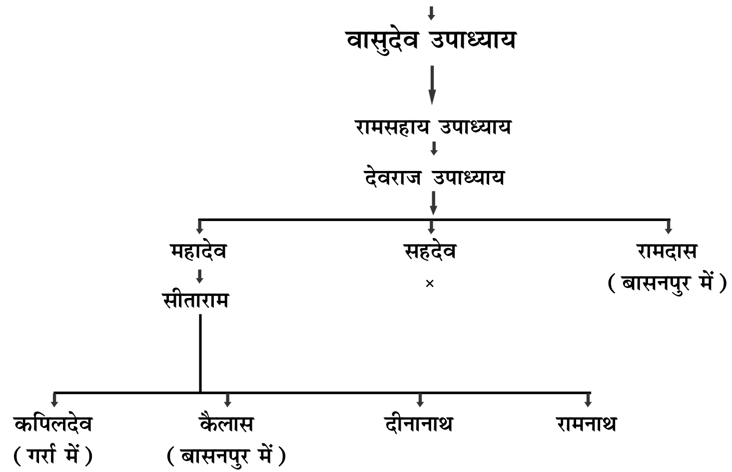

टीकारामबाबा (गहमर) (३)

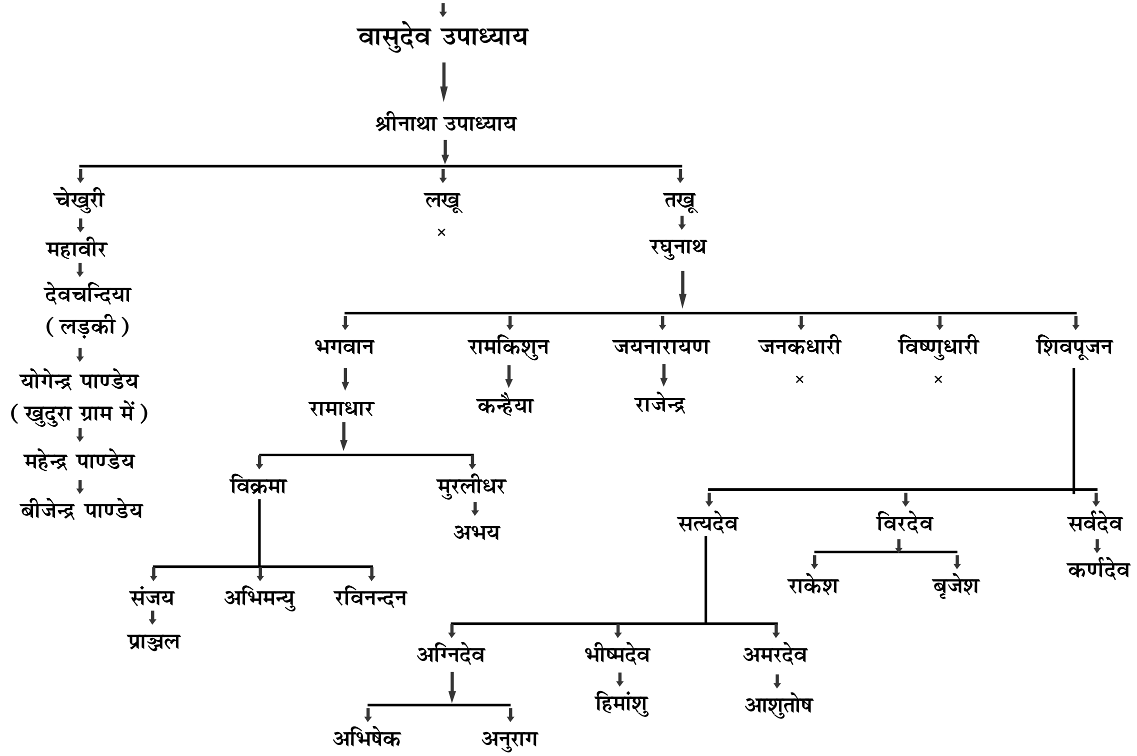

टीकाराम (गहमर) (१)

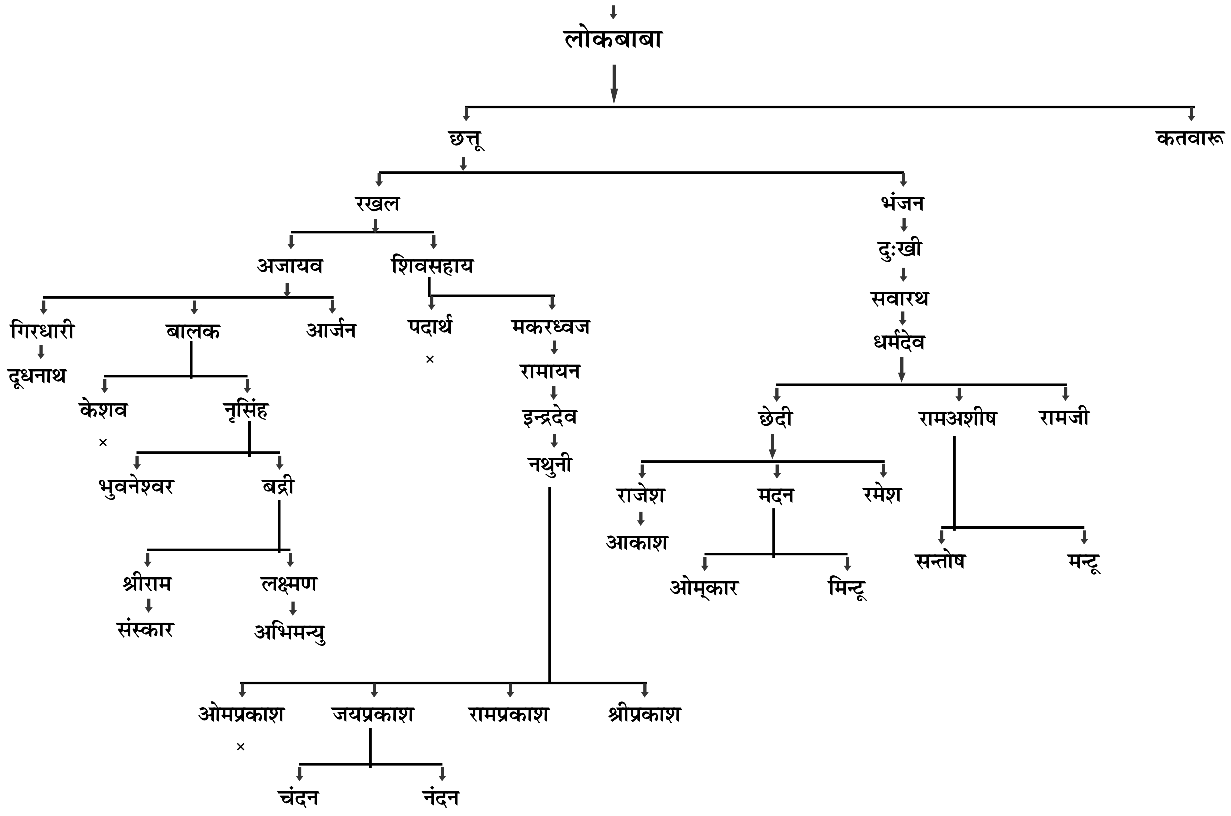
लोकबाबा
छत्तू
कतवारू
रखल
भंजन
दुःखी
सवारथ
धर्मदेव
अजायव
शिवसहाय
गिरधारी
दूधनाथ
बालक
आर्जन
पदार्थ
×
मकरध्वज
रामायन
इन्द्रदेव
नथुनी
केशव
×
नृसिंह
भुवनेश्वर
बद्री
श्रीराम
संस्कार
लक्ष्मण
अभिमन्यु
ओमप्रकाश
×
जयप्रकाश
रामप्रकाश
श्रीप्रकाश
चंदन
नंदन
छेदी
रामअशीष
रामजी
राजेश
आकाश
मदन
रमेश
ओम्कार
मिन्टू
सन्तोष
मन्टू

टीकाराम (गहमर) (२)

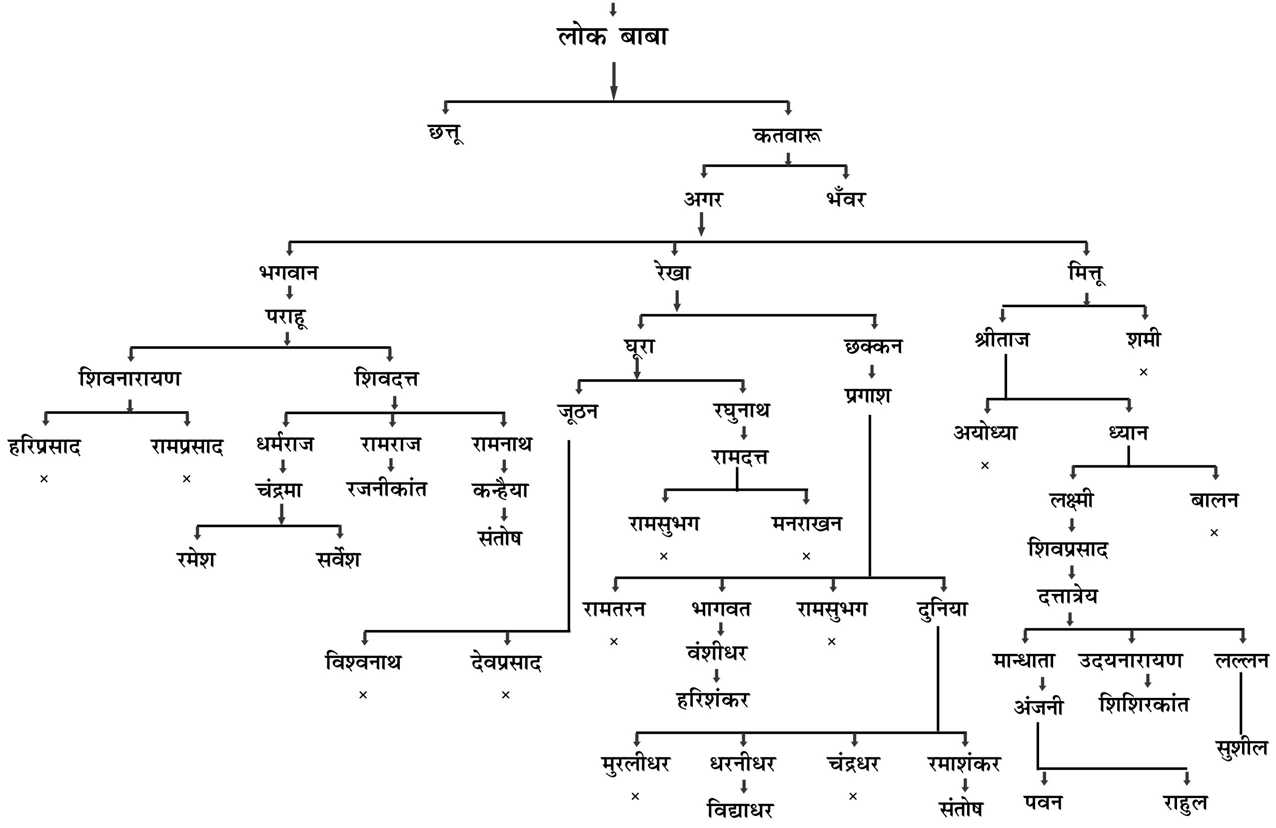
लोक बाबा
छत्तू
कतवारू
अगर
भँवर
भगवान
रेखा
मित्तू
पराहू
शिवनारायण
शिवदत्त
हरिप्रसाद
×
रामप्रसाद
×
धर्मराज
चंद्रमा
रमेश
सर्वेश
रामराज
रजनीकांत
रामनाथ
कन्हैया
संतोष
घूरा
जूठन
विश्वनाथ
×
देवप्रसाद
×
रघुनाथ
रामदत्त
रामसुभग
×
मनराखन
×
छक्कन
प्रगाश
रामतरन
×
भागवत
वंशीधर
हरिशंकर
रामसुभग
×
दुनिया
मुरलीधर
×
धरनीधर
विद्याधर
चंद्रधर
×
रमाशंकर
संतोष
श्रीताज
अयोध्या
×
ध्यान
लक्ष्मी
शिवप्रसाद
दत्तात्रेय
मान्धाता
अंजनी
पवन
राहुल
उदयनारायण
शिशिरकांत
लल्लन
सुशील
बालन
×
शमी
×

टीकाराम (गहमर) (३)

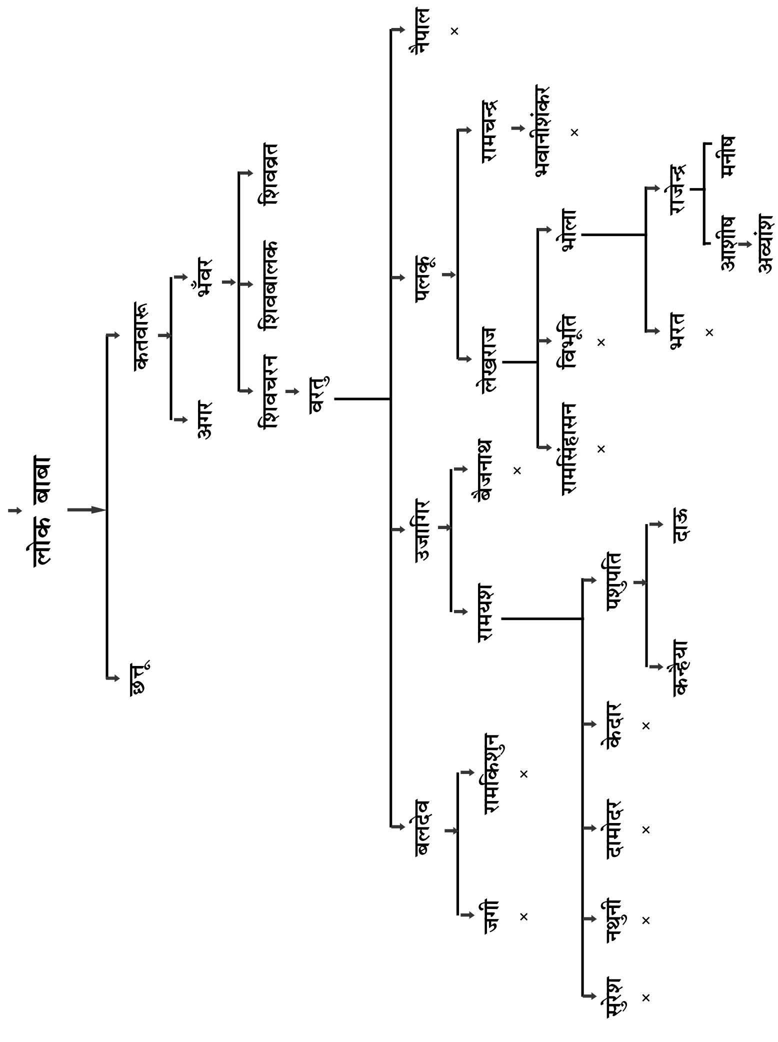
लोक बाबा
छत्तू
कतवारू
अगर
भँवर
शिवचरन
शिवबालक
शिवव्रत
बरतु
बलदेव
उजागिर
पलकू
नैपाल ×
जगी ×
रामकिशुन ×
रामयश
बैजनाथ ×
लेखराज
रामचन्द्र
भवानीशंकर ×
सुरेश ×
नथुनी ×
दामोदर ×
केदार ×
पशुपति
कन्हैया
दारू
रामसिंहासन ×
विभूति ×
भोला
भरत ×
राजेन्द्र
आशीष
अव्यांश
मनीष

टीकाराम (गहमर) (४)

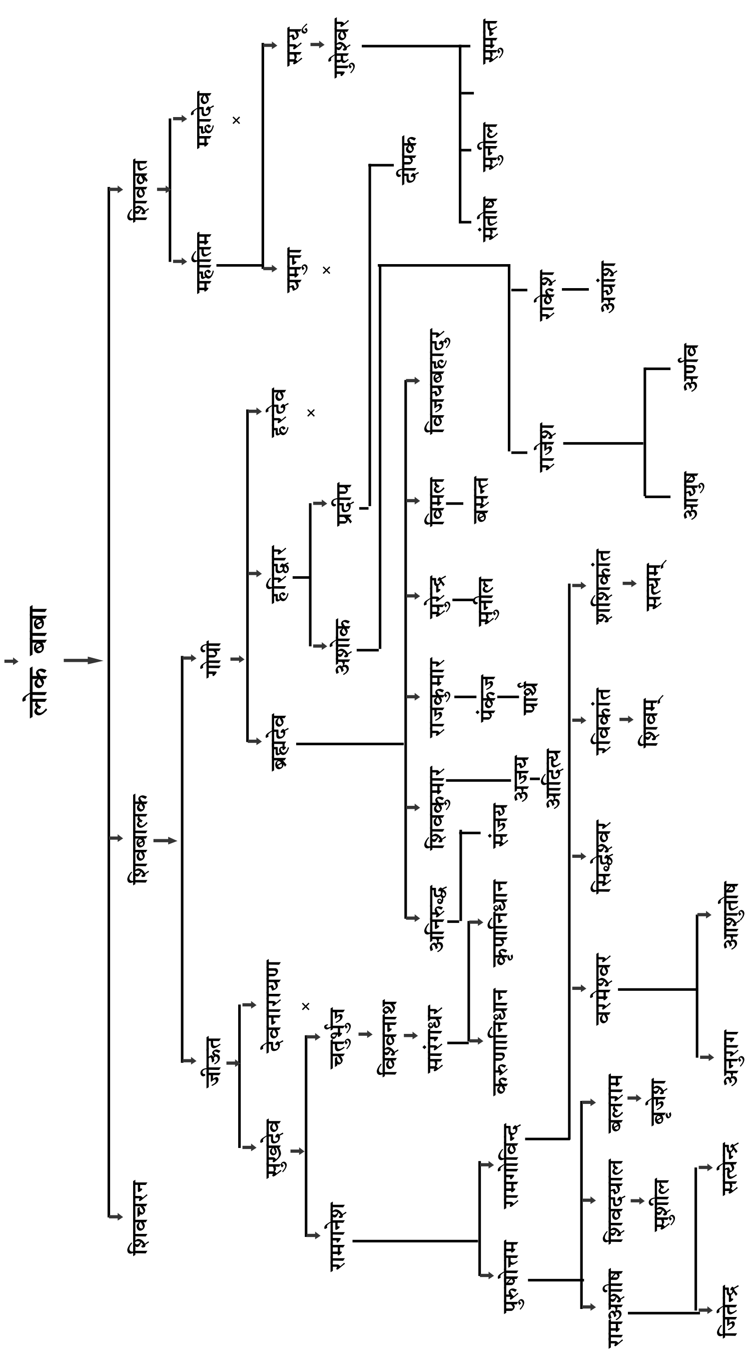

लोक बाबा
शिवव्रत
महादेव
महातिम
सरयू
यमुना
रामेश्वर
सुमन्त
सुनील
संतोष
शिवबालक
गोपी
हरदेव
हरिद्वार
प्रदीप
दीपक
अशोक
राकेश
अयांश
राजेश
अर्णव
आयुष
ब्रह्मदेव
विजयबहादुर
विमल
बसन्त
सुरेन्द्र
सुनील
राजकुमार
पंकज
पार्थ
शिवकुमार
अजय
आदित्य
संजय
अनिरुद्ध
जीऊत
देवनारायण
सुखदेव
चतुर्भुज
विश्वनाथ
सारंगधर
करुणानिधान
कृपानिधान
रामगनेश
रामगोविन्द
शशिकांत
सत्यम्
रविकांत
शिवम्
सिद्धेश्वर
परमेश्वर
आशुतोष
अनुराग
पुरुषोत्तम
बलराम
बृजेश
शिवदयाल
सुशील
सत्येन्द्र
रामअशीष
जितेन्द्र
शिवचरन

टीकाराम बाबा-गहमर (१)

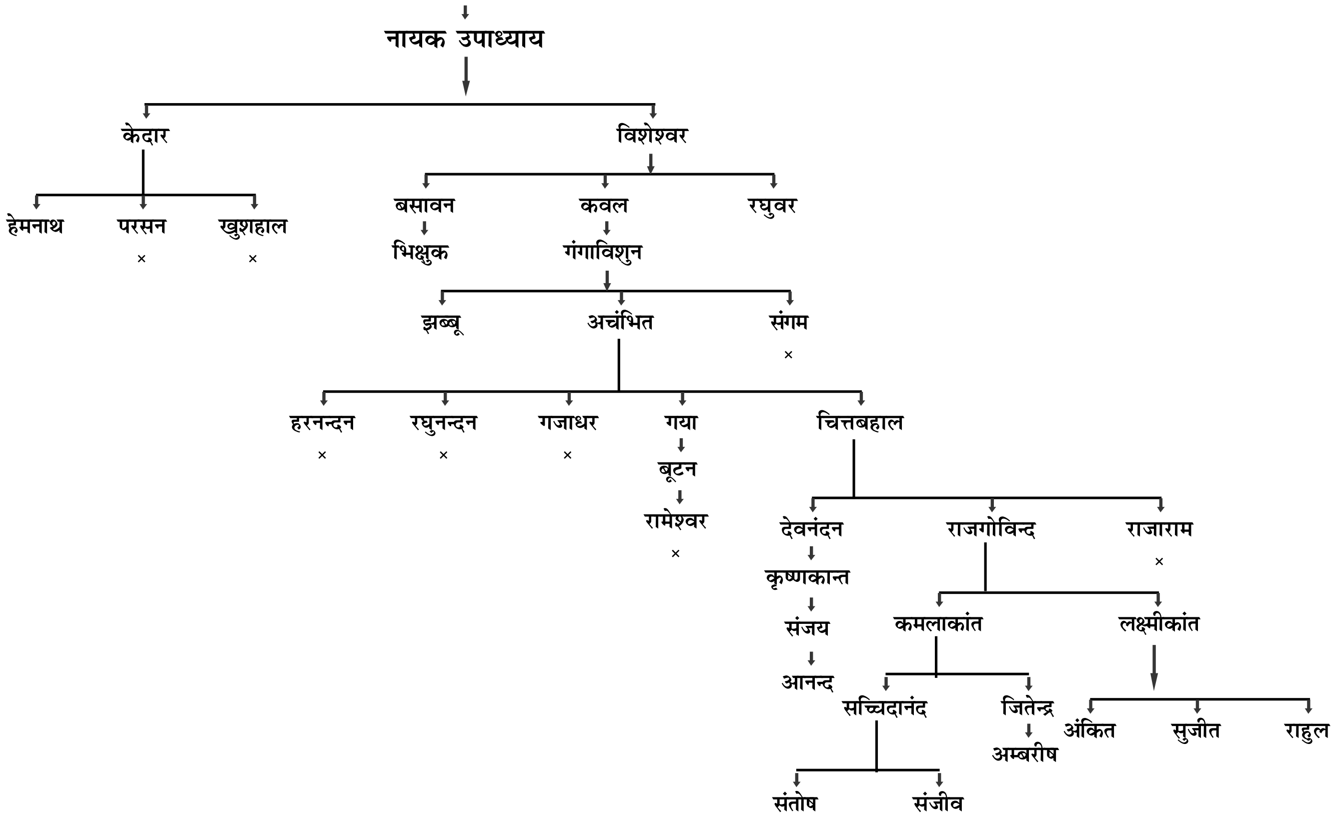

टीकाराम बाबा-गहमर (२)

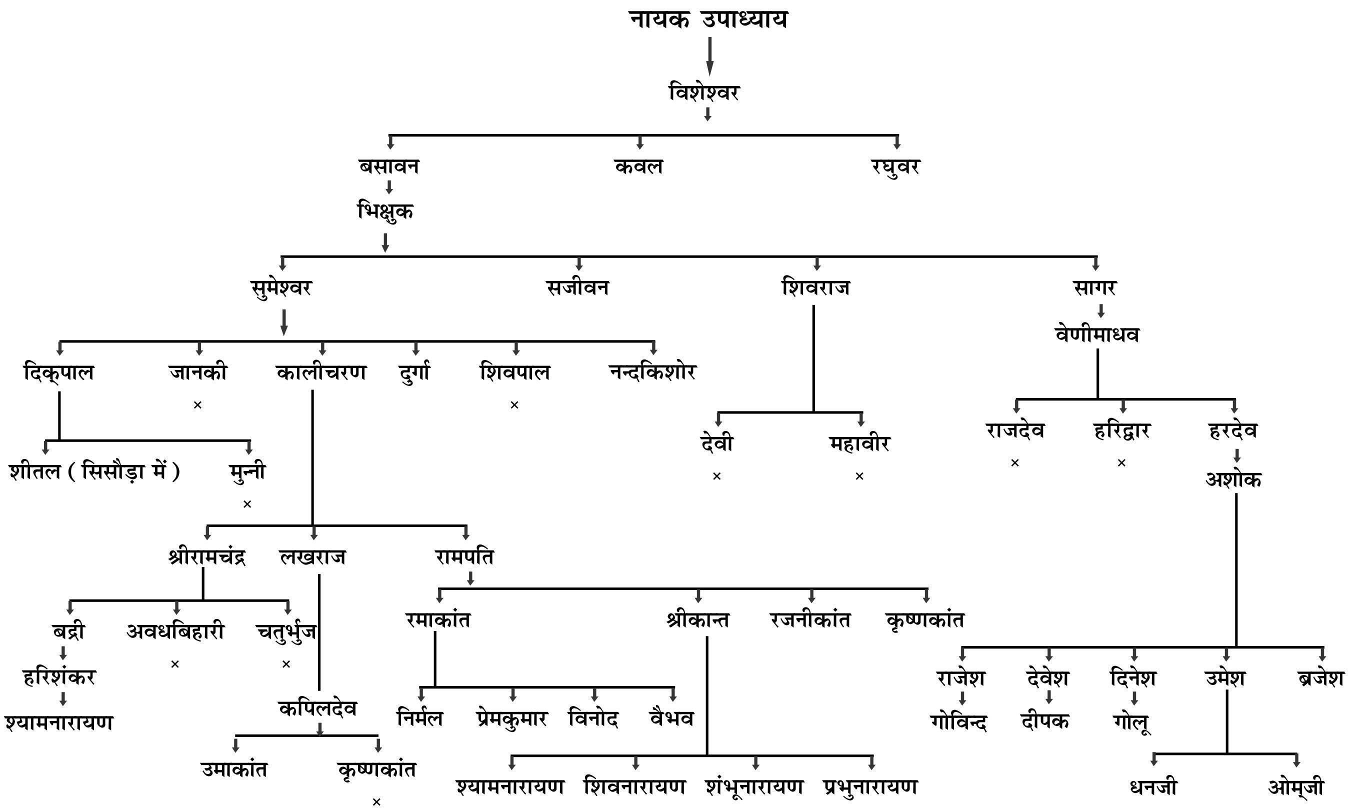

टीकाराम बाबा-गहमर (३)

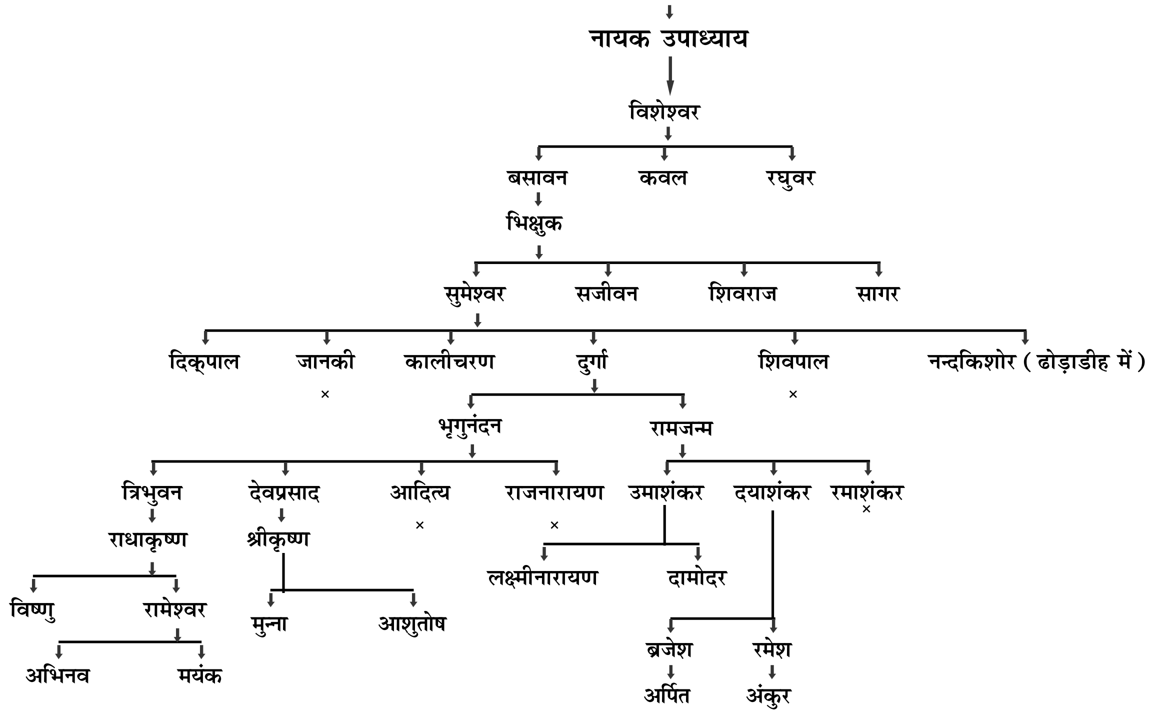

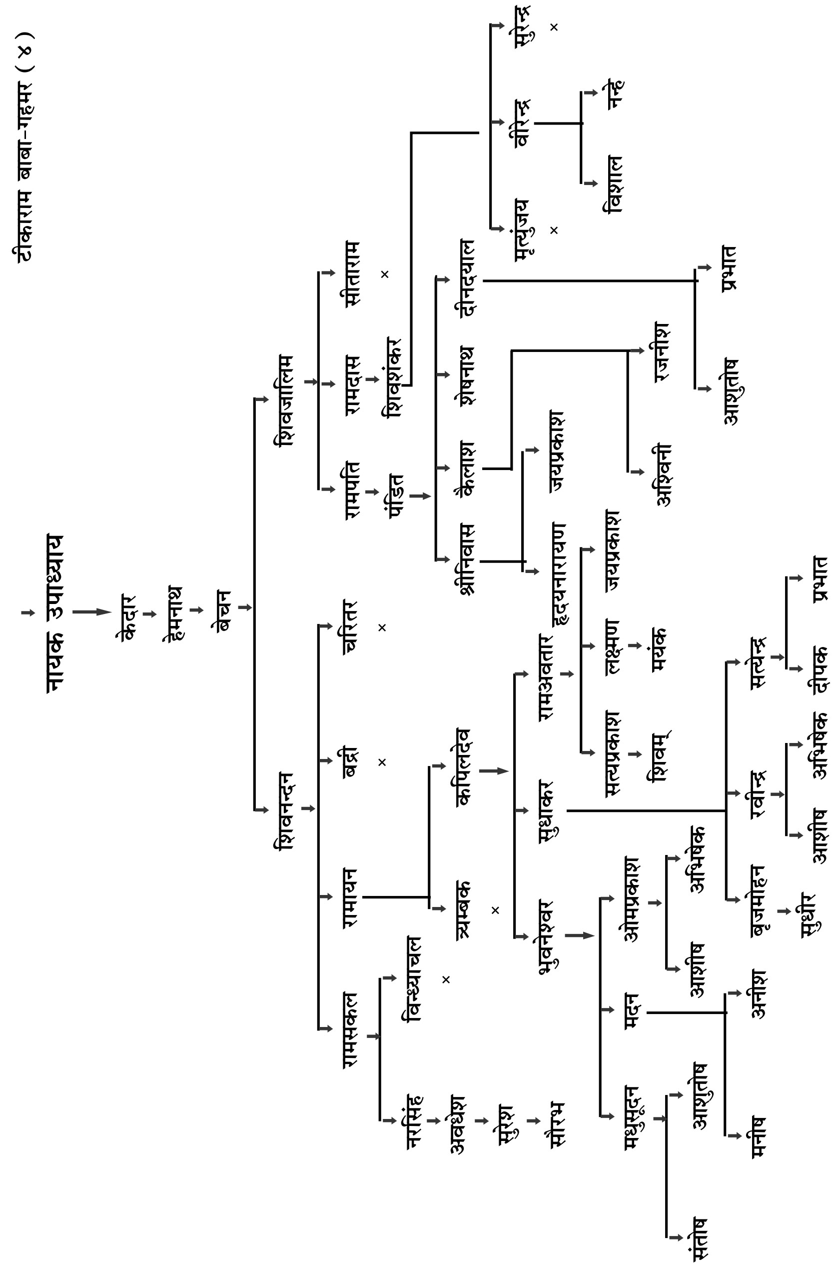

टीकाराम बाबा-गहमर (४)
नायक उपाध्याय
केदार
हेमनाथ
बेचन
शिवजालिम
शिवनन्दन
रामपति
रामदास
सीताराम
पंडित
शिवशंकर
श्रीनिवास
कैलाश
शेषनाथ
दीनदयाल
मृत्युंजय
वीरेन्द्र
सुरेन्द्र
विशाल
नन्हे
हृदयनारायण
जयप्रकाश
अश्विनी
रजनीश
आशुतोष
प्रभात
जयप्रकाश
चरित्र
बद्री
रामायन
रामसकल
विन्ध्याचल
नरसिंह
अवधेश
सुरेश
सौरभ
त्र्यम्बक
कपिलदेव
भुवनेश्वर
सुधाकर
रामअवतार
सत्यप्रकाश
शिवम्
लक्ष्मण
मयंक
मधुसूदन
मदन
ओमप्रकाश
संतोष
आशुतोष
मनीष
अनीश
आशीष
अभिषेक
बृजमोहन
सुधीर
रवीन्द्र
आशीष
अभिषेक
सत्येन्द्र
दीपक
प्रभात

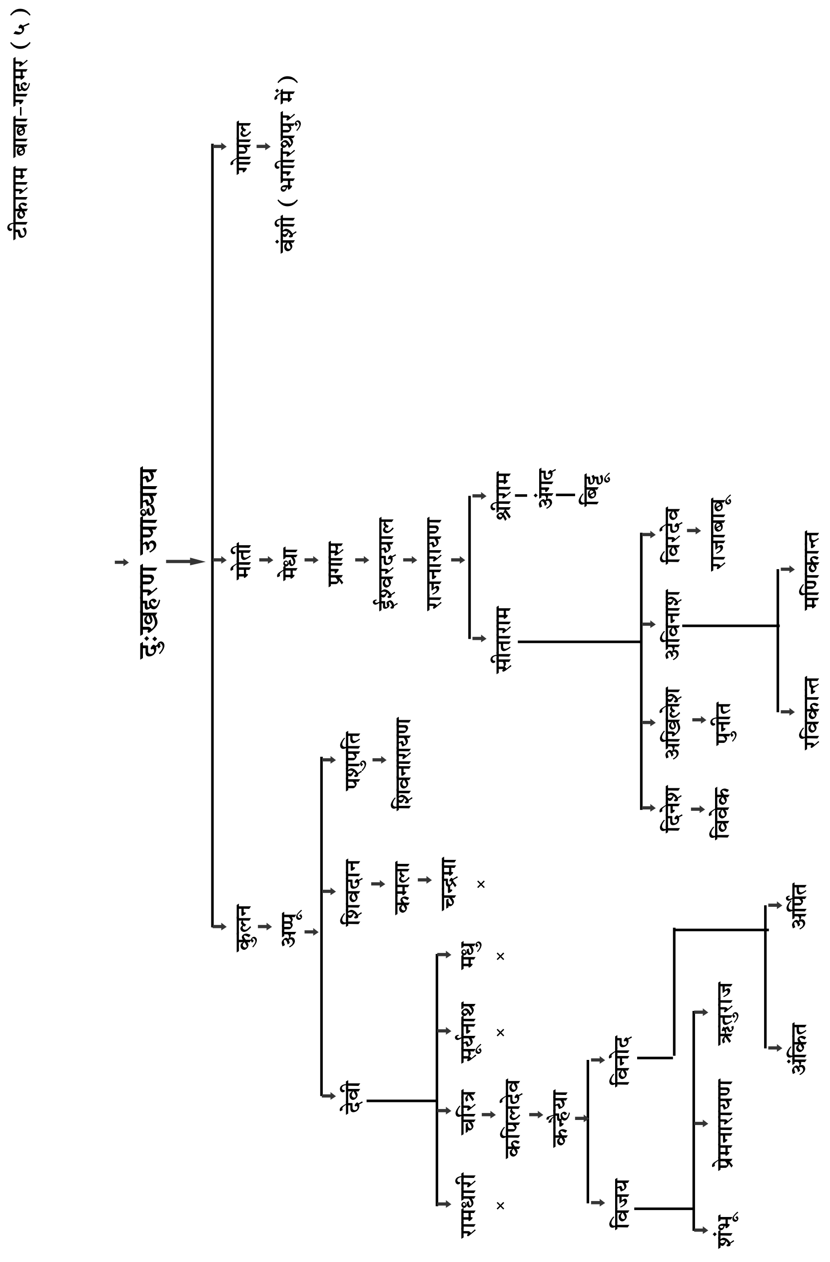
टीकाराम बाबा-गहमर (५)
दुःखहरण उपाध्याय
गोपाल
वंशी (भगीरथपुर में)
मोती
मेंथा
प्रगास
ईश्वरदयाल
राजनारायण
श्रीराम
अंगद
बिट्टू
सीताराम
दिनेश
विवेक
अखिलेश
पुनीत
अविनाश
रविकान्त
मणिकान्त
विरदेव
राजाबाबू
कुलन
अप्पू
देवी
शिवदान
कमला
चन्द्रमा ×
पशुपति
शिवनारायण
रामधारी ×
चरित्र
कपिलदेव
कन्हैया
विजय
शंभू
प्रेमनारायण
ऋतुराज
विनोद
अंकित
अर्पित
सूर्यनाथ ×
मधु ×

टीकाराम बाबा-गहमर (६)

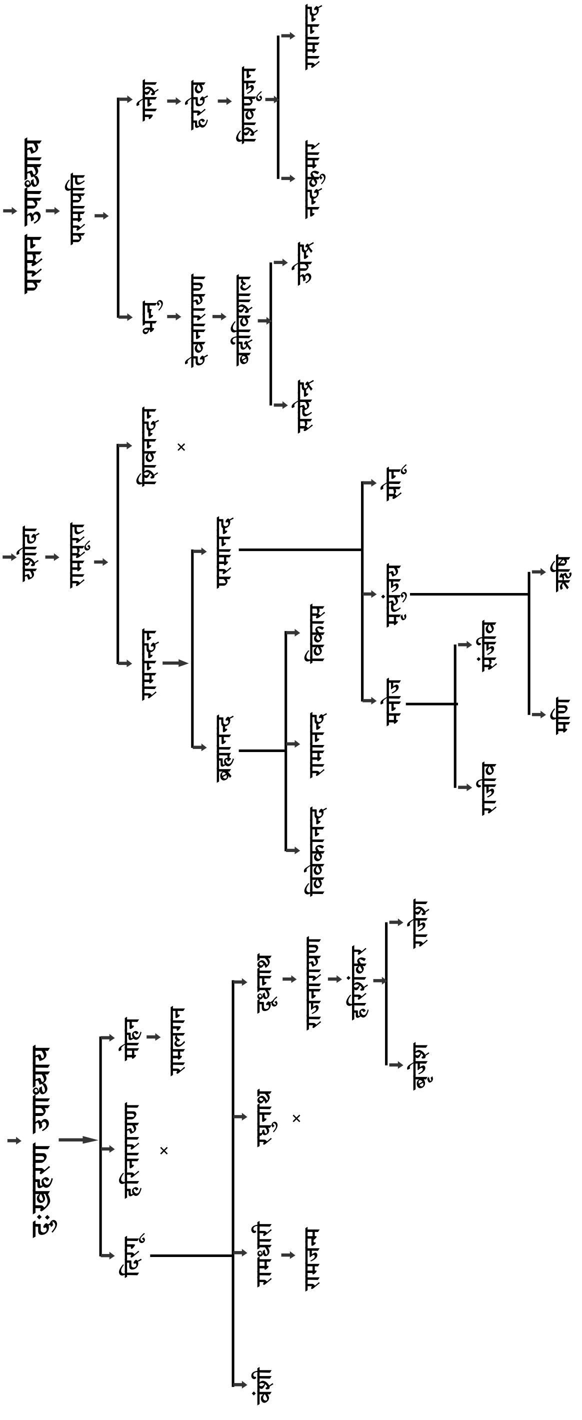

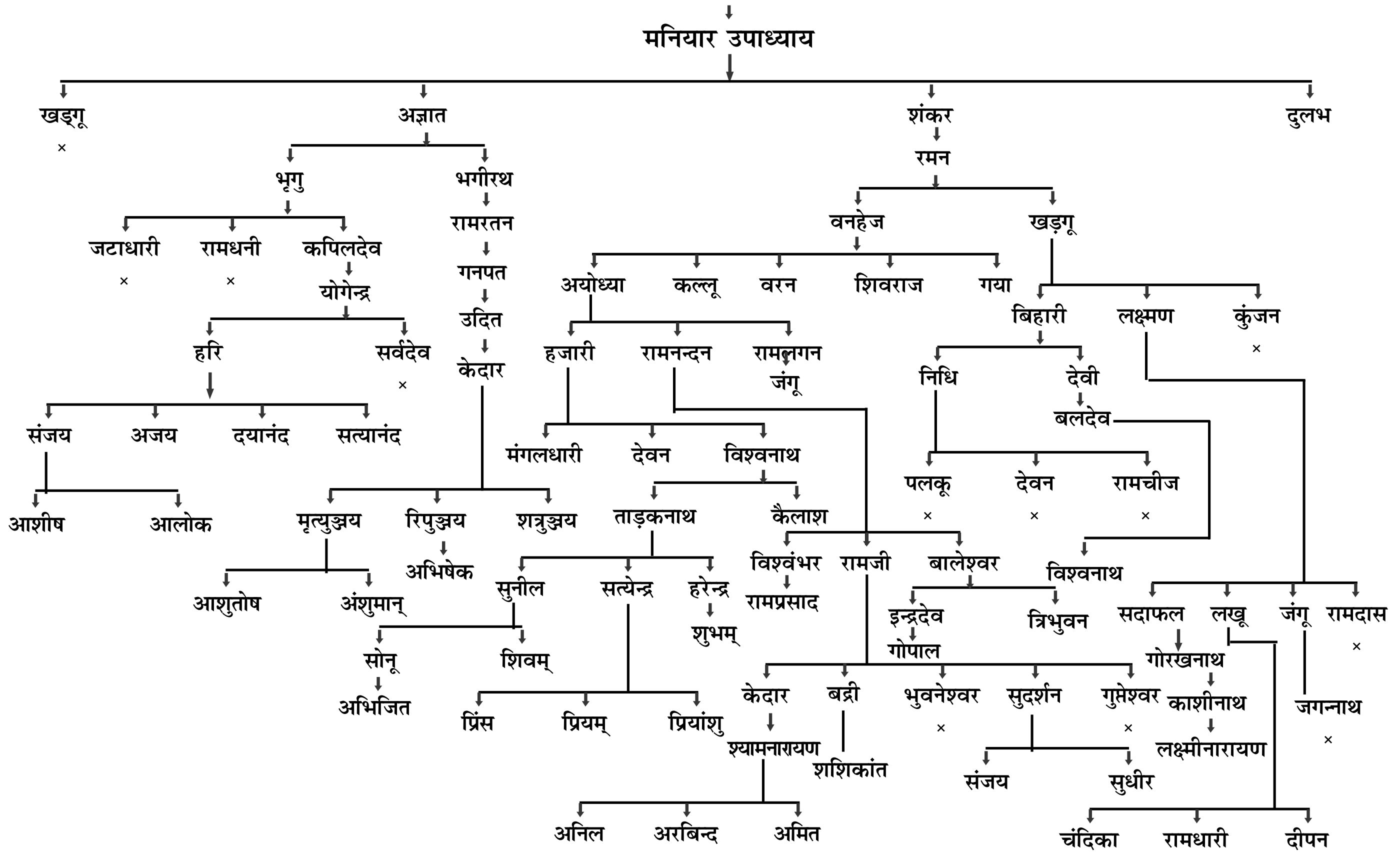
मनियार उपाध्याय
खड्गू
अज्ञात
शंकर
दुलभ
रमन
भृगु
भगीरथ
वनहेज
खड्गू
जटाधारी
रामधनी
कपिलदेव
रामरतन
अयोध्या
कल्लू
वरन
शिवराज
गया
बिहारी
लक्ष्मण
कुंजन
योगेन्द्र
गनपत
उदित
केदार
हरि
सर्वदेव
हजारी
रामनन्दन
रामलगन
जंगू
निधि
देवी
बलदेव
संजय
अजय
दयानंद
सत्यानंद
मंगलधारी
देवन
विश्वनाथ
पलकू
देवन
रामचीज
आशीष
आलोक
मृत्युञ्जय
रिपुञ्जय
शत्रुञ्जय
ताड़कनाथ
कैलाश
अभिषेक
विश्वंभर
रामजी
बालेश्वर
विश्वनाथ
आशुतोष
अंशुमान्
सुनील
सत्येन्द्र
हरेन्द्र
रामप्रसाद
इन्द्रदेव
त्रिभुवन
सदाफल
लखू
जंगू
रामदास
सोनू
शिवम्
शुभम्
गोपाल
गोरखनाथ
अभिजित
प्रिंस
प्रियम्
प्रियांशु
केदार
बद्री
भुवनेश्वर
सुदर्शन
गुप्तेश्वर
काशीनाथ
जगन्नाथ
श्यामनारायण
शशिकांत
संजय
सुधीर
लक्ष्मीनारायण
अनिल
अरबिन्द
अमित
चंदिका
रामधारी
दीपन

टीकाराम बाबा-गहमर (८)

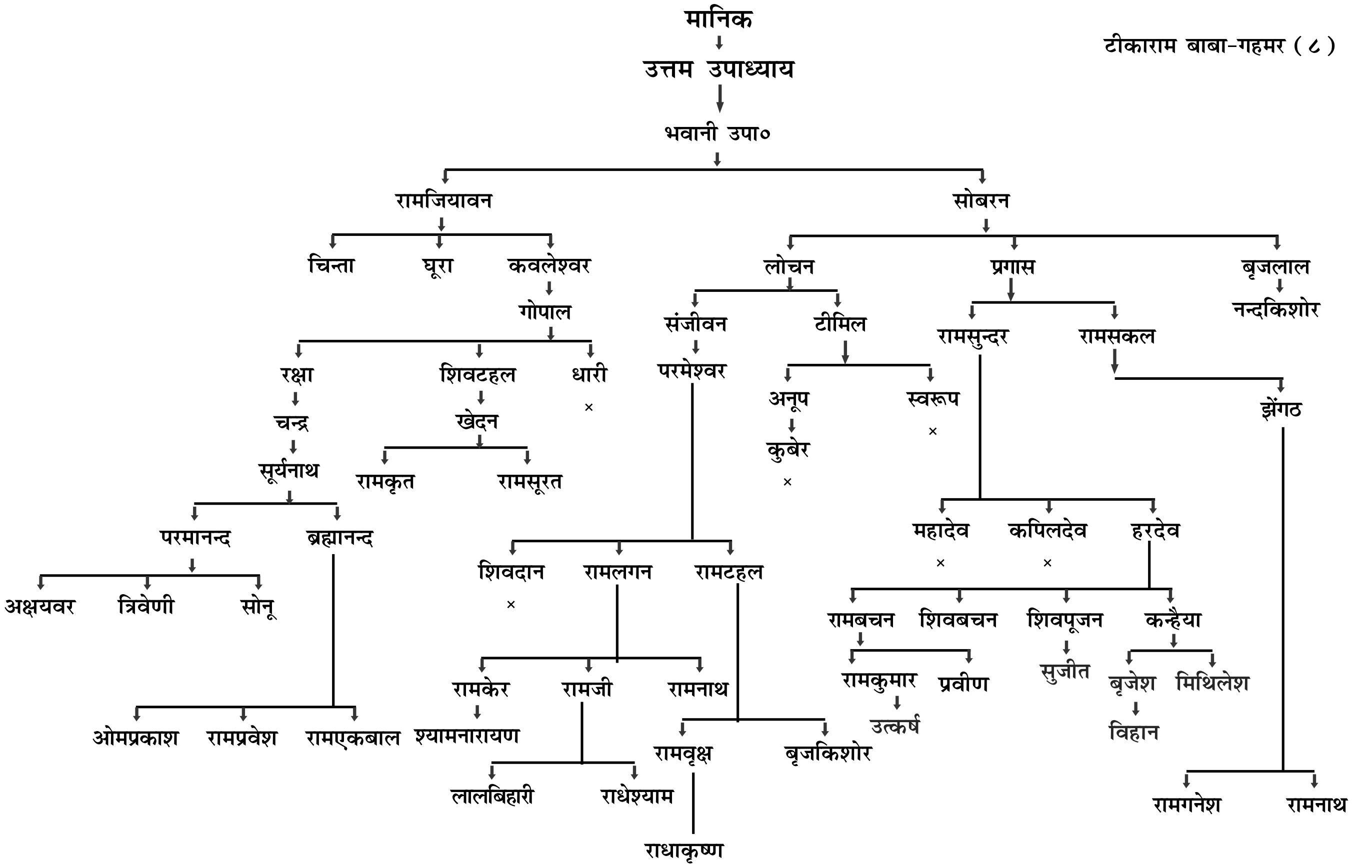

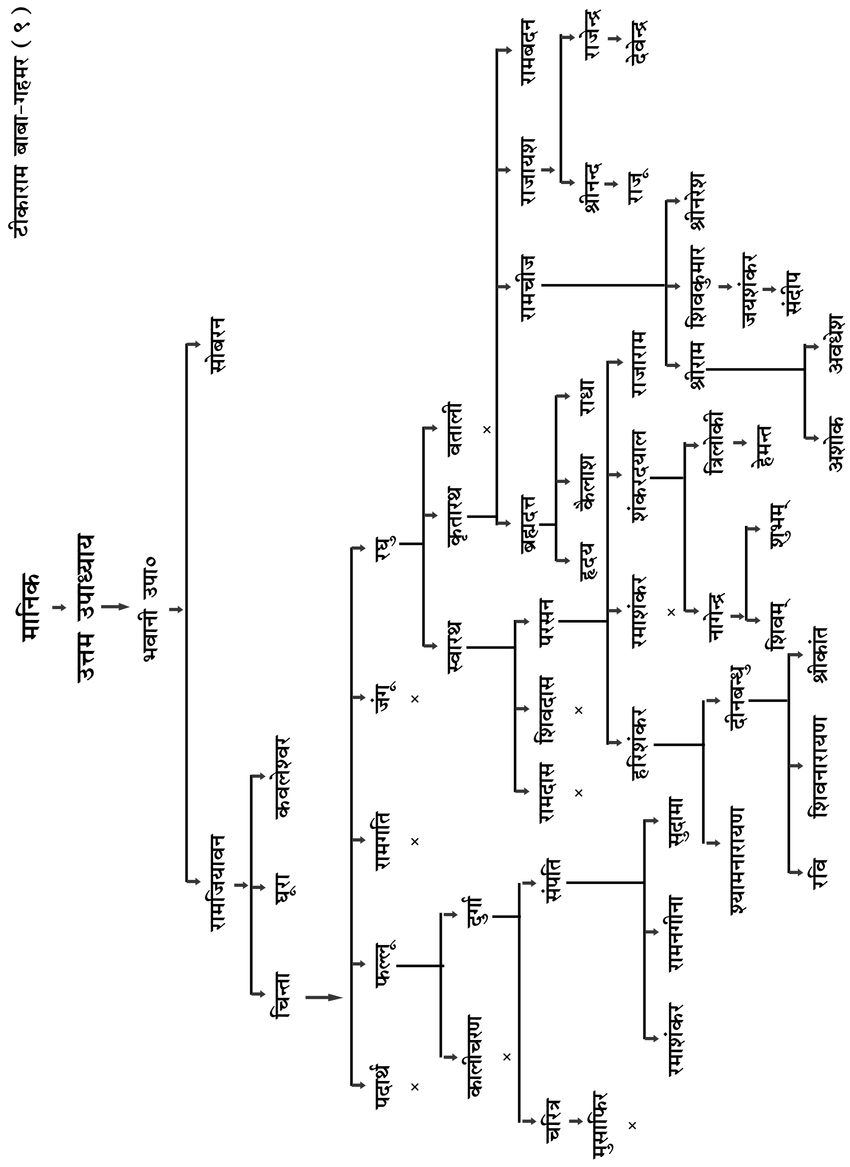
टीकाराम बाबा-गहमर (१)
मानिक
उत्तम उपाध्याय
भवानी उपा०
रामजियावन
सोबरन
चिन्ता
घूरा
कवलेश्वर
पदार्थ
फल्लू
रामगति
जंगू
रघु
कालीचरण
दुर्गा
स्वारथ
कृतारथ
बताली
चरित्र
मुसाफिर
संपति
रमाशंकर
रामनगीना
सुदामा
रामदास
शिवदास
परसन
ब्रह्मदत्त
हृदय
कैलाश
राधा
रामचीज
राजायश
रामबदन
श्रीनन्द
राजू
राजेन्द्र
देवेन्द्र
हरिशंकर
रमाशंकर
शंकरदयाल
राजाराम
श्यामनारायण
दीनबन्धु
नागेन्द्र
शिवम्
शुभम्
त्रिलोकी
हेमन्त
श्रीराम
शिवकुमार
श्रीनेश
जयशंकर
संदीप
रवि
शिवनारायण
श्रीकांत
अशोक
अवधेश

टीकाराम बाबा-गहमर (१०)

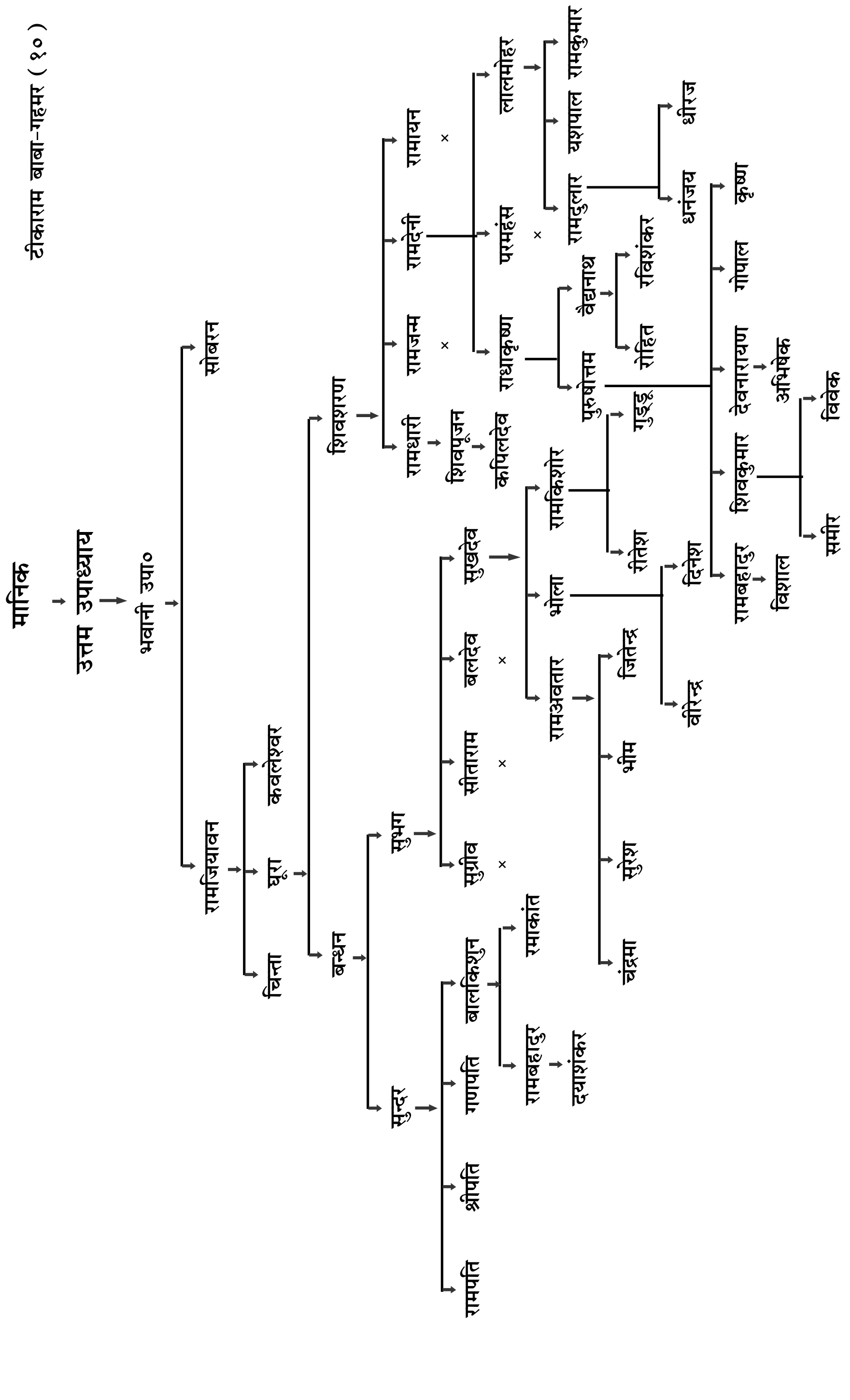

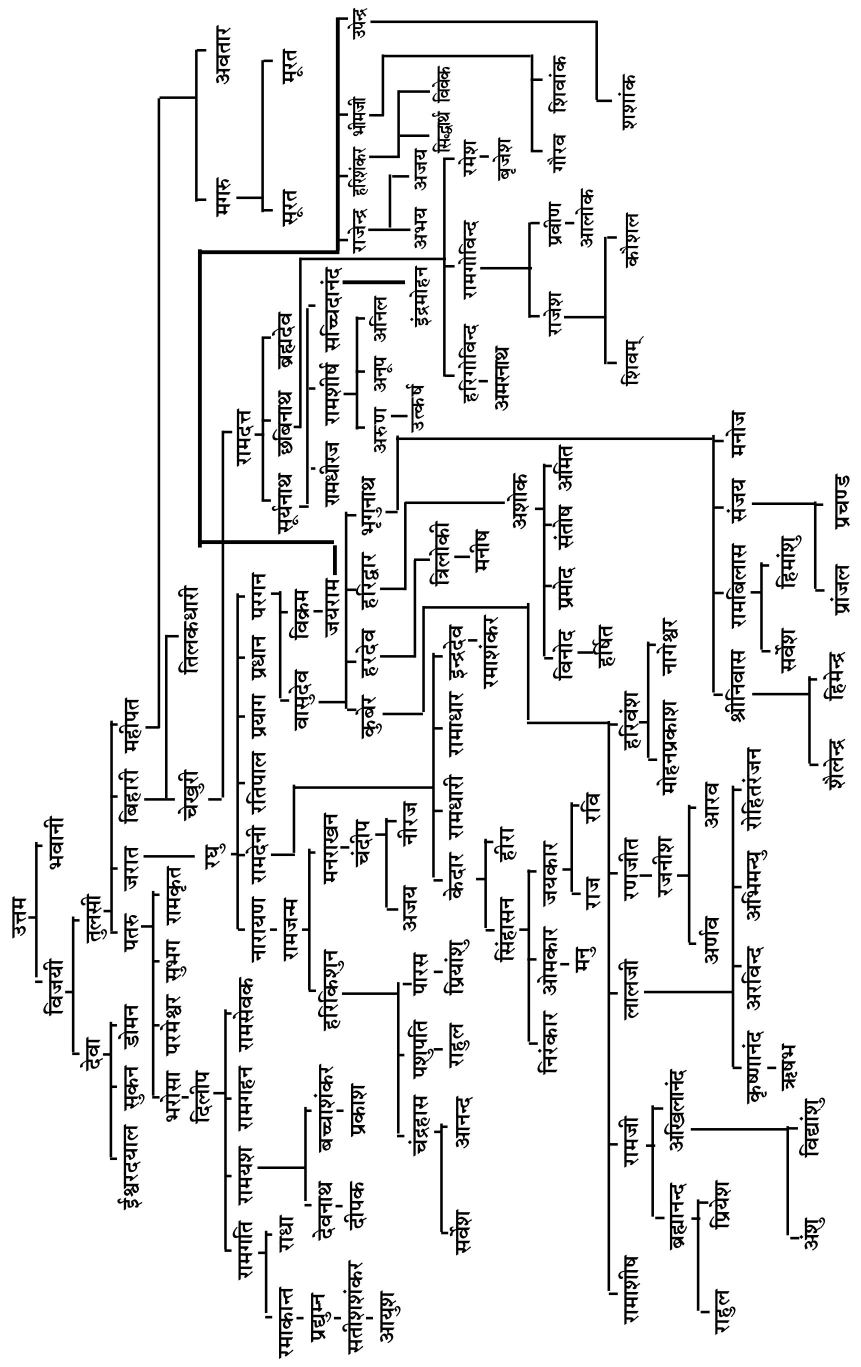
उत्तम
भवानी
विजयी
तुलसी
देवा
ईश्वरदयाल
सुकन
डोमन
पतरु
जरात
बिहारी
महीपत
अवतार
मगरू
मूरत
सूरत
भरोसा
परमेश्वर
सुभग
रामकृत
रघु
चेखुरी
तिलकधारी
दिलीप
रामगति
रामयश
रामगहन
रामसेवक
राधा
रमाकान्त
प्रद्युम्न
सतीशशंकर
आयुश
देवनाथ
दीपक
बच्चाशंकर
प्रकाश
नारायण
रामदेनी
रतिपाल
प्रयाग
प्रधान
परगन
रामजन्म
हरिकिशुन
मनराखन
चंद्रदीप
अजय
नीरज
चंद्रहास
आनन्द
सर्वेश
पशुपति
राहुल
पारस
प्रियांशु
वासुदेव
विक्रम
जयराम
रामदत्त
सूर्यनाथ
छविनाथ
ब्रह्मदेव
रामधीरज
रामशीर्ष
सच्चिदानंद
अरुण
उत्कर्ष
अनूप
अनिल
इंद्रमोहन
राजेन्द्र
हरिशंकर
भीमजी
उपेन्द्र
अभय
अजय
सिद्धार्थ
विवेक
हरिगोविन्द
अमरनाथ
रामगोविन्द
रमेश
बृजेश
राजेश
प्रवीण
आलोक
शिवम्
कौशल
गौरव
शिवांक
शशांक
कुबेर
हरदेव
हरिद्वार
भृगुनाथ
त्रिलोकी
मनीष
अशोक
विनोद
हर्षित
प्रमोद
संतोष
अमित
केदार
रामधारी
रामाधार
इन्द्रदेव
रमाशंकर
सिंहासन
हीरा
निरंकार
ओमकार
मनु
जयकार
राज
रवि
रामशीष
रामजी
लालजी
रणजीत
हरिवंश
ब्रह्मानन्द
राहुल
प्रियेश
अखिलानंद
अंशु
विद्यांशु
रजनीश
अर्णव
आरव
मोहनप्रकाश
नागेश्वर
कृष्णानंद
ऋषभ
अरविन्द
अभिमन्यु
रोहितरंजन
श्रीनिवास
रामविलास
संजय
मनोज
शैलेन्द्र
हिमेन्द्र
सर्वेश
हिमांशु
प्रांजल
प्रचण्ड

टीकाराम बाबा-गहमर (१२)

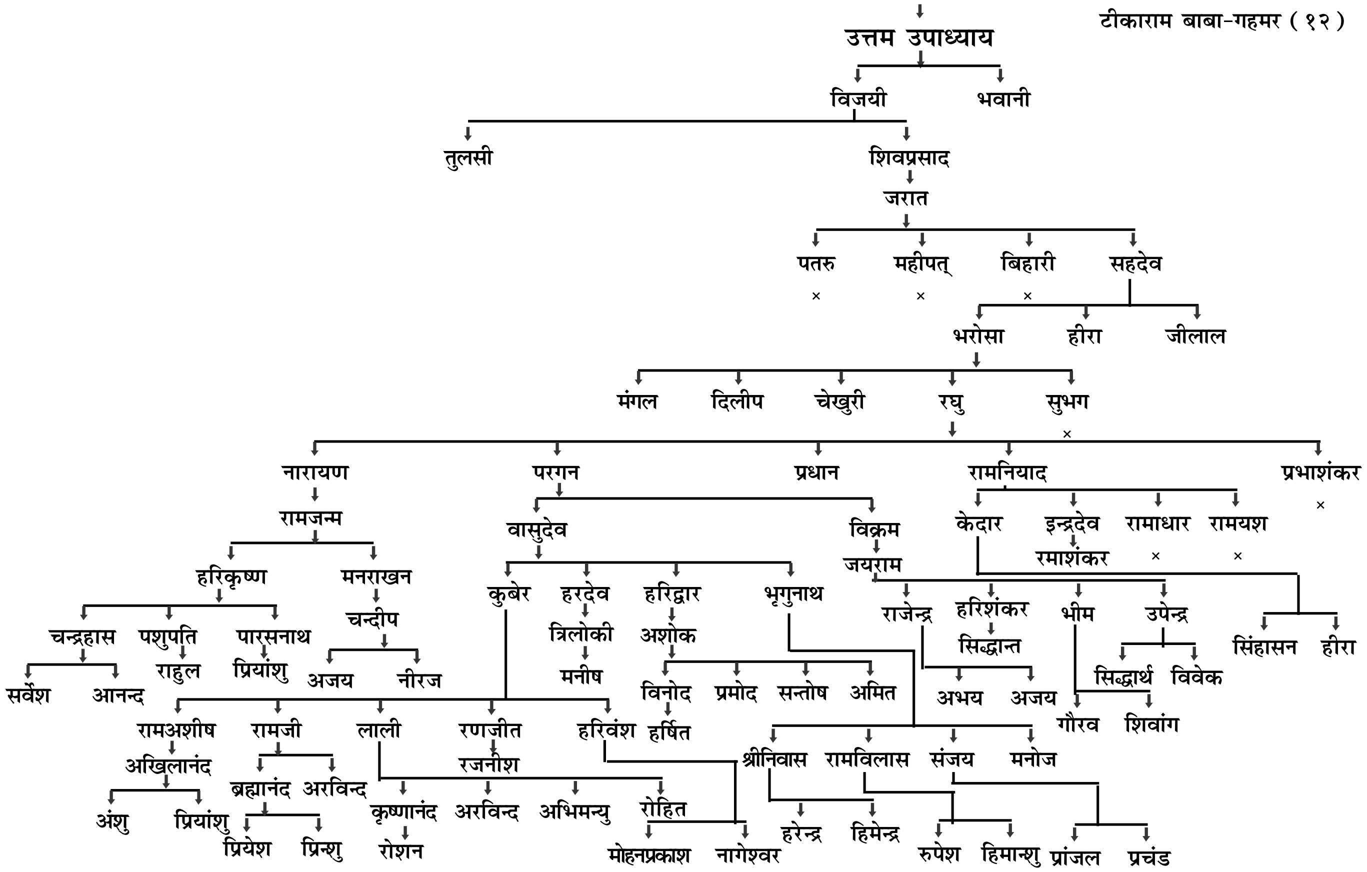

ग्राम-गहमर (१)

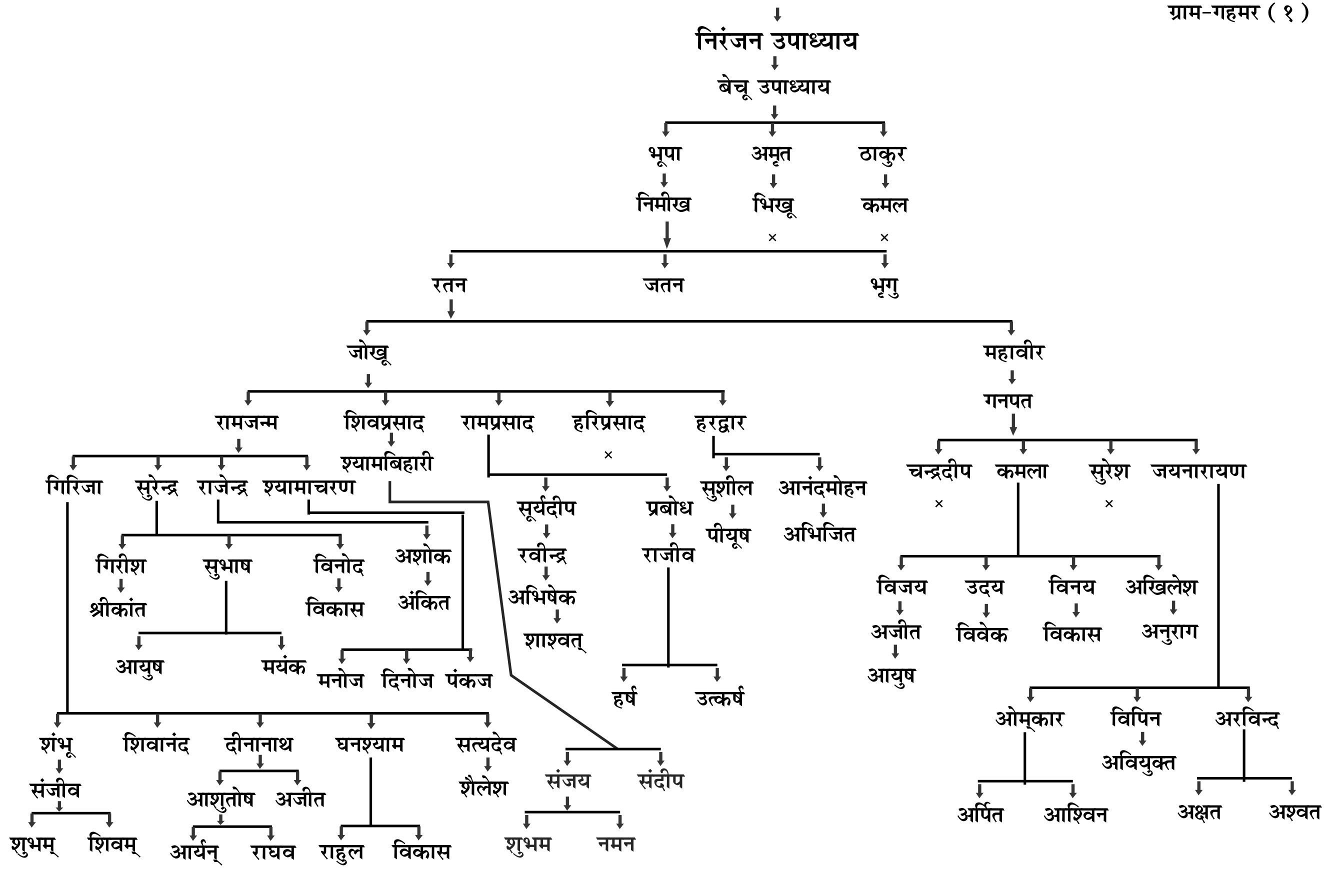
निरंजन उपाध्याय
बेचू उपाध्याय
भूपा
अमृत
ठाकुर
निमीख
भिखू
कमल
×
×
रतन
जतन
भृगु
जोखू
महावीर
गनपत
रामजन्म
शिवप्रसाद
रामप्रसाद
हरिप्रसाद
×
हरद्वार
श्यामबिहारी
गिरिजा
सुरेन्द्र
राजेन्द्र
श्यामाचरण
सूर्यदीप
प्रबोध
सुशील
आनंदमोहन
रवीन्द्र
राजीव
पीयूष
अभिजित
अभिषेक
शाश्वत्
हर्ष
उत्कर्ष
गिरीश
सुभाष
विनोद
अशोक
श्रीकांत
विकास
अंकित
आयुष
मयंक
मनोज
दिनोज
पंकज
शंभू
शिवानंद
दीनानाथ
घनश्याम
सत्यदेव
संजीव
आशुतोष
अजीत
शैलेश
शुभम्
शिवम्
आर्यन्
राघव
राहुल
विकास
संजय
संदीप
शुभम
नमन
चन्द्रदीप
×
कमला
सुरेश
×
जयनारायण
विजय
उदय
विनय
अखिलेश
अजीत
विवेक
विकास
अनुराग
आयुष
ओम्कार
विपिन
अरविन्द
अवियुक्त
अर्पित
आश्विन
अक्षत
अश्वत

ग्राम — गहमर (२)

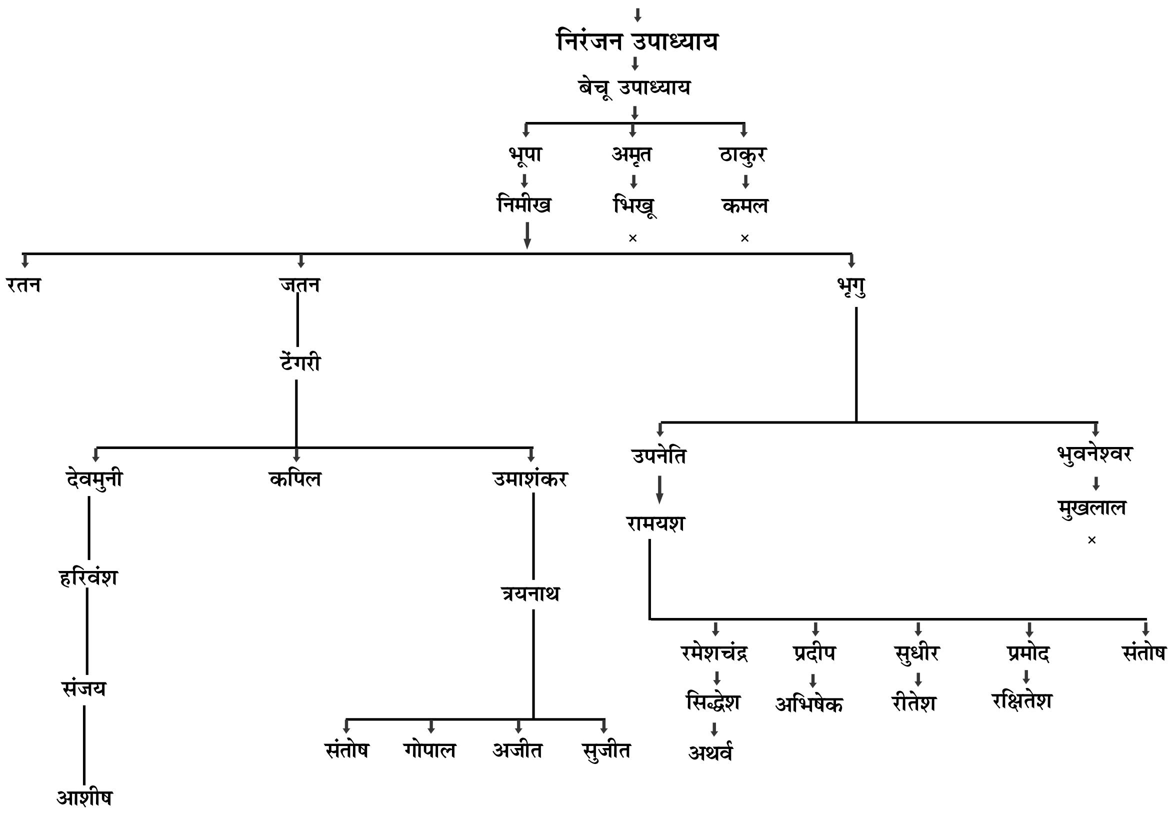
निरंजन उपाध्याय
बेचू उपाध्याय
भूपा
अमृत
ठाकुर
निमीख
भिखू
कमल
×
×
रतन
जतन
भृगु
टेंगरी
देवमुनी
कपिल
उमाशंकर
हरिवंश
संजय
आशीष
त्रयनाथ
संतोष
गोपाल
अजीत
सुजीत
उपनेति
रामयश
भुवनेश्वर
मुखलाल
×
रमेशचंद्र
सिद्धेश
अथर्व
प्रदीप
अभिषेक
सुधीर
रीतेश
प्रमोद
रक्षितेश
संतोष

ग्राम — गहमर (३)

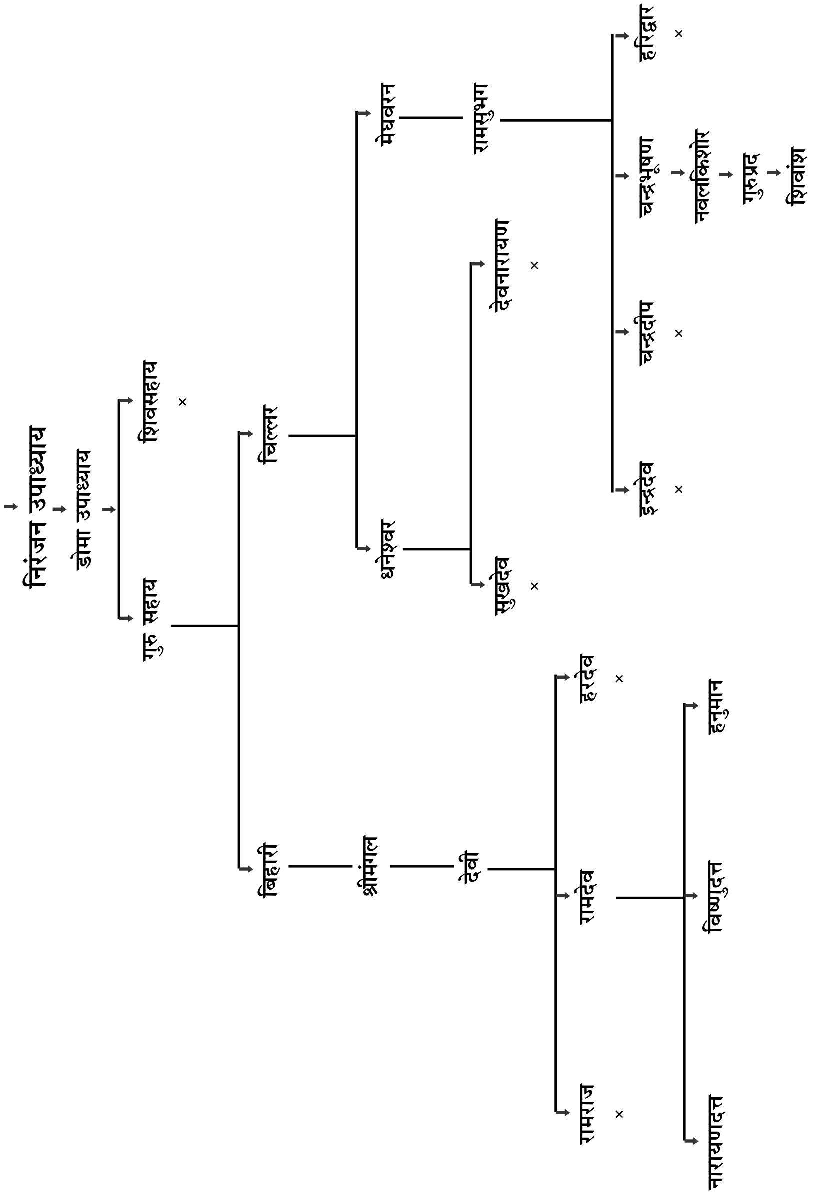
निरंजन उपाध्याय
डोमा उपाध्याय
गुरु सहाय
शिवसहाय ×
चिल्लर
बिहारी
धनेश्वर
मेघवरन
सुखदेव ×
देवनारायण ×
रामसुभग
इन्द्रदेव ×
चन्द्रदीप ×
चन्द्रभूषण
हरिद्वार ×
नवलकिशोर
गुरुप्रद
शिवांश
श्रीमंगल
देवी
रामराज ×
रामदेव
हरदेव ×
नारायणदत्त
विष्णुदत्त
हनुमान

ग्राम — गहमर

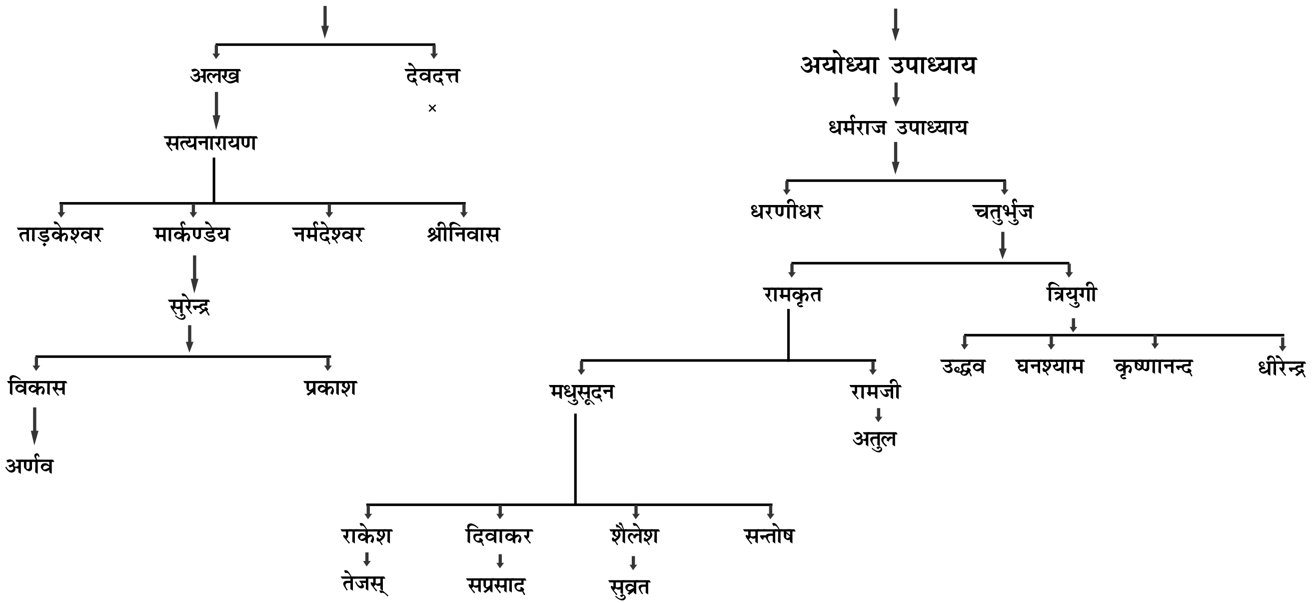
अयोध्या उपाध्याय
धर्मराज उपाध्याय
धरणीधर
चतुर्भुज
रामकृत
त्रियुगी
उद्धव
घनश्याम
कृष्णानन्द
धीरेन्द्र
मधुसूदन
रामजी
अतुल
राकेश
दिवाकर
शैलेश
सन्तोष
तेजस्
सप्रसाद
सुव्रत
अलख
देवदत्त
×
सत्यनारायण
ताड़केश्वर
मार्कण्डेय
नर्मदेश्वर
श्रीनिवास
सुरेन्द्र
विकास
प्रकाश
अर्णव

ग्राम — गहमर

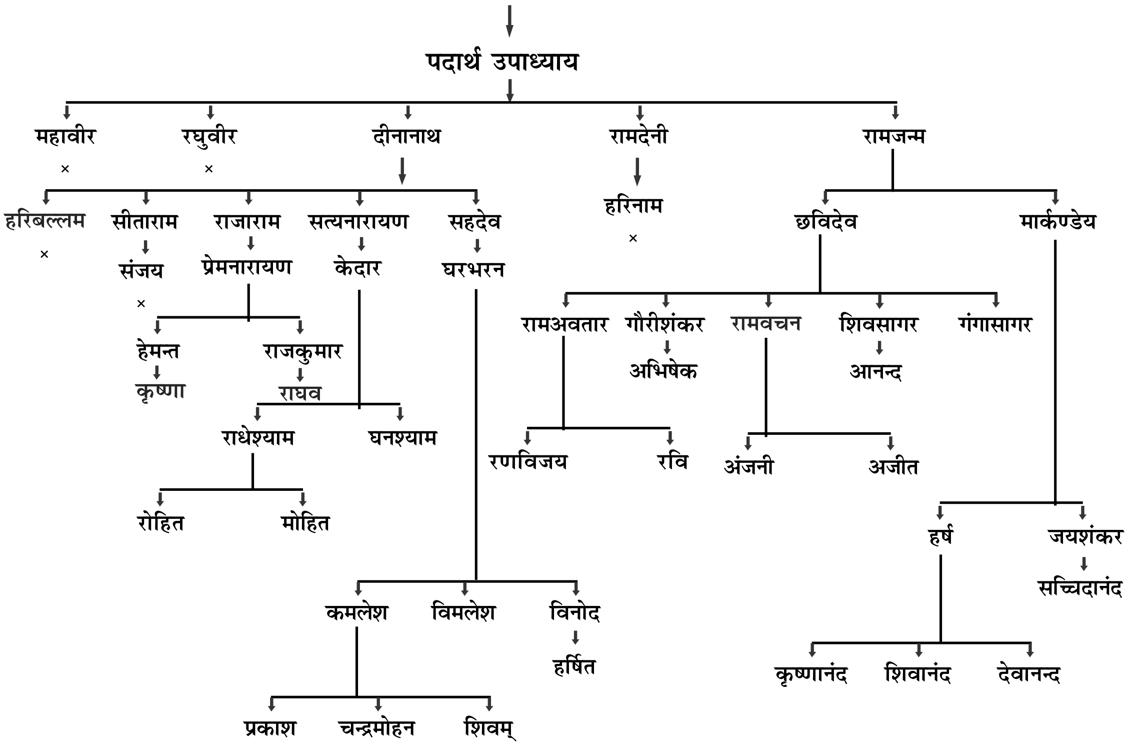

पदार्थ उपाध्याय
महावीर
रघुवीर
दीनानाथ
रामदेनी
रामजन्म
हरिबल्लम
सीताराम
राजाराम
सत्यनारायण
सहदेव
हरिनाम
छविदेव
मार्कण्डेय
संजय
प्रेमनारायण
केदार
घरभरन
रामअवतार
गौरीशंकर
रामवचन
शिवसागर
गंगासागर
हेमन्त
राजकुमार
अभिषेक
आनन्द
कृष्णा
राघव
राधेश्याम
घनश्याम
रणविजय
रवि
अंजनी
अजीत
रोहित
मोहित
हर्ष
जयशंकर
सच्चिदानंद
कमलेश
विमलेश
विनोद
हर्षित
कृष्णानंद
शिवानंद
देवानन्द
प्रकाश
चन्द्रमोहन
शिवम्

ग्राम — गहमर

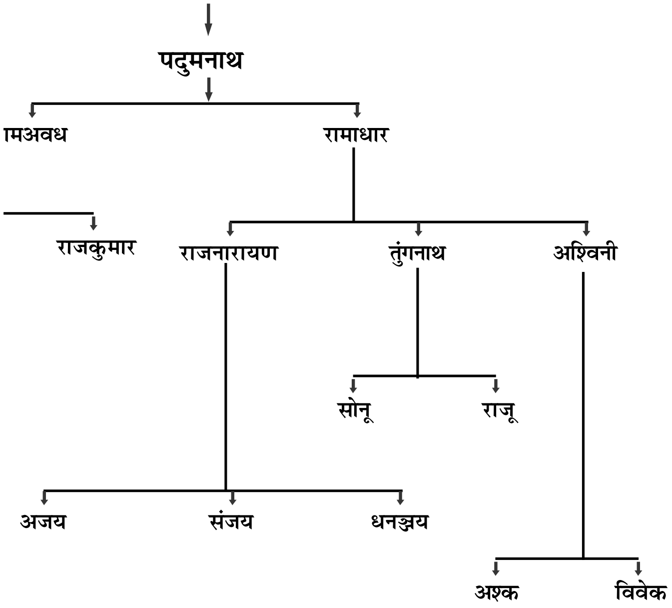
पदुमनाथ
ामअवध
रामाधार
राजकुमार
राजनारायण
तुंगनाथ
अश्विनी
सोनू
राजू
अजय
संजय
धनञ्जय
अश्क
विवेक

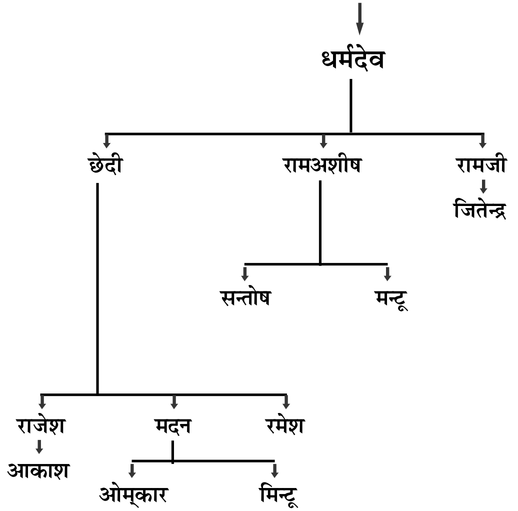
धर्मदेव
छेदी
रामअशीष
रामजी
जितेन्द्र
सन्तोष
मन्टू
राजेश
मदन
रमेश
आकाश
ओम्कार
मिन्टू

ग्राम — गोड़सरा, कैमूर, बिहार
(नागबाबा)

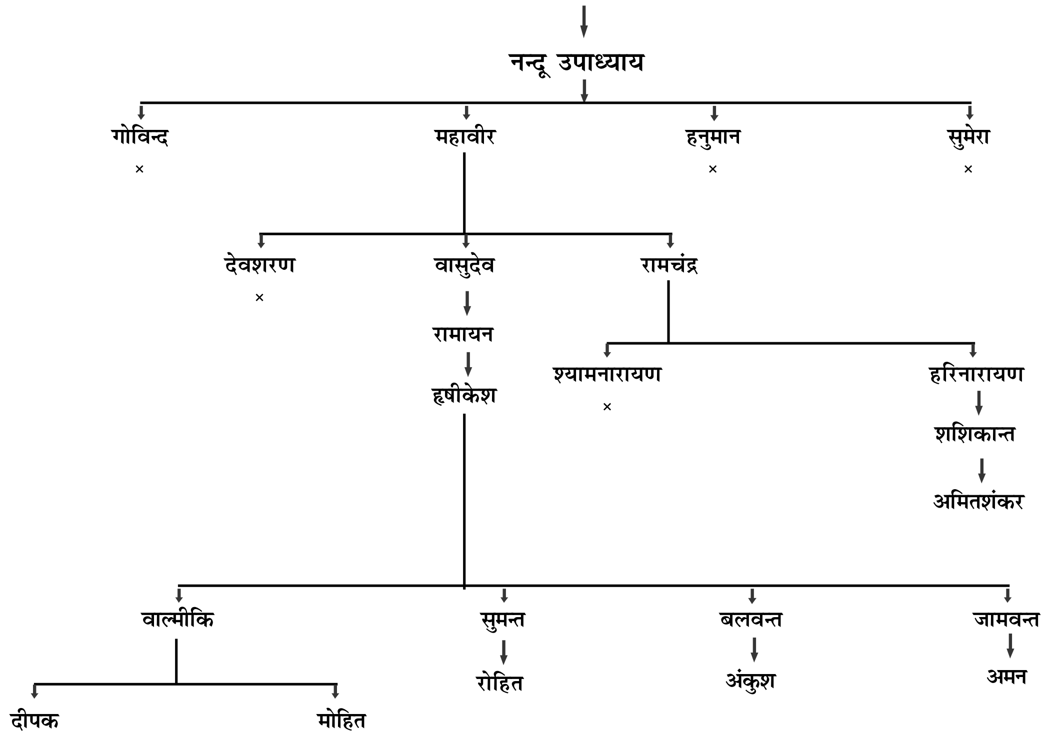

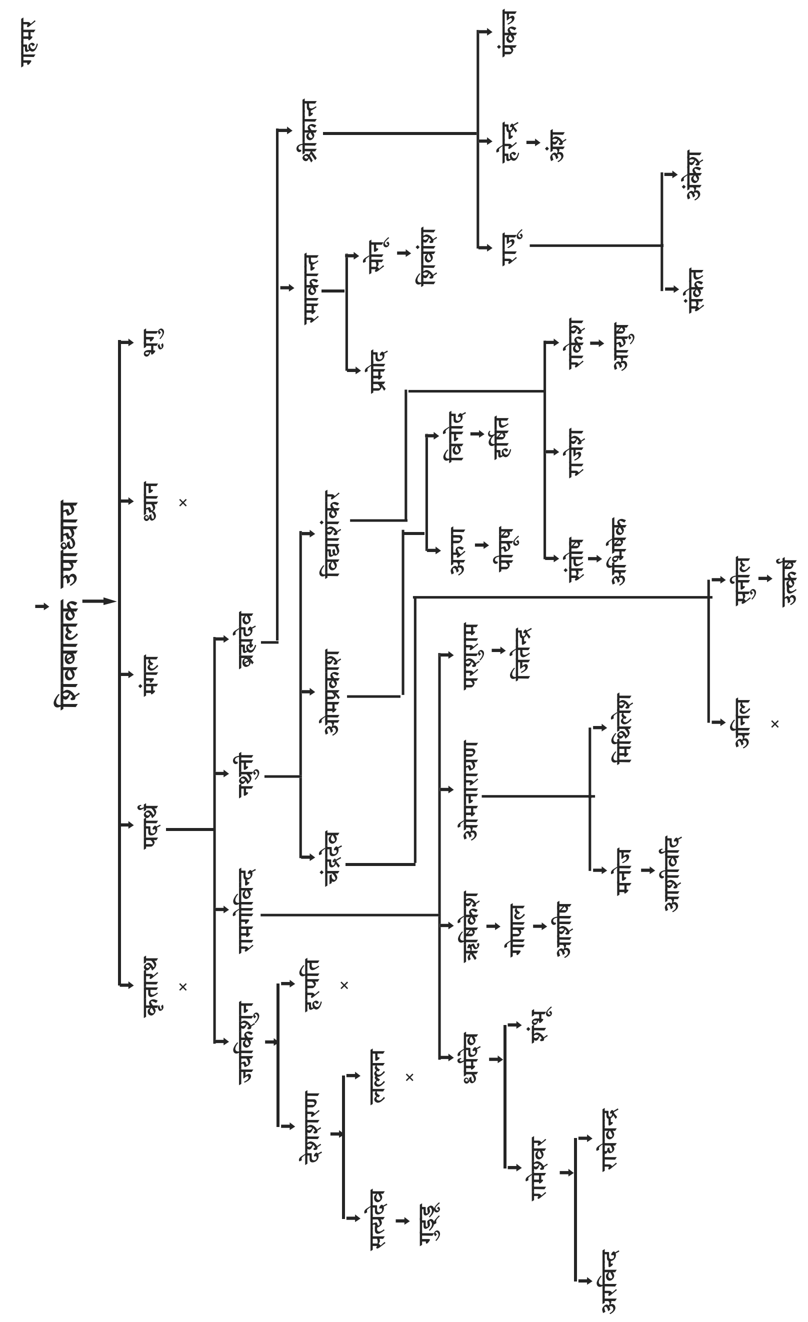
गहमर
शिवबालक उपाध्याय
भृगु
ध्यान ×
मंगल
पदार्थ
कृतार्थ ×
ब्रह्मदेव
नथुनी
रामगोविन्द
जयकिशुन
श्रीकान्त
रमाकान्त
विद्याशंकर
ओमप्रकाश
चंद्रदेव
हरपति ×
देशशरण
ललन ×
सत्यदेव → गुड्डू
पंकज
हरेन्द्र → अंश
राजू
अंकेश
संकेत
सोनू → शिवांश
प्रमोद
राकेश → आयुष
राजेश
संतोष → अभिषेक
विनोद → हर्षित
अरुण → पीयूष
सुनील → उत्कर्ष
अनिल ×
परशुराम → जितेन्द्र
ओमनारायण
मिथिलेश
मनोज → आशीर्वाद
ऋषिकेश → गोपाल → आशीष
धर्मदेव
शंभू
रामेश्वर
राघवेन्द्र
अरविन्द

ग्राम-गंगापुर (नाग बाबा)

- नंदलाल
  - बाढ़ू
    - राधेश्याम
    - शिवकुमार
      - रजनीकांत
    - कपिलमुनि
      - राकेश
  - छोटू

ग्राम — चंदा, बिहार (१) पदुम बाबा

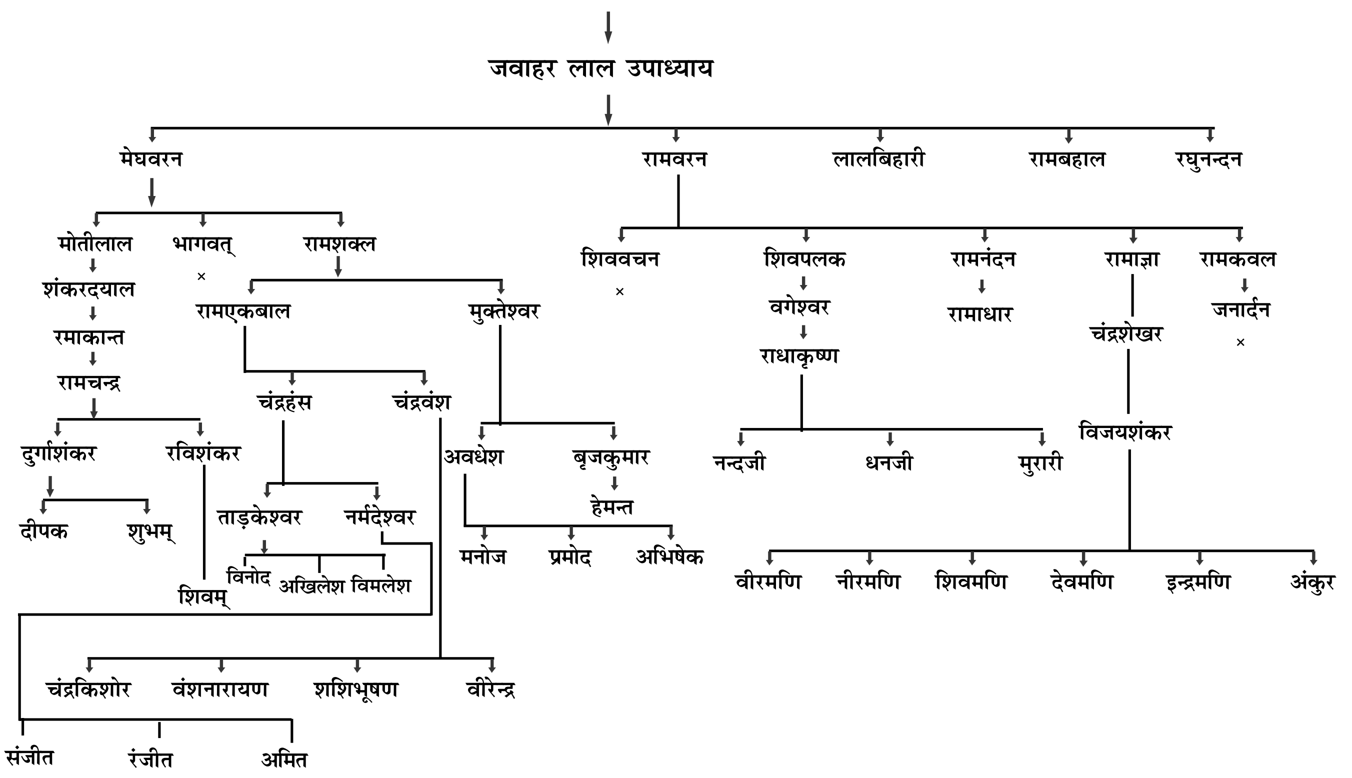

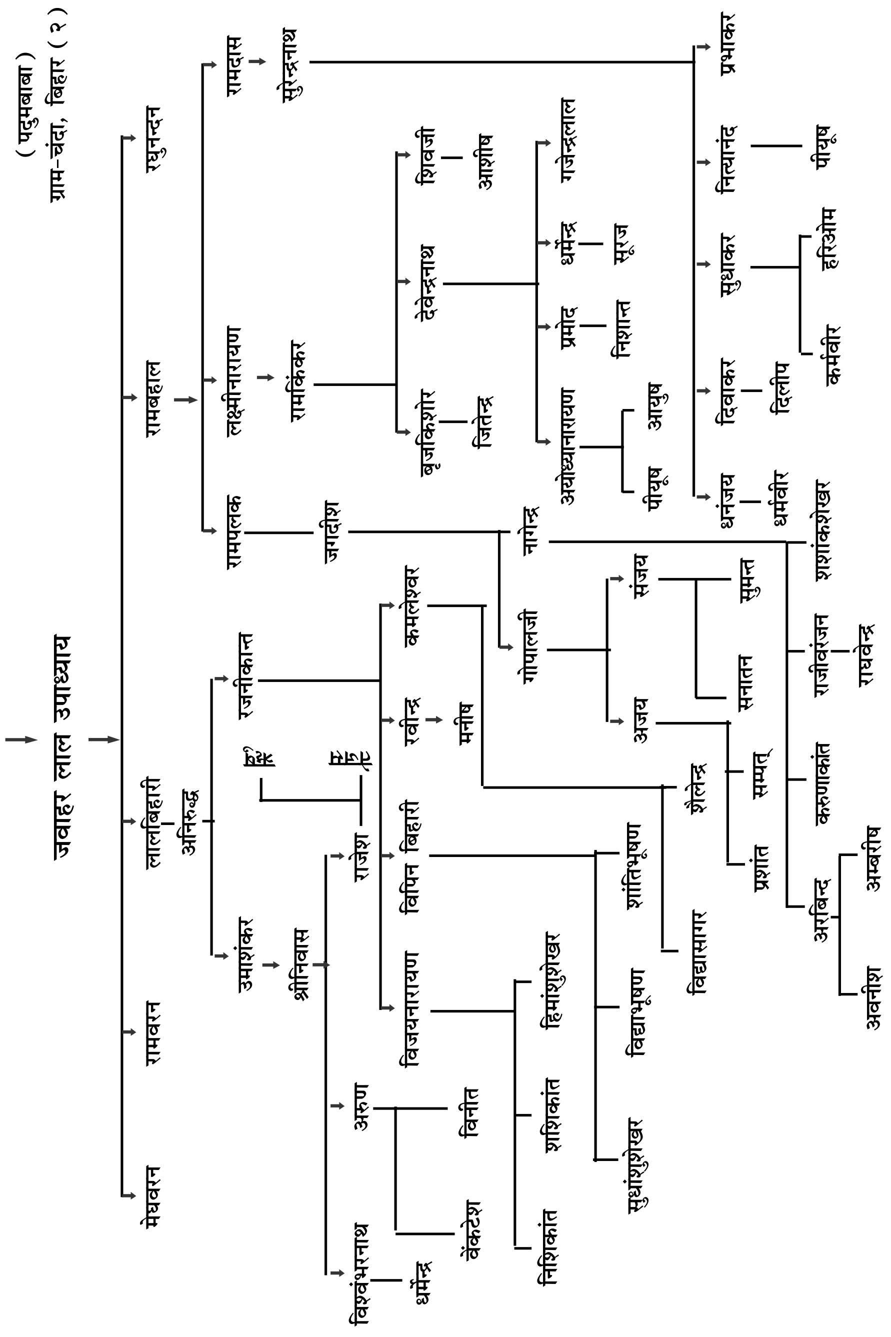
(पद्मबाबा)
ग्राम-चंद्रा, बिहार (२)
जवाहर लाल उपाध्याय
मेघवरन
रामवरन
लालबिहारी
अनिरुद्ध
रामबहाल
रघुनन्दन
उमाशंकर
रजनीकान्त
रामपलक
लक्ष्मीनारायण
रामदास
श्रीनिवास
जगदीश
रामकिंकर
सुरेन्द्रनाथ
विश्वंभरनाथ
धर्मेन्द्र
अरुण
वेंकटेश
विनीत
राजेश
विजयनारायण
विपिन बिहारी
रवीन्द्र
मनीष
कमलेश्वर
बृजकिशोर
जितेन्द्र
देवेन्द्रनाथ
शिवजी
आशीष
निशिकांत
शशिकांत
हिमांशुशेखर
नागेन्द्र
गोपालजी
अयोध्यानारायण
प्रमोद
धर्मेन्द्र
गजेन्द्रलाल
सुधांशुशेखर
विद्याभूषण
शांतिभूषण
विद्यासागर
शैलेन्द्र
अजय
संजय
पीयूष
आयुष
निशान्त
सूरज
प्रशांत
सम्पत्
सनातन
सुमन्त
धनंजय
दिवाकर
सुधाकर
नित्यानंद
प्रभाकर
धर्मवीर
दिलीप
पीयूष
अरविन्द
करुणाकांत
राजीवरंजन
शशांकशेखर
कर्मवीर
हरिओम
अवनीश
अम्बरीष
राघवेन्द्र

ग्राम —चंदा, बिहार (३)
(पदुम बाबा)

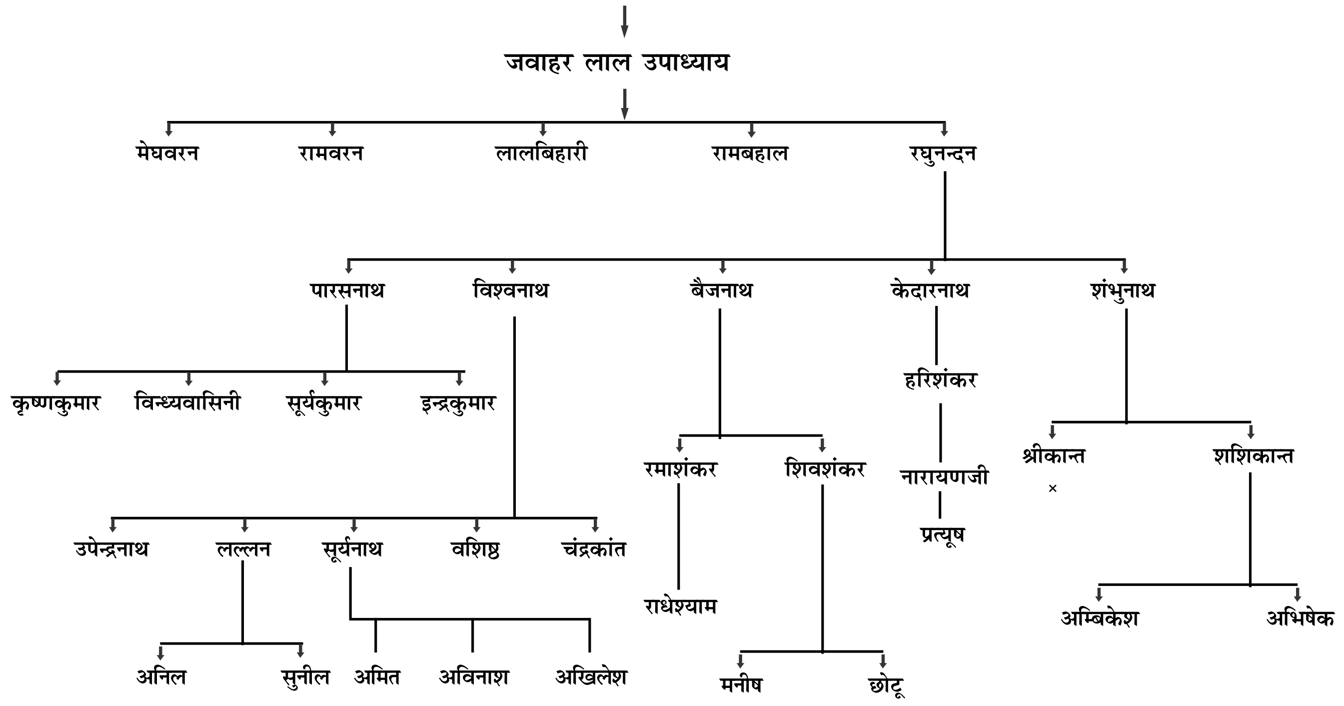

ग्राम —चौबेपुर, कैमूर, बिहार
(टीकाराम बाबा)

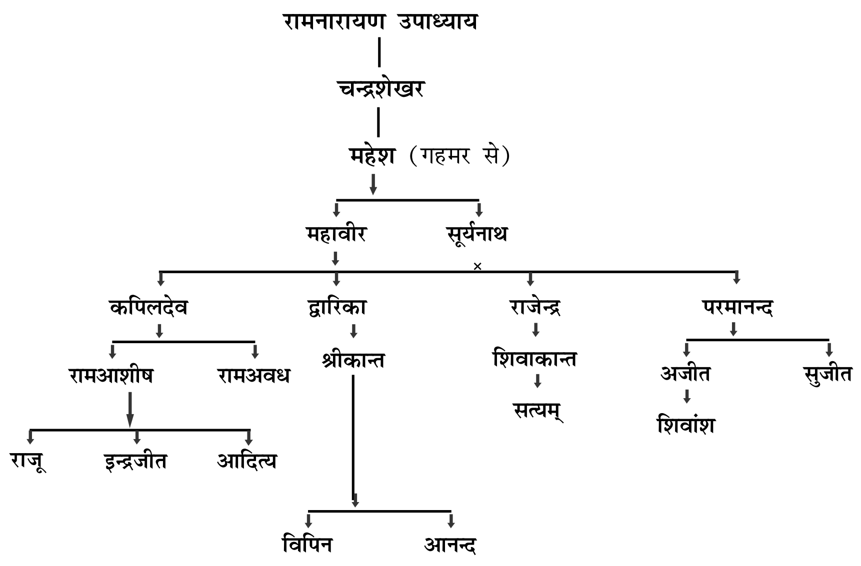

ग्राम —चौरी, कैमूर, बिहार
(पलुष बाबा)

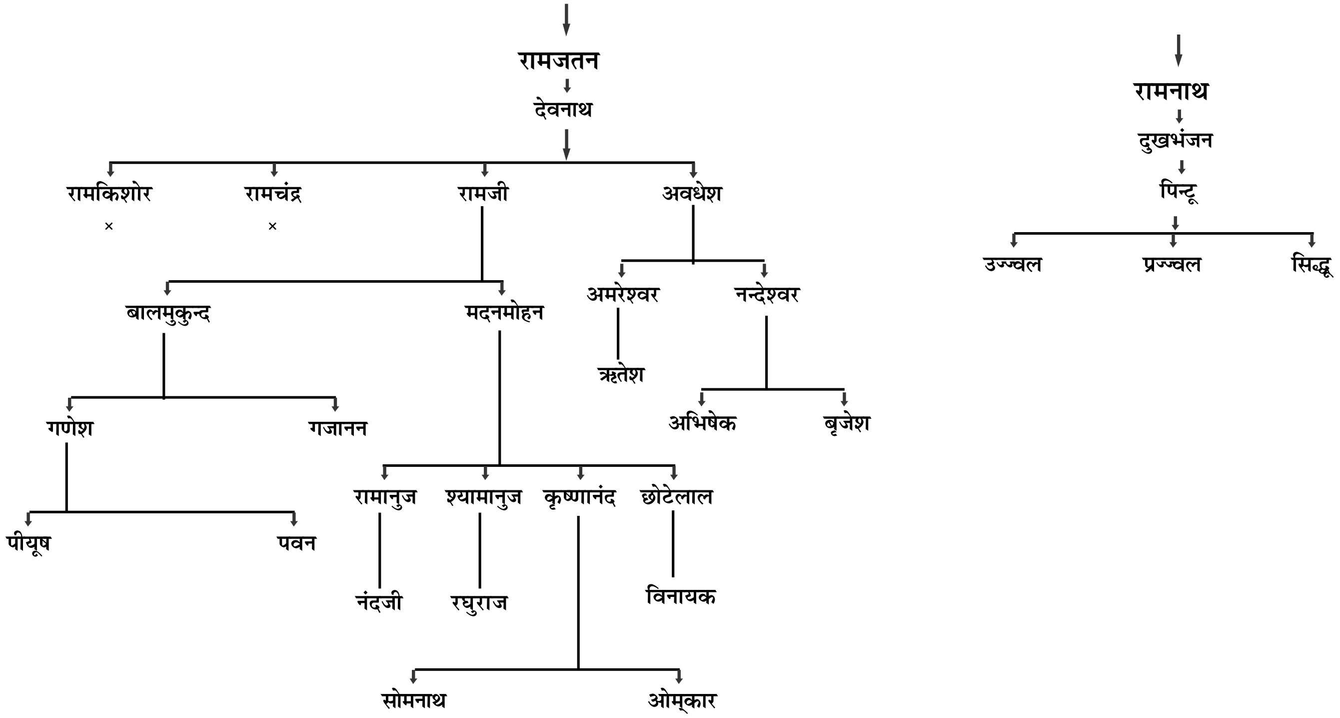

ग्राम — डरवन, बिहार
(नागबाबा)

- **द्वारिकाधीश उपाध्याय**
  - रमन
    - गोपाल
      - महावीर
        - बलदेव
          - कुलदीप ×
          - श्रीकृष्ण ×
        - संचू
          - रामाधार
            - राधेश्याम
              - धनंजय
              - पप्पू ×
              - बबुआ
              - टुनटुन
      - सीताराम ×
    - शिवव्रत
      - भूखी ×
      - भोला
        - मधुमंगल
          - शिवनाथ
            - (पड़ियारी में)
          - रामचीज
            - दीनबन्धु
              - राकेश
            - जनार्दन
              - नीरज
                - कार्तिकेय
              - निरंजन
  - प्रभुनारायण
    - जगतनारायण
      - खेदू
        - दाऊ ×
        - पोखन
          - श्रीनिवास
            - मोहन
              - बच्चन
                - भोला
              - मिथिलेश
                - प्रियांजल
              - वेदप्रकाश
            - दीनदयाल
              - अखिलेश
            - मदन ×
            - नन्दलाल
              - बिट्टू
        - हरि ×
        - राजकुमार ×
    - बलिराज
      - जीऊत
        - सरयू
          - चन्द्रशेखर
            - अनिल
              - अश्वनी
              - मनीष
            - संतोष
              - सत्यम
              - शिवम
            - सुशील
          - रामनिवास
            - संजय
              - शशांक
            - मृत्युंजय
              - सुयश
            - अजय
              - शिवांश
            - विजय
              - अंश
          - रामअवतार
            - पंकज
              - अर्पित
      - रेखा ×
      - रामदेव ×

ग्राम —डुगुरपुरा (१)
(नाग बाबा)

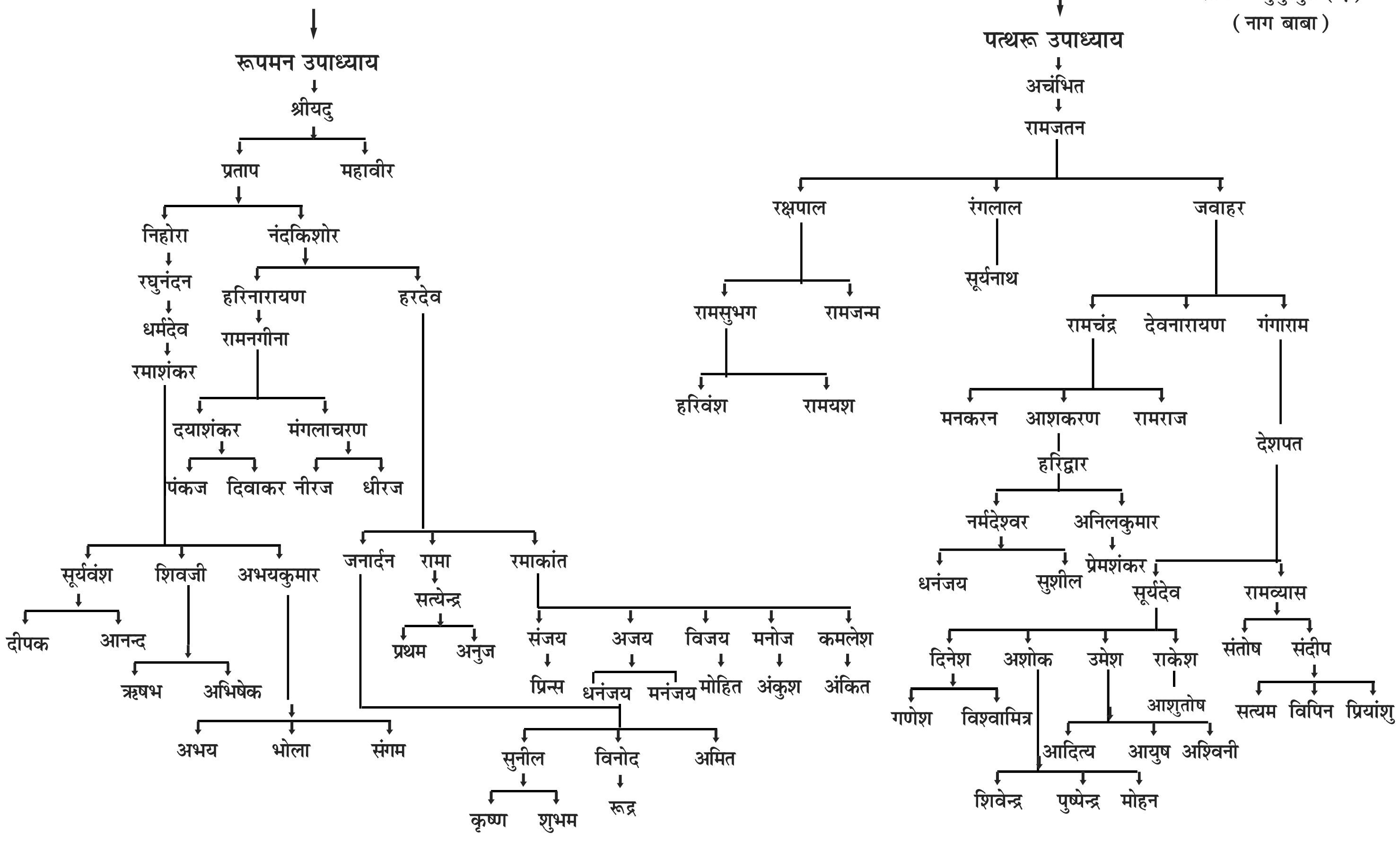

ग्राम —डुगुरपुरा (२)
(नाग बाबा)

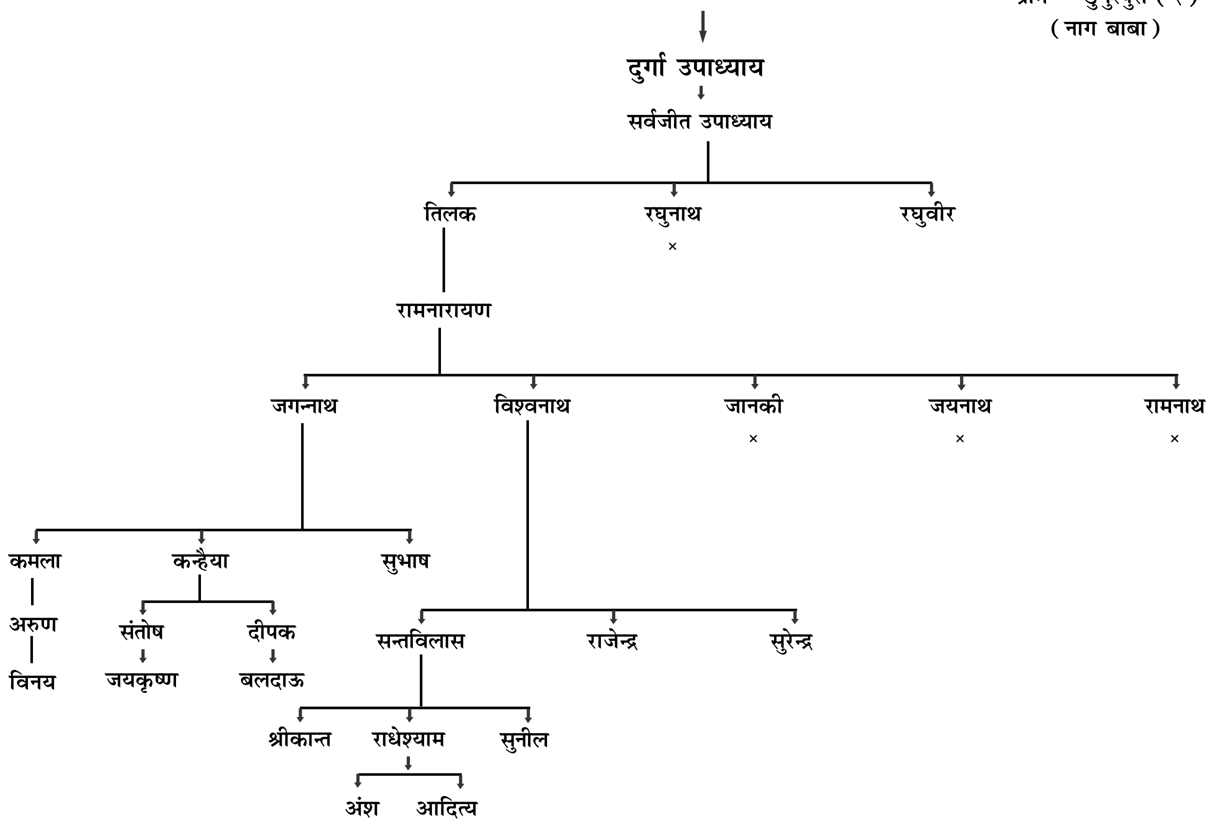

(नाग बाबा)
ग्राम-डुगरपुरा (३)

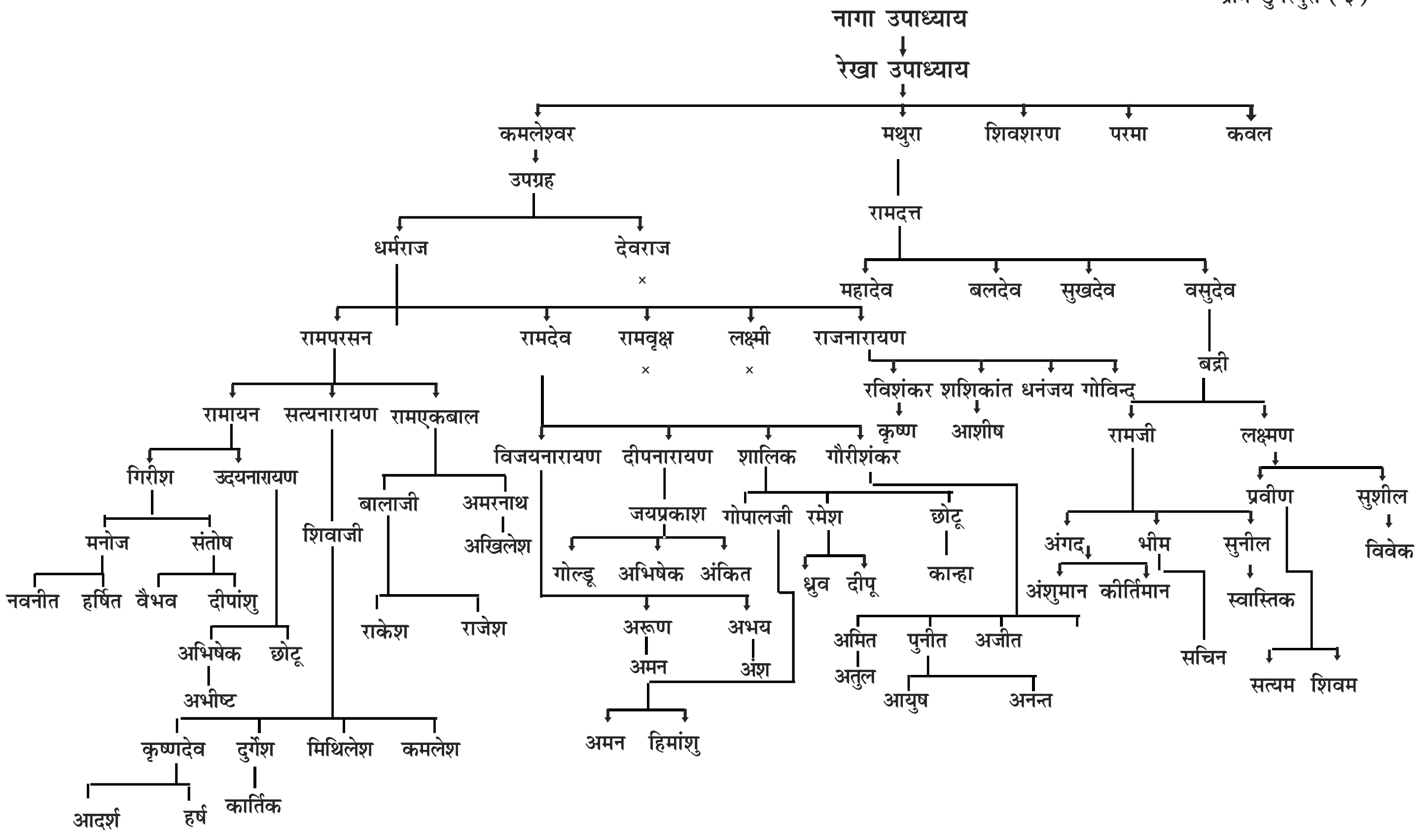

(नाग बाबा)
ग्राम-डुगरपुरा (४)

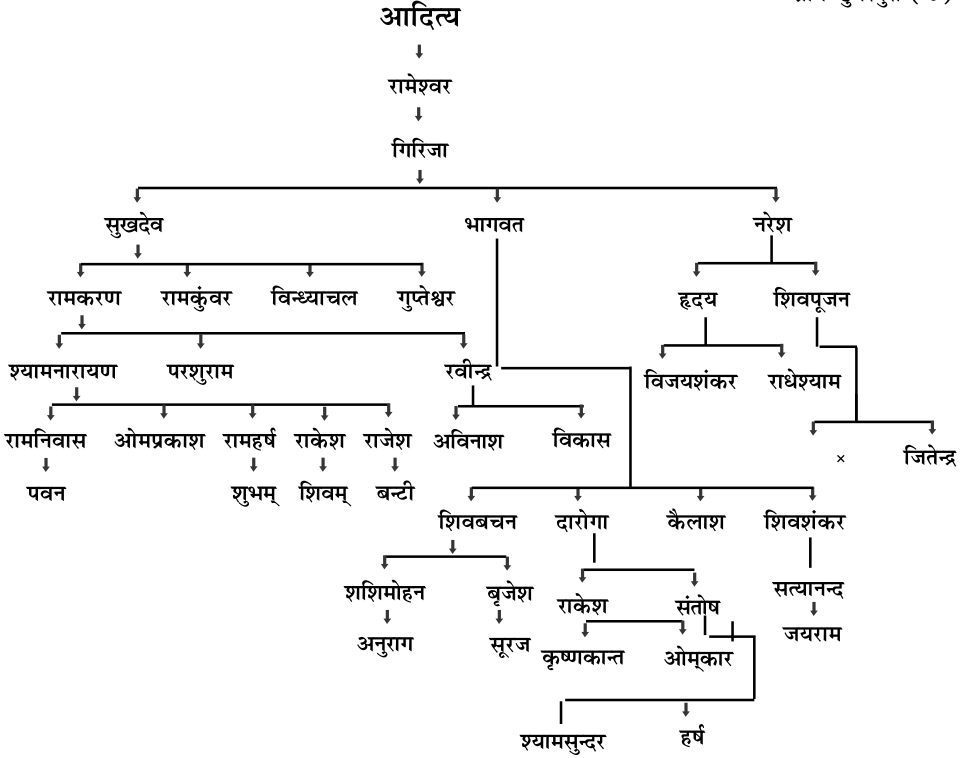

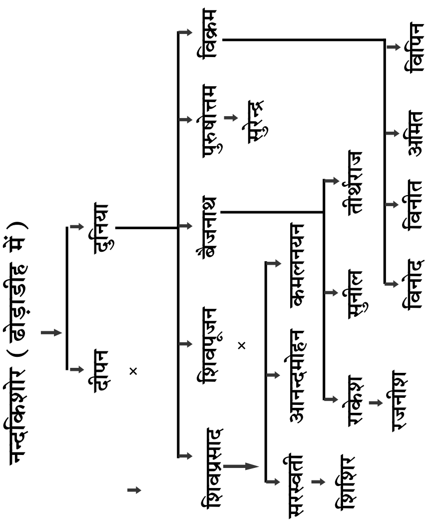
नन्दकिशोर (ढोड़ाडीह में)
दीपन
×
दुनिया
शिवप्रसाद
शिवपूजन
×
बैजनाथ
पुरुषोत्तम
विक्रम
सुरेन्द्र
सरस्वती
आनन्दमोहन
कमलनयन
शिशिर
राकेश
सुनील
तीर्थराज
रजनीश
विनोद
विनीत
अमित
विपिन

ग्राम —तेतरिया (१)
(नाग बाबा)

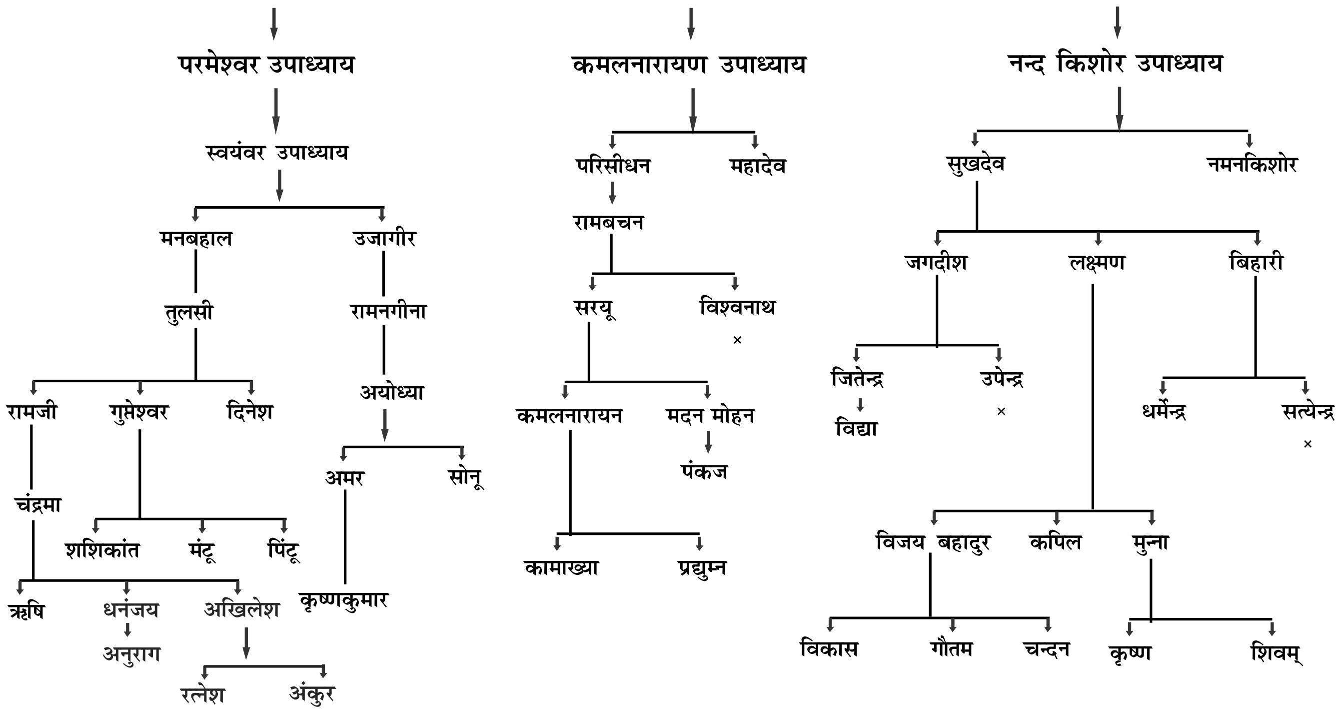

ग्राम —तेतरिया (२)
(नाग बाबा)

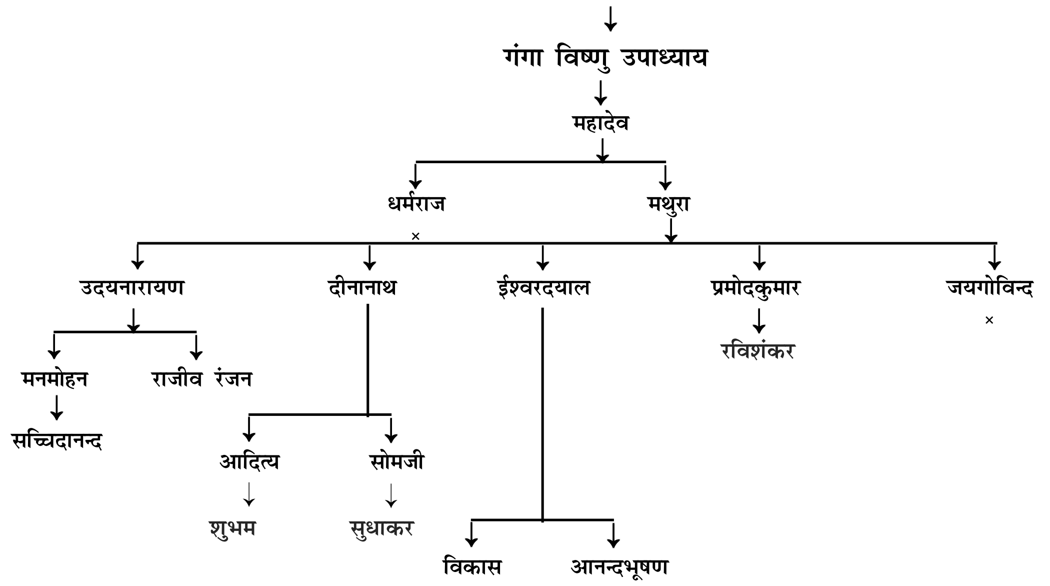

ग्राम —तेतरिया, बिहार
(३)
(नाग बाबा)

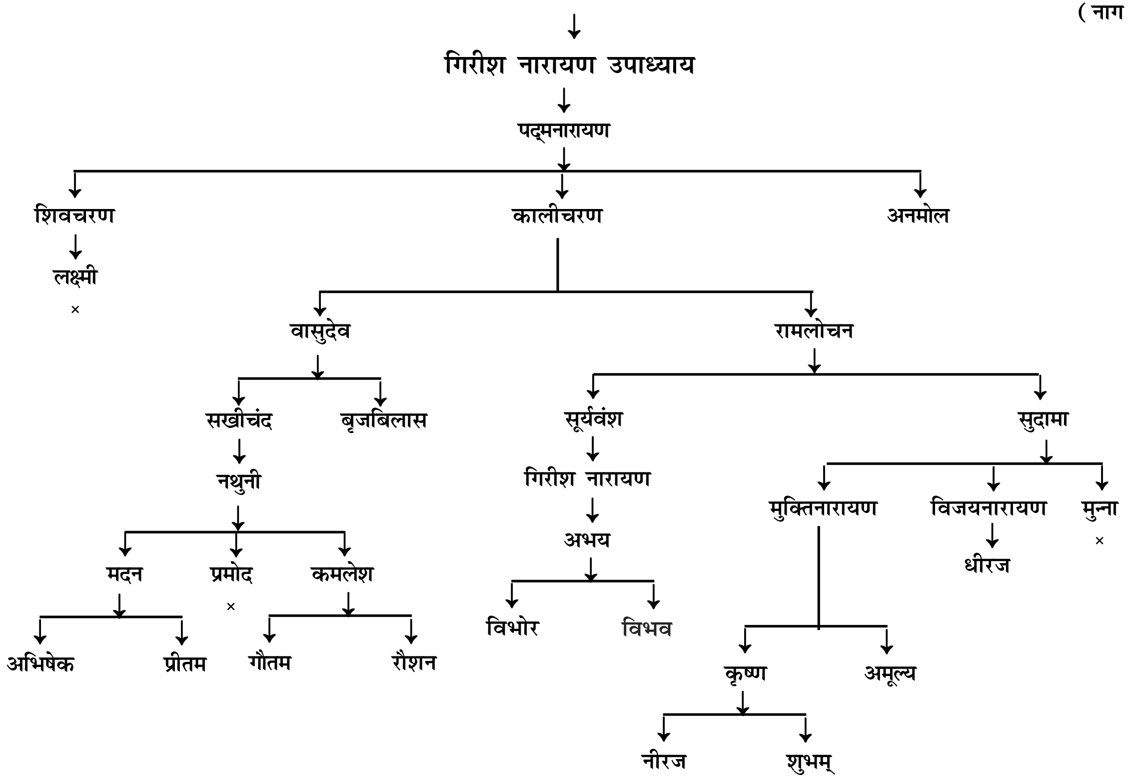

ग्राम —तेतरिया (४)
(नाग बाबा)

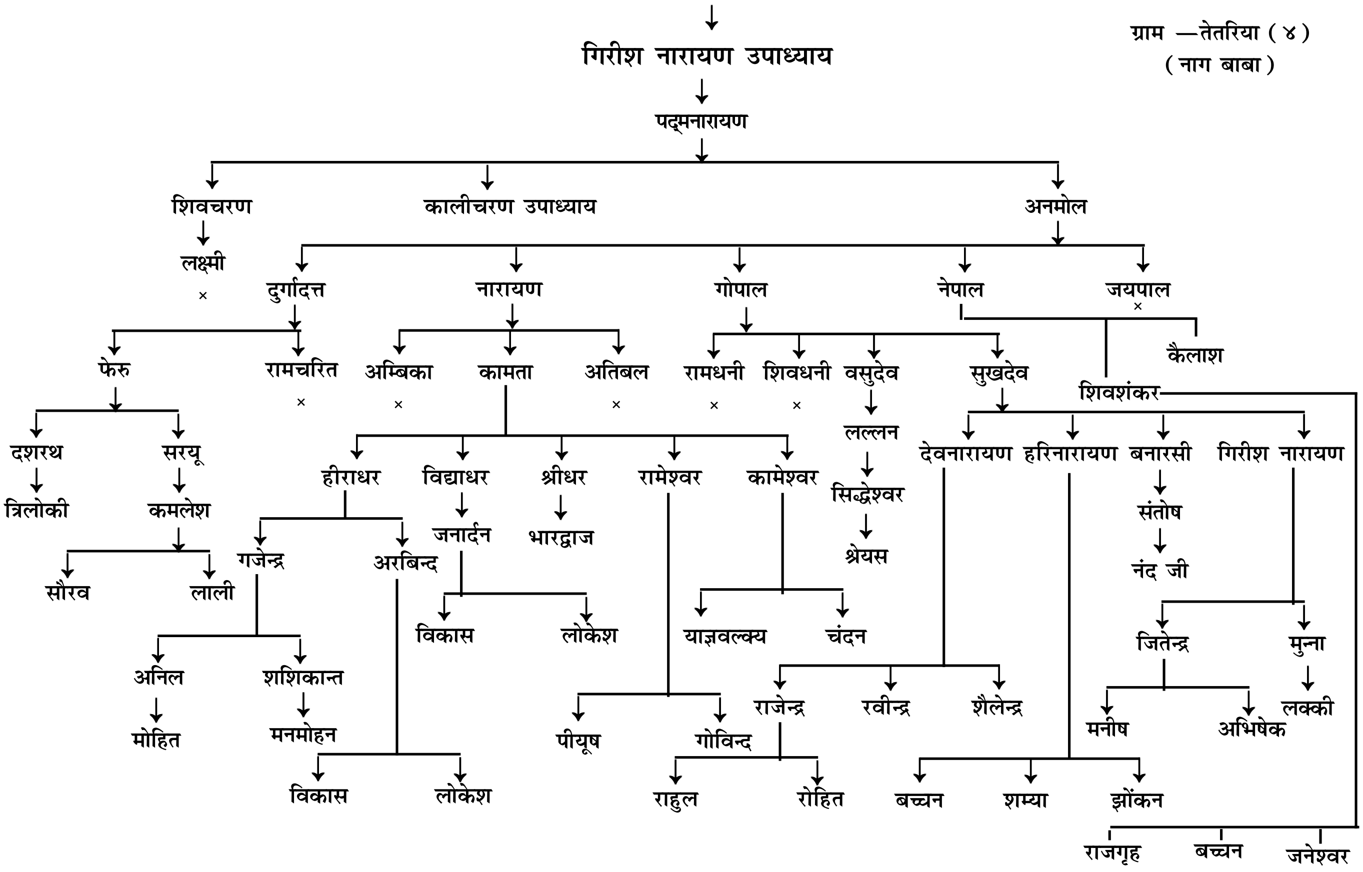

ग्राम —तेतरियाँ, बिहार (५)
(नाग बाबा)

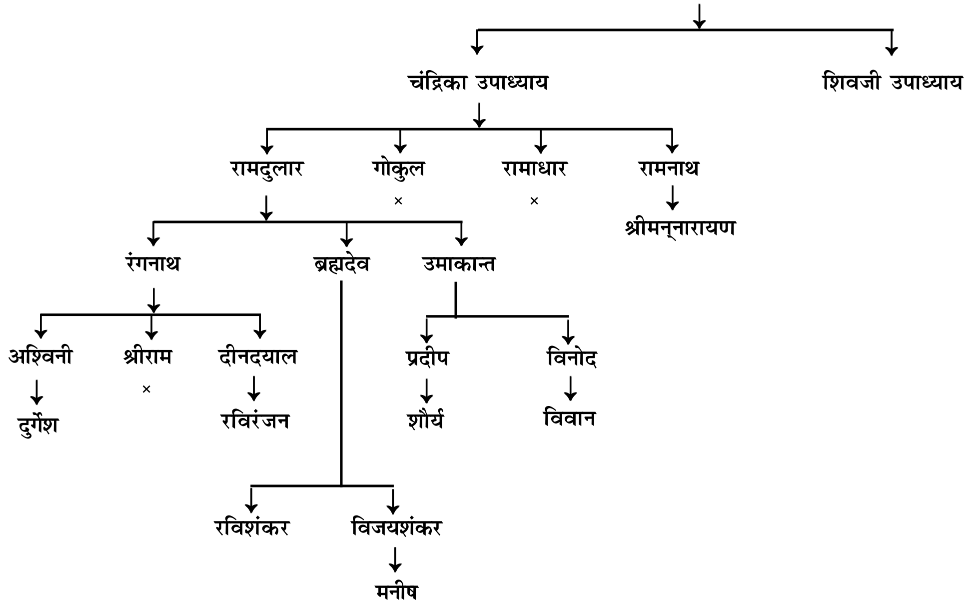

ग्राम —तेतरिया, बिहार (६)
(नाग बाबा)

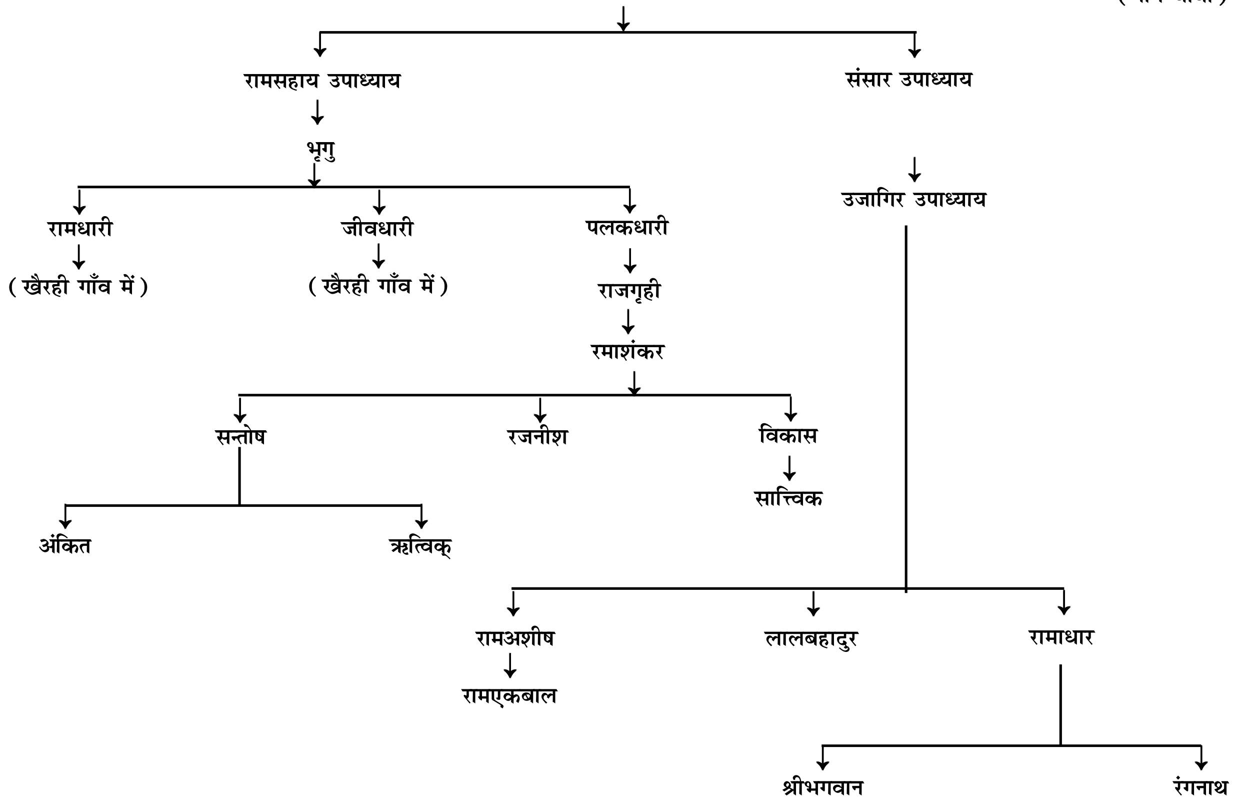

ग्राम —तेतरिया, बिहार (७)
(नाग बाबा)

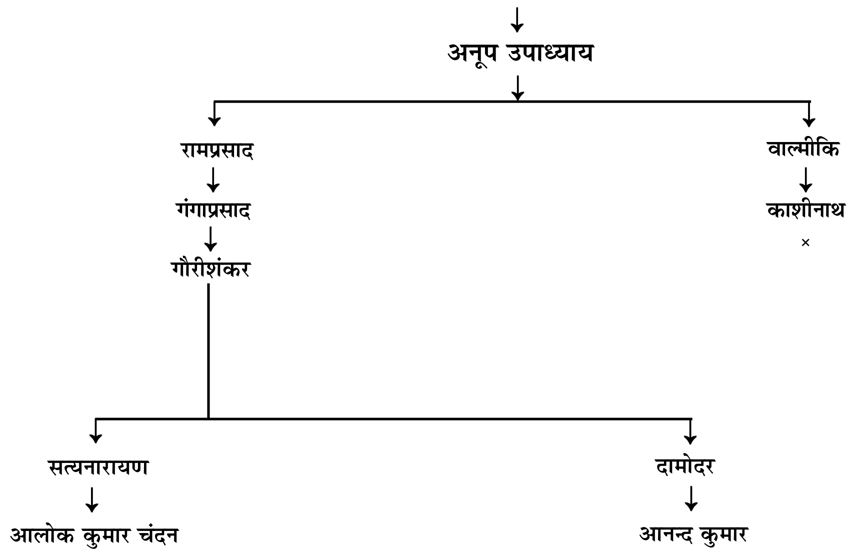

ग्राम —तेतरिया (८)
(नाग बाबा)

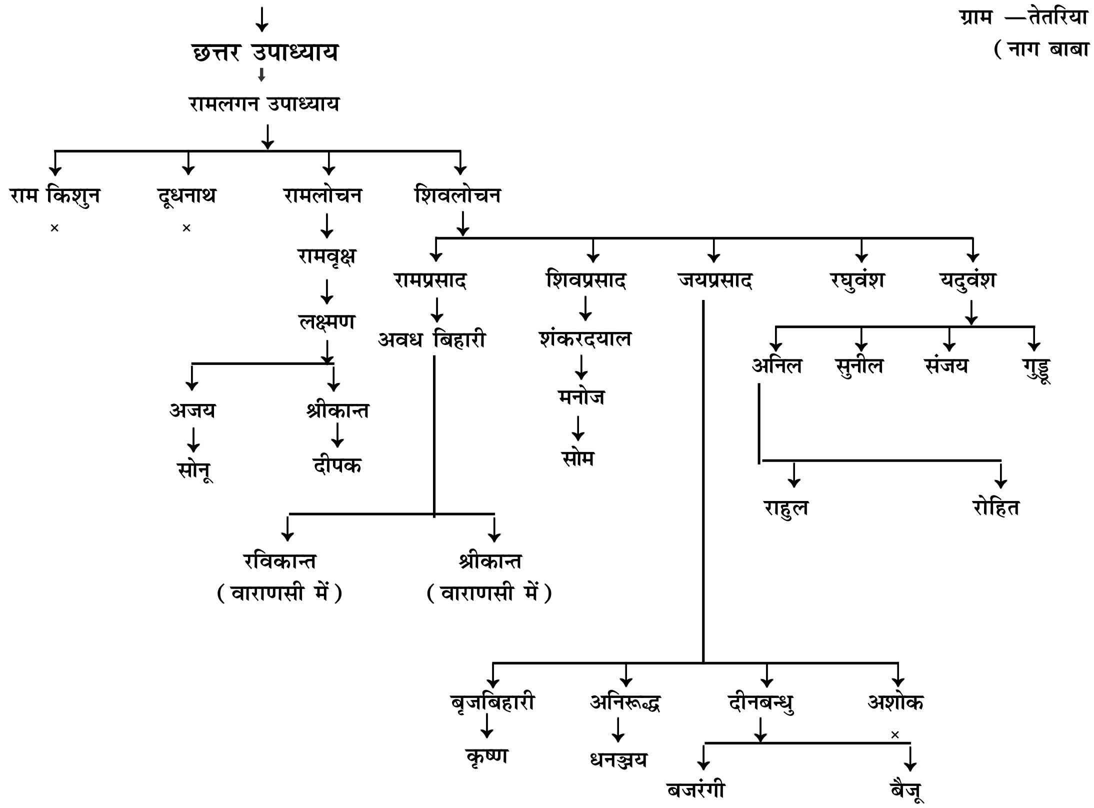

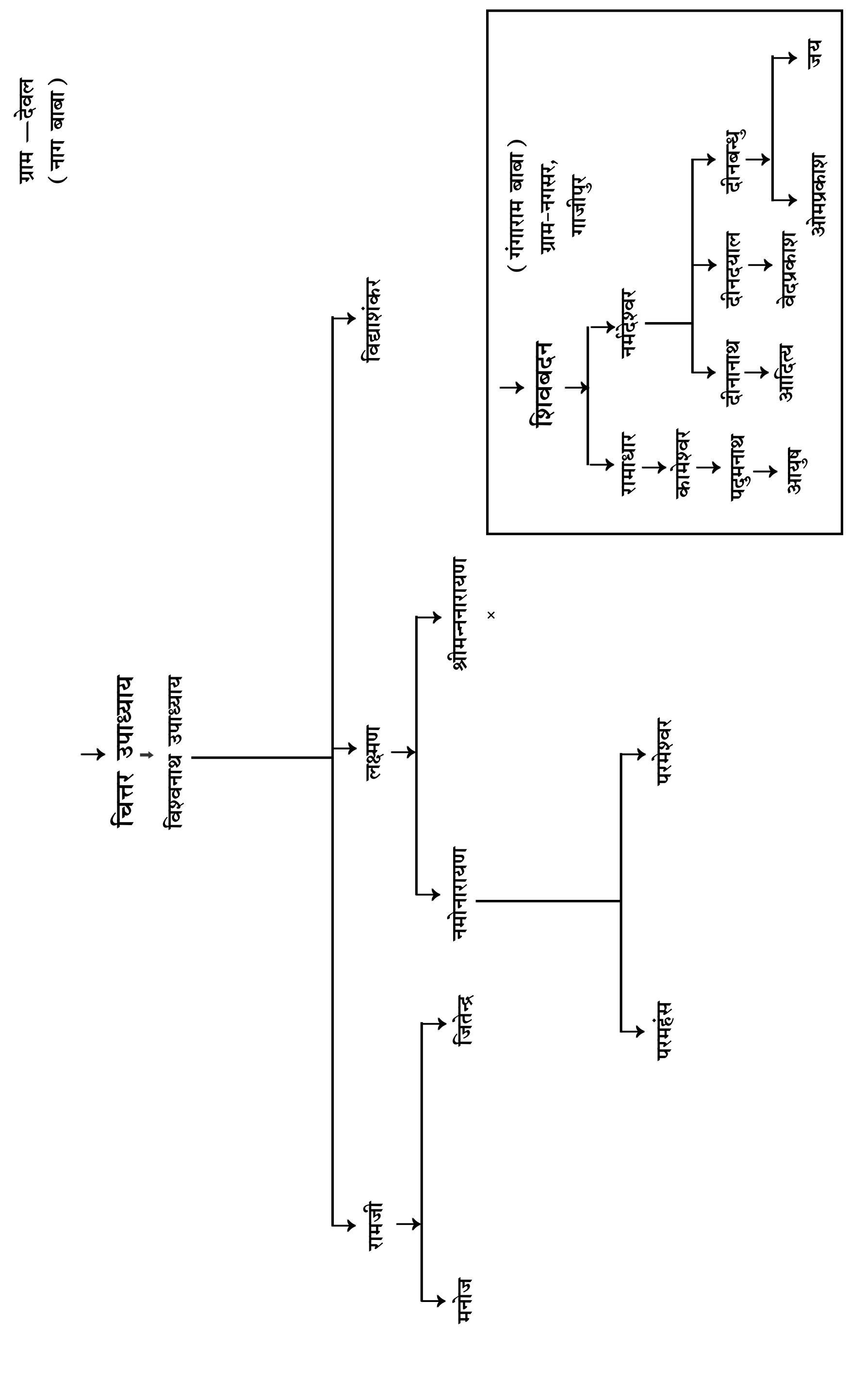
ग्राम —देवल
(नाग बाबा)
चितर उपाध्याय
विश्वनाथ उपाध्याय
विद्याशंकर
लक्ष्मण
रामजी
श्रीमन्ननारायण ×
नमोनारायण
परमेश्वर
परमहंस
जितेन्द्र
मनोज
(गंगाराम बाबा)
ग्राम–नगसर,
गाजीपुर
शिवबदन
रामाधार
कामेश्वर
पद्मनाथ
आयुष
नर्मदेश्वर
दीनानाथ
आदित्य
दीनदयाल
वेदप्रकाश
दीनबन्धु
ओमप्रकाश
जय

ग्राम–नाद, रोहतास, बिहार
(पदुम बाबा)

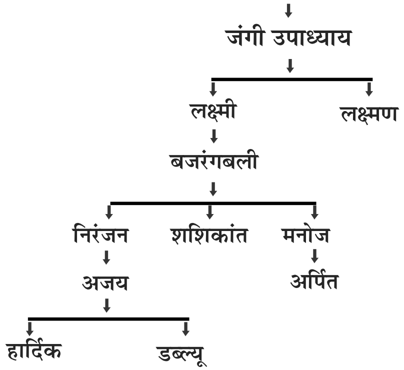

ग्राम-पचौरी (१)
(टीकाराम बाबा)

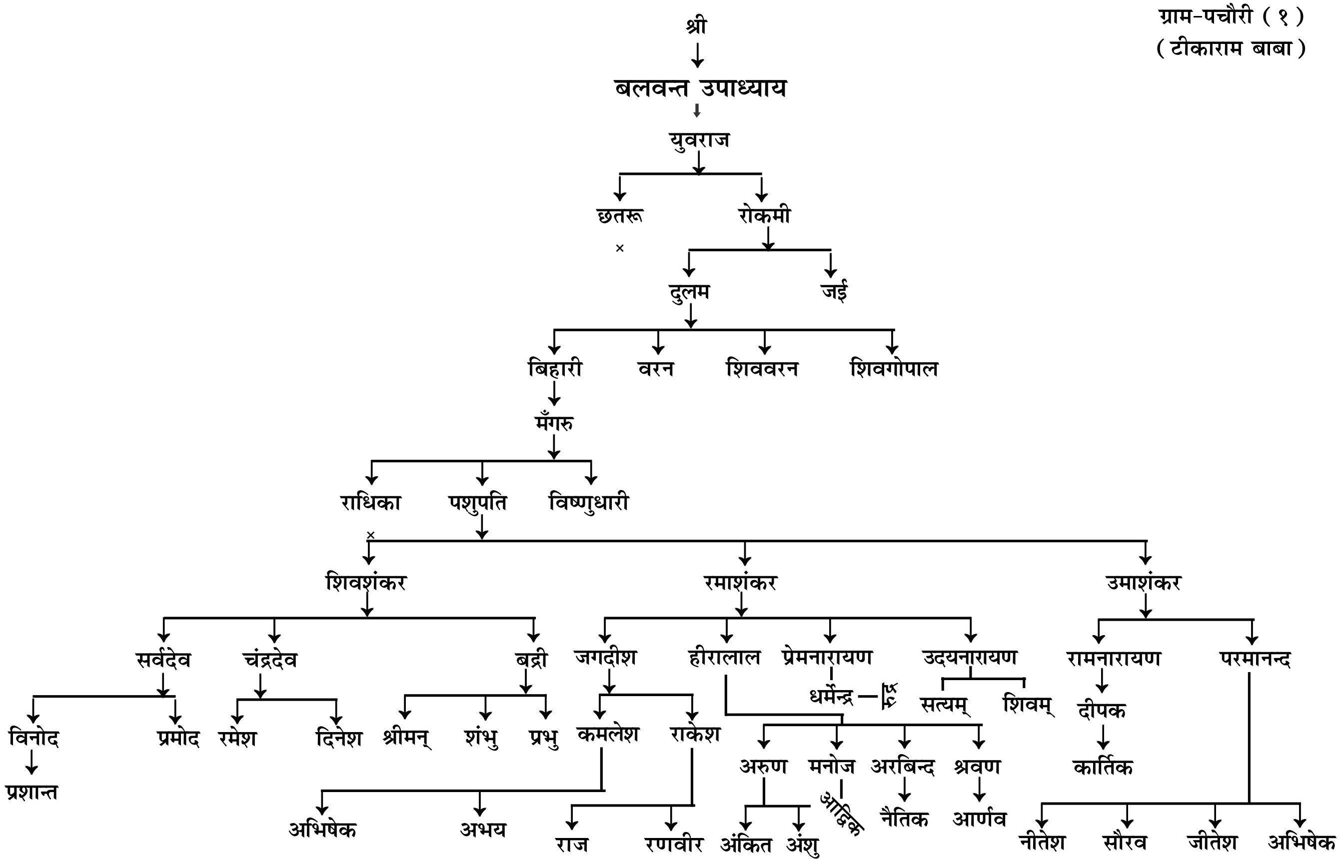

ग्राम —पचौरी (२)
(टीकाराम बाबा)

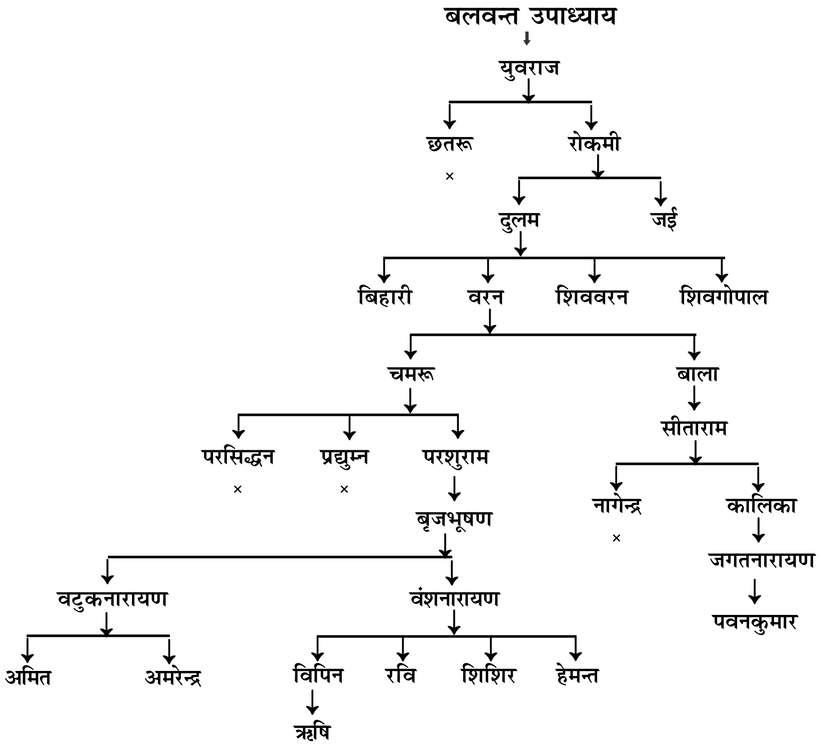

ग्राम —पचौरी (३)
(टीकाराम बाबा)

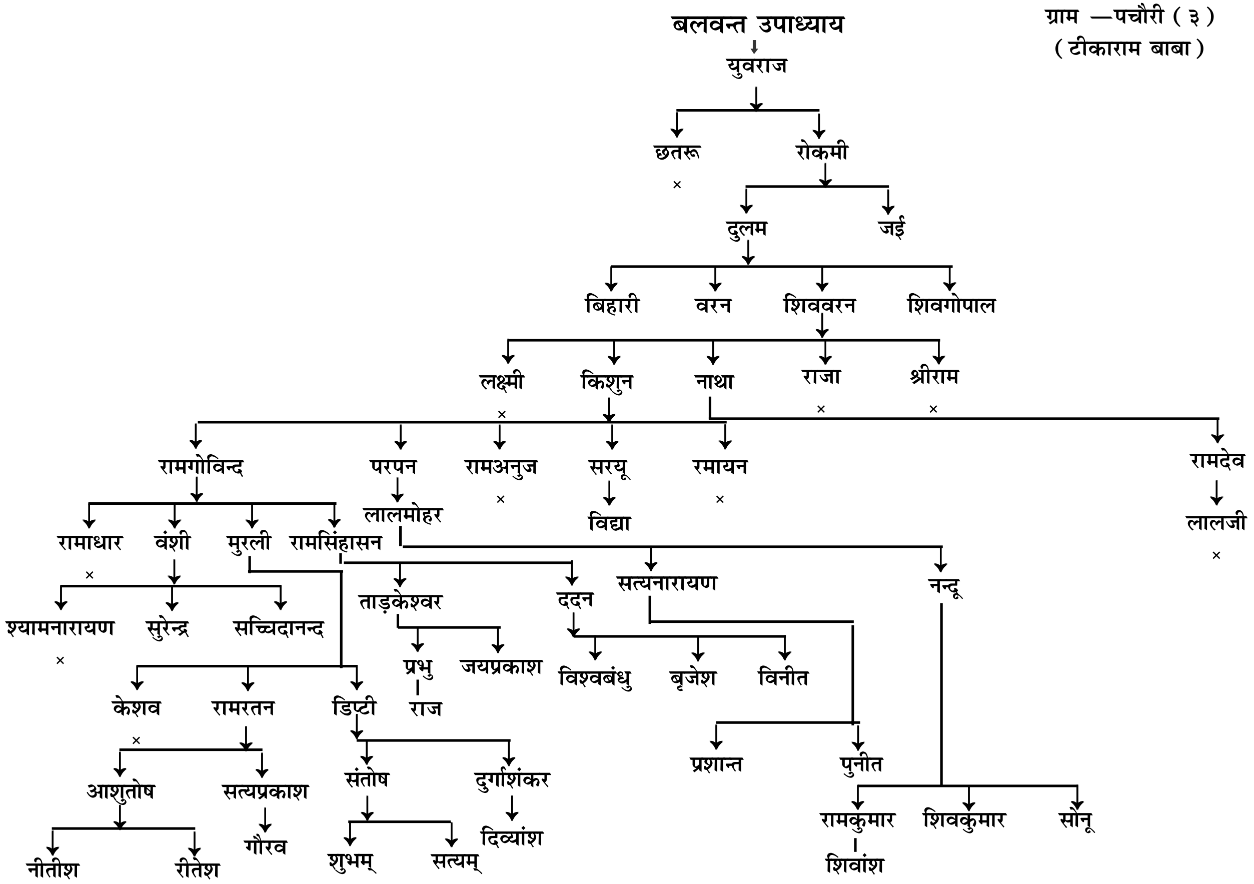

ग्राम- पचौरी (४)
(गंगाराम बाबा से)

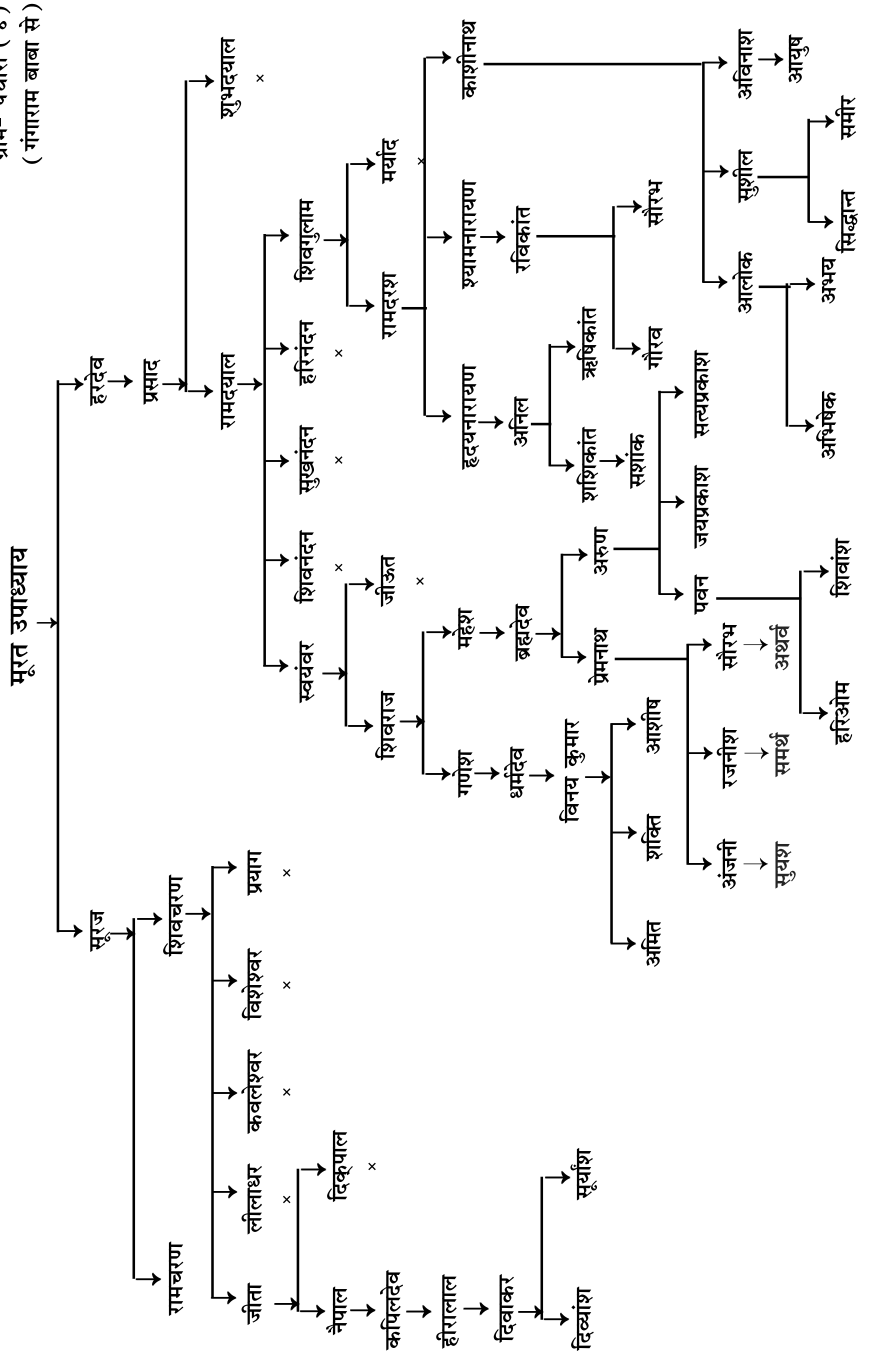

ग्राम —पड़ियारी, कैमूर
(बिहार) नाग बाबा

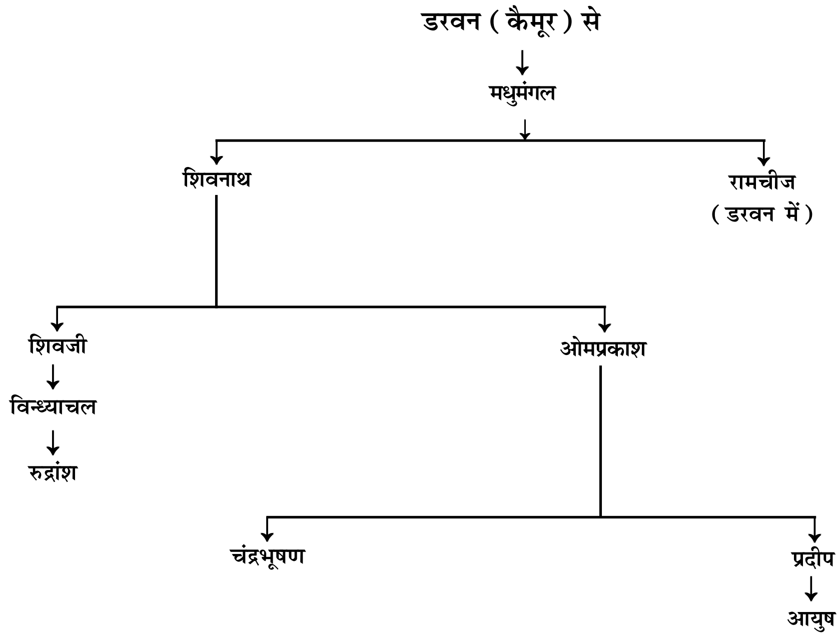

ग्राम-पानापुर, रोहतास, बिहार

(पदुम बाबा)

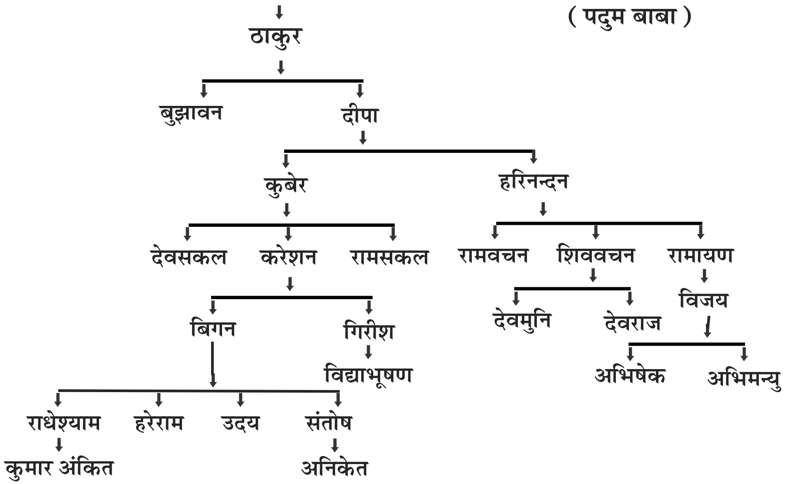

ग्राम-पंडितपुरा, रोहतास, बिहार (१)

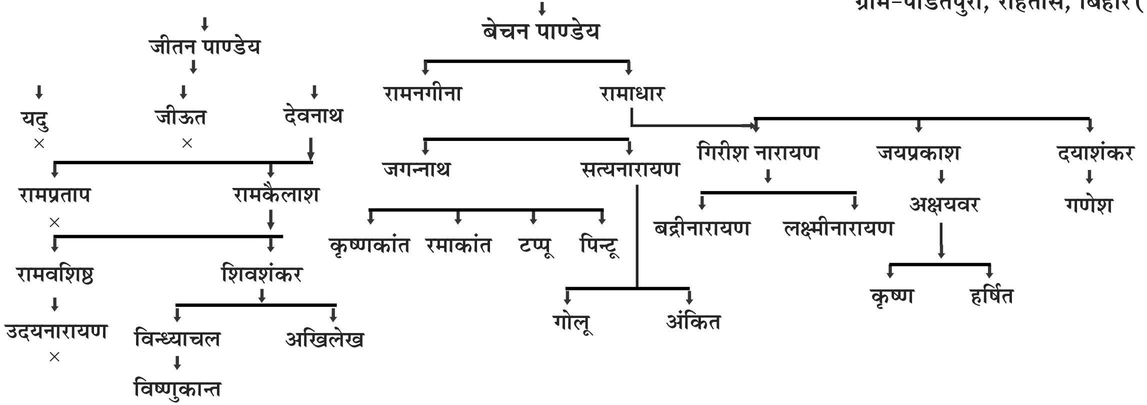

विशेष : ग्राम-पंडितपुरा में निवास करने वाले लोगों के पूर्वज मूल रूप से 'गहमर' से सकास, रोहतास, बिहार गये, फिर वहाँ से इनके वंशज पंडितपुरा में पाण्डेय उपपद वाले के उत्तराधिकारी बने। फलस्वरुप ये उपाध्याय उपपद छोड़कर 'पाण्डेय' ग्रहण किये। मूल रुप से ये लोग पराशर गोत्रीय, गंगेश्वर बाबा के ही वंशज हैं।

ग्राम-पंडितपुरा, रोहतास, बिहार (२)

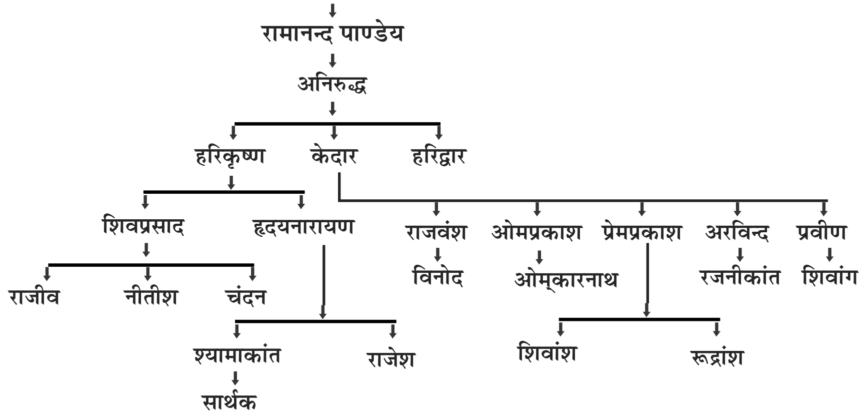

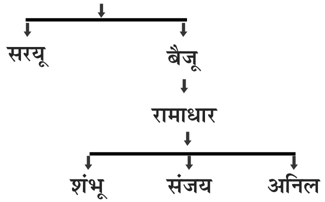

ग्राम-बगाढ़ी (१)
(नाग बाबा)

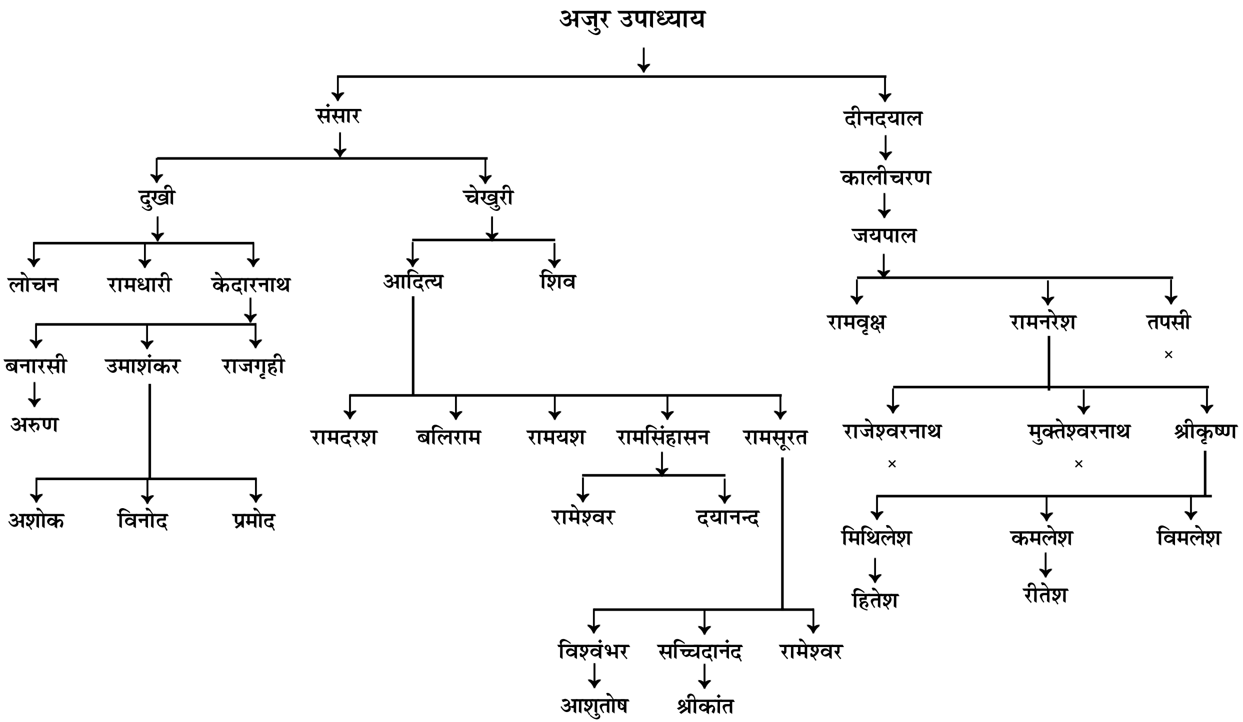

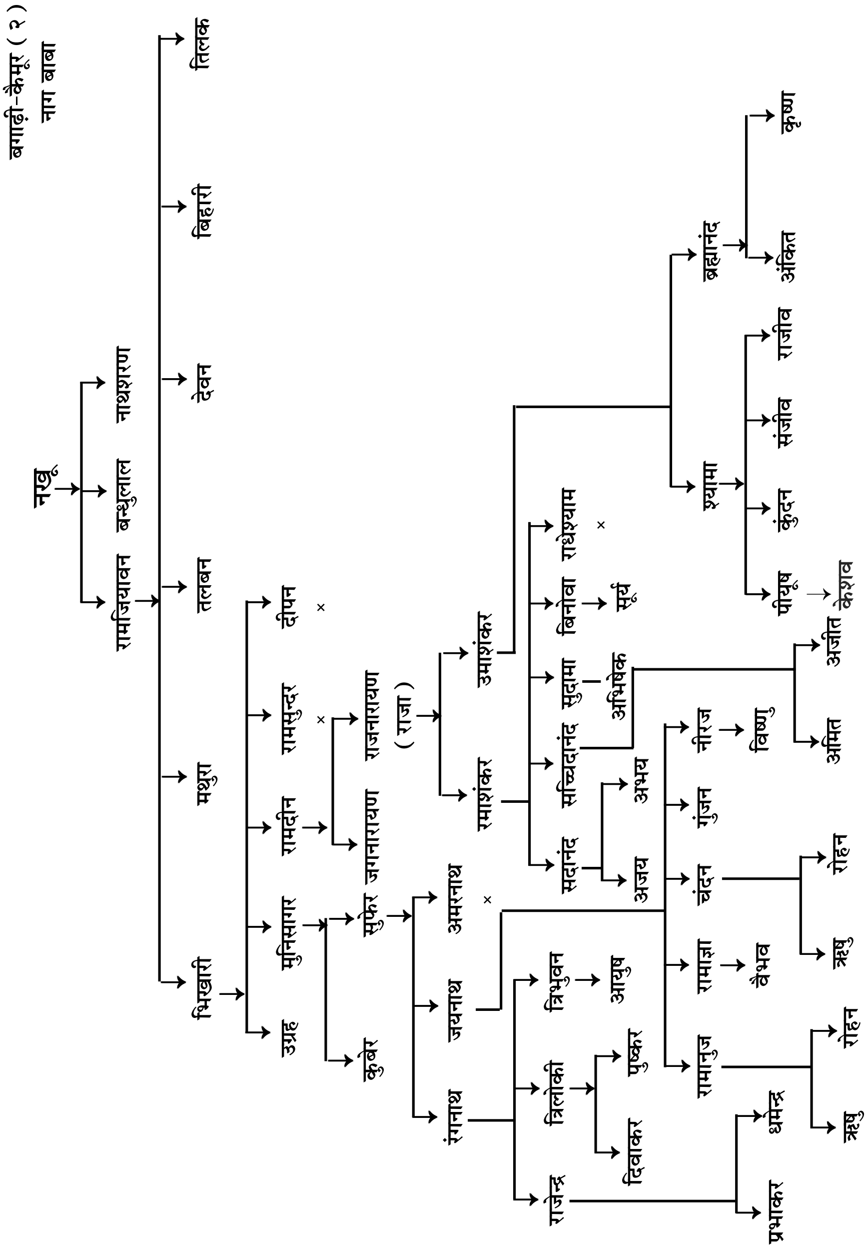
बगाढ़ी-कैमूर (२)
नाग बाबा
नथु
रामजियावन
बन्धुलाल
नाथशरण
भिखारी
मथुरा
तलबन
देवन
बिहारी
तिलक
उग्रह
मुनिसागर
रामदीन
रामसुन्दर
दीपन
कुबेर
सुफेर
जगनारायण
राजनारायण
(राजा)
रंगनाथ
जयनाथ
अमरनाथ
रमाशंकर
उमाशंकर
राजेन्द्र
त्रिलोकी
त्रिभुवन
दिवाकर
पुष्कर
आयुष
सदानंद
सच्चिदानंद
सुदामा
बिनोवा
राधेश्याम
अजय
अभय
अभिषेक
सूर्य
रामानुज
रामाज्ञा
चंदन
गुंजन
नीरज
वैभव
विष्णु
श्यामा
ब्रह्मानंद
प्रभाकर
धर्मेन्द्र
ऋषु
रोहन
ऋषु
रोहन
अमित
अजीत
पीयूष → केशव
कुंदन
संजीव
राजीव
अंकित
कृष्णा

बगाढ़ी-कैमूर (३)
नाग बाबा

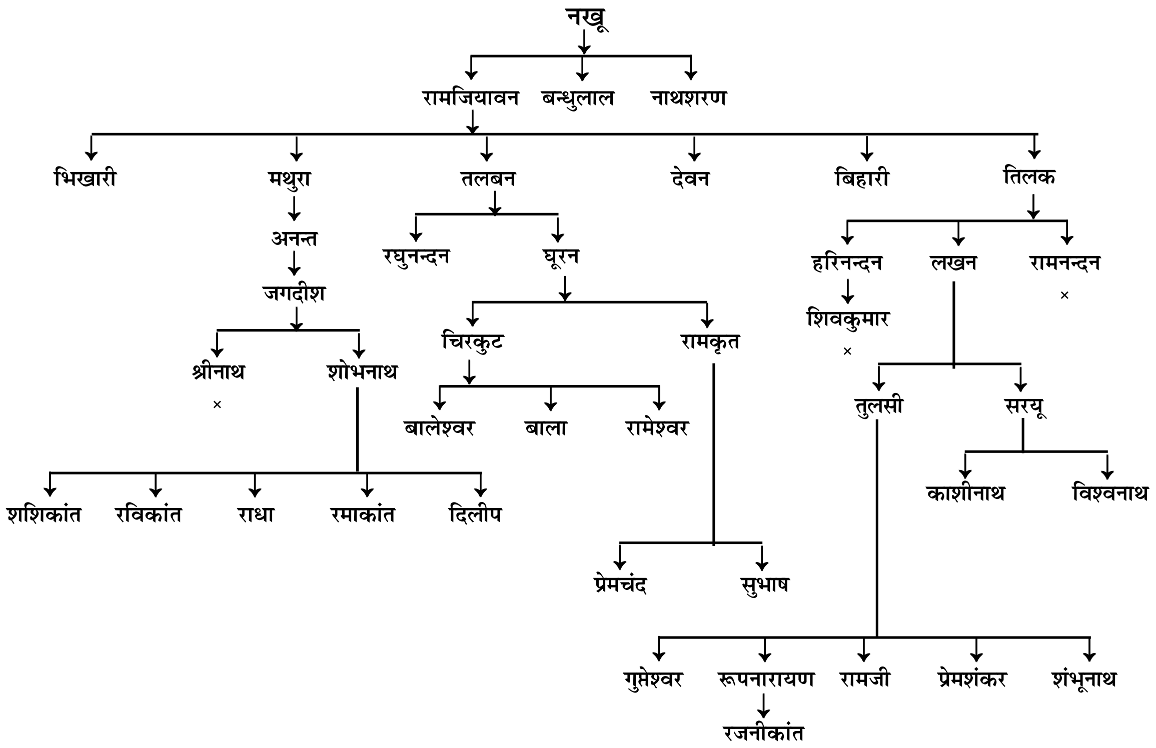

ग्राम-बगहीं, बक्सर (१)
(पलुष बाबा)

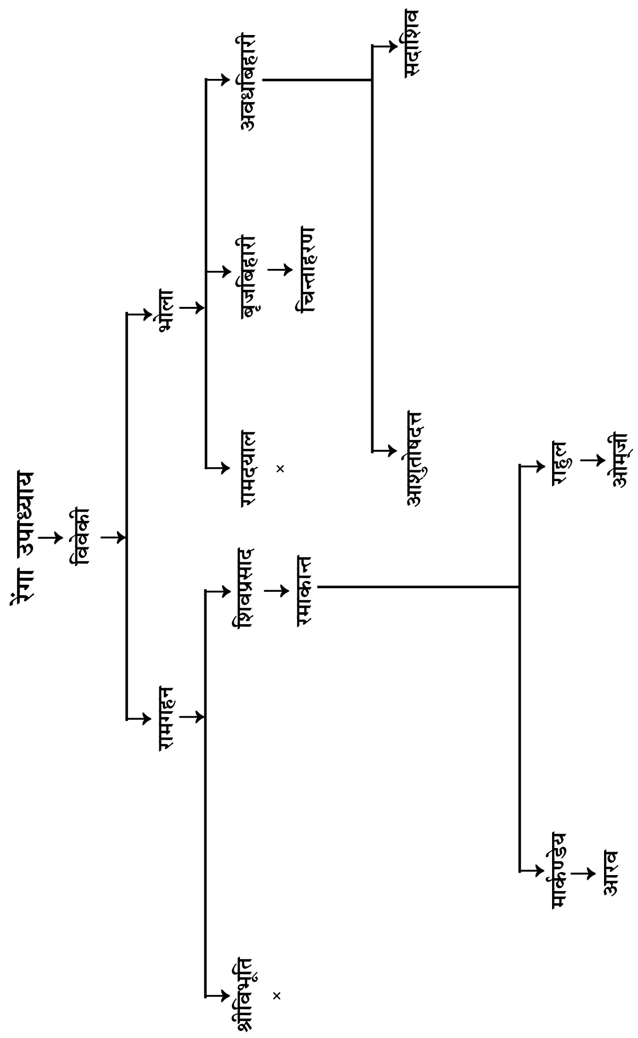

ग्राम-बगहीं, बक्सर (२)
बिहार (पलुष बाबा)

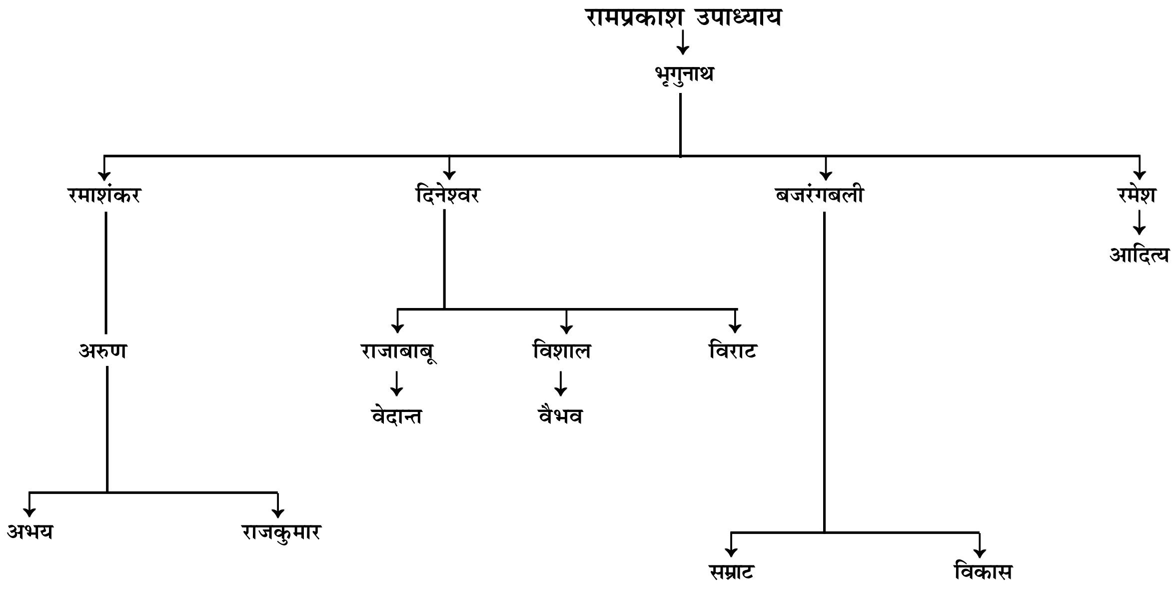

ग्राम–बगहीं, बक्सर (३)
बिहार (पलुष बाबा)

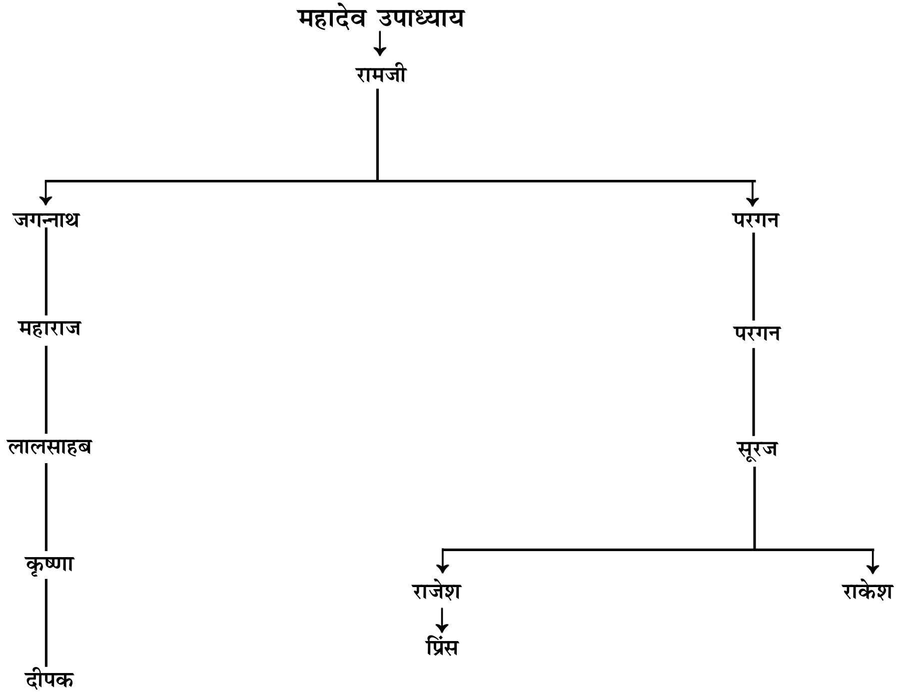

ग्राम-बरनाँव (१) भोजपुर,
बिहार
(पलुष बाबा)

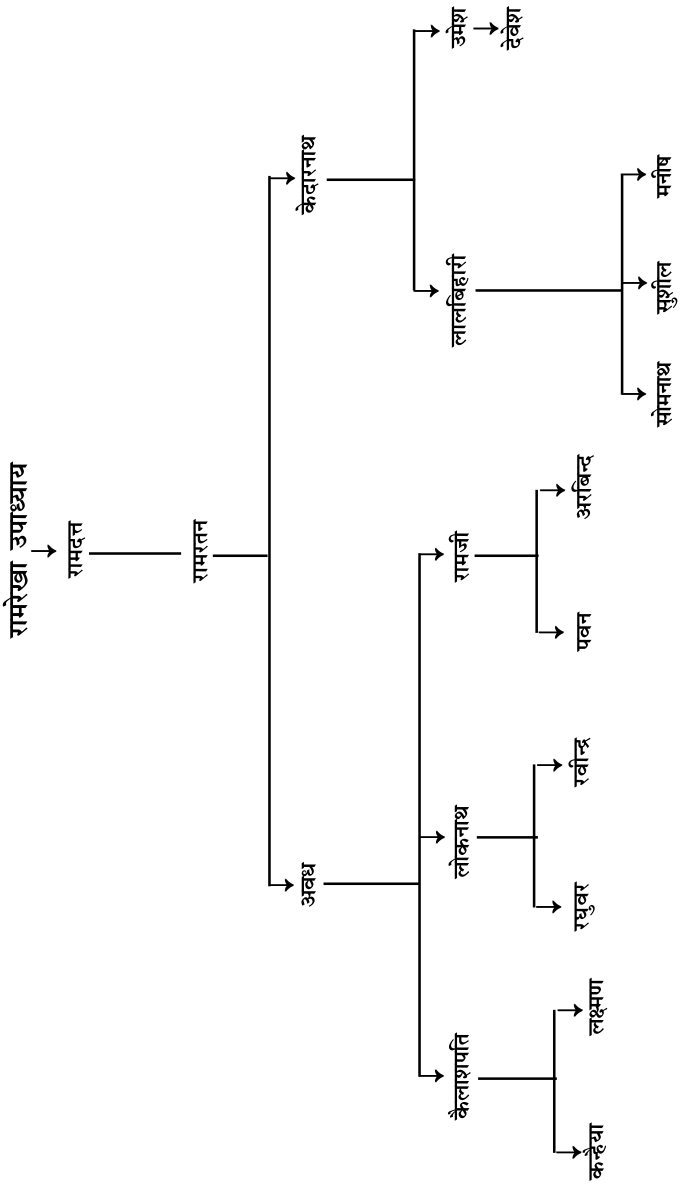

ग्राम-बरनाँव (२)
भोजपुर, बिहार
(पलुष बाबा)

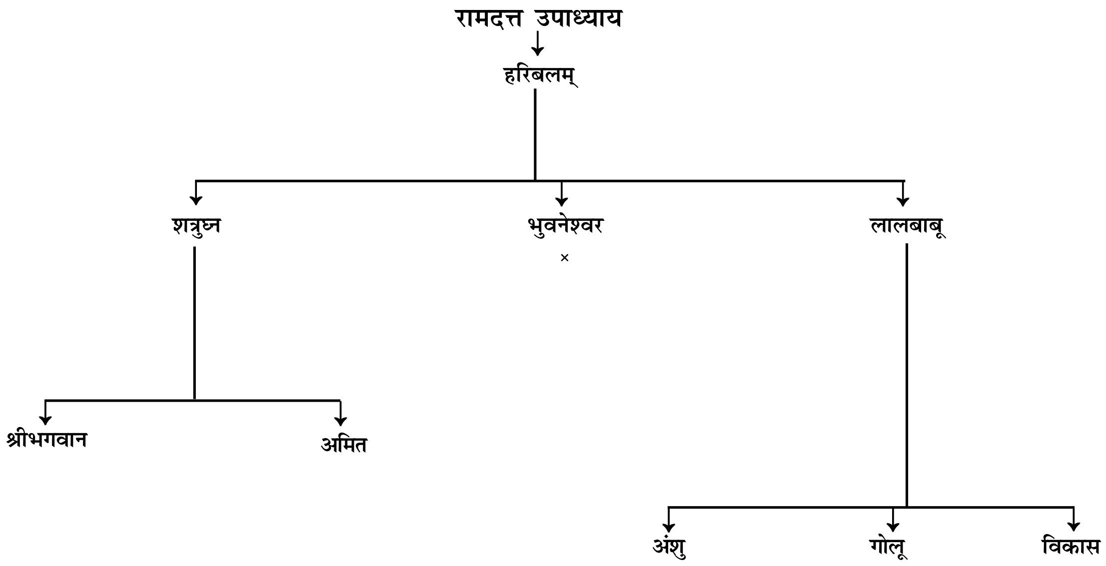

बासनपुर, कैमूर, बिहार
(टीकाराम बाबा)

- **वासुदेव उपाध्याय**
  - रामसहाय
    - देवराज (गहमर से)
      - महादेव
        - सीताराम
          - कपिलदेव (गर्रा में)
          - कैलाश
            - रामबली
              - विकास
          - दीनानाथ
            - चंद्रबली
              - अभिषेक
              - अनूप
            - बीरबली
              - आशीष
              - आलोक
              - अतुल
            - उमेश ×
          - रामनाथ
            - धनंजय
              - कमलेश
              - विमलेश
            - अनिल
              - विनय
              - विनीत
      - सहदेव ×
      - रामदास
        - बदन ×
        - मार्कण्डेय
          - रामअवतार
            - गोविन्द
              - मोहित
          - श्रीरामजी
            - अजय
            - श्रवण
            - भरत
            - चन्दन

ग्राम-बारा (उ०प्र०)
(नाग बाबा)

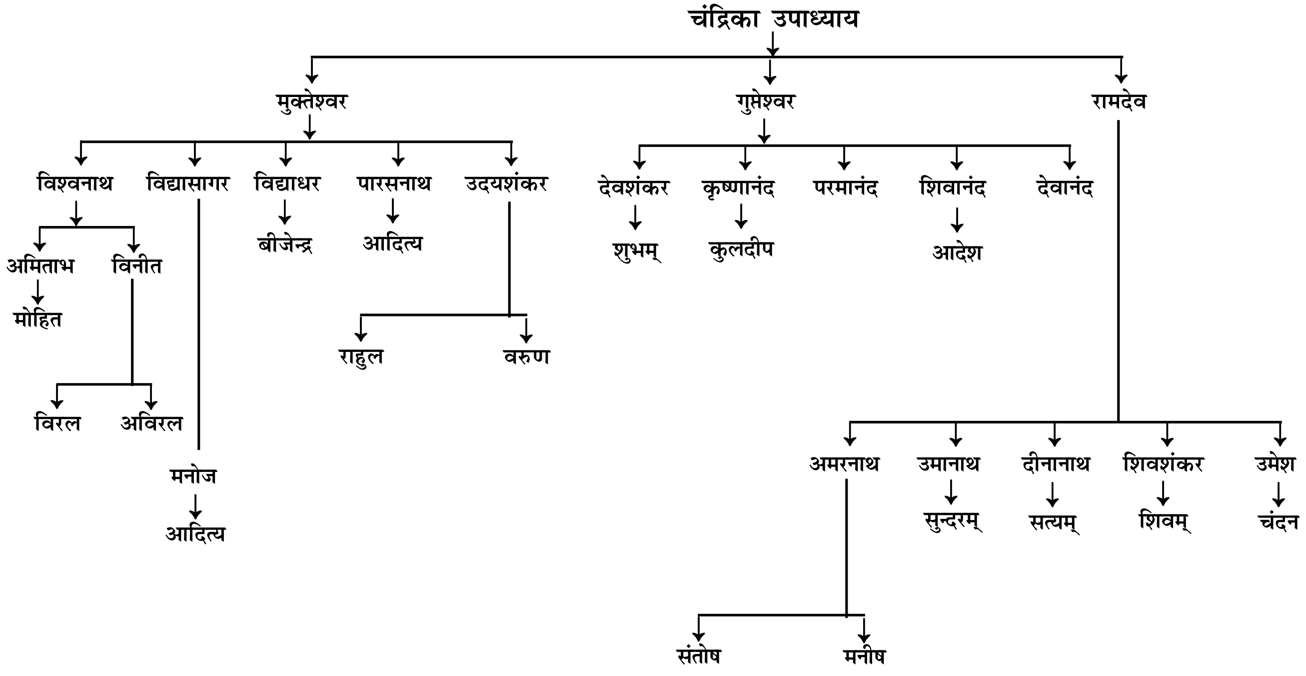

ग्राम-भगीरथपुर

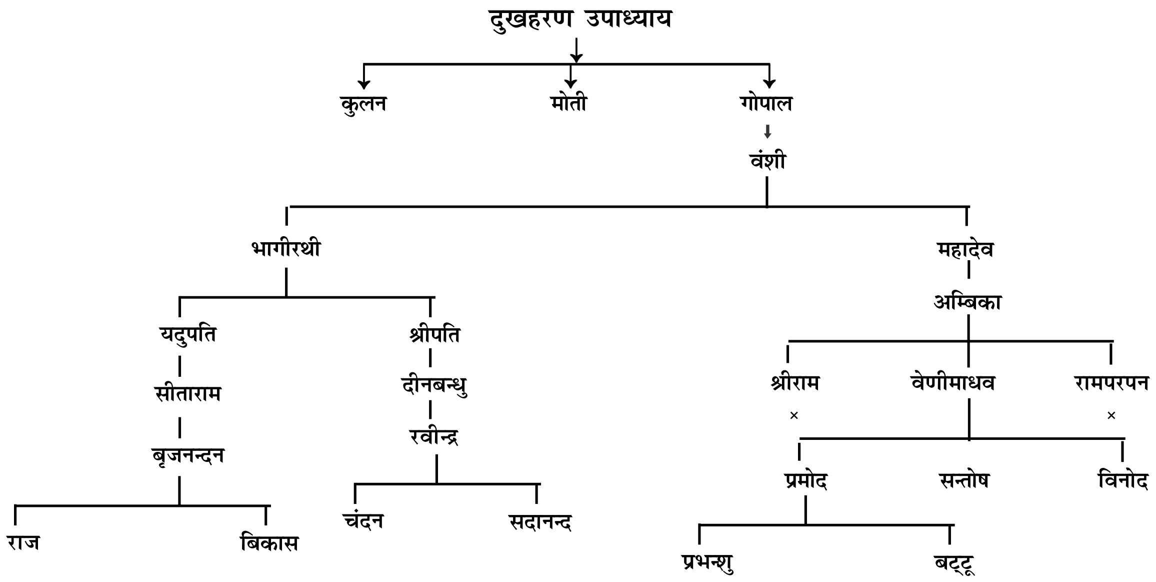
दुखहरण उपाध्याय
कुलन
मोती
गोपाल
वंशी
भागीरथी
महादेव
यदुपति
श्रीपति
अम्बिका
सीताराम
दीनबन्धु
श्रीराम
वेणीमाधव
रामपरपन
×
×
बृजनन्दन
रवीन्द्र
प्रमोद
सन्तोष
विनोद
राज
बिकास
चंदन
सदानन्द
प्रभन्शु
बट्टू

ग्राम–भदोखरा, रोहतास, बिहार (१)
(पद्दुम बाबा)

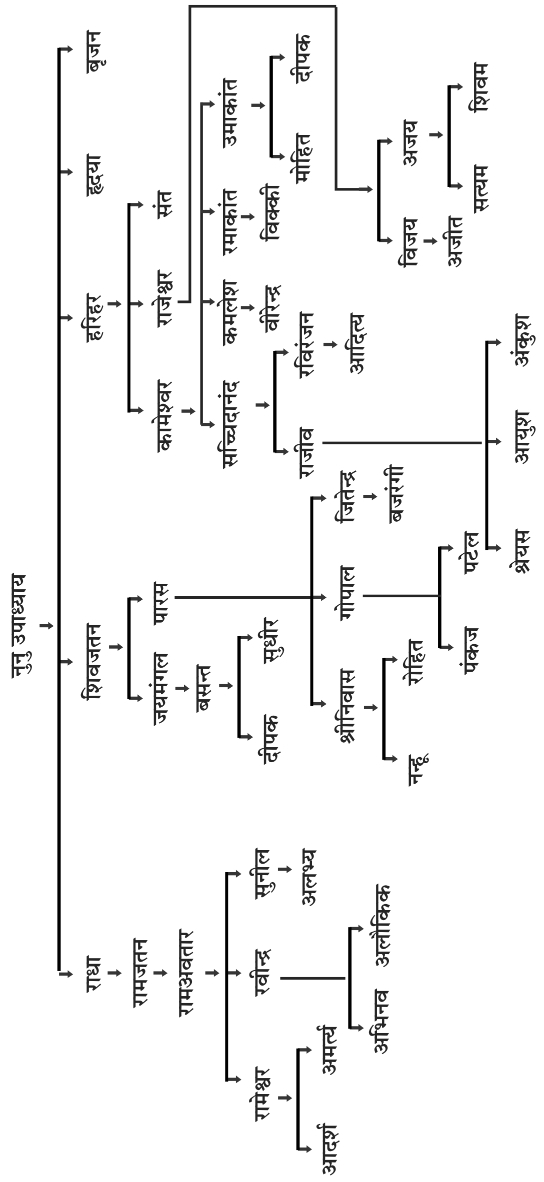

ग्राम-भदोखरा, रोहतास, बिहार (२)
(पदुम बाबा)

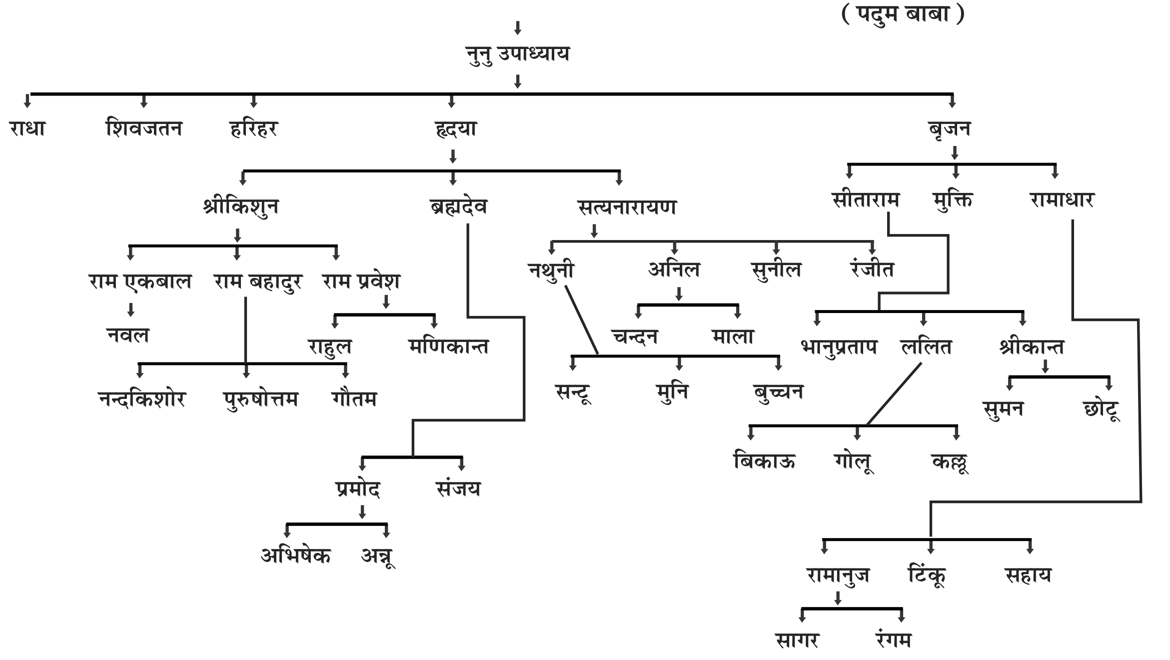

ग्राम-भरखरा, बिहार (१)
(नाग बाबा)

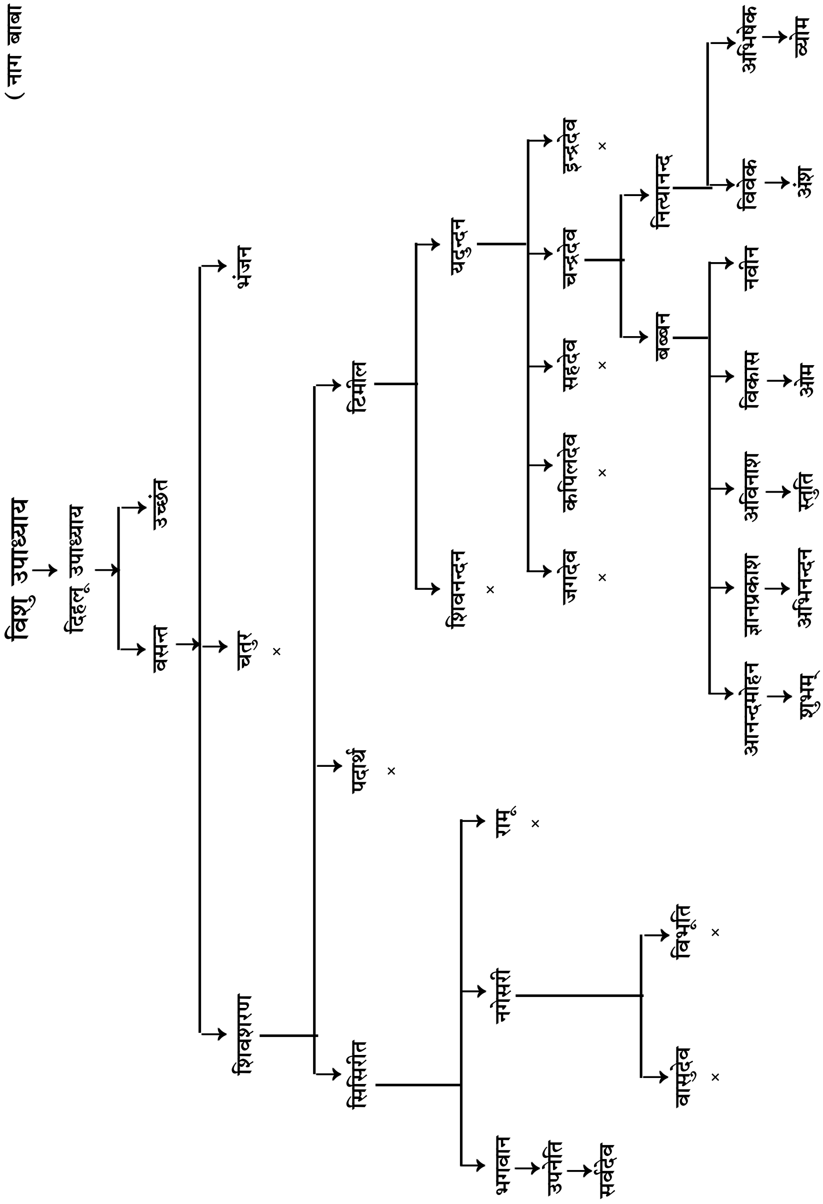

ग्राम-भरखरा, बिहार (२)
(नाग बाबा)

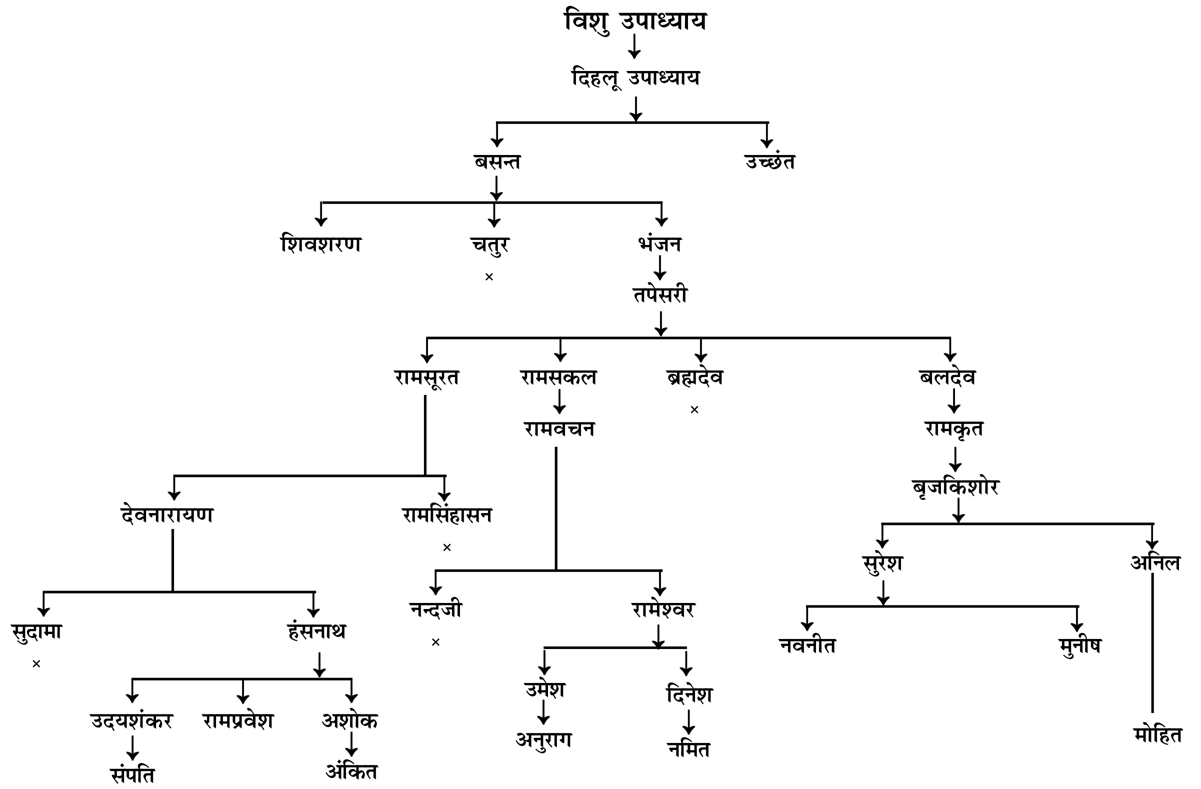

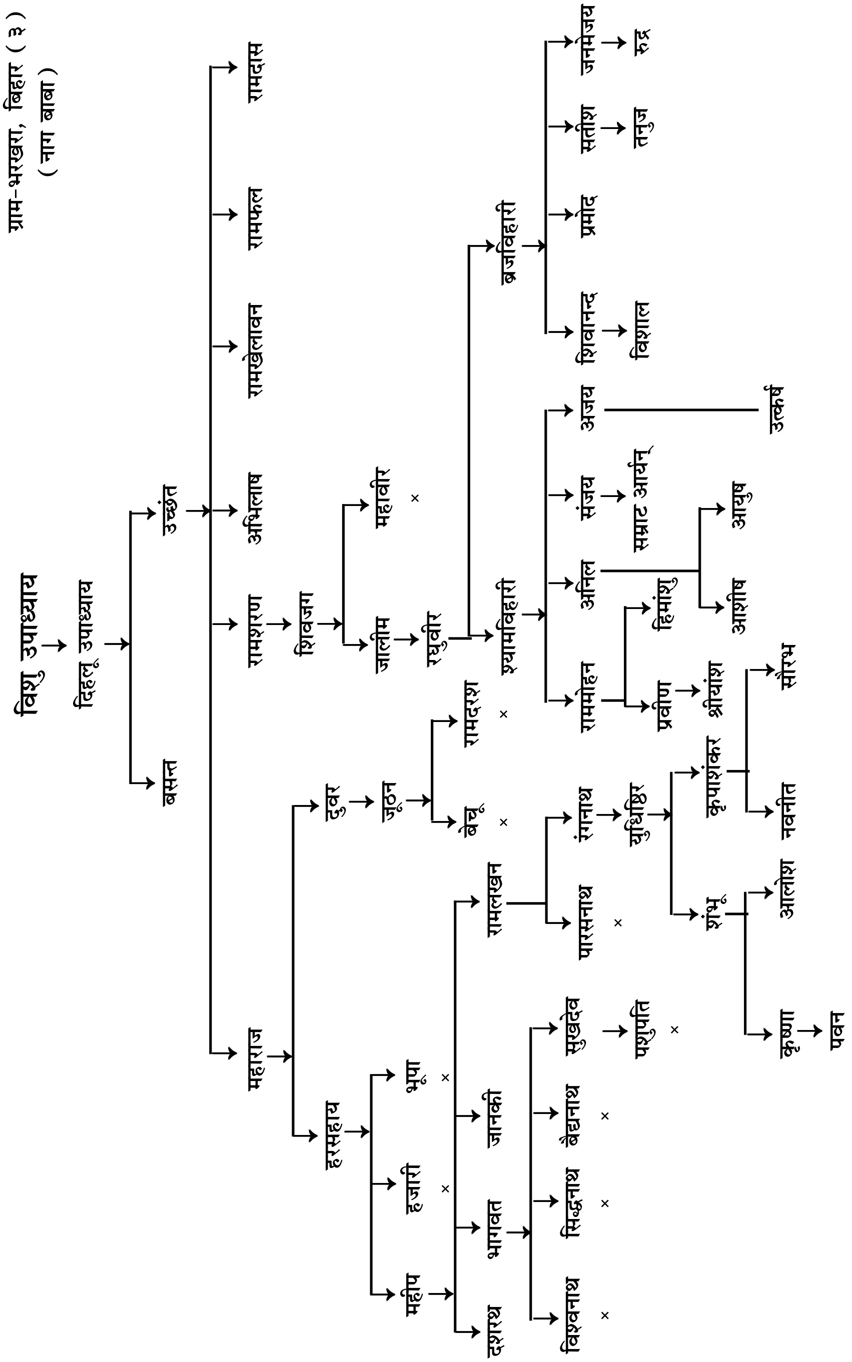
ग्राम-भरखरा, बिहार (३)
(नाग बाबा)
विशु उपाध्याय
दिहलू उपाध्याय
उच्छंत
बसन्त
रामदास
रामफल
रामखेलावन
अभिलाष
रामशरण
महाराज
शिवजग
महावीर
जालीम
रघुवीर
ब्रजविहारी
श्यामविहारी
शिवानन्द
विशाल
प्रमोद
सतीश
तनुज
जनमेजय
रुद्र
अजय
उत्कर्ष
संजय
सम्राट आर्यन्
अनिल
आयुष
आशीष
हिमांशु
राममोहन
प्रवीण
श्रीयांश
सौरभ
कृपाशंकर
नवनीत
युधिष्ठिर
रंगनाथ
पारसनाथ
शंभु
आलोश
कृष्णा
पवन
दुबर
जठन
रामदरश
बेचू
रामलखन
हरसहाय
भूपा
हजारी
महीप
जानकी
भागवत
दशरथ
सुखदेव
पशुपति
वैद्यनाथ
सिद्धनाथ
विश्वनाथ

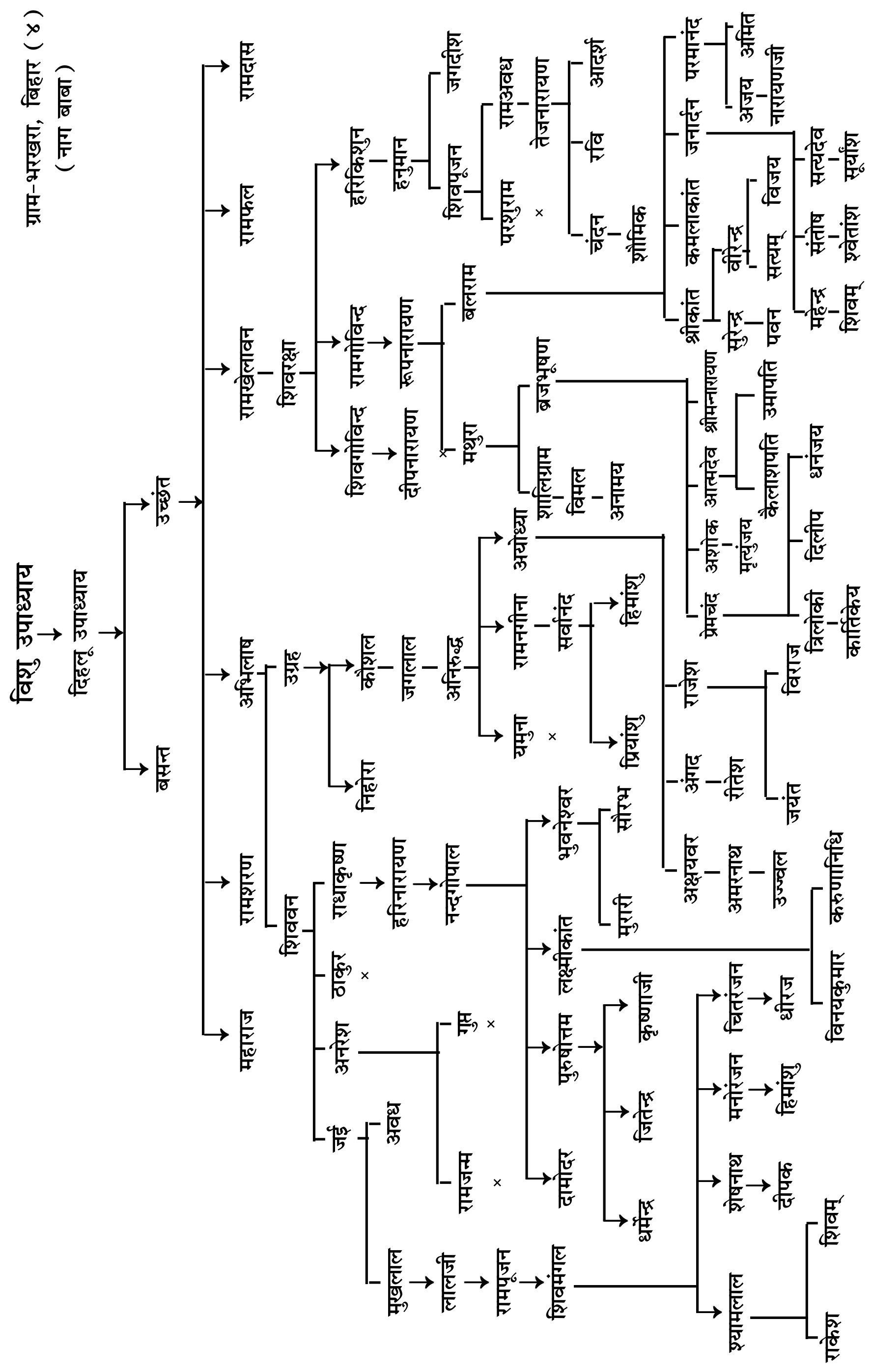
ग्राम-भरखरा, बिहार (४)
(नाग बाबा)
विशु उपाध्याय
दिहलू उपाध्याय
बसन्त
उच्छंत
महाराज
रामशरण
अभिलाष
रामखेलावन
रामफल
रामदास
शिववन
उग्रह
शिवरक्षा
जई
अनेश
ठाकुर
राधाकृष्ण
निहोरा
कौशल
शिवगोविन्द
रामगोविन्द
हरिकिशुन
अवध
मुखलाल
हरिनारायण
जगलाल
दीपनारायण
रूपनारायण
हनुमान
लालजी
रामजन्म
गुप्त
नन्दगोपाल
अनिरुद्ध
मथुरा
बलराम
शिवपूजन
जगदीश
रामपूजन
शिवमंगल
दामोदर
पुरुषोत्तम
लक्ष्मीकांत
भुवनेश्वर
यमुना
रामनगीना
अयोध्या
शालिग्राम
ब्रजभूषण
परशुराम
रामअवध
तेजनारायण
धर्मेन्द्र
जितेन्द्र
कृष्णाजी
मुरारी
सौरभ
प्रियांशु
सर्वानंद
हिमांशु
विमल
अनामय
चंदन
रवि
आदर्श
शौमिक
श्यामलाल
शेषनाथ
मनोरंजन
चितरंजन
अक्षयवर
अंगद
राजेश
प्रेमचंद
अशोक
आत्मदेव
श्रीमन्नारायण
श्रीकांत
कमलाकांत
जनार्दन
परमानंद
दीपक
हिमांशु
धीरज
अमरनाथ
रीतेश
मृत्युंजय
सुरेन्द्र
वीरेन्द्र
अजय
अमित
नारायणजी
उज्ज्वल
जयंत
विराज
कैलाशपति
उमापति
पवन
सत्यम्
विजय
राकेश
शिवम्
विनयकुमार
करुणानिधि
त्रिलोकी
दिलीप
धनंजय
महेन्द्र
संतोष
सत्यदेव
कार्तिकेय
शिवम्
श्वेतांश
सूर्यांश

ग्राम-भरखरा, बिहार (५)
(नाग बाबा)

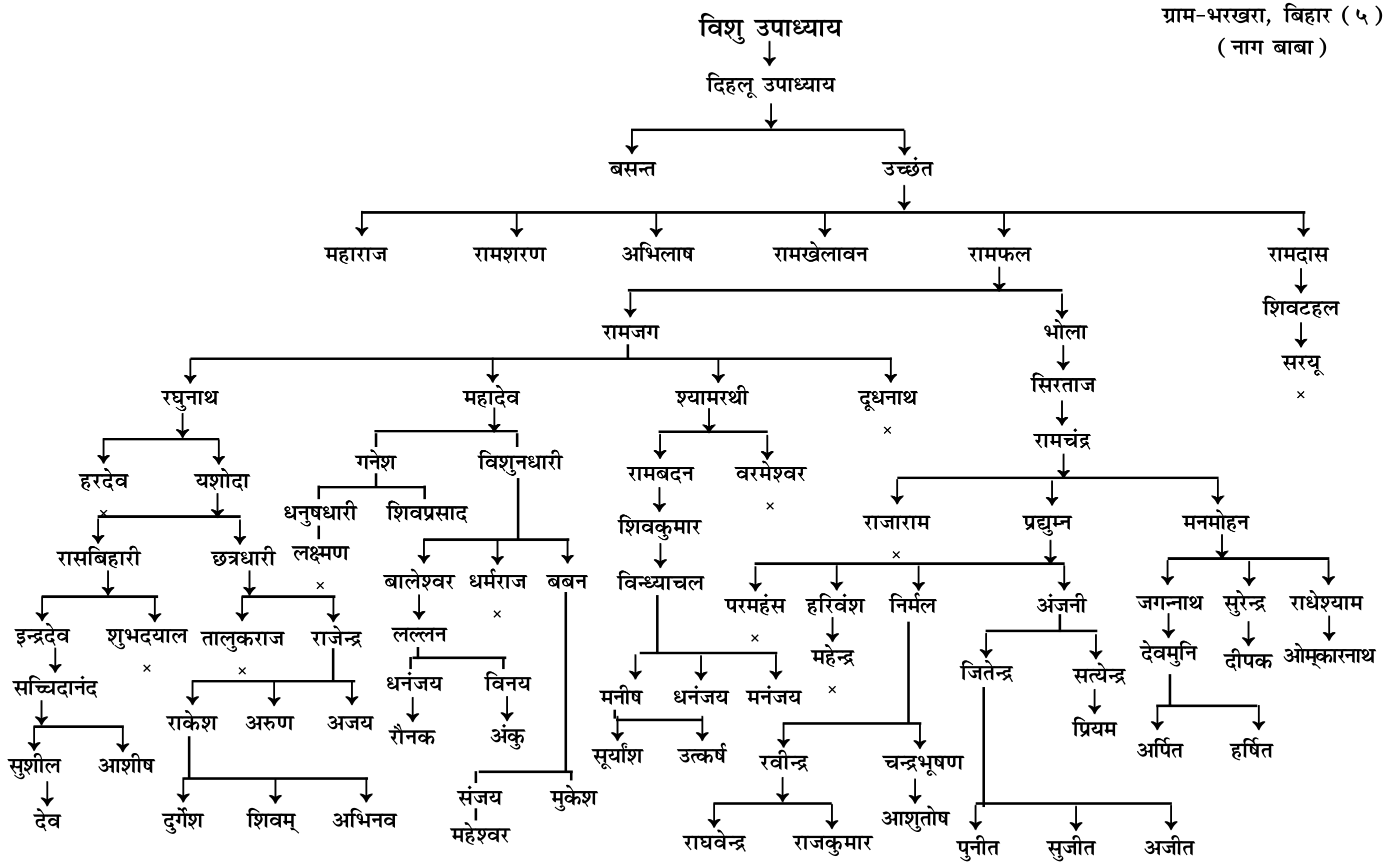

ग्राम—मझरिया (खुँटहा) बक्सर (१)
(नाग बाबा से)

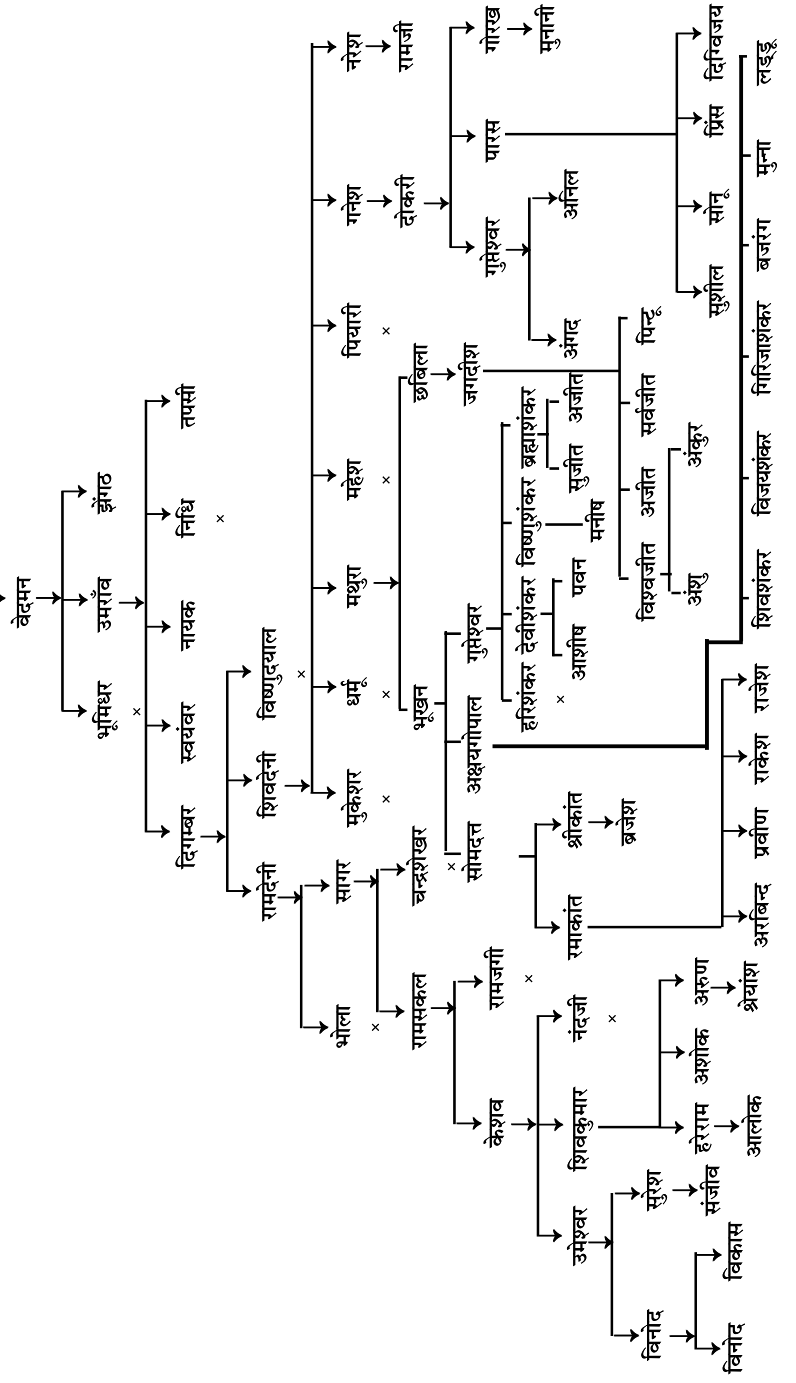

ग्राम-मझरिया (खुँटहा) बक्सर (२)
(नाग बाबा)

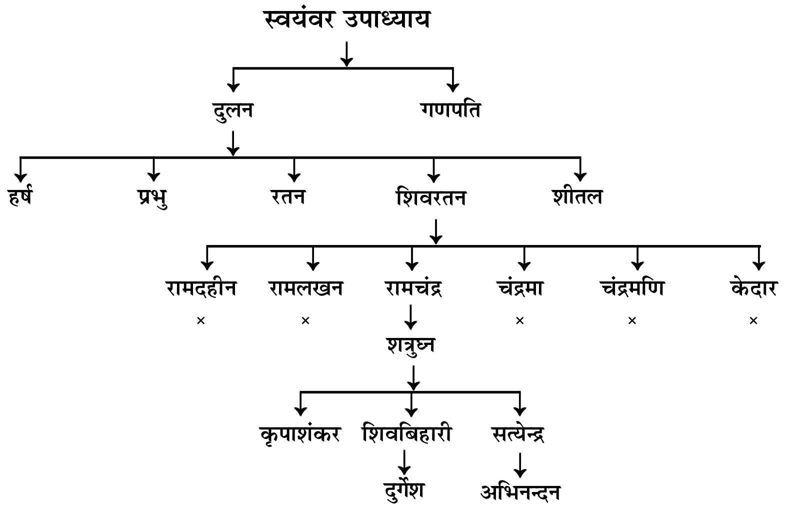

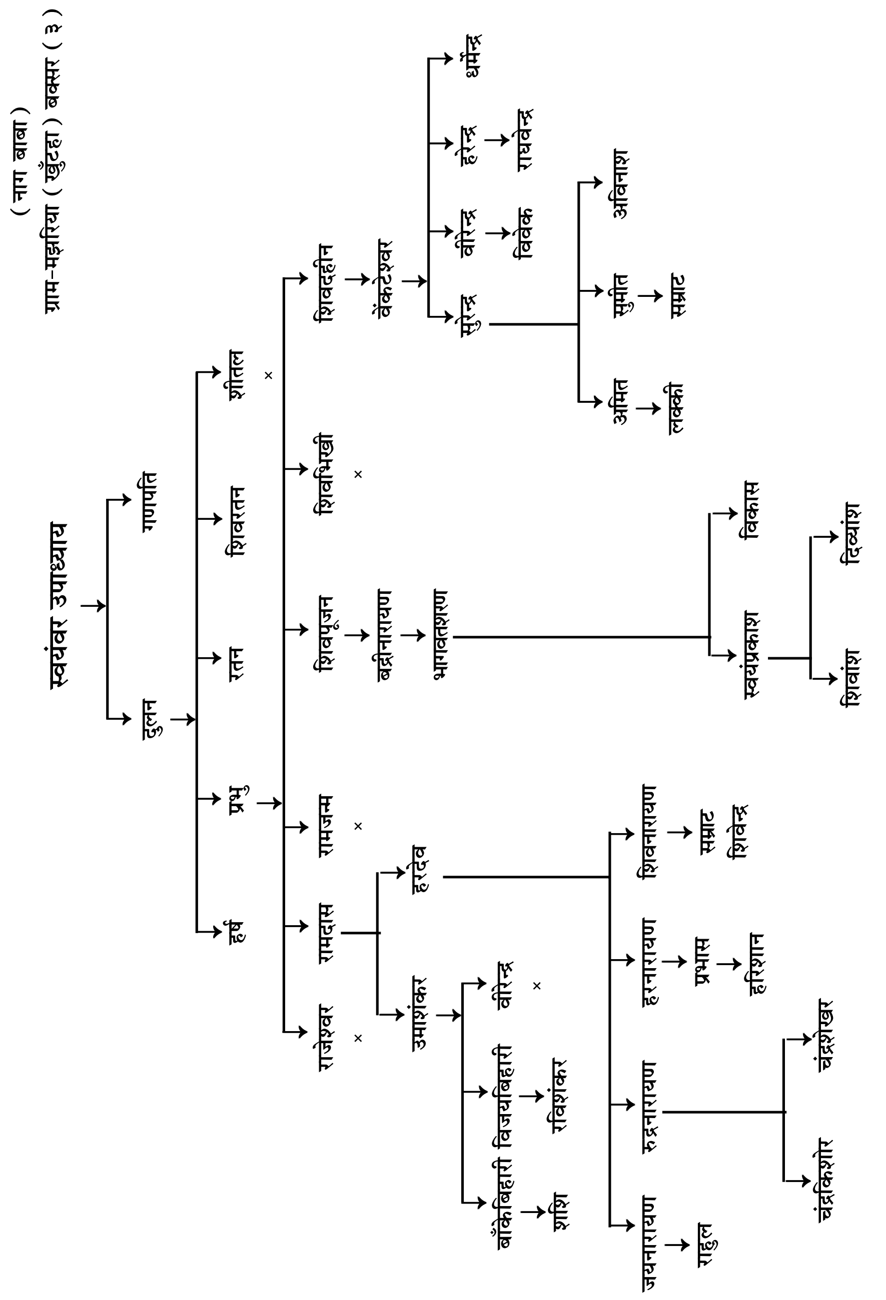
(नाग बाबा)
ग्राम-मझरिया (खूँटहा) बक्सर (३)
स्वयंवर उपाध्याय
दुलन
गणपति
हर्ष
प्रभु
रतन
शिवरतन
शीतल
राजेश्वर
रामदास
रामजन्म
शिवपूजन
शिवभिखी
शिवदहीन
उमाशंकर
हरदेव
बद्रीनारायण
भागवतशरण
वेंकटेश्वर
सुरेन्द्र
वीरेन्द्र
हरेन्द्र
धर्मेन्द्र
विवेक
राघवेन्द्र
अमित
सुमीत
अविनाश
लक्की
सम्राट
स्वयंप्रकाश
विकास
शिवांश
दिव्यांश
बाँकेबिहारी
विजयबिहारी
वीरेन्द्र
शशि
रविशंकर
जयनारायण
रुद्रनारायण
हरनारायण
शिवनारायण
राहुल
चंद्रकिशोर
चंद्रशेखर
प्रभास
हरिशान
सम्राट
शिवेन्द्र

(नाग बाबा)
ग्राम-मझरिया (खुँटहा) बक्सर (४)

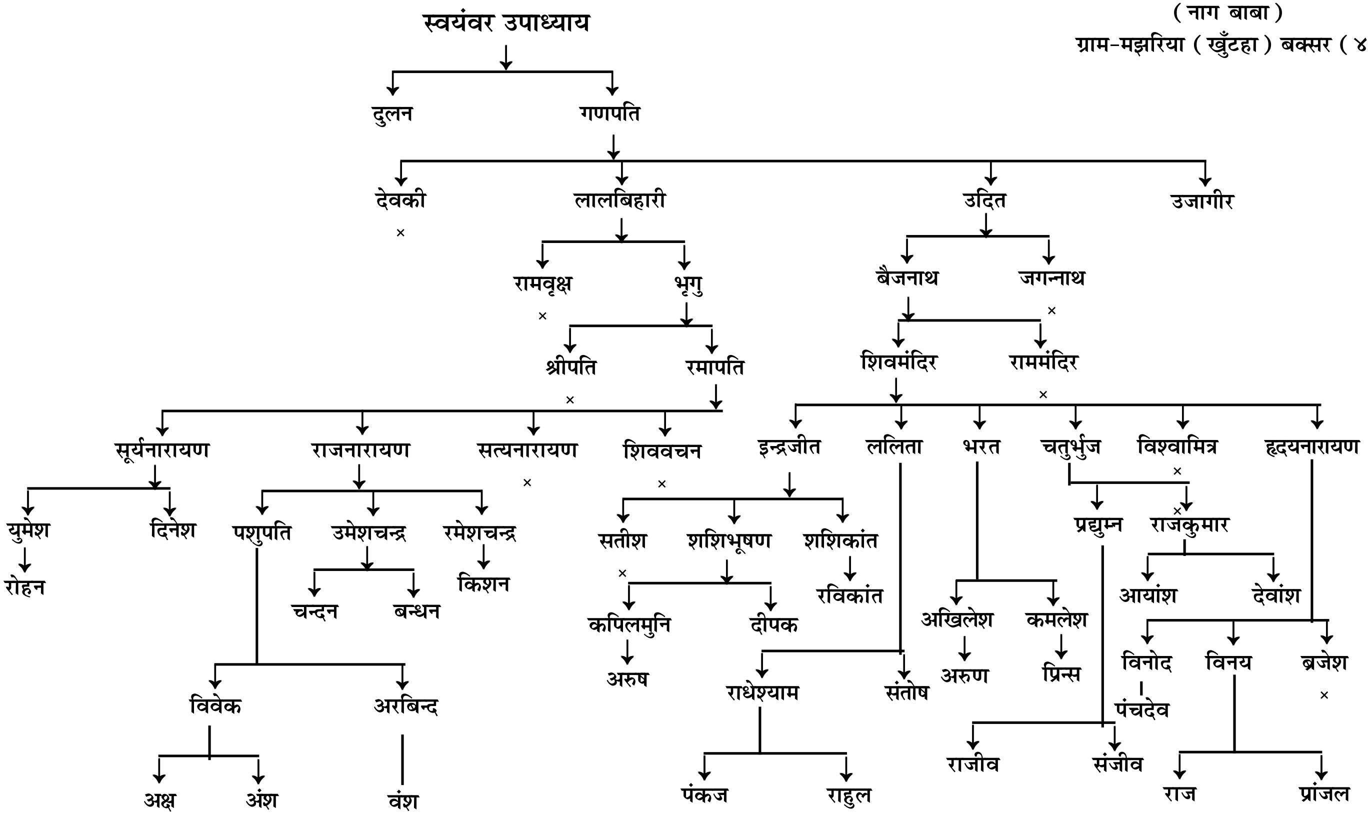

(नाग बाबा)
ग्राम-मझरिया (खुँटहा) बक्सर (५)

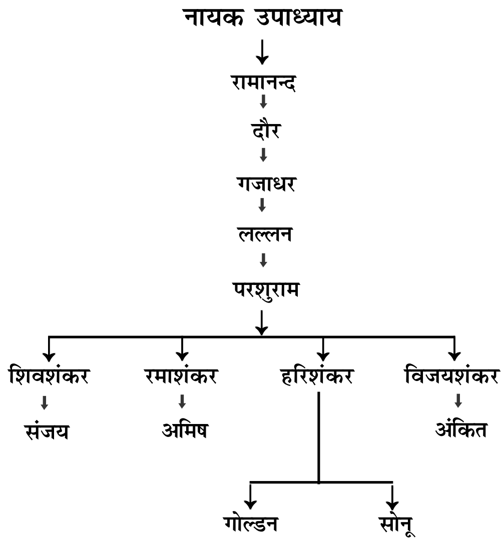

(नाग बाबा)
ग्राम-मझरिया (खुँटहा) बक्सर (६)

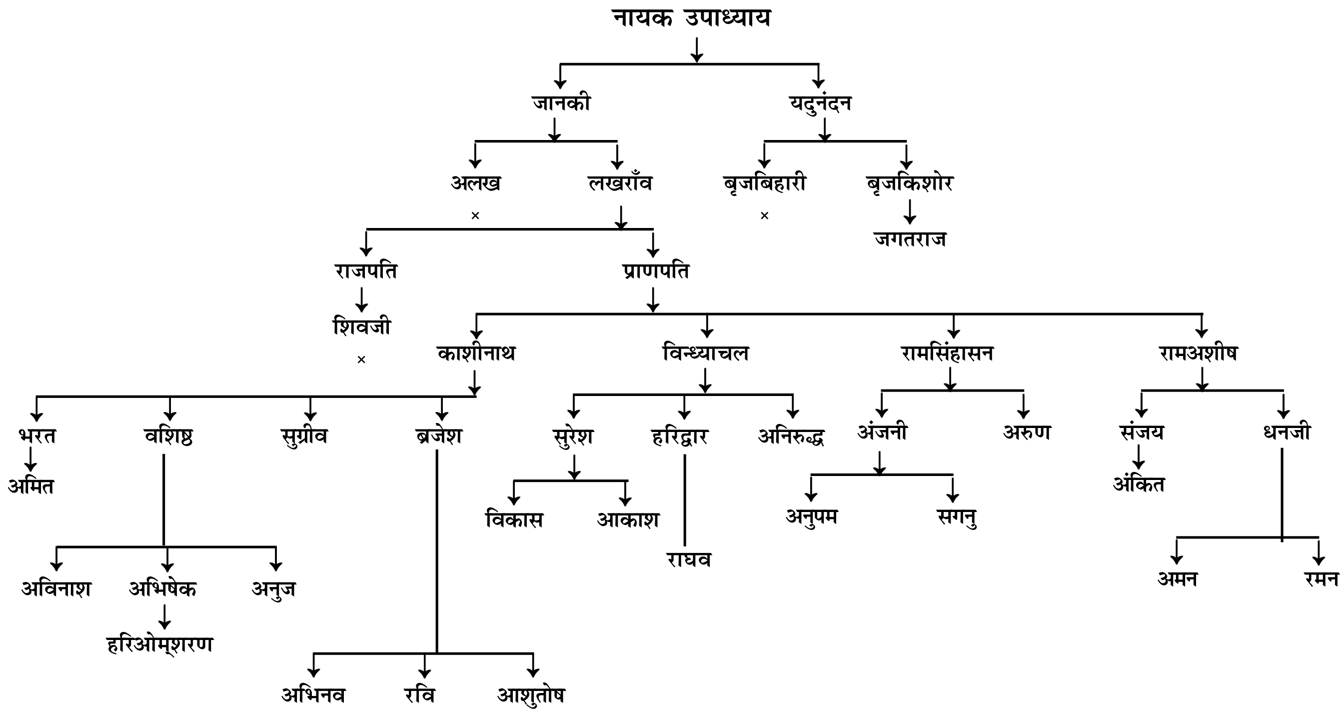

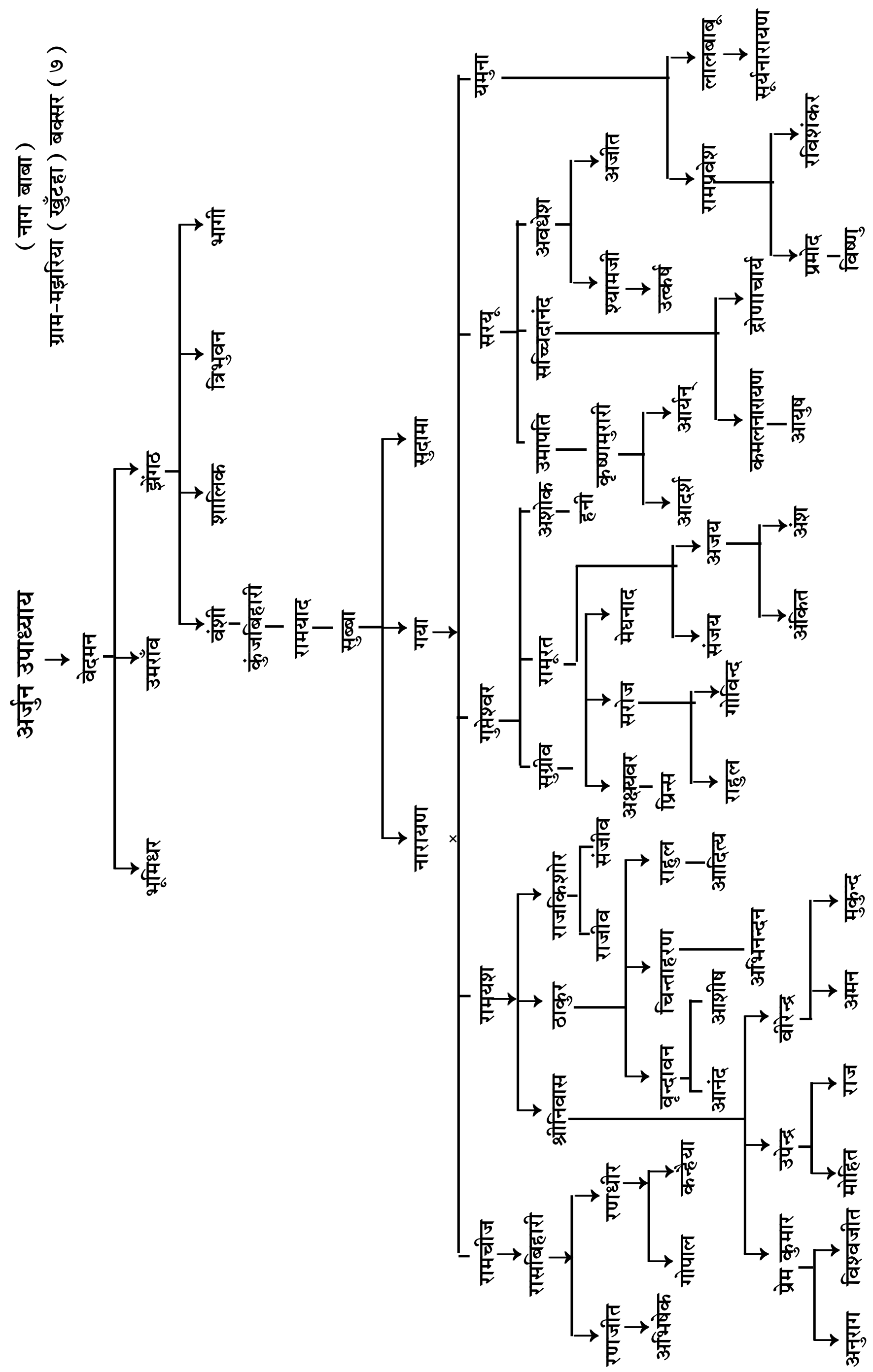
(नाग बाबा)
ग्राम-मझरिया (खुँटहा) बक्सर (७)
अर्जुन उपाध्याय
वेदमन
भूमिधर
उमराव
झेंगठ
वंशी
शालिक
त्रिभुवन
भागी
कुंजबिहारी
रामयाद
सुब्बा
नारायण
गया
सुदामा
रामचीज
रामयश
गुप्तेश्वर
सरयू
यमुना
रासबिहारी
रणजीत
अभिषेक
रणधीर
गोपाल
कन्हैया
श्रीनिवास
ठाकुर
राजकिशोर
राजीव
संजीव
वृन्दावन
आनंद
चिन्ताहरण
आशीष
अभिनन्दन
राहुल
आदित्य
प्रेम कुमार
अनुराग
विश्वजीत
उपेन्द्र
मोहित
राज
वीरेन्द्र
अमन
मुकुन्द
सुग्रीव
रामदत्त
अशोक
हनी
अक्षयवर
प्रिन्स
सरोज
राहुल
गोविन्द
मेघनाद
संजय
अजय
अंकित
अंश
उमापति
कृष्णमुरारी
आदर्श
आर्यन
सच्चिदानंद
कमलनारायण
आयुष
द्रोणाचार्य
अवधेश
श्यामजी
उत्कर्ष
अजीत
प्रमोद
विष्णु
रविशंकर
रामप्रवेश
लालबाबू
सूर्यनारायण

नागबाबा
ग्राम-मझरिया (खुँटहा) बक्सर (८)

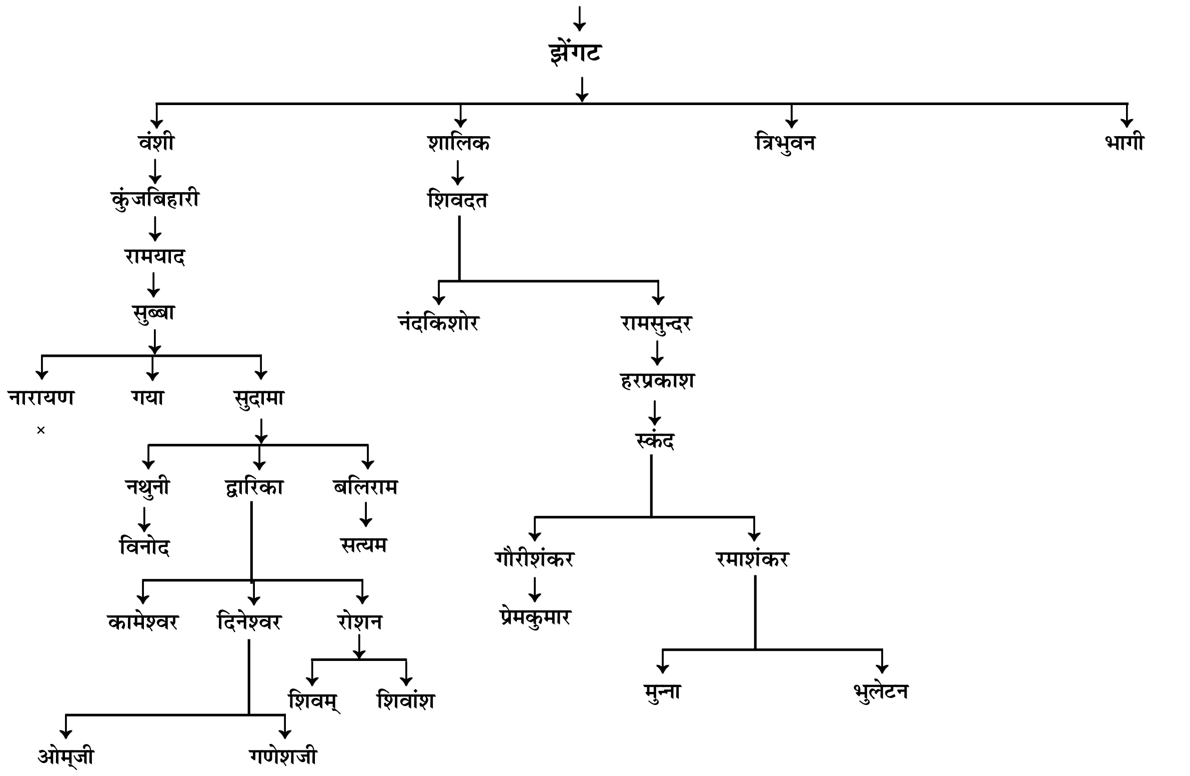

(नाग-बाबा)

ग्राम-मझरियाँ (खुँटहा) बक्सर (९)

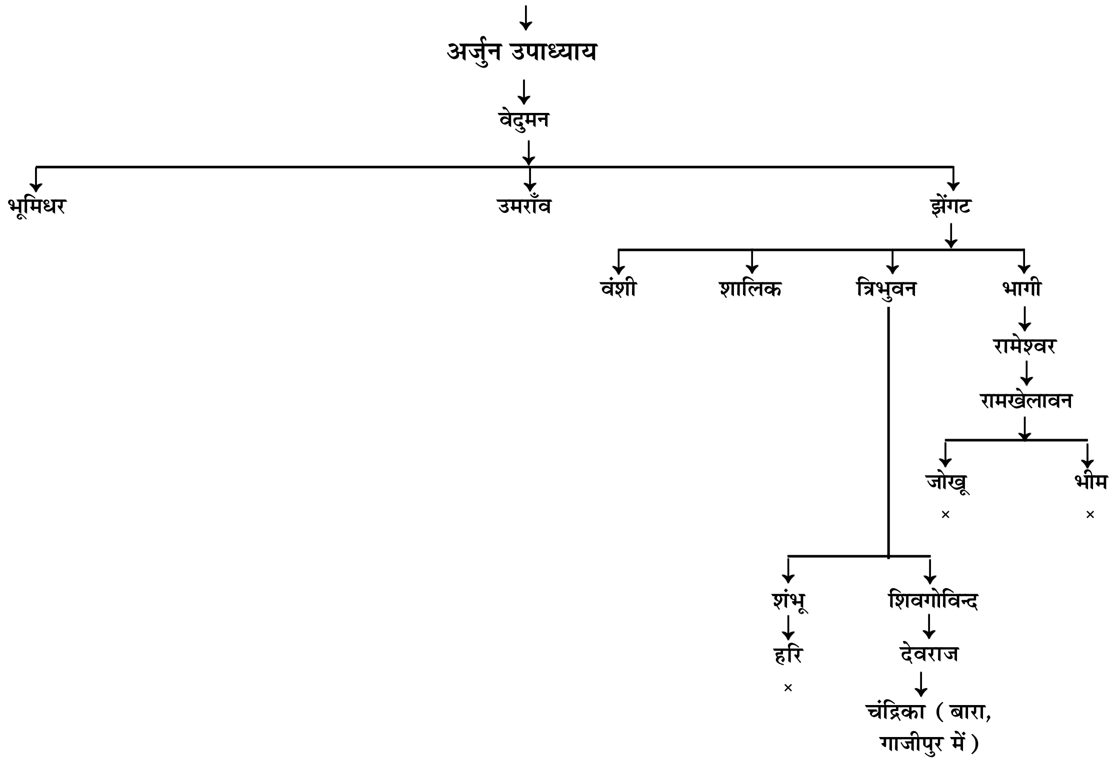

(नाग-बाबा)

ग्राम-मझरियाँ (खुँटहा) बक्सर (१०)

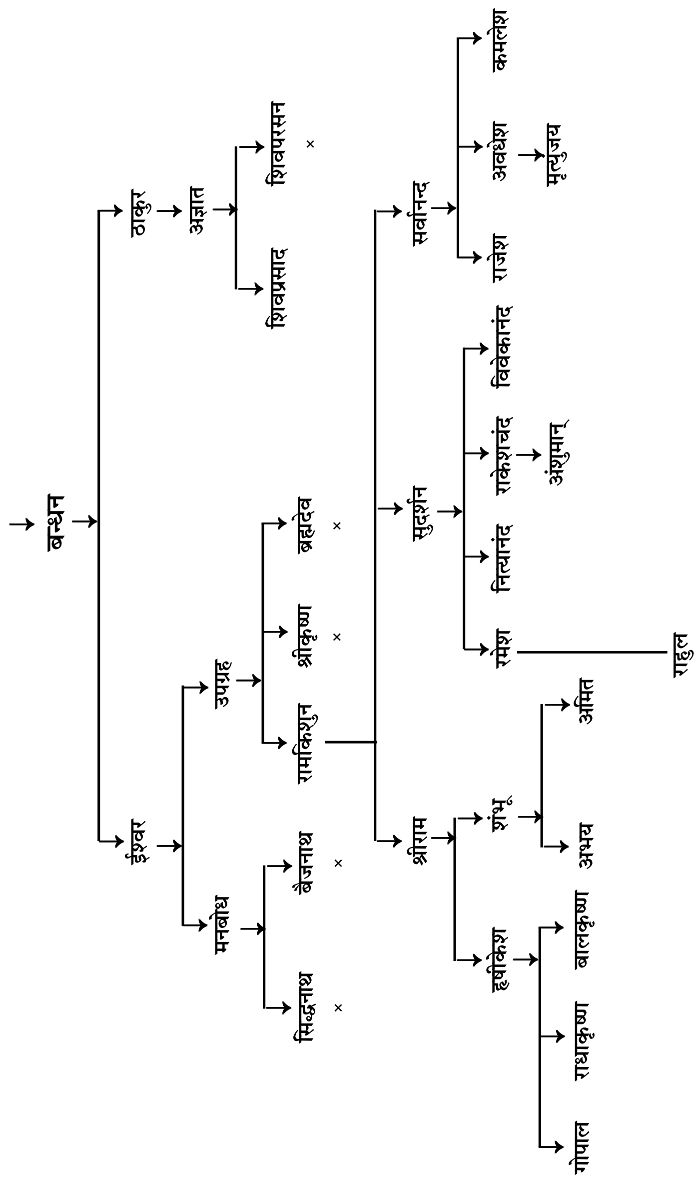

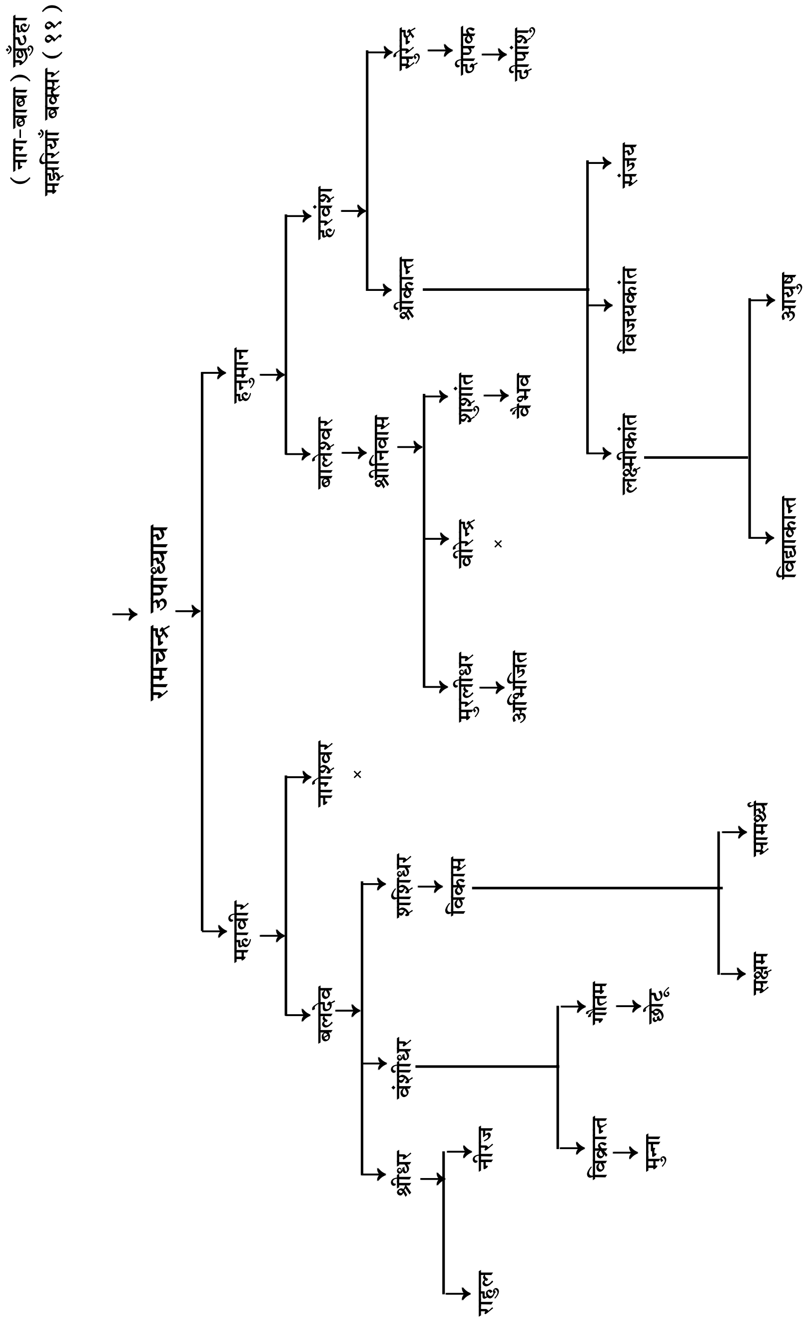
(नाग-बाबा) खुँटहा
मझरियाँ बक्सर (११)
रामचन्द्र उपाध्याय
हनुमान
महावीर
हरवंश
बालेश्वर
नागेश्वर ×
बलदेव
सुरेन्द्र
दीपक
दीपांशु
श्रीकान्त
संजय
विजयकांत
लक्ष्मीकांत
आयुष
विद्याकान्त
श्रीनिवास
शुशांत
वैभव
वीरेन्द्र ×
मुरलीधर
अभिजित
शशिधर
विकास
सामर्थ्य
सक्षम
वंशीधर
गौतम
छोटू
विक्रान्त
मुन्ना
श्रीधर
नीरज
राहुल

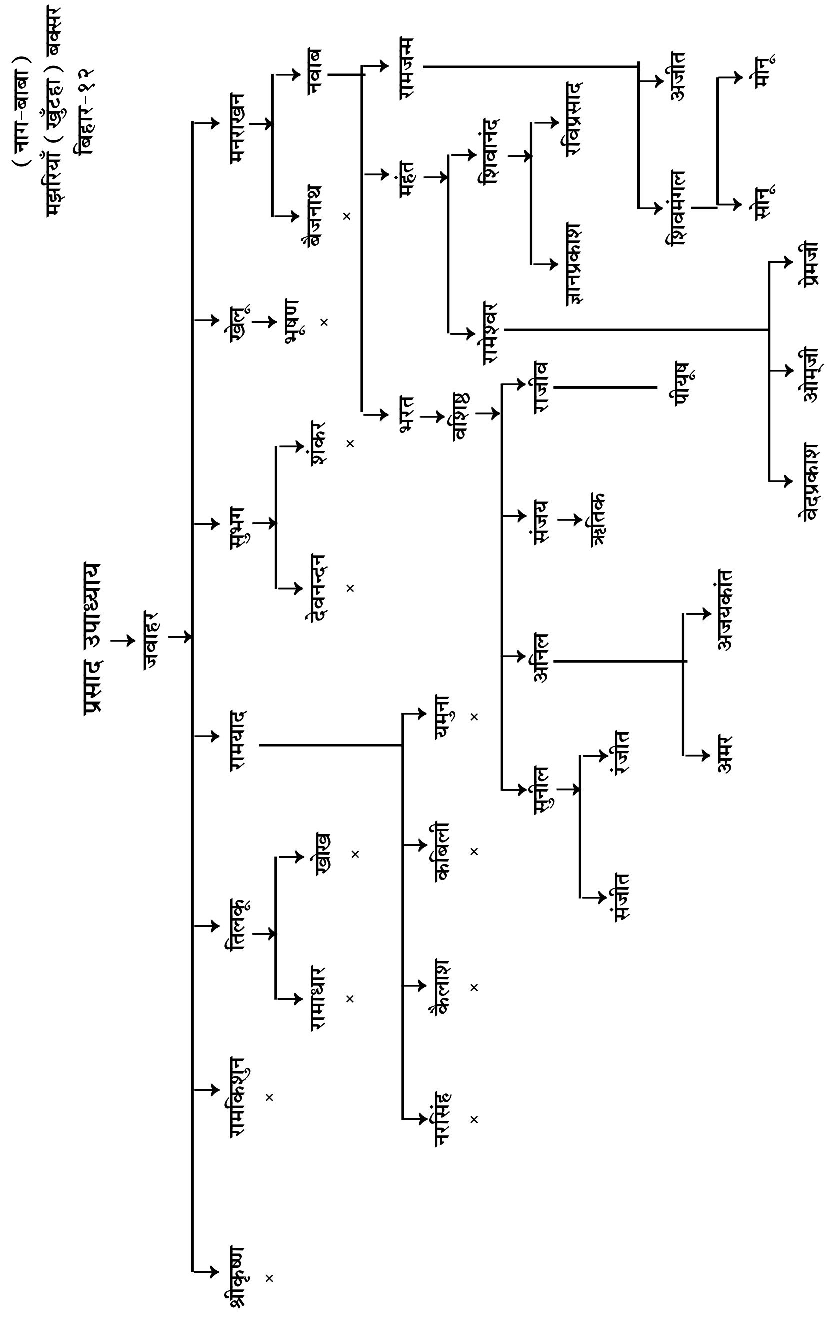
(नाग-बाबा)
मझरियाँ (खुँटहा) बक्सर
बिहार-१२
प्रसाद उपाध्याय
जवाहर
मनराखन
खेलू
सुभग
रामयाद
तिलकू
रामकिशुन
श्रीकृष्ण
नवाब
बैजनाथ
भूषण
शंकर
देवनन्दन
खोभ
रामाधार
यमुना
कबिली
कैलाश
नरसिंह
रामजन्म
महंत
भरत
वशिष्ठ
शिवानंद
रामेश्वर
रविप्रसाद
ज्ञानप्रकाश
राजीव
संजय
अनिल
सुनील
पीयूष
ऋतिक
अजयकांत
अमर
रंजीत
मंजीत
अजीत
शिवमंगल
मोनू
सोनू
प्रेमजी
ओमजी
वेदप्रकाश

(नाग-बाबा)
मझरियाँ (खुँटहा) बक्सर-(१३)

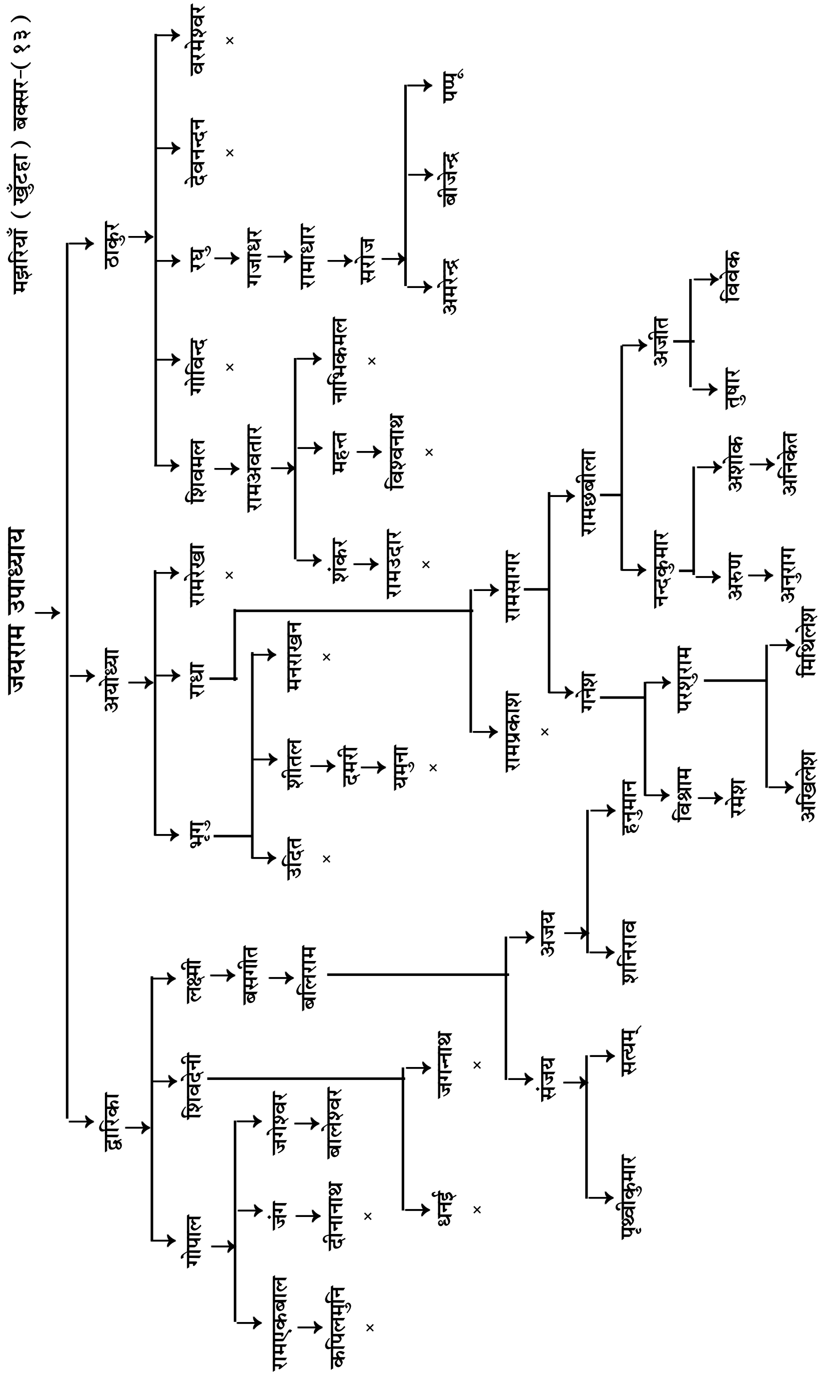

(नाग-बाबा)
मझरियाँ (खुँटहा) बक्सर-(१४)

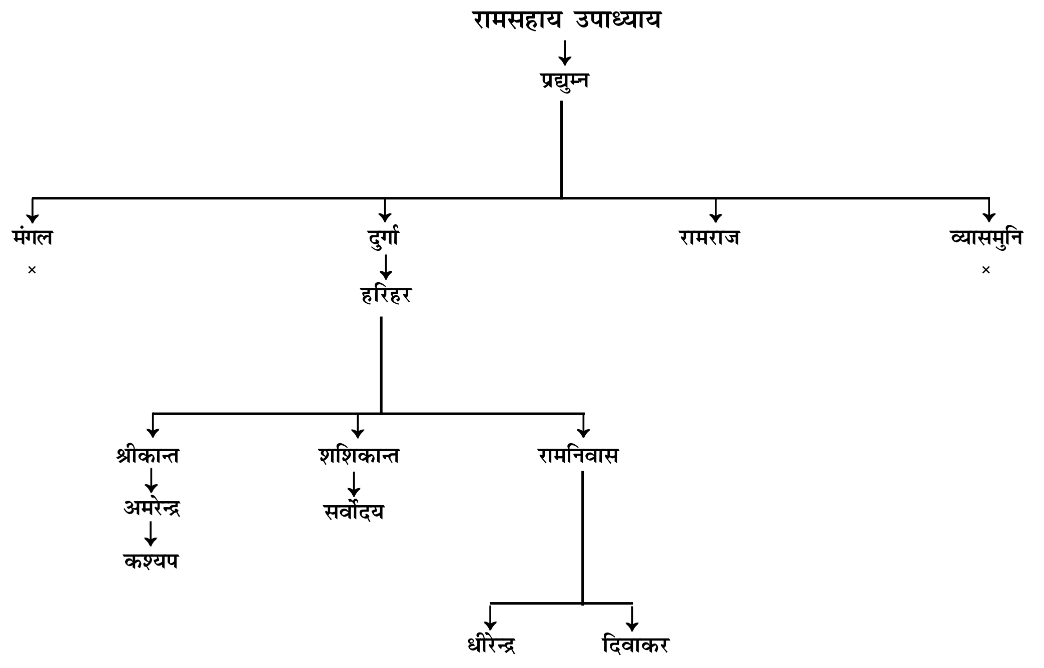

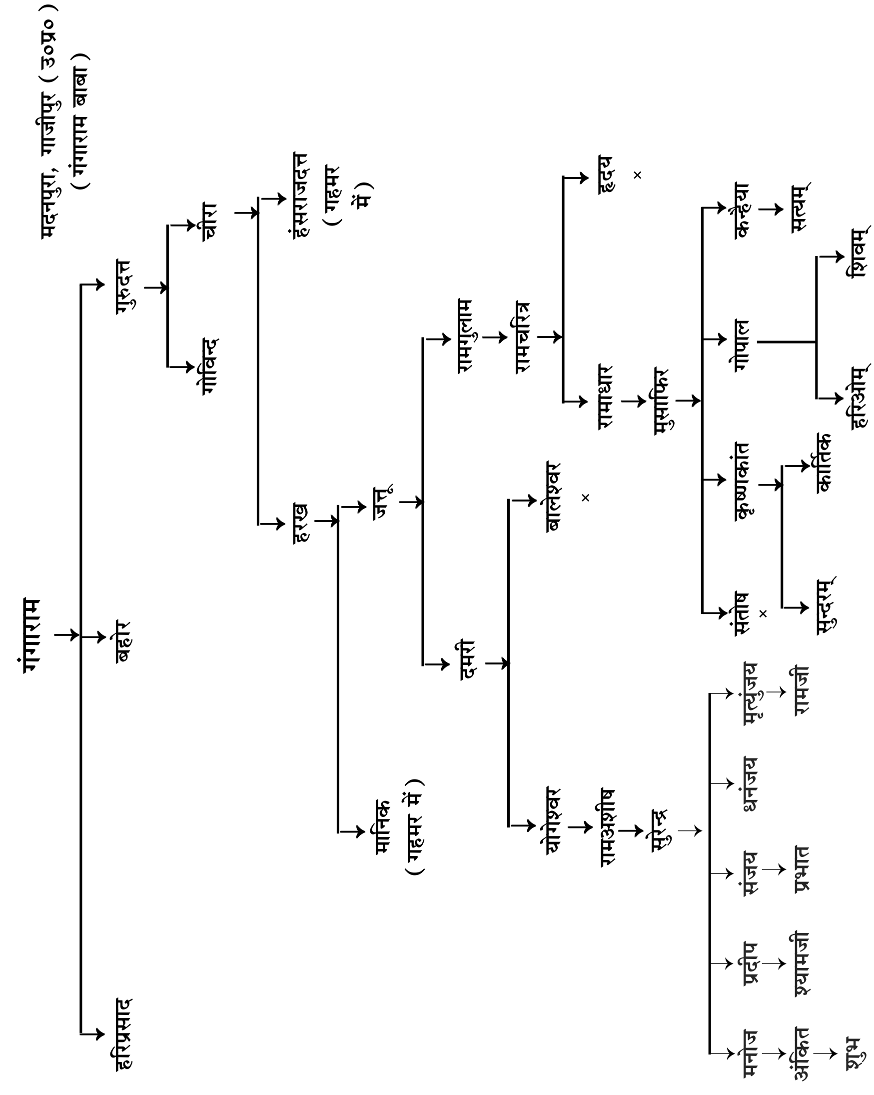
मदनपुरा, गाजीपुर (उ०प्र०)
(गंगाराम बाबा)
गंगाराम
हरिप्रसाद
बहोर
गुरुदत्त
गोविन्द
चौरा
हंसराजदत्त (गहमर में)
हरख
मानिक (गहमर में)
जनू
दमरी
रामगुलाम
रामचरित्र
हृदय ×
रामधार
मुसाफिर
बालेश्वर ×
योगेश्वर
रामअशीष
सुरेन्द्र
कन्हैया
सत्यम्
गोपाल
शिवम्
हरिओम्
कृष्णकांत
कार्तिक
संतोष ×
सुन्दरम्
मृत्युंजय
रामजी
धनंजय
संजय
प्रभात
प्रदीप
श्यामजी
मनोज
अंकित
शुभ

ग्राम-मनोहरपुर, बक्सर (१)
बिहार (पलुष बाबा)

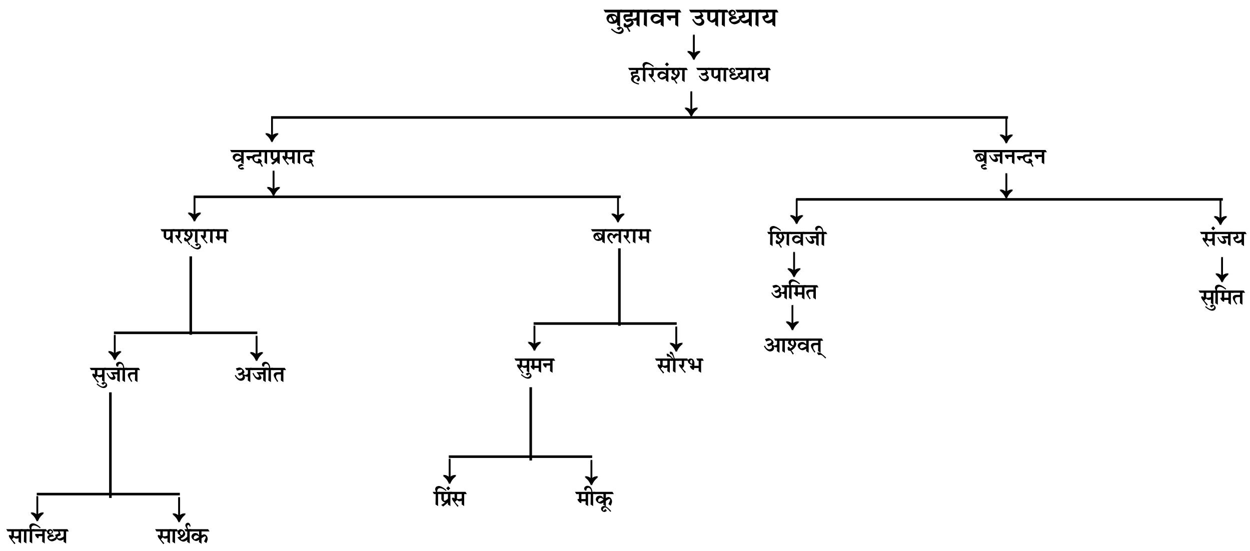

ग्राम–मनोहरपुर, बक्सर (बिहार) (२)
(पलुष–बाबा)

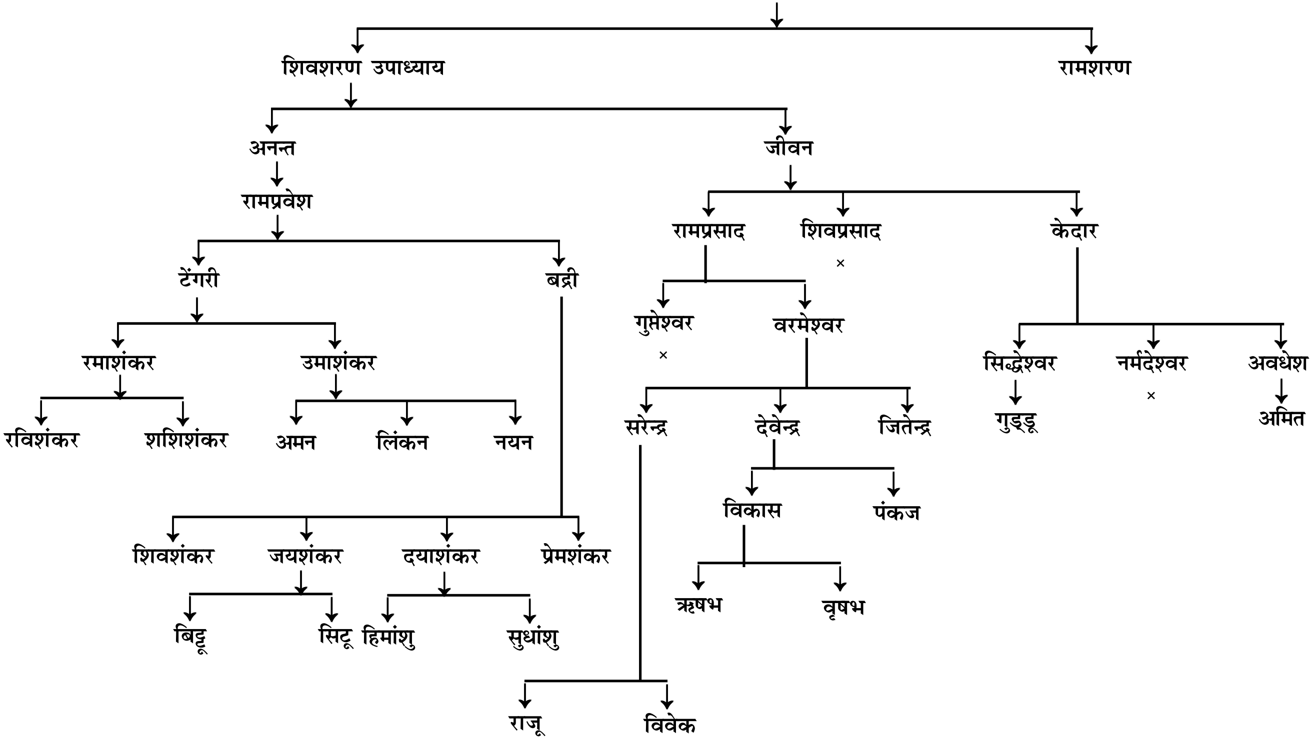

ग्राम-मनोहरपुर, बक्सर [३]
(बिहार)
(पलुष-बाबा)

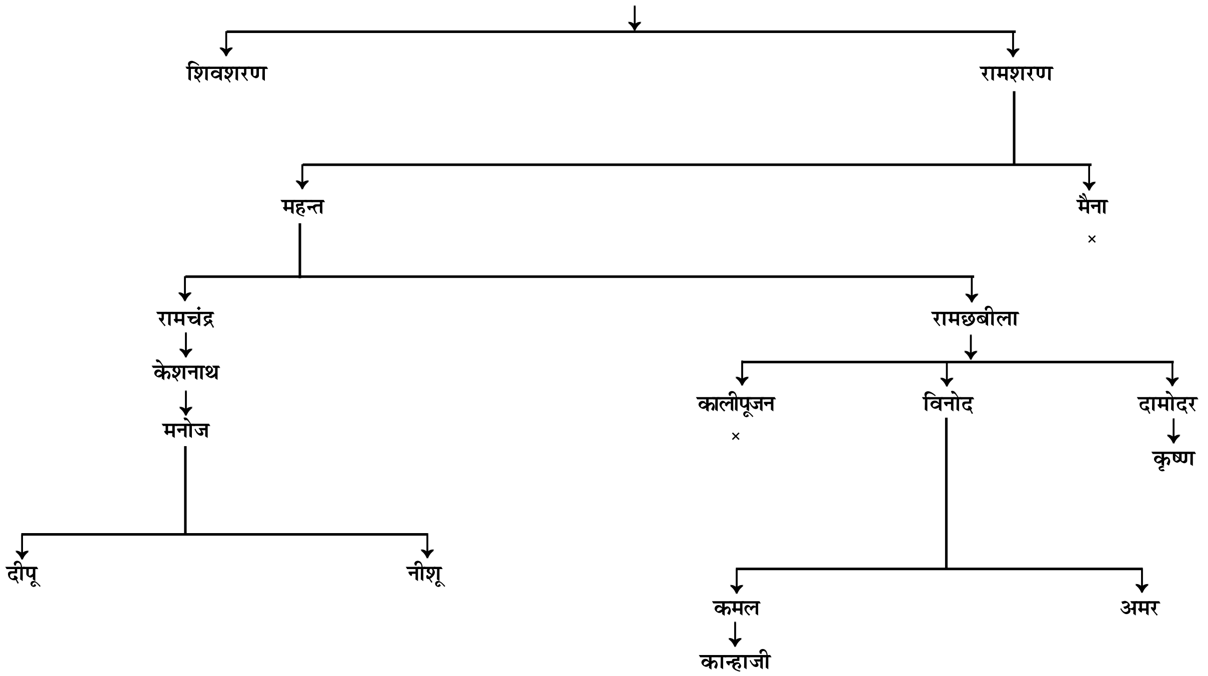

मनोहरपुर, बक्सर [४] बिहार
(पलुष बाबा)

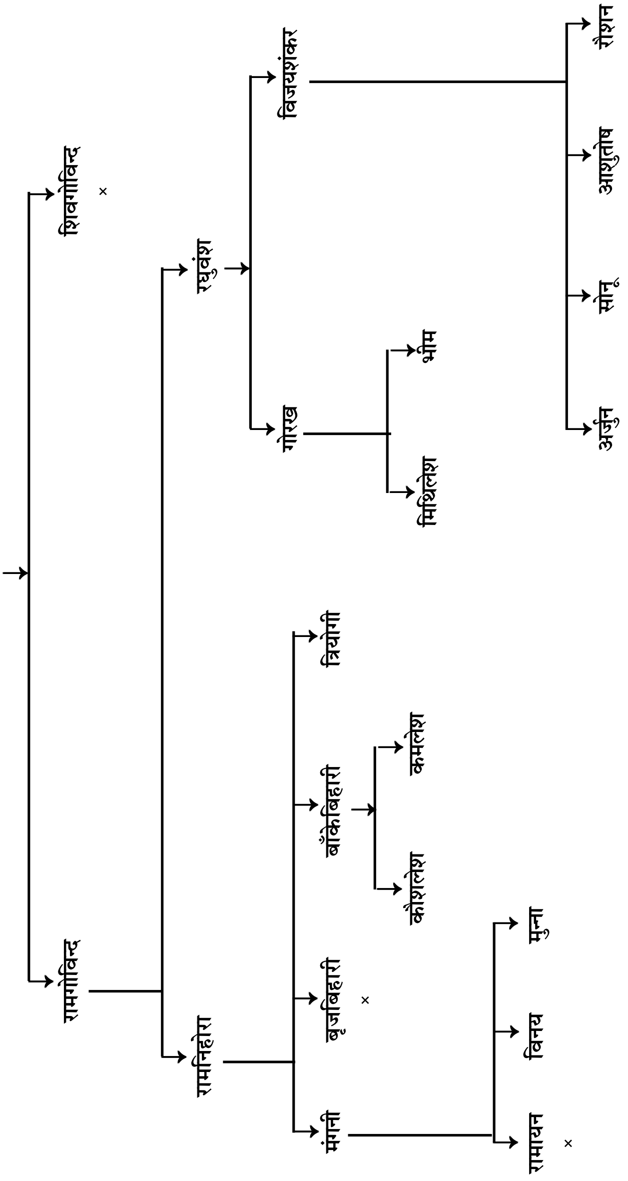

ग्राम-मनोहरपुर, बक्सर [५] बिहार।
(पलुष बाबा)

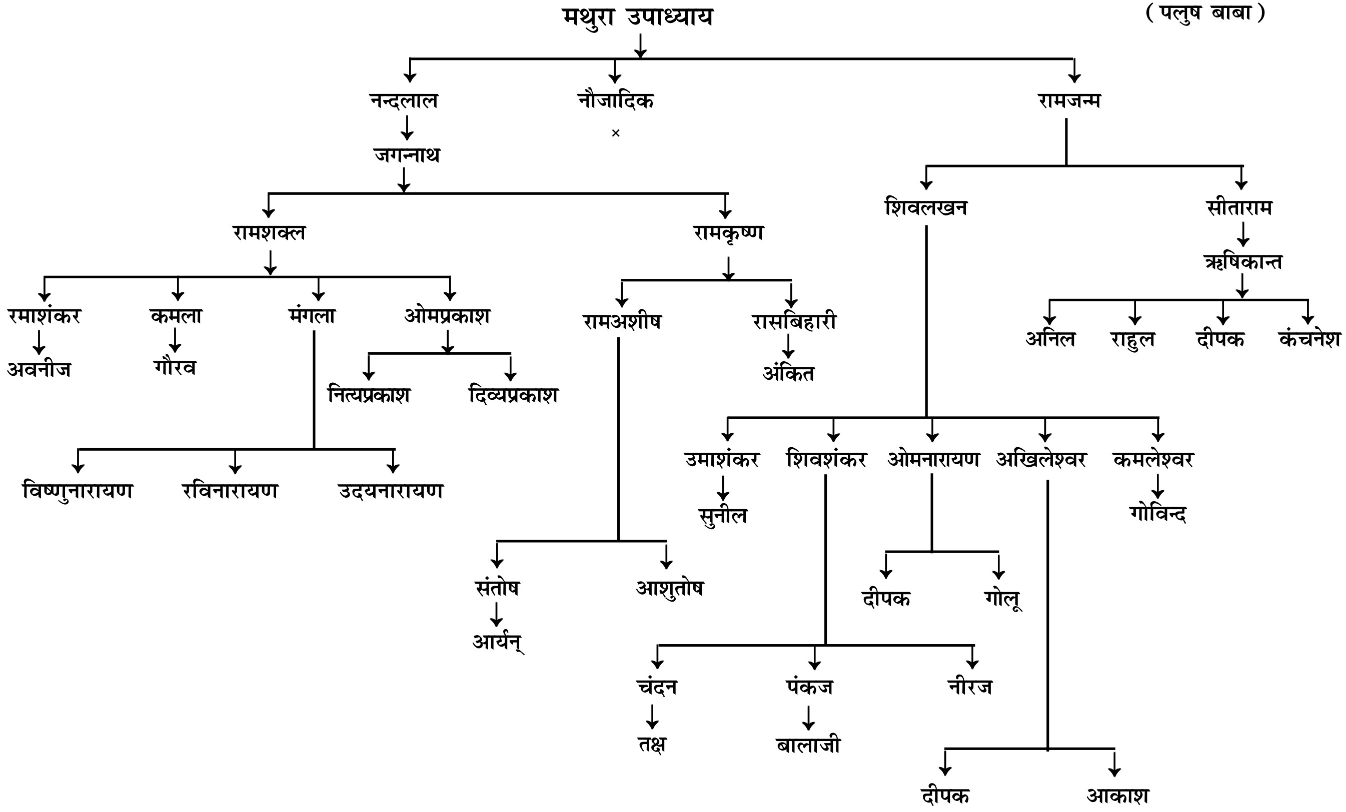

मनोहरपुर, बक्सर [६] बिहार।
(पलुष बाबा)

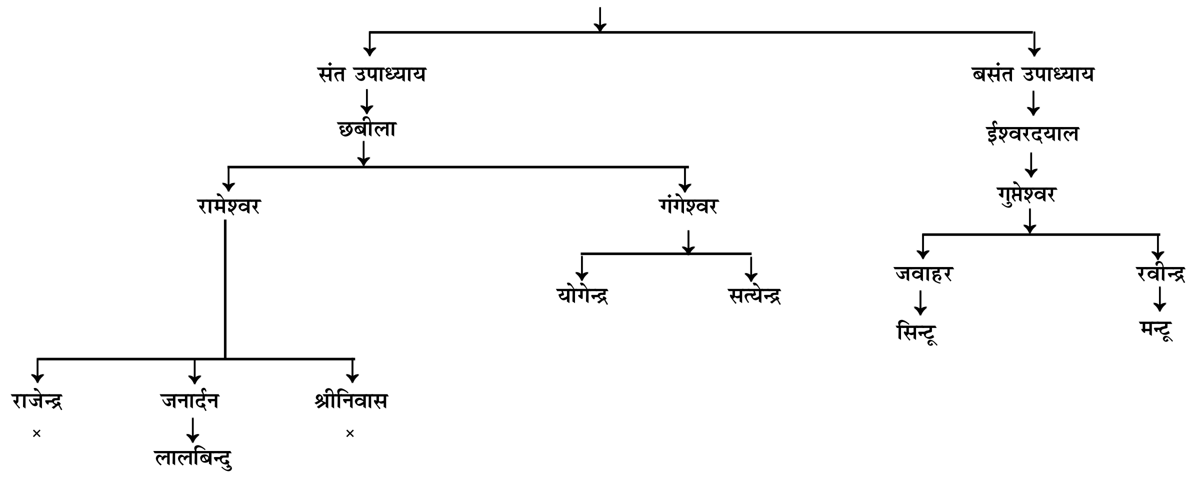

ग्राम-मनोहरपुर, बक्सर, बिहार (७)
(पलुष बाबा)

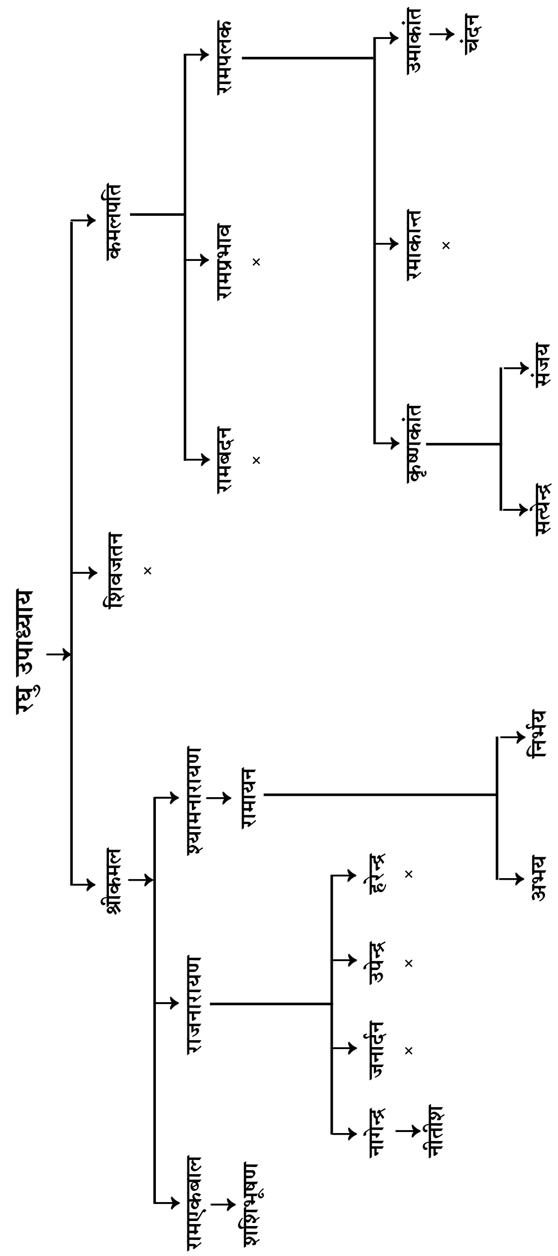

ग्राम-मनोहरपुर, बक्सर, बिहार (८)
(पलुष बाबा)

- जगन्नाथ उपाध्याय
  - नेपाल
    - केशरी
      - विजय
        - प्रियंक
        - मृत्युंजय
- दुखित उपाध्याय
  - जयगोविद
    - ×

(नाग बाबा)
ग्राम-मठिया (१), बिहार

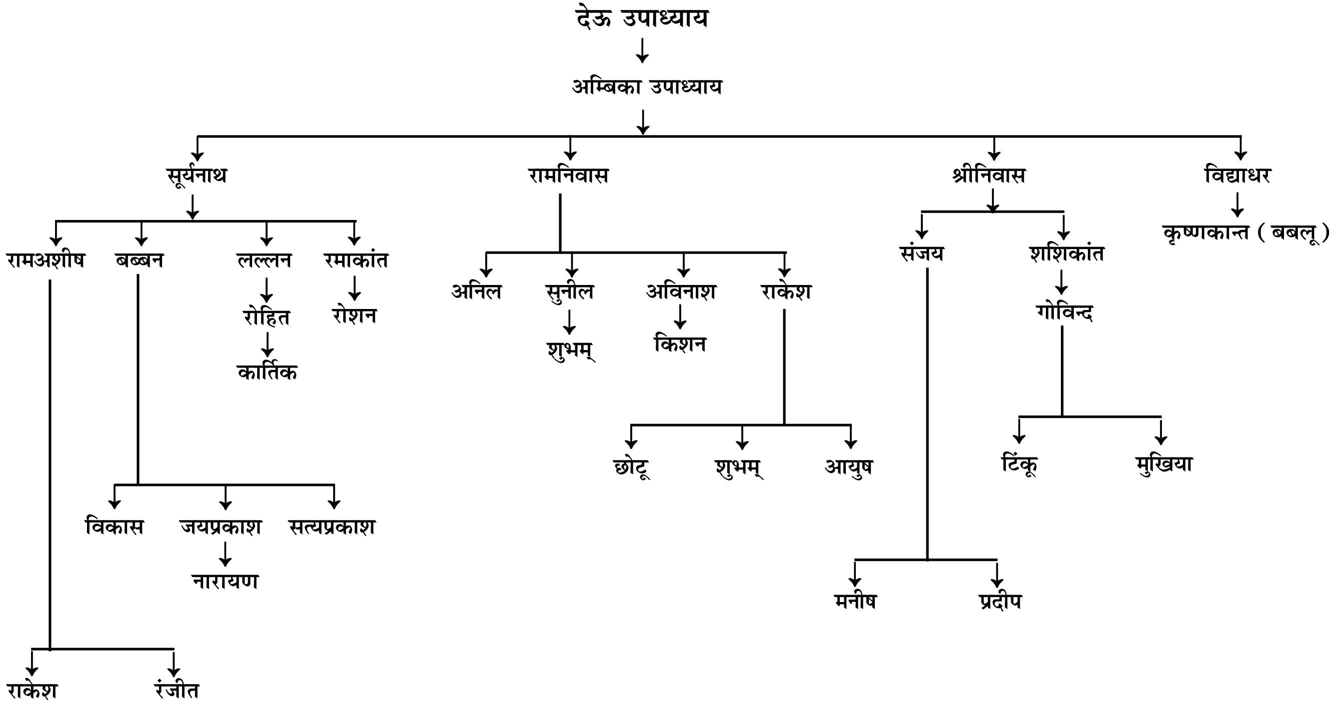

ग्राम-मठिया (२)
(नाग बाबा)

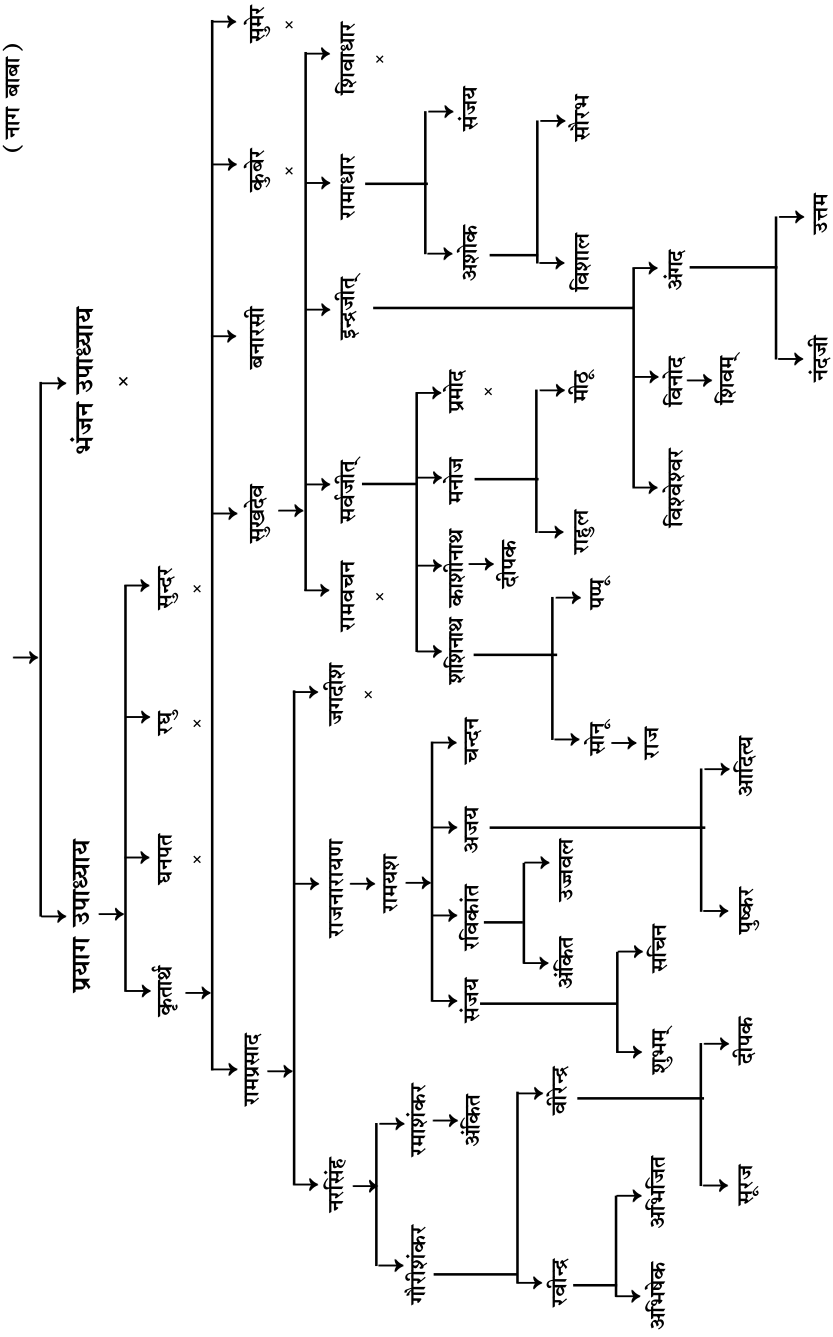

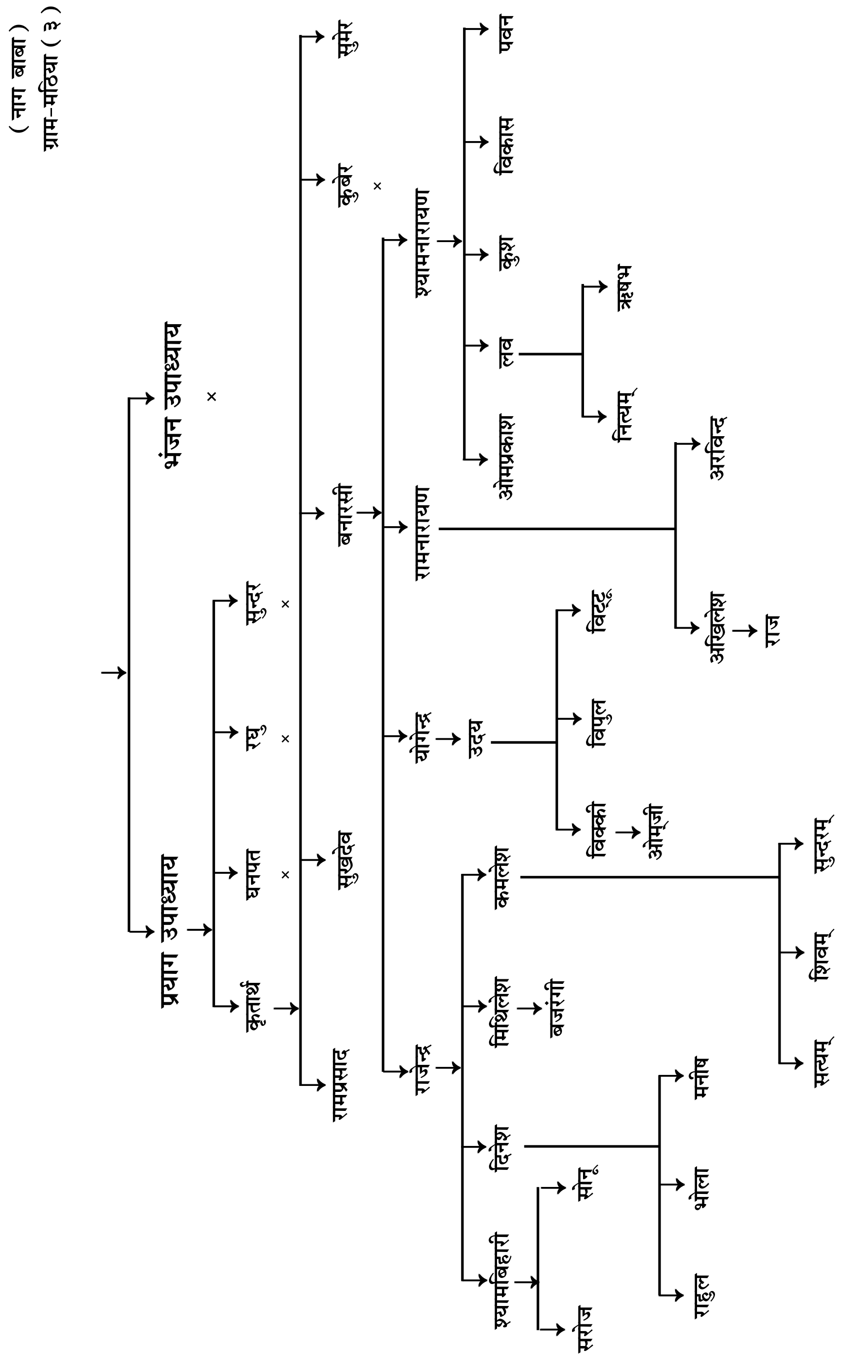
(नाग बाबा)
ग्राम-मठिया (३)
भंजन उपाध्याय ×
प्रयाग उपाध्याय
कृतार्थ
घनपत ×
रघु ×
सुन्दर ×
रामप्रसाद
सुखदेव
बनारसी
कुबेर ×
सुमेर
राजेन्द्र
योगेन्द्र
रामनारायण
श्यामनारायण
श्यामबिहारी
दिनेश
मिथिलेश
कमलेश
सरोज
सोनू
राहुल
भोला
मनीष
बजरंगी
सत्यम्
शिवम्
सुन्दरम्
उदय
विक्की
विपुल
विट्टू
ओमजी
अखिलेश
राज
अरविन्द
ओमप्रकाश
लव
कुश
विकास
पवन
नित्यम्
ऋषभ

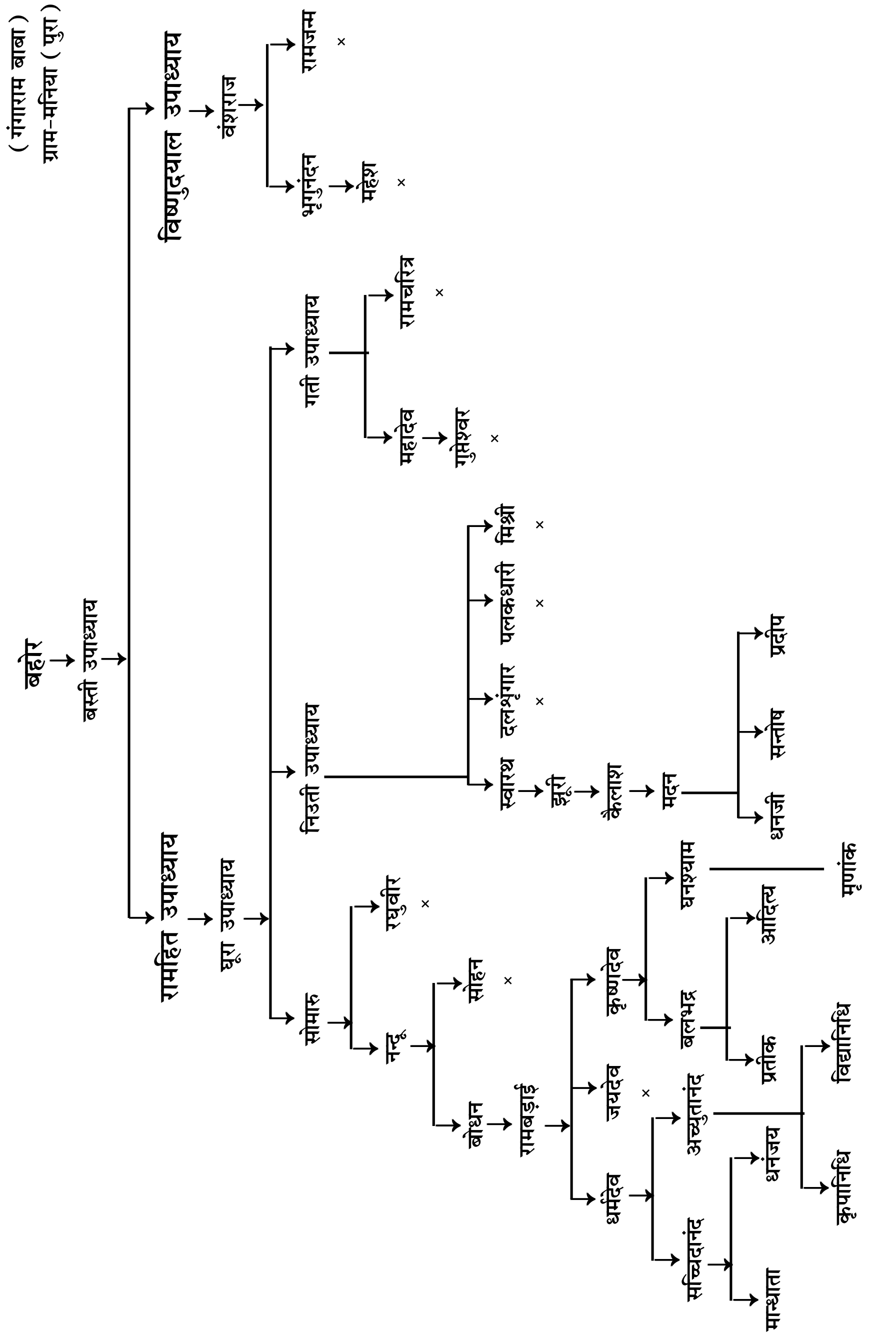
(गंगाराम बाबा)
ग्राम-मनिया (पुरा)
बहोर
बस्ती उपाध्याय
विष्णुदयाल उपाध्याय
वंशराज
रामजन्म ×
भृगुनंदन
महेश ×
रामहित उपाध्याय
घूरा उपाध्याय
गती उपाध्याय
रामचरित्र ×
महादेव
रामेश्वर ×
निउती उपाध्याय
स्वारथ
दलश्रृंगार ×
पलकधारी ×
मिश्री ×
झूरी
कैलाश
मदन
धनजी
सन्तोष
प्रदीप
सोमारू
रघुवीर ×
नन्हू
मोहन ×
बोधन
रामबड़ाई
धर्मदेव
जयदेव ×
कृष्णदेव
सच्चिदानंद
अच्युतानंद
बलभद्र
घनश्याम
मान्धाता
धनंजय
कृपानिधि
विद्यानिधि
प्रतीक
आदित्य
मृणांक

मैनपुरा, भोजपुर, बिहार

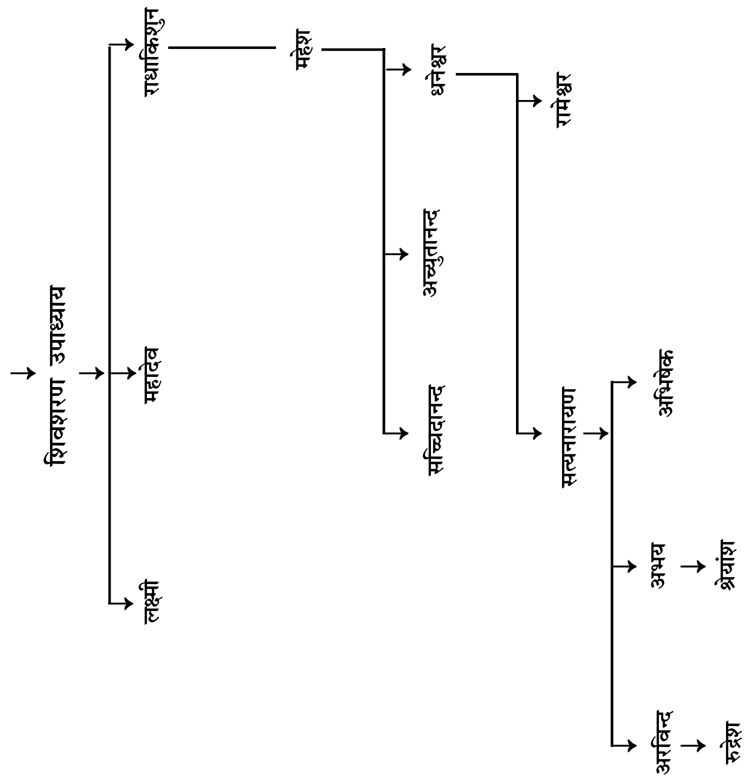

ग्राम-सकास, रोहतास (१)
बिहार (पदुम बाबा)

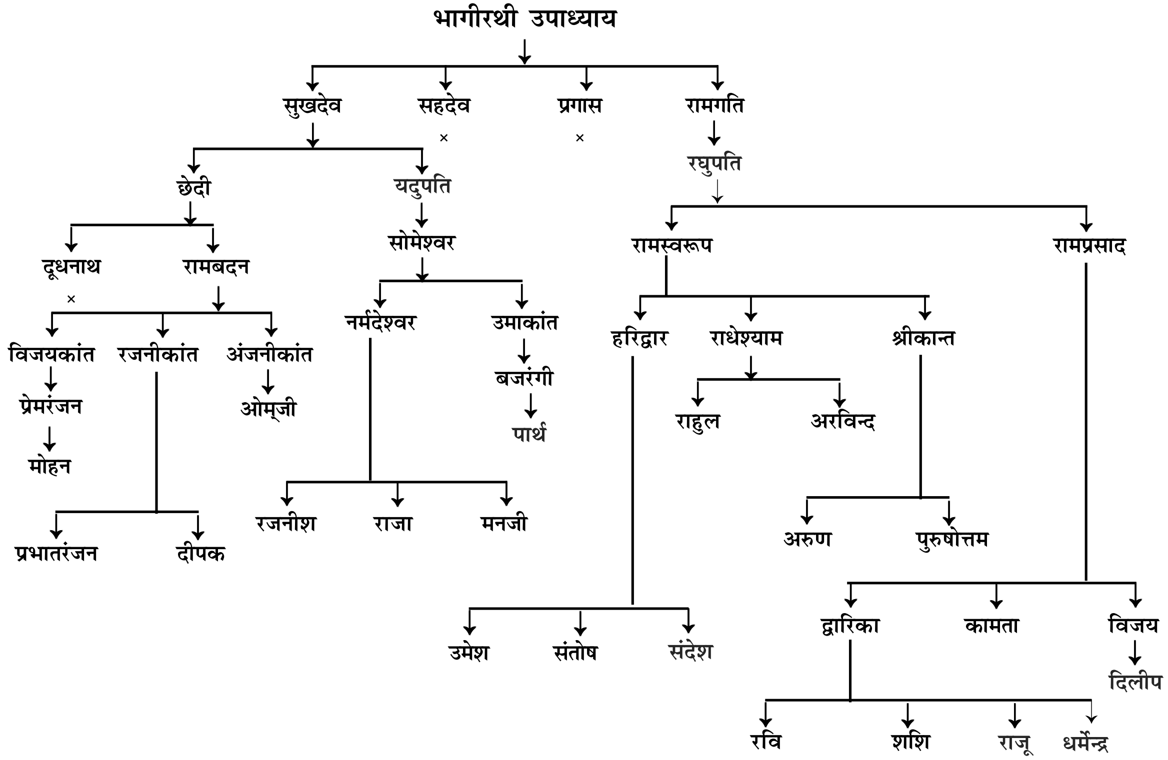

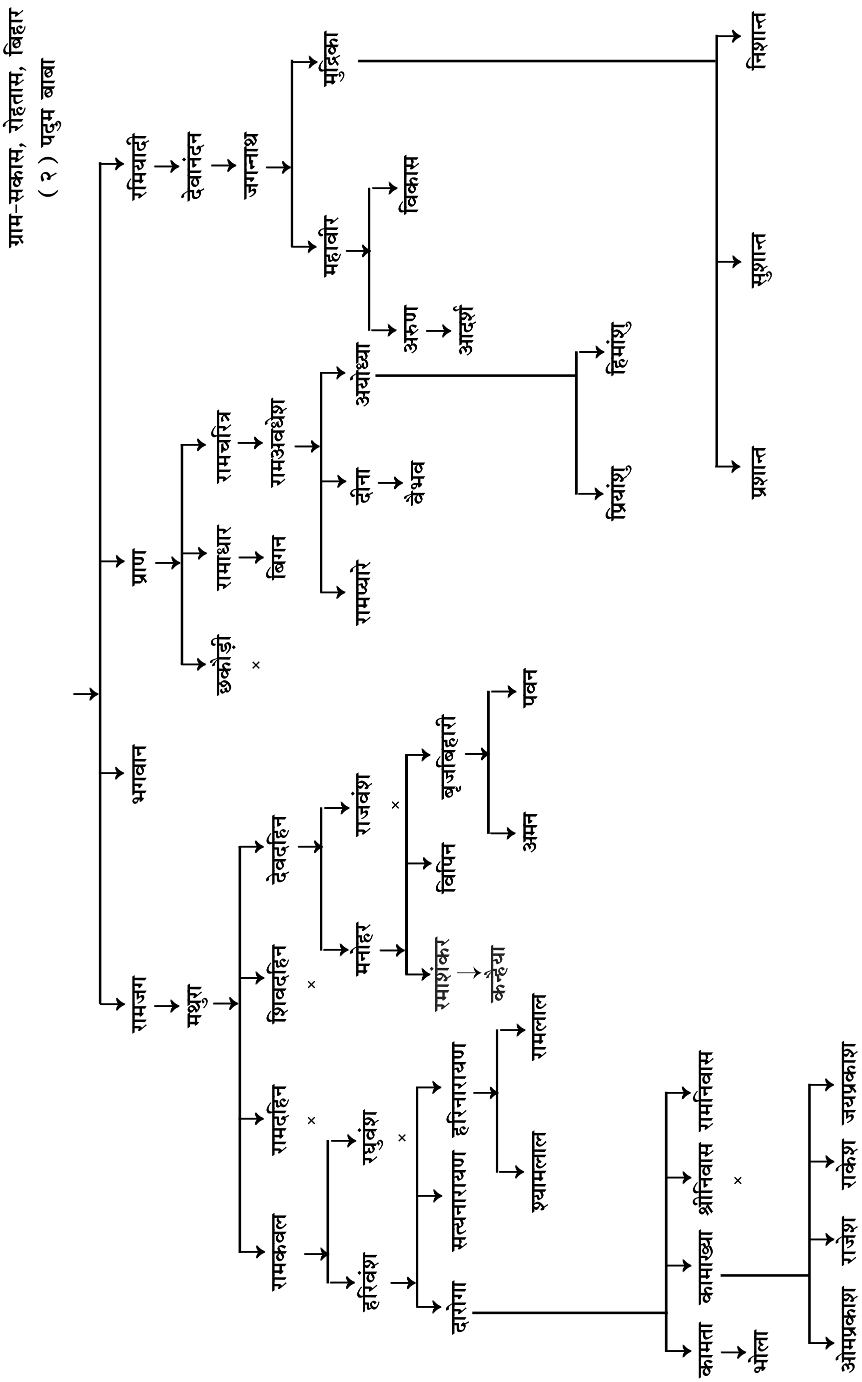
ग्राम-सकास, रोहतास, बिहार
(२) पद्दुम बाबा
रमियादी
देवानंदन
जगन्नाथ
मुद्रिका
निशान्त
सुशान्त
प्रशान्त
महावीर
विकास
अरुण
आदर्श
प्राण
छकौड़ी
रामाधार
बिगन
रामचरित्र
रामअवधेश
रामप्यारे
दीना
वैभव
अयोध्या
प्रियांशु
हिमांशु
भगवान
रामजग
मथुरा
रामकवल
रामदहिन
शिवदहिन
देवदहिन
मनोहर
राजवंश
रमाशंकर
कन्हैया
विपिन
बृजबिहारी
अमन
पवन
हरिवंश
रघुवंश
दारोगा
सत्यनारायण
हरिनारायण
श्यामलाल
रामलाल
कामता
भोला
कामाख्या
श्रीनिवास
रामनिवास
ओमप्रकाश
राजेश
राकेश
जयप्रकाश

ग्राम-सकास, रोहतास, बिहार (३)
(पदुम बाबा)

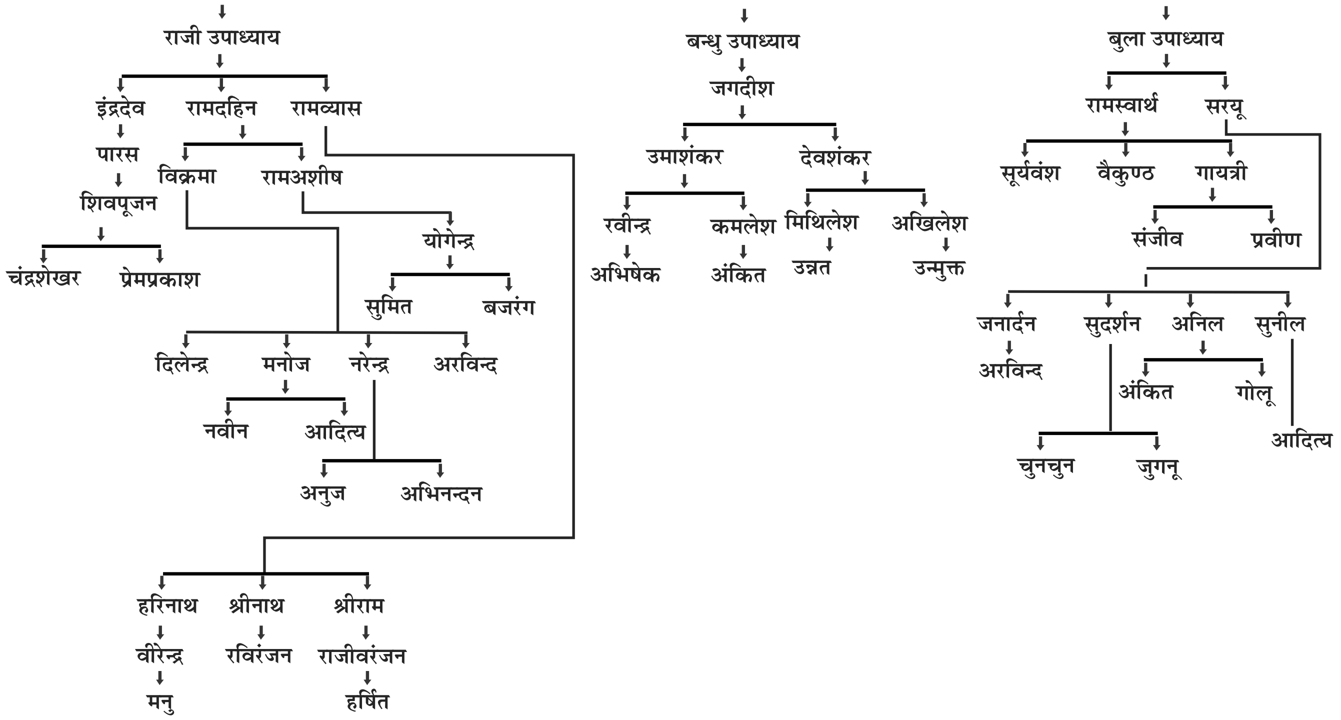

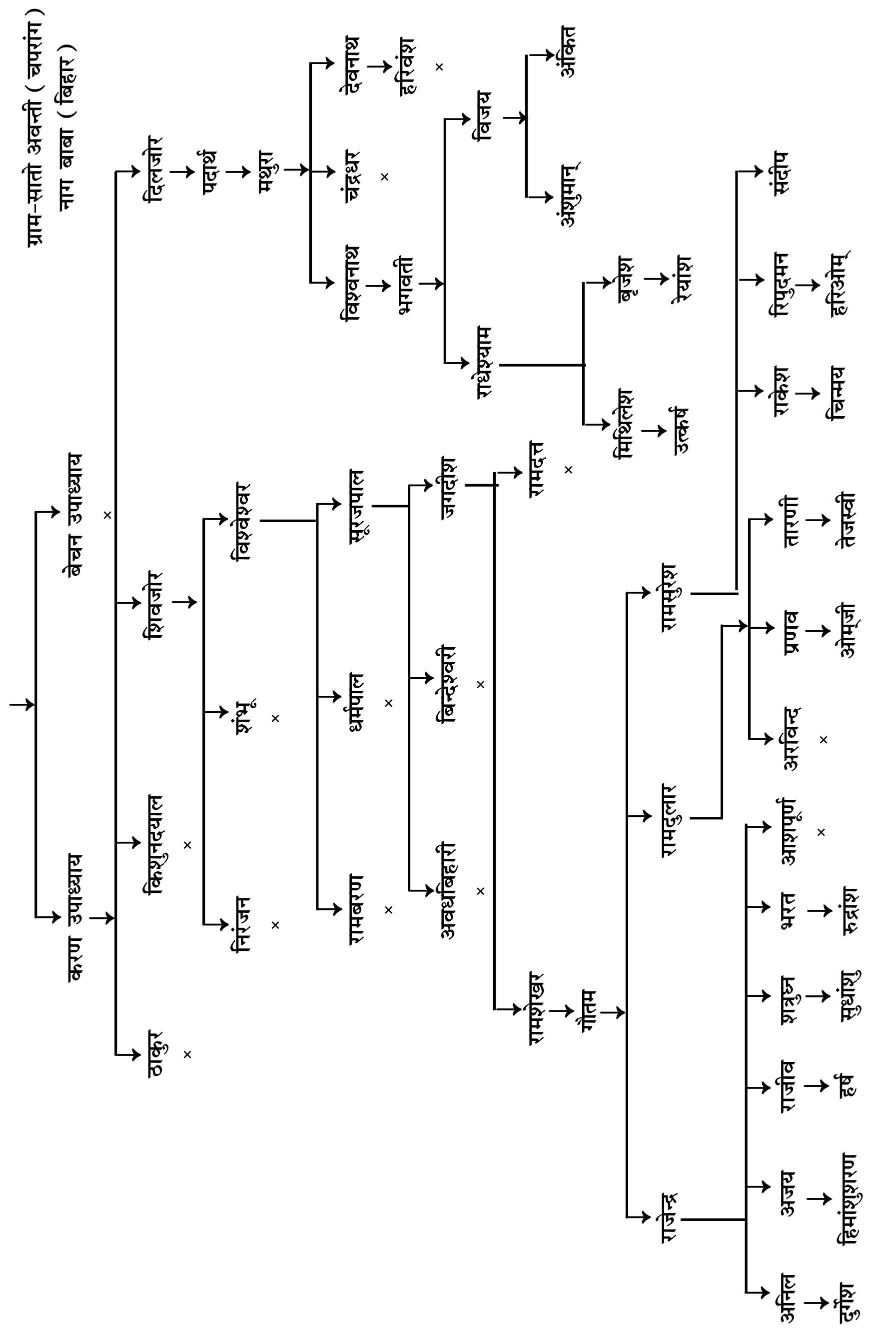

ग्राम-साती अवन्ती (चपरांग)
नाग बाबा (बिहार)
करण उपाध्याय
बेचन उपाध्याय
ठाकुर
किशुनदयाल
शिवजोर
दिलजोर
पदार्थ
मथुरा
विश्वनाथ
चंद्रधर
देवनाथ
हरिवंश
भागवती
राधेश्याम
विजय
अंशुमान
अंकित
मिथिलेश
उत्कर्ष
बृजेश
रेयांश
निरंजन
शंभू
विश्वेश्वर
रामबरण
धर्मपाल
सूरजपाल
अवधबिहारी
बिन्देश्वरी
जगदीश
रामशेखर
रामदत्त
गौतम
राजेन्द्र
रामदुलार
रामसुरेश
अनिल
दुर्गेश
अजय
हिमांशुशरण
राजीव
हर्ष
शत्रुघ्न
सुधांशु
भरत
रुद्रांश
आशापूर्णा
अरविन्द
प्रणव
ओमजी
तारणी
तेजस्वी
राकेश
चिन्मय
रिपुदमन
हरिओम्
संदीप

टीकाराम बाबा-सिसौड़ा
(बिहार)

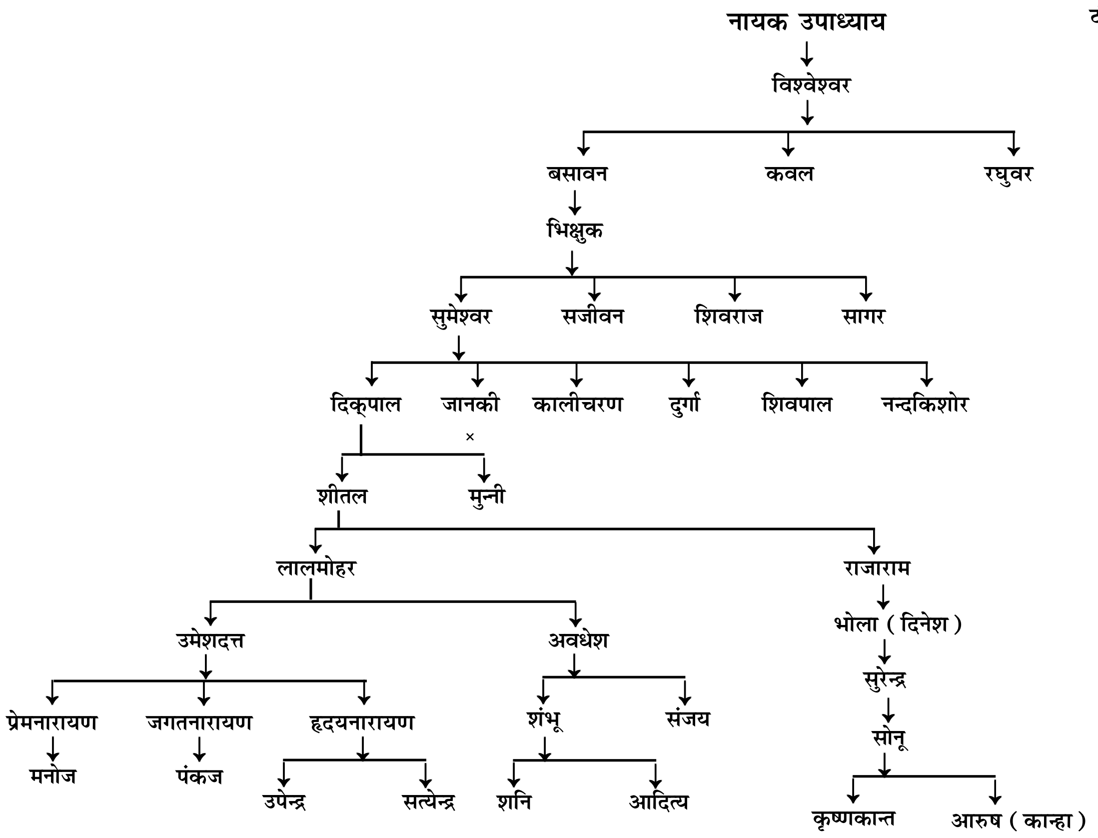

ग्राम-सिझुँआ, कैमूर (१)
(नाग बाबा) बिहार।

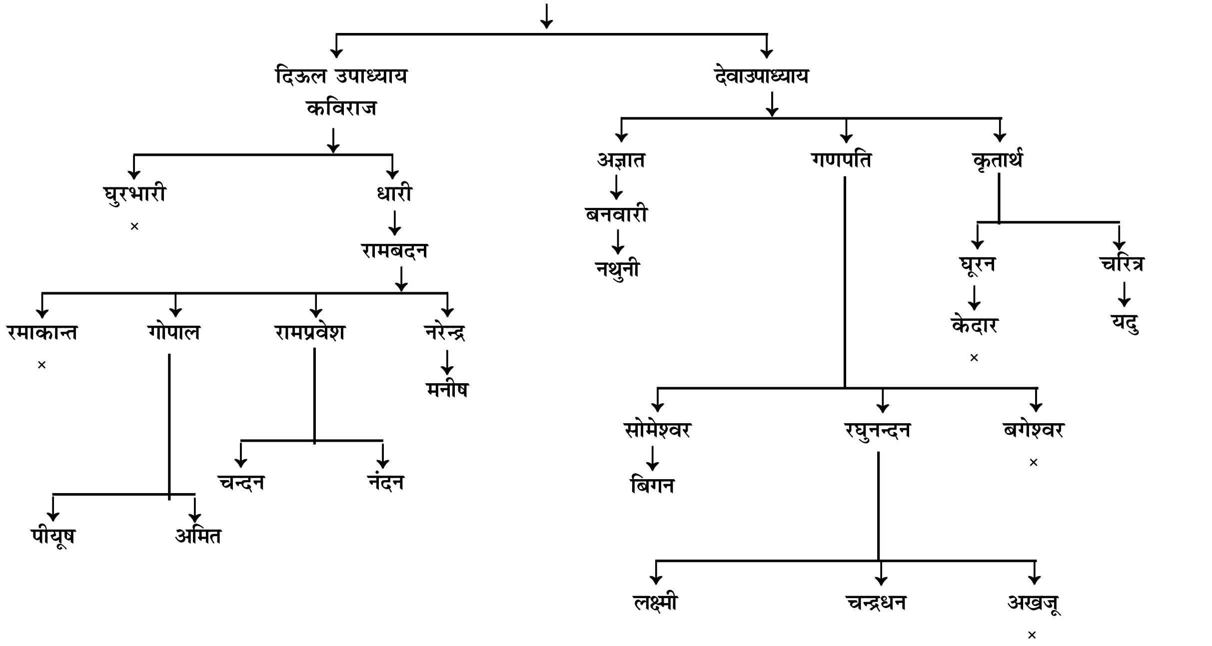

सिझुँआ, कैमूर (२) बिहार।
(नाग बाबा)

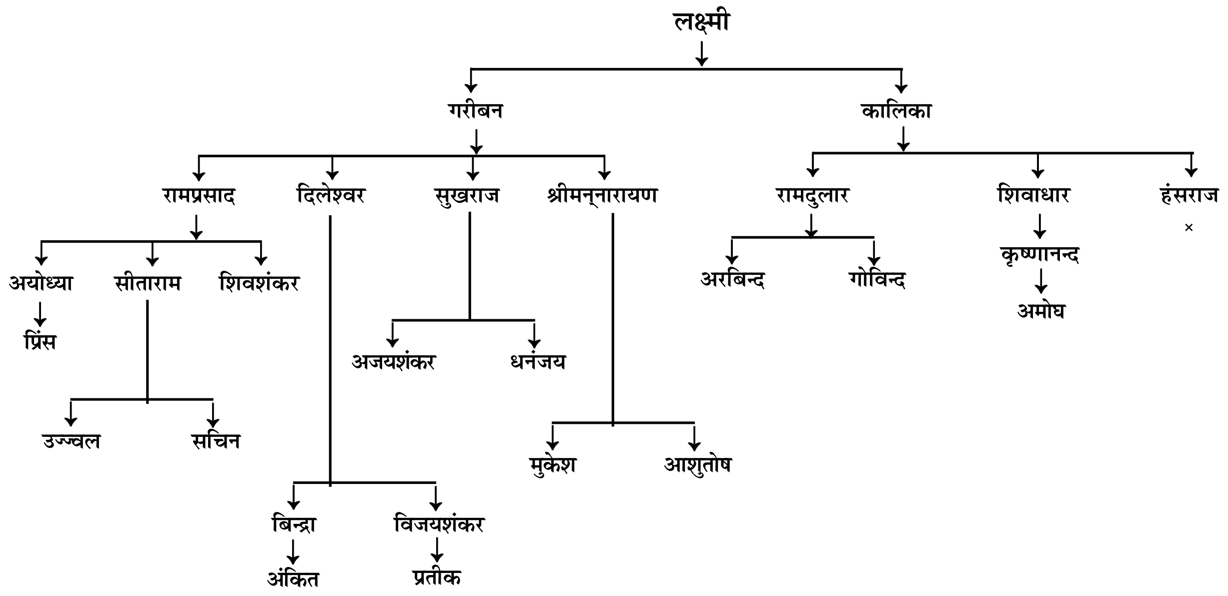

ग्राम-सिझुँआ, कैमूर (३) बिहार
(नाग बाबा)

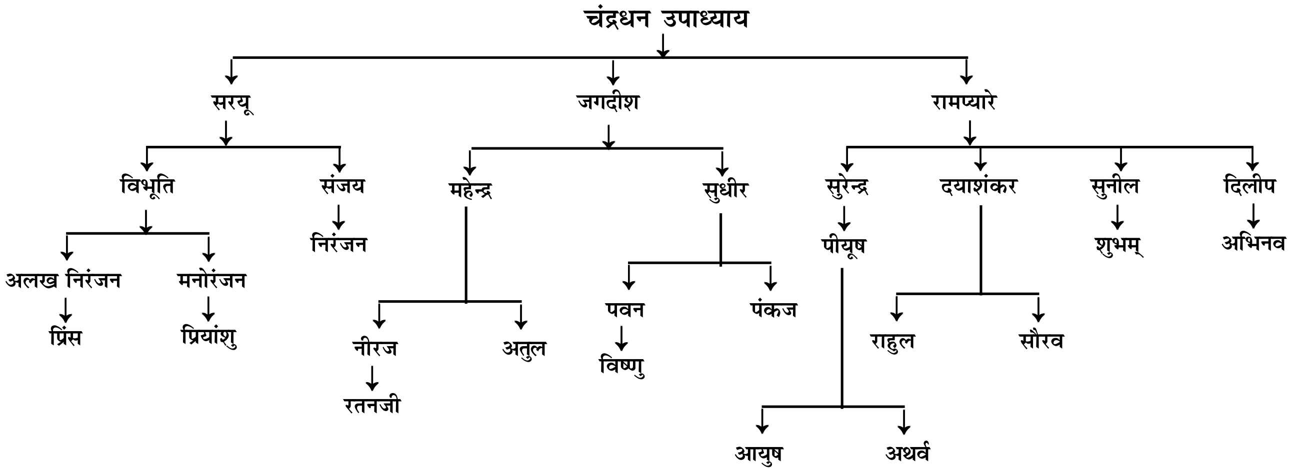

ग्राम-सिझुँआ, कैमूर (४) बिहार।
(नाग बाबा)

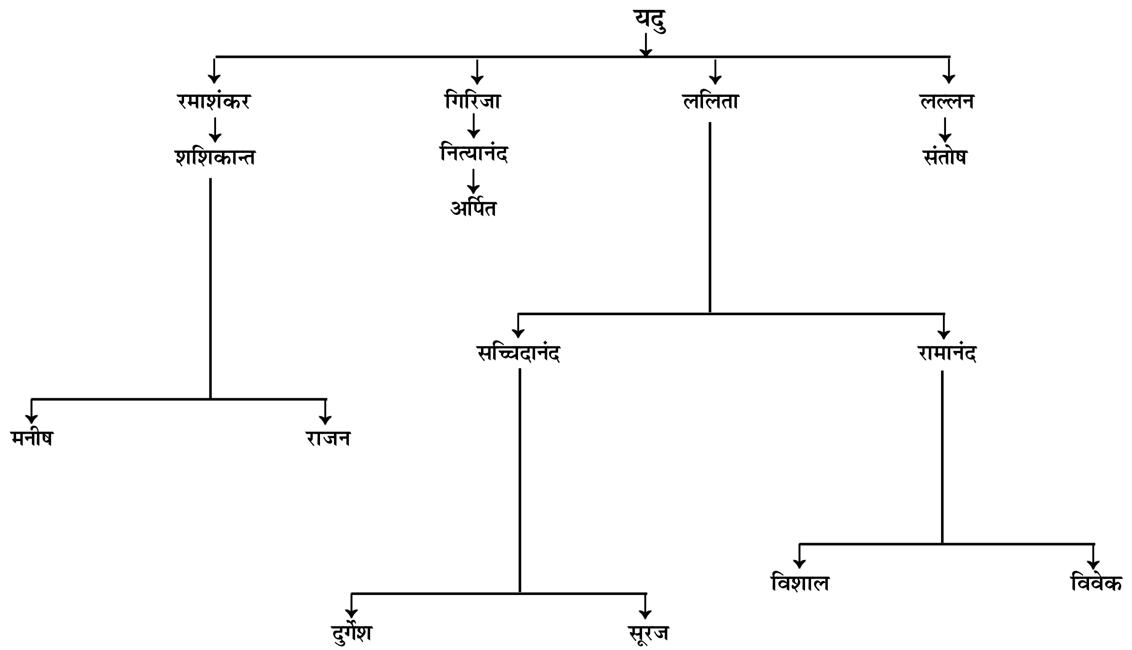

ग्राम-सियरुआ, कैमूर, बिहार

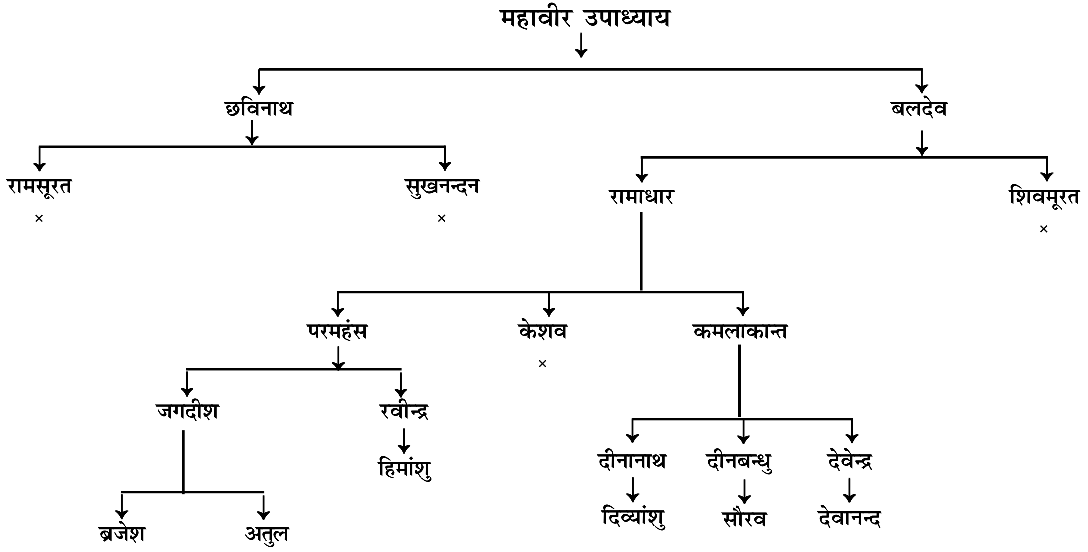

ग्राम-सेवई, रोहतास, बिहार

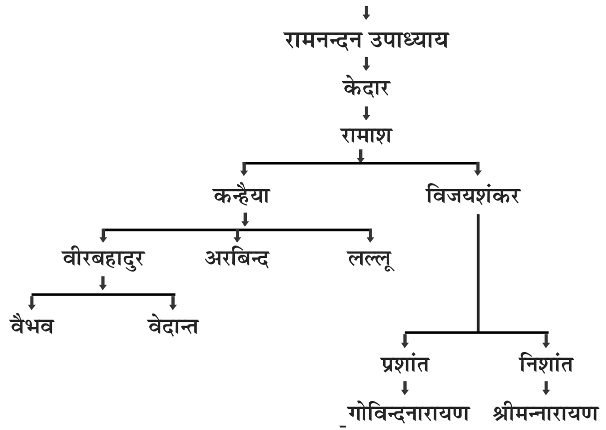

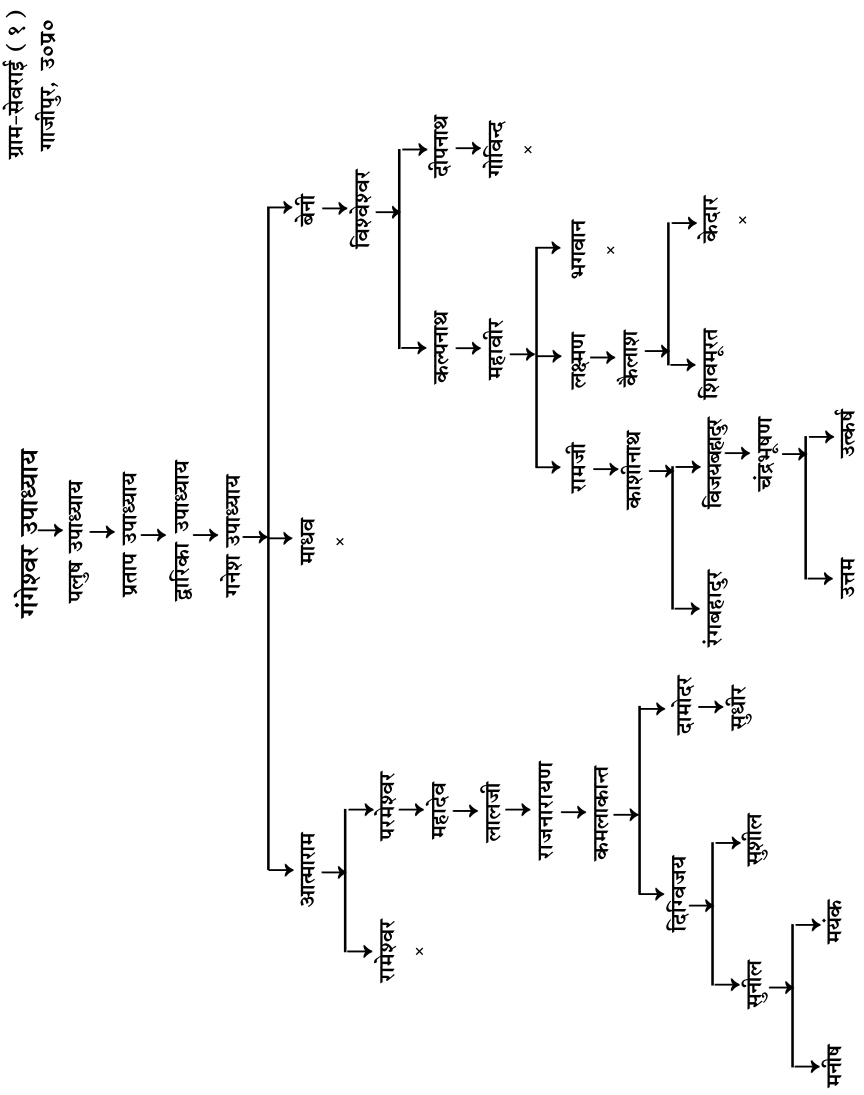
ग्राम-सेवराई (१)
गाजीपुर, उ०प्र०
गंगेश्वर उपाध्याय
पलुष उपाध्याय
प्रताप उपाध्याय
द्वारिका उपाध्याय
गनेश उपाध्याय
बेनी
माधव ×
आत्माराम
विश्वेश्वर
दीपनाथ
गोविन्द ×
कल्पनाथ
महावीर
भगवान ×
लक्ष्मण
कैलाश
केदार ×
शिवमूरत
रामजी
काशीनाथ
विजयबहादुर
चंद्रभूषण
उत्कर्ष
उत्तम
रंगबहादुर
परमेश्वर
महादेव
लालजी
राजनारायण
कमलाकान्त
दामोदर
सुधीर
दिग्विजय
सुशील
सुनील
मयंक
मनीष
रामेश्वर ×

ग्राम-सेवराई (२)

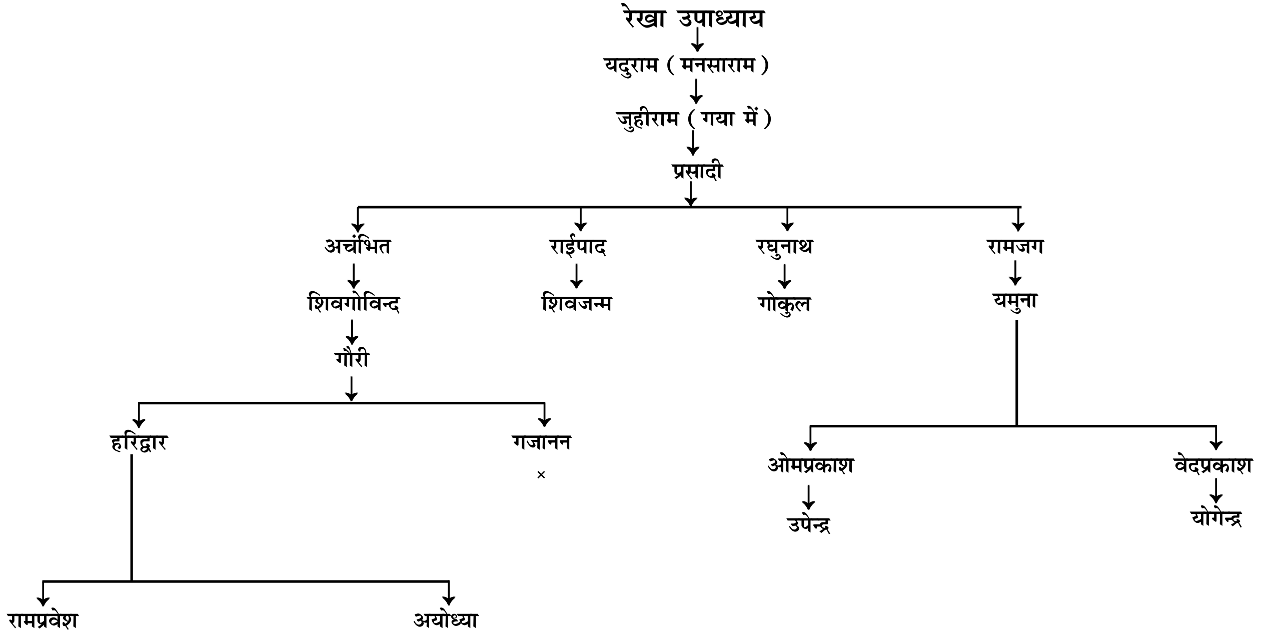
रेखा उपाध्याय
यदुराम (मनसाराम)
जुहीराम (गया में)
प्रसादी
अर्चंभित
राईपाद
रघुनाथ
रामजग
शिवगोविन्द
शिवजन्म
गोकुल
यमुना
गौरी
हरिद्वार
गजानन
×
ओमप्रकाश
वेदप्रकाश
उपेन्द्र
योगेन्द्र
रामप्रवेश
अयोध्या

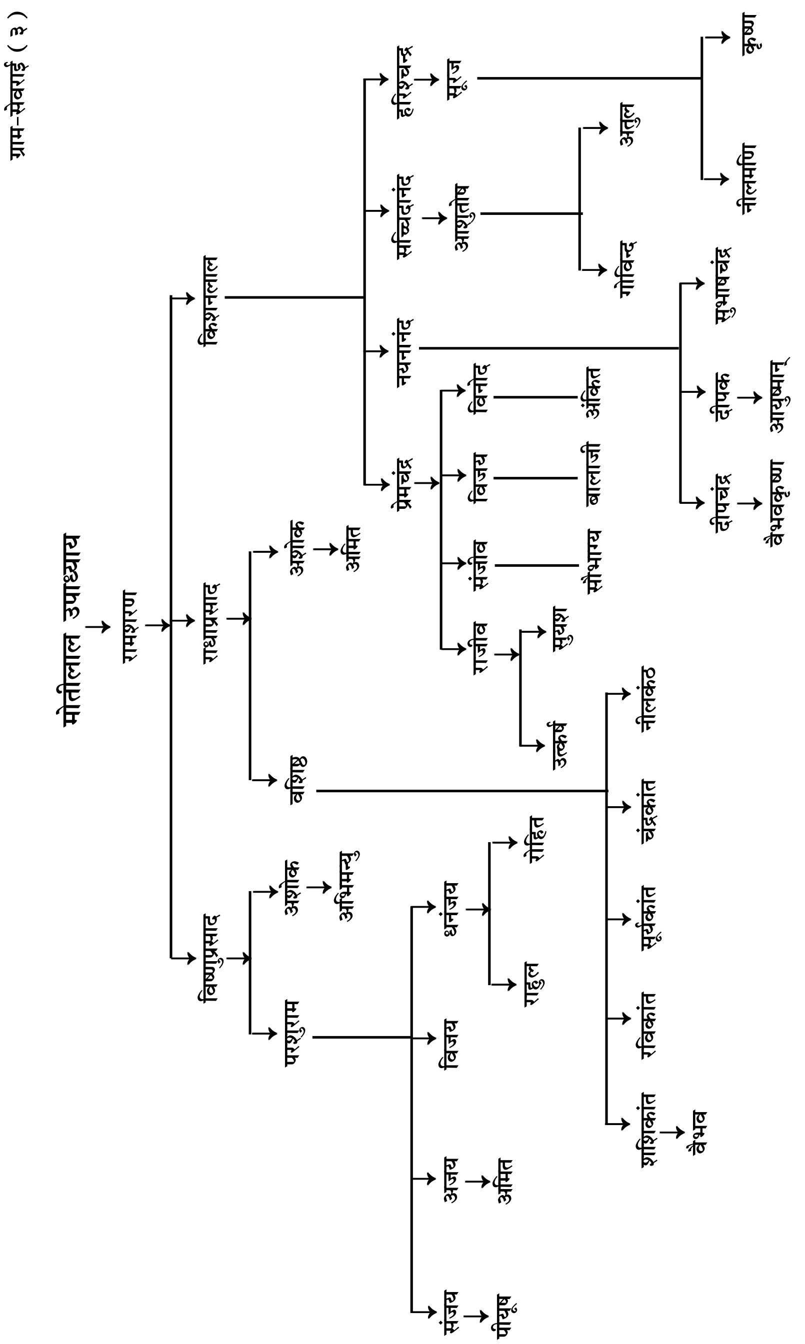
ग्राम-सेवराई (३)
मोतीलाल उपाध्याय
रामशरण
किशनलाल
हरिश्चन्द्र
सूरज
कृष्णा
नीलमणि
सच्चिदानंद
आशुतोष
अतुल
गोविन्द
नयनानंद
सुभाषचंद्र
दीपक
आयुष्मान्
दीपचंद्र
वैभवकृष्णा
प्रेमचंद्र
विनोद
अंकित
विजय
बालाजी
संजीव
सौभाग्य
राजीव
सुयश
उत्कर्ष
राधाप्रसाद
अशोक
अमित
वशिष्ठ
नीलकंठ
चंद्रकांत
सूर्यकांत
रविकांत
शशिकांत
वैभव
विष्णुप्रसाद
अशोक
अभिमन्यु
परशुराम
धनंजय
रोहित
राहुल
विजय
अजय
अमित
संजय
पीयूष

ग्राम-सेवराईं (४)

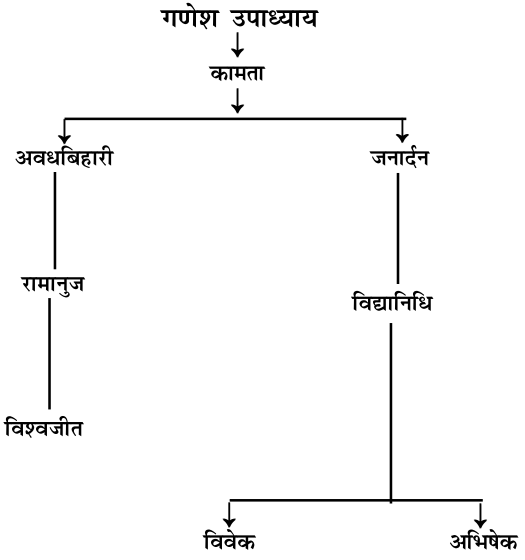
गणेश उपाध्याय
कामता
अवधबिहारी
जनार्दन
रामानुज
विद्यानिधि
विश्वजीत
विवेक
अभिषेक

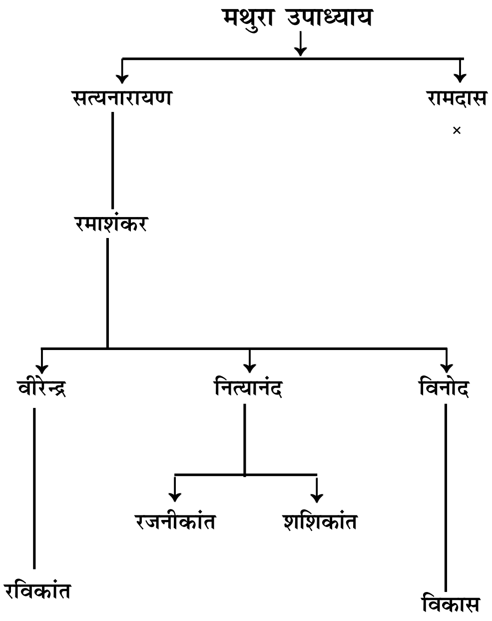
मथुरा उपाध्याय
सत्यनारायण
रामदास
×
रमाशंकर
वीरेन्द्र
नित्यानंद
विनोद
रजनीकांत
शशिकांत
रविकांत
विकास

सेवराईं (५)

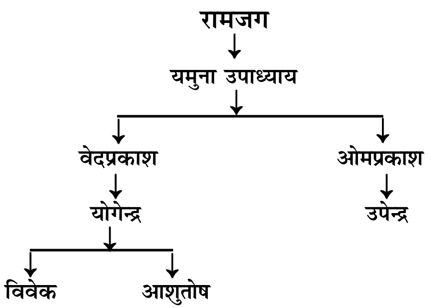

ग्राम-हाटा, बिहार
(पलुष बाबा)

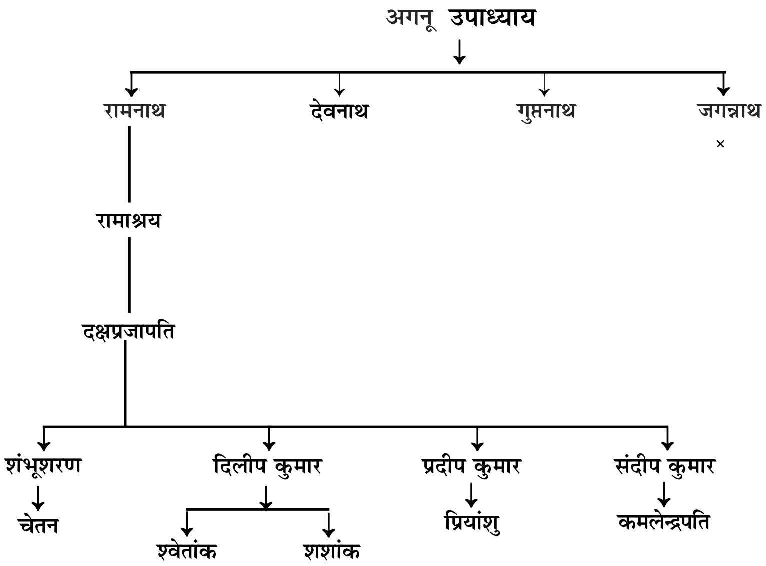

॥ वंश-गीत ॥

सृष्टा तेरी सृष्टि की, महिमा बड़ी न्यारी है।
शंकरगढ़ पुण्य धरा, जननी अघहारी है॥ सृष्टा.......... ॥ १ ॥

कुलदेवी कामाख्या हैं, महिमा जिनकी भारी है।
ब्रह्मर्षि वशिष्ठ हुए, कुलदेव त्रिपुरारी हैं॥ सृष्टा.......... ॥ २ ॥

कलयुग उद्धारक हैं, जन-जन के तारक हैं।
शक्तिसुत भयहारी, निश्चर संहारक हैं॥ सृष्टा.......... ॥ ३ ॥

नारायण अवतारी, सुतव्यास तपस्वी हैं।
है पावन वंश मेरा, शुकदेव यशस्वी हैं॥ सृष्टा.......... ॥ ४ ॥

गंगा अविरल उत्तर,
निशि वासर बहती हैं।
गंगेश्वर तप की अमर सुधा,
कुल पावन द्वय करती है॥ सृष्टा.......... ॥ ५ ॥

जग को सींचा जिसने,
नित दिव्य ज्ञान देकर।
गोयज्ञ किया जिसने,
मानव तन को पाकर॥ सृष्टा.......... ॥ ६ ॥

कुल पावन उच्च सदा, ध्वज तुंग हमारा है।
गत भी तो मेरा था, भावी भी हमारा है॥ सृष्टा.......... ॥ ७ ॥

—जनमेजय उपाध्याय (चुनमुन)

शब्दार्थ—सृष्टा=ब्रह्मा जी, सृष्टि=रचना, शंकरगढ़=सकराडीह, अघहारी=पापनाशिनी, उद्धारक=उद्धार करने वाला, शक्तिसुत=पराशरजी, भयहारी=भय दूर करने वाला, सुतव्यास=वेद व्यास जी, अविरल=निरन्तर, निशि वासर=रात-दिन, द्वय=दोनों कुल (गंगेश्वर वंश व धामदेव वंश), तुंग=ऊँचा, भावी=भविष्य।

माँ कामाख्या की आरती

आरती कामाक्षा देवी की।
जगत् उद्धारक सुर सेवी की॥
आरती कामाख्या........॥ १ ॥

गावत वेद-पुरान कहानी।
योनि रूप तुम हो महारानी॥
सुर-ब्रह्मादिक आदि बखानी।
लहे दरस सब सुख लेवी की॥
आरती कामाख्या........॥ २ ॥

दक्ष सुता जगदम्बा भवानी।
सदा शंभु अर्द्धंग विराजिनी॥
सकल जगत को तारन करनी।
जै हो मातु सिद्धि देवी की॥
आरती कामाख्या........॥ ३ ॥

तीन नयन कर डमरू विराजे।
टीको गोरोचन को साजे॥
तीनों लोक रूप से लाजे।
जै हो मातु! लोक सेवी की॥
आरती कामाख्या........॥ ४ ॥

रक्त पुष्प कण्ठन वनमाला।
केहरि वाहन खंग विशाला॥
मातु करे भक्तन प्रतिपाला।
सकल असुर जीवन लेवी की॥
आरती कामाख्या........॥ ५ ॥

कहै गोपाल मातु बलिहारी।
जाने नहिं महिमा त्रिपुरारी॥
सब सत होय जो कहयो विचारी।
जै जै सबहिं करत देवी की॥
आरती कामाख्या........॥ ६ ॥

शिव-आरती

श्री आशुतोष भगवान जी की आरती
पापियों को पाप से है तारती॥
तूँ एकानन है, चतुरानन,
और पंचम रूप निराला है,
तेरे गले में सर्पों की माला है,
बहुरूप है तूँ, शिवरूप है तूँ-
जग के मंगल की आरती।
पापियों को........॥ १ ॥
यह प्रेम भाव, यह भक्ति भाव
शिव दरस कराने वाला है,
पापों को मिटाने वाला है,
यह सुख करनि, यह दुःख हरनि,
श्री माहेश्वर की आरती।
पापियों को........॥ २ ॥
है शिव-चरित, पावन-पुनीत
सन्मार्ग बताने वाला है,
बिगड़ी को बनाने वाला है,
है राम तूँ ही, हरिनाम तूँ ही-
शिव के महिमा की आरती।
पापियों को........॥ ३ ॥
देवों के देव हैं महादेव,
मुक्ति को दिलाने वाले हैं,
भव पार कराने वाले हैं,
है श्याम तूँ ही, सुखधाम तूँ ही-
श्री भूतेश्वर की आरती।
पापियों को........॥ ४ ॥
शिव सकल सुमंगल दाता है,
सद्‌गति और मुक्ति प्रदाता है,
मुनि जन-मन सुख कर दाता है,
है काशी में तूँ, कैलाश में तूँ-
श्री विश्वेश्वर की आरती।
पापियों को........॥ ५ ॥

सहायक ग्रंथ-सूची

१. ब्राह्मणोत्पति मार्तण्ड
२. विष्णुपुराण
३. श्रीमद्भगवद्गीता
४. मत्स्यपुराण
५. मनुस्मृति
६. पराशर-स्मृति
७. ब्राह्मण गोत्र शासनावली
८. पौराणिक कोश
९. हिन्दू धर्मकोश
१०. मंत्रद्रष्टा महर्षि वेदव्यास पराशर
११. धर्मशास्त्र का इतिहास
१२. सरयूपारीण ब्राह्मण वंशावली
१३. जातिभास्कर
१४. गणेशपुराण
१५. ब्रहमाण्डपुराण
१६. अग्निपुराण
१७. याज्ञवल्क्य स्मृति
१८. निर्णय सिंधु
१९. काल गणना और मानव
२०. ब्राह्मण गोत्रावली
२१. राजपूत वंशावली
२२. देवीभागवत
२३. गायत्री महाविज्ञान
२४. महाभारत
२५. वाल्मीकि रामायण
२६. पद्मपुराण
२७. वृहद् दैवज्ञ रंजनम्
२८. शिवोपासनाङ्क
२९. गायत्री उपासना रहस्य
३०. कालिकापुराण
३१. कल्याण गो-अंक
३२. शिवपुराण
३३. कूर्मपुराण
३४. गरुड़पुराण
३५. ब्रह्म पुराण
३६. ब्रह्मवैवर्त पुराण
३७. महानिर्वाण तंत्र
३८. नारदपुराण
३९. वायुपुराण
४०. श्रीरामचरितमानस
४१. बड़गूजर राजवंश
४२. श्रीमालिनीविजयोत्तरतंत्रम्

गंगेश्वर जीवन-दर्शन के प्रेरकों की सूची—

क्रमांक (1)

ग्राम व पता—अमौरा, गाजीपुर, उ०प्र०

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	स्व० गिरिजा देवी	स्व० श्रीराम उपाध्याय	5,100/-
2-	स्व० षड़ानन उपाध्याय	स्व० कैलाश उपाध्याय	1,000/-
3-	स्व० नन्दकुमार उपाध्याय	स्व० कैलाश उपाध्याय	1,000/-
4-	स्व० इन्द्रासनी देवी	स्व० वशिष्ठ उपाध्याय	1,000/-
5-	स्व० वशिष्ठ उपाध्याय	स्व० सर्वजीत उपाध्याय	1,000/-
6-	श्री राम निवास उपाध्याय	स्व० कमलापति उपाध्याय	1,000/-
7-	स्व० शिशिर कुमार उपाध्याय	स्व० परशुराम उपाध्याय	1,000/-
8-	श्री रमाकान्त उपाध्याय	स्व० श्यामाचरण उपाध्याय	1,100/-
9-	श्री दयाशंकर उपाध्याय	स्व० शिवशंकर उपाध्याय	1,100/-
10-	श्री अयोध्या सिंह	स्व० रघुवंश सिंह	1,001/-
11-	श्री कौशल कुमार उपाध्याय	स्व० जनार्दन उपाध्याय	1,000/-
12-	श्री रतन कुमार उपाध्याय	स्व० रमाशंकर उपाध्याय	1,000/-

ग्राम-उपाध्याय सागर, जनपद-कैमूर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री राम सागर उपाध्याय	स्व० रामवृक्ष उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-खुदुरा (पथरा)

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्रीयुत् कमला उपाध्याय	स्व० सूर्यनाथ उपाध्याय	1100/-
2-	श्री आनन्द पराशर (ऋतुराज)	स्व० अशोक उपाध्याय	1100/-
3-	श्री आलोक उपाध्याय	स्व० अवधेश उपाध्याय	500/-
4-	श्री केशव उपाध्याय	स्व० राम अवतार उपाध्याय	500/-
5-	श्री उमाशंकर उपाध्याय	स्व० सहदेव उपाध्याय	500/-
6-	श्री शंभू उपाध्याय	स्व० जगन्नाथ उपाध्याय	500/-

ग्राम-करहियाँ, जनपद-गाजीपुर, उ०प्र०

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री वाल्मीकि उपाध्याय	स्व० विश्राम उपाध्याय	11,100/-
2-	श्री देव उपाध्याय	स्व० राम अशीष उपाध्याय	1,000/-
3-	श्री जितेन्द्र उपाध्याय	स्व० दामोदर उपाध्याय	1,000/-
4-	श्री सुरेन्द्रनाथ उपाध्याय	स्व० रंगनाथ उपाध्याय	1100/-
5-	श्री रामदयाल उपाध्याय	स्व० रंगनाथ उपाध्याय	1,000/-
6-	श्री प्रभानन्द उपाध्याय	स्व० बिन्देश्वरी उपाध्याय	1100/-
7-	श्री दामोदर उपाध्याय	स्व० सत्यनारायण उपाध्याय	5,100/-
8-	श्री दयाधर उपाध्याय	स्व० राजेन्द्र उपाध्याय	1100/-
9-	श्री योगेश रमण उपाध्याय	स्व० रामजी उपाध्याय	1100/-
10-	श्री संजय उपाध्याय	स्व० दामोदर उपाध्याय	2,100/-
11-	श्री राजेश उपाध्याय	स्व० शिवपूजन उपाध्याय	1100/-
12-	श्री हरिशंकर उपाध्याय	स्व० धर्मदेव उपाध्याय	1100/-
13-	श्री प्रमोद उपाध्याय	स्व० भृगुनाथ उपाध्याय	1100/-
14-	श्री अंजनी उपाध्याय	स्व० चंद्रशेखर उपाध्याय	1100/-
15-	श्री विजय शंकर उपाध्याय (ऋषि-मुनि उपाध्याय)	श्री बृजराज उपाध्याय	1100/-
16-	श्री धनंजय उपाध्याय	स्व० दामोदर उपाध्याय	1100/-
17-	श्री चंदन उपाध्याय	स्व० वैरिष्टर उपाध्याय	1100/-
18-	श्री कन्हैया उपाध्याय	स्व० रामचन्द्र उपाध्याय	1100/-
19-	श्री संतोष उपाध्याय	स्व० सर्वदेव उपाध्याय	1100/-

ग्राम-कमधरपुर, जनपद-बक्सर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री राकेश उपाध्याय	श्री अनिरुद्ध उपाध्याय	1100/-

ग्राम-किनरचोला, जनपद-रोहतास, बिहार

1-	श्री सुरेन्द्र उपाध्याय	श्री बालकेश्वर उपाध्याय	1100/-

ग्राम-कल्याणपुर, बक्सर, बिहार

1-	श्री कमलेश्वर उपाध्याय	श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय	1100/-

ग्राम-गर्रा, जनपद-कैमूर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री ताड़केश्वर उपाध्याय	स्व० कपिल देव उपाध्याय	2100/-
2-	श्री अवधेश उपाध्याय	स्व० कपिल देव उपाध्याय	5100/-
3-	श्री मिथिलेश उपाध्याय	स्व० कपिल देव उपाध्याय	2100/-
4-	श्री विजय शंकर उपाध्याय	श्री सिद्धनाथ उपाध्याय	1100/-
5-	श्री रामनाथ उपाध्याय	श्री सीताराम उपाध्याय	1100/-
6-	श्री उदय नारायण उपाध्याय	श्री रामायण उपाध्याय	1100/-
7-	श्री मनोज उपाध्याय	श्री गिरीश उपाध्याय	2100/-
8-	श्री राम सुदिष्ट मिश्र	स्व० मुखलाल मिश्र	1100/-

ग्राम-चंदा, पोस्ट-अरक, जनपद-बक्सर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री विश्वम्भर उपाध्याय	स्व० श्रीनिवास उपाध्याय	2,500/-
2-	श्री विपिन बिहारी उपाध्याय	स्व० रजनीकान्त उपाध्याय	2,100/-
3-	श्री चंद्रकान्त उपाध्याय	स्व० विश्वनाथ उपाध्याय	2,100/-
4-	श्री नारायण जी उपाध्याय	स्व० हरिशंकर उपाध्याय	2,100/-
5-	श्री दुर्गाशंकर उपाध्याय	स्व० रामचन्द्र उपाध्याय	1,100/-
6-	श्री रविशंकर उपाध्याय	स्व० रामचन्द्र उपाध्याय	1,100/-
7-	श्री सूर्य कुमार उपाध्याय	स्व० चंद्रवंश उपाध्याय	1,100/-
8-	श्री मनोज कुमार उपाध्याय	स्व० अवधेश उपाध्याय	1,100/-
9-	श्री वीरमणि उपाध्याय	स्व० विजय शंकर उपाध्याय	1,100/-
10-	श्री मुरारी उपाध्याय	स्व० राधाकृष्ण उपाध्याय	1,100/-
11-	श्री अयोध्या नारायण उपाध्याय	स्व० देवेन्द्र नाथ उपाध्याय	1,100/-
12-	श्री शिवजी उपाध्याय	स्व० रामकिंकर उपाध्याय	1,100/-
13-	श्री धनंजय उपाध्याय	स्व० सुरेन्द्र नाथ उपाध्याय	1,100/-
14-	श्री नागेन्द्र नाथ उपाध्याय	स्व० जगदीश उपाध्याय	1,100/-
15-	श्री अजय कुमार उपाध्याय	स्व० गोपाल जी उपाध्याय	1,100/-
16-	श्री नारदेश्वर उपाध्याय	स्व० चंद्रहंस उपाध्याय	501/-

ग्राम—डुगुरपुरा, जनपद—कैमूर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री गिरीश नारायण उपाध्याय	स्व० रामायण उपाध्याय	3,100/-
2-	श्री सत्यनारायण उपाध्याय	स्व० राम प्रसन्न उपाध्याय	1,100/-
3-	श्री शालिक उपाध्याय	स्व० रामदेव उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-तेतरिया, जनपद-रोहतास, बिहार

1-	श्री प्रमोद उपाध्याय	स्व० मथुरा उपाध्याय	1111 /-
2-	श्री अभय उपाध्याय	श्री गिरीश नारायण उपाध्याय	1,100/-
3-	श्री उदय नारायण उपाध्याय	स्व० मथुरा उपाध्याय	1,100/-
4-	श्री दीनानाथ उपाध्याय	स्व० मथुरा उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-नाद, जनपद-रोहतास, बिहार

1-	श्री निरंजन उपाध्याय	श्री बजरंगबली उपाध्याय	1,100/-

ग्राम+पत्रालय-देवल, गाजीपुर, उ०प्र०

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री नमो नारायण उपाध्याय	स्व० लक्ष्मण उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-गहमर, गाजीपुर, उ०प्र०

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री आशुतोष उपाध्याय	स्व० दीनानाथ उपाध्याय (उत्तर टोला)	1,00,000/- (पुस्तक में अनुदान)
2-	श्री दिनेश उपाध्याय	स्व० केदार नाथ उपाध्याय (टीका राव पट्टी)	1,000/-
3-	स्व० ओमप्रकाश उपाध्याय	स्व० विश्वनाथ उपाध्याय (टीका राव पट्टी)	1,000/-
4-	रीता उपाध्याय	स्व० राजकुमार उपाध्याय (पं० की छावनी पट्टी)	1,000/-
5-	सरस्वती देवी	स्व० रमाकान्त सिंह (मधुकर राव पट्टी)	1,000/-
6-	श्री अरुण सिंह	स्व० रमाकान्त सिंह (मधुकर राव पट्टी)	2100/-
7-	श्री संजय सिंह	छबिदेव सिंह (चौधरी राव पट्टी)	1,000/-

8-	डॉ आनन्द मोहन उपाध्याय	स्व० हरद्वार उपाध्याय (भीष्म राव पट्टी)	5,100/-
9.	श्री नित्यानन्द उपाध्याय	स्व० वाल्मीकि उपाध्याय (बाबा गंगाराम पट्टी)	1,100/-
10-	श्री रमाकान्त उपाध्याय	स्व० चन्द्रदेव उपाध्याय (बाबा गंगाराम पट्टी)	1,100/-
12-	श्री राजेश उपाध्याय	स्व० रामगोविन्द उपाध्याय (गोविन्द राव पट्टी)	1,100/-
13-	श्री नवीन सिंह	स्व० रमाकान्त सिंह (मधुकर राव पट्टी, तनिष्क सासाराम बिहार) गहमर गाजीपुर	5,100/-
14-	श्री शिवजी उपाध्याय	स्व० लाल मोहर उपाध्याय (पं० की छावनी पट्टी)	1,100/-
15-	श्री चंद्रशेखर उपाध्याय	स्व० रामबचन उपाध्याय (खेलू राव पट्टी)	1,000/-
16-	श्री सच्चिदानन्द उपाध्याय	स्व० सूर्यनाथ उपाध्याय (गोविन्द राव पट्टी, गहमर)	5,100/-
17-	डॉ० बुद्ध नारायण उपाध्याय	स्व० हरिनारायण उपाध्याय (ग्राम+पत्रा० पं० की छावनी, गहमर, गाजीपुर, उ०प्र०)	2,100/-
18-	श्री सुशील सिंह	श्री राम बहादुर सिंह (भैरव राव पट्टी, गहमर, गाजीपुर, उ०प्र०)	2,100/-
19-	श्रीमती मनोरमा उपाध्याय	प्रा० कर्नल रणजीत उपाध्याय (उत्तर टोला, गहमर, गाजीपुर, उ०प्र०)	20,000/-
20-	श्री राम मूरत सिंह	स्व० विभूति सिंह (सम्भल राव पट्टी, गहमर, गाजीपुर, उ०प्र०)	1,001/-
21-	श्री हेमन्त उपाध्याय (लारा बाबा)	स्व० प्रेमनारायण उपाध्याय (उत्तर टोला, गहमर, गाजीपुर, उ०प्र०)	1,100/-

ग्राम+पत्रालय—पचौरी, जनपद-गाजीपुर उ०प्र०

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री वंशनारायण उपाध्याय	स्व० बृजभूषण उपाध्याय	2,100/-
2-	श्री डिप्टी उपाध्याय	स्व० मुरलीधर उपाध्याय	1,100/-
3-	श्री विनय उपाध्याय	स्व० धर्मदेव उपाध्याय	1,100/-
4-	श्री अरुण उपाध्याय	स्व० हीरालाल उपाध्याय	1,100/-
5-	श्री उदय नारायण उपाध्याय	स्व० रमाशंकर उपाध्याय	1,100/-
6-	श्री दीपक उपाध्याय	स्व० रामनारायण उपाध्याय	2,100/-
7-	श्री प्रेम नारायण उपाध्याय	स्व० रमाशंकर उपाध्याय	2,100/-

ग्राम पत्रालय—मझरियाँ, जनपद-बक्सर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री राजीव रंजन उपाध्याय	स्व० राजकिशोर उपाध्याय	50,000/-
2-	श्री शिवनारायण उपाध्याय	स्व० हरदेव उपाध्याय	2,100/-
3-	श्री अरविन्द उपाध्याय	स्व० हरिशंकर उपाध्याय	1,100/-
4-	श्री भागवत् शरण उपाध्याय	स्व० बद्रीनारायण उपाध्याय	1,100/-
5-	श्री चंद्रकिशोर उपाध्याय	स्व० रुद्रनारायण उपाध्याय	1,100/-
6-	श्री हरनारायण उपाध्याय	स्व० हरदेव उपाध्याय	1,100/-
7-	श्री सुरेन्द्र नाथ उपाध्याय	स्व० वेंकटेश्वर उपाध्याय	1,100/-
8-	श्री शिवबिहारी उपाध्याय	स्व० शत्रुघ्न उपाध्याय	1,100/-
9-	श्री चतुर्भुज उपाध्याय	स्व० शिवमंदिर उपाध्याय	1,100/-
10-	श्री नथुनी उपाध्याय	स्व० सुदामा उपाध्याय	1,100/-
11-	श्री बलिराम उपाध्याय	स्व० सुदामा उपाध्याय	1,100/-
12-	श्री धनंजय उपाध्याय	स्व० रामअशीष उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-पंडितपुरा, रोहतास, बिहार

1-	श्री रामवशिष्ठ पाण्डेय	स्व० राम कैलाश पाण्डेय	2,100/-
2-	श्री विनोद पाण्डेय	श्री राजवंश पाण्डेय	2,100/-

ग्राम-पानापुर, रोहतास, बिहार

1-	श्री राधेश्याम उपाध्याय	श्री बिगन उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-भदोखरा, रोहतास, बिहार

1-	श्री सुनील उपाध्याय	श्री रामअवतार उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-भरखरा, बक्सर, बिहार

1-	श्री ज्ञानप्रकाश उपाध्याय	स्व० बब्बन उपाध्याय	5,100/-

ग्राम—मठियाँ, कैमूर, बिहार

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री रामाधार उपाध्याय	स्व० सुखदेव उपाध्याय	1,100/-

ग्राम व पत्रालय—मनियाँ जनपद—गाजीपुर, उ०प०

क्र०सं०	नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1-	श्री जयदेव उपाध्याय	स्व० रामबड़ाई उपाध्याय	1100/-
2-	श्री कृष्णदेव उपाध्याय	स्व० रामबड़ाई उपाध्याय	1100/-
3-	श्री घनश्याम उपाध्याय	श्री कृष्णदेव उपाध्याय	1100/-
4-	श्री सच्चिदानन्द उपाध्याय	स्व० धर्मदेव उपाध्याय	2100/-

ग्राम-सकास, जनपद-रोहतास, बिहार

क्र०सं० नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1- श्री रजनीकान्त उपाध्याय	स्व० रामबदन उपाध्याय	1,100/-
2- श्री देवशंकर उपाध्याय	स्व० जगदीश उपाध्याय	1,100/-
3- श्री बजरंगी उपाध्याय	उमाकान्त उपाध्याय	1,100/-

ग्राम-सेवई, जनपद-रोहतास, बिहार

1- श्री विजयशंकर उपाध्याय	श्री रामाश उपाध्याय	1,100/-

ग्राम—सिसौड़ा, जनपद—कैमूर, बिहार

1- श्री सुरेन्द्र उपाध्याय	स्व० दिनेश दत्त उपाध्याय	1,100/-
2- श्री विकास पाण्डेय	श्री रास बिहारी पाण्डेय	1,000/-

बाबा गंगेश्वर के प्रतिमा निर्माण व स्थापन में आर्थिक सहयोग कर्ताओं की सूची

क्र०सं० ग्राम

1- अमौरा
2- करहियाँ
3- खुदुरा (पथरा)
4- गर्रा
5- चंदा
6- डुगुरपुरा
7- देवल
8- पचौरी
9- मँझरिया
10- मठियाँ
11- मनियाँ
12- गहमर

गैर पराशर गोत्रीय प्रेरकगण

क्र०सं० नाम	पुत्र/पति	प्रेरणा राशि
1- श्रीरंग पाण्डेय	स्व० भोला पाण्डेय ग्राम-मुरारपुर, बक्सर, बिहार	1,000/-
2- श्री धर्मदानी पाण्डेय	स्व० श्रीराम पाण्डेय ग्राम-जोगियामार, गाजीपुर, उ०प्र०	1,000/-
3- श्री सूर्यनाथ तिवारी	स्व० रामप्रताप तिवारी ग्राम-घाटमपुर, सुलतानपुर	1,000/-
4- श्रीमती कविता सिंह	श्री संजय सिंह ग्राम-चिलहरी, बक्सर, बिहार	1,000/-

5–	श्रीमती उर्मिला सिंह	डॉ० प्रेमचंद सिंह उत्तरपाढ़ा, हुगली, प. बंगाल	1,000/–
6–	श्री रमेश जायसवाल	स्व० रामदास जायसवाल 8 नं० नरसिंह लेन, कोलकाता	1,100/–
7–	श्रीमती प्रीति जायसवाल	श्री निरंजन जायसवाल मुंबई, महाराष्ट्र	1,000/–
8–	श्री श्याम सुन्दर पाण्डेय	स्व० राममूरत पाण्डेय बैरकपुर, उ०24 परगना, प. बंगाल	1,000/–
9–	श्रीमती ऋतु देवी	श्री रामनरेश साह डानकुनी, हुगली, प० बंगाल	1,000/–
10.	स्व० श्रीराम तिवारी	स्व० गुप्तेश्वर तिवारी ग्राम–बड़ौरा, कैमूर, बिहार	1,100/–
11–	श्रीमती रेखा जायसवाल	श्री रामचंद्र जायसवाल कोलकाता, प० बंगाल	1,000/–
12–	श्री संतोष जायसवाल	श्री रमेश जायसवाल कोलकाता, प० बंगाल	1,000/–
13–	शशिकला पाण्डेय	स्व० अशोक पाण्डेय उत्तरौली, दिलदारनगर, गाजीपुर	1,000/–
14–	श्री धनन्जय राय	श्री रणजीत प्रसाद राय ग्राम–सगरा, बक्सर, बिहार	1,000/–
15–	श्री चंद्रशेखर तिवारी	स्व०. सीताराम तिवारी ग्राम–बघरी, गाजीपुर, उ० प्र०	5,000/–
16–	श्री कमलनयन पाण्डेय	स्व० कालिका पाण्डेय ग्राम+पत्रा० पकड़ी, गाजीपुर	5,100/–
17–	श्री संजय तिवारी	स्व० गुप्तेश्वर तिवारी (ग्राम+पत्रा० मिश्रवलिया, गाजीपुर, उ०प्र०)	1,001/–
18–	श्री प्रभंजन कुमार वर्मा	स्व० उमाकान्त वर्मा (ग्राम+पत्रा० रामपुर, जनपद–बक्सर, बिहार)	2,100/–

चौरासी के सक्रिय कार्यकारी सदस्यगण

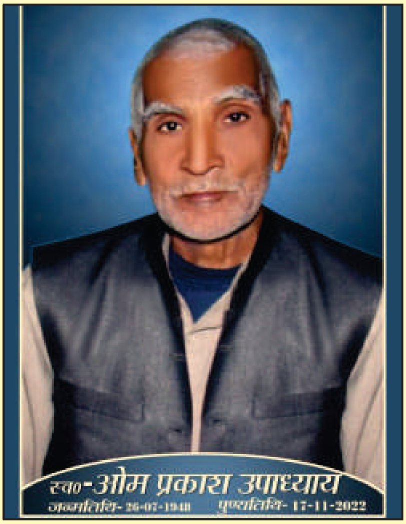

स्व० ओमप्रकाश उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० :गहमर

जनपद : गाजीपुर

स्व० प्रेमचंद उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : सेवराई

जनपद : गाजीपुर

श्री दामोदर उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : करहियाँ

जनपद : गाजीपुर

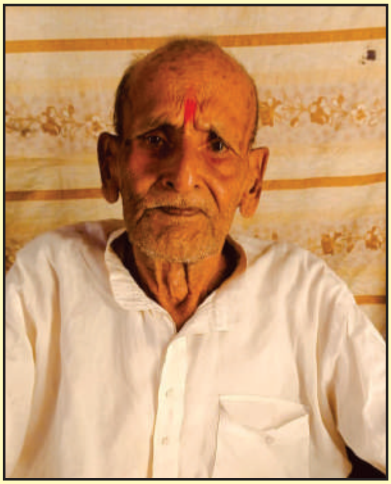

श्री रमाकान्त उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : अमौरा, गाजीपुर

मो० 9453344218

श्री रासबिहारी उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : मंझरिया, बिहार

मो० 7765049016

श्रीनिवास उपाध्याय

सम्मानित एवं सक्रिय सदस्य-चौरासी

ग्राम व पत्रा० : मंझरियाँ, बक्सर, बिहार

मो० 8757127537

श्री केशव प्रसाद उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर

मो० 7651993821

श्री हृदयनारायण उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : मझरियाँ, बक्सर

जनपद : बिहार

श्री उदयनारायण उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : पचौरी, गाजीपुर
मो० 8083462304

श्री सुरेन्द्र उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : करहियां, गाजीपुर
मो० 8127222479

श्री कृष्णदेव उपाध्याय
सम्मानित एवं सक्रिय सदस्य-चौरासी
ग्राम व पत्रा० : मनिया, गाजीपुर
मो० 9506139080

श्री शिवजी उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : मनोहरपुर, बक्सर, बिहार
मो० 7739066116

श्री योगेश रमण उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : करहियाँ, गाजीपुर

मो० 8052242495

श्री प्रेमनारायण उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : पचौरी, गाजीपुर

मो० 9365061663

श्री सदानंद उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर

मो० 9125335686

श्री सच्चिदानन्द उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर

मो० 7705937452

श्री अवधेश कुमार उपाध्याय
ग्राम-गर्रा, पत्रा०-नुआँव, कैमूर, बिहार
मो० 8950023000

श्री बलिराम उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर
मो० 7069509647

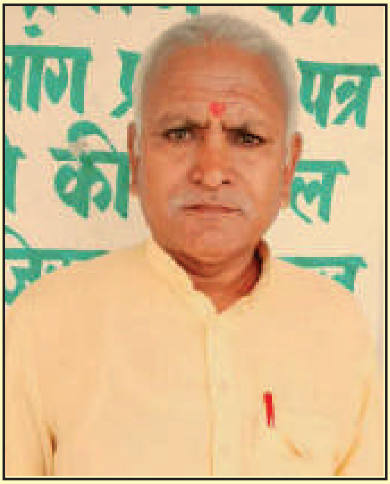

श्री आलोक उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : पचौरी, गाजीपुर
मो० 9651119830

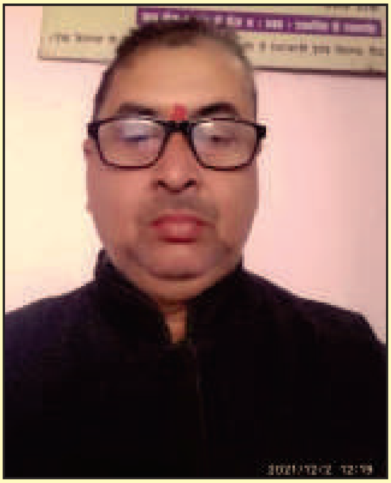

श्री दुर्गा शंकर उपाध्याय
ग्राम-चंदा, पत्रा०-अरक, जनपद-बक्सर
मो० 9931829044

श्री अखिलेश उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर

मो० 9839289015

नाम : श्रीनिवास उपाध्याय

ग्राम+पत्रा० खुदुरा, गाजीपुर

मो० 8127215507

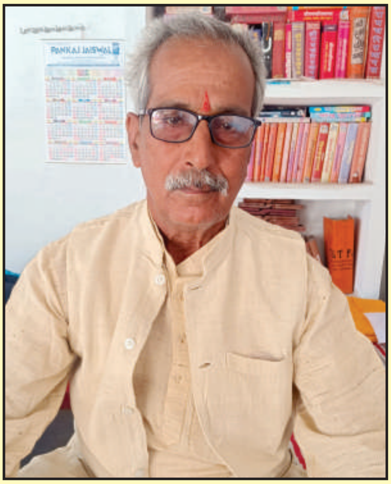

नाम : श्री चन्द्रकान्त उपाध्याय

ग्राम : चन्दा, बक्सर

मो० 7654208211

नाम : श्री रजनीकान्त उपाध्याय

ग्राम+पत्रा० सकास, रोहतास, बिहार

(भाजपा जिला मंत्री सासाराम)

मो० 9472252409

श्री देवकुमार उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर

मो० 9839375151

श्री अनिल उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : खुदरा, पथरा, गाजीपुर

मो० 8135011228

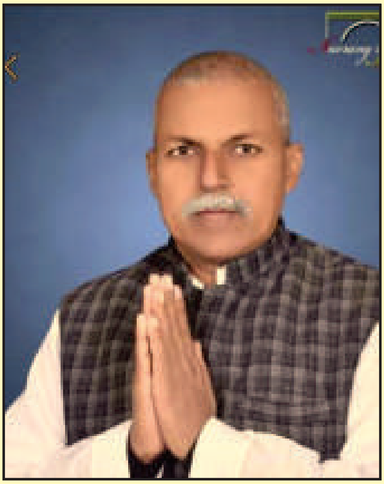

श्री सुमेन्द्र उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : कल्याणपुर, बक्सर,बिहार

मो० 7070485387

श्री पं० जयप्रकाश उपाध्याय

ग्राम व पत्रा० : अमौरा, गाजीपुर

मो० 9838489374

श्री राजेश उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर
मो० 9161617871

श्री नमोनारायण उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : देवल, गाजीपुर
मो० 9369665128

डॉ० बुद्ध नारायण उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : गहमर, गाजीपुर
मो० 9125662566

नाम : श्री मनोज कुमार उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० गर्रा—डुगुरपुरा, कैमूर
मो० 9431419949

श्रीकान्त उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० :चौबेपुर, कैमूर
मो० 9199902317

श्री अरुण कुमार उपाध्याय (चुनचुन)
ग्राम व पत्रा० :पचौरी, गाजीपुर
मो० 8808523504

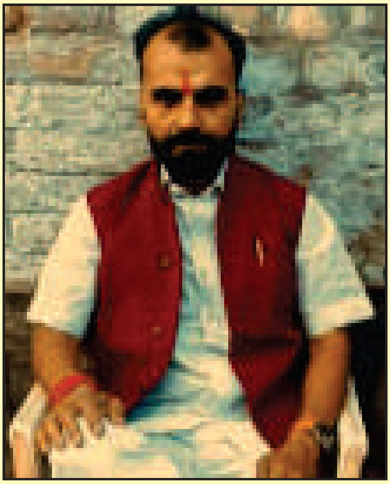

श्री शिवनारायण उपाध्याय (मुन्नाजी)
ग्राम व पत्रा० : मंझरिया, बक्सर, बिहार
मो० 8789616014

श्री ज्ञानप्रकाश उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : भरखरा, बक्सर
मो० 9006268478

श्री सुरेन्द्र उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० सिसौड़ा, कैमूर
मो० 9955436644

श्री राजीवरंजन उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० मझरियाँ, बक्सर
मो० +1(980)899-7604

श्री अंजनीकान्त उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० सकास, रोहतास, बिहार
मो० 9471494652

श्री जितेन्द्र उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : करहियाँ, गाजीपुर
मो० 6394917103

श्री जनमेजय उपाध्याय
(वंशगीत रचयिता)
ग्राम व पत्रा० : अमौरा, गाजीपुर
मो० 7905651231

श्री अंगद उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० मठियाँ, कैमूर
मो० 9525823823

श्री कृष्णदेव उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० डुगुरपुरा, कैमूर
मो० 7017187773

श्री राजेश उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० करहियाँ, गाजीपुर
मो० 8576845780

श्री ऋतुराज पराशर
ग्राम व पत्रा० : खुदरा-पथरा,गाजीपुर
मो० 9628190448

श्री दिनकर उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० गहमर, गाजीपुर
मो० 9369594874

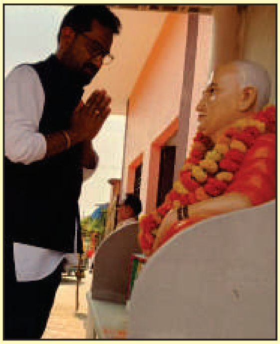

श्री राकेश उपाध्याय
ग्राम-कमधरपुर, पत्रा० :कनझरुआ, बक्सर
मो० 9525436777

श्री शुभम उपाध्याय
ग्राम व पत्रा० : पचौरी, गाजीपुर
मो० 9554310217

श्री धनंजय उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० मनिया, गाजीपुर
मो० 8948133479

श्री विशाल उपाध्याय
ग्राम-पत्रा० : मठियाँ, कैमूर, बिहार
मो० 6387627237

स्व० कमलापति उपाध्याय

ग्राम+पत्रा० अमौरा, गाजीपुर

(प्रथम चौरासी अध्यक्ष)

स्व० बद्री उपाध्याय

ग्राम+पत्रा० गहमर, गाजीपुर

(तृतीय चौरासी अध्यक्ष)

स्व० बबन उपाध्याय

ग्राम+पत्रा० भरखरा, बक्सर

(बिहार)

श्री रामगोविन्द उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० गहमर गाजीपुर

स्व० दीनानाथ उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० गहमर, गाजीपुर
(पूर्व संरक्षक चौरासी)

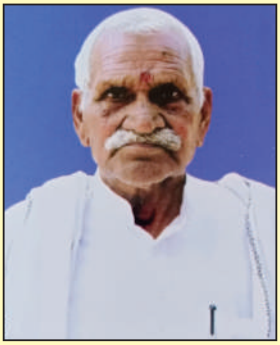

श्री लक्ष्मीकान्त उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० गहमर, गाजीपुर
मो० 9795387254

श्री देव शंकर उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० सकास,
रोहतास, बिहार

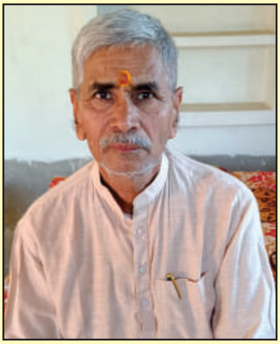

श्री सच्चिदानन्द उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० मनियाँ, गाजीपुर
मो० 945159771

श्री राम वशिष्ठ पाण्डेय
ग्राम–पंडितपुरा, रोहतास, बिहार
मो० 8084921494

श्री विनोबा नन्द उपाध्याय
ग्राम–बगाढ़ी, कैमूर
बिहार

श्री शम्भू उपाध्याय
ग्राम–हाटा, कैमूर, बिहार
मो० 9415268201

श्री राजवंश पाण्डेय
ग्राम–पंडितपुरा
रोहतास, बिहार

श्री उदयनारायण उपाध्याय
ग्राम–तेतरियाँ, रोहतास, बिहार
मो॰ 9771900393

श्री चन्द्रमा उपाध्याय
ग्राम–तेतरियाँ, रोहतास, बिहार
मो॰ 9931910288

श्री राम उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ सकास, रोहतास, बिहार
मो॰ 9934937039

श्री दीनानाथ उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ तेतरियाँ, रोहतास, बिहार
मो॰ 9430240494

श्री कमलेश्वर उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ कल्याणपुर, बक्सर, बिहार
मो॰ 9431087178

श्री सुनील उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ भदोखरा, रोहतास, बिहार
मो॰ 6299256449

श्री राधेश्याम उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ पानापुर, रोहतास, बिहार
मो॰ 9153072784

श्री जनार्दन उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ सकास,
रोहतास, बिहार

श्री संतोष उपाध्याय
ग्राम+पत्रा॰ करहियाँ, गाजीपुर
मो॰ 73174875698

श्री विजयशंकर उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० सेवई, रोहतास, बिहार
मो० 9801267062

श्री निरंजन उपाध्याय
ग्राम–नाद, रोहतास, बिहार
मो० 9523014574

श्री सुरेन्द्र उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० किनरचोला, रोहतास, बिहार
मो० 625944810

श्री अभय उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० तेतरियाँ, रोहतास, बिहार
मो० 9801176551

श्री ओमकार उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० अमौरा, गाजीपुर
मो० 7267067122

श्री विनोद पाण्डेय
ग्राम+पत्रा० पंडितपुरा, रोहतास, बिहार
मो० 9931067321

श्री बजरंगी उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० सकास, रोहतास, बिहार
मो० 9572513413

श्री सोम जी उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० तेतरियाँ, रोहतास, बिहार
मो० 8318518121

श्री प्रमोद कुमार उपाध्याय
ग्राम+पत्रा० तेतरियाँ, रोहतास, बिहार
मो० 8969419432

आचार्य अखिलेश उपाध्याय
ग्राम–करहिया, जनपद–गाजीपुर
मो० 8700306935

श्री दयाशंकर उपाध्याय
ग्राम–अमौरा, जनपद–गाजीपुर
मो० 8009598838

श्री हेमन्त उपाध्याय
ग्राम–गहमर, जनपद–गाजीपुर
मो० 9149783830

कवि-हेमन्त उपाध्याय 'निर्भीक'
ग्राम–पचौरी, जनपद–गाजीपुर
मो० 6389042206

(कुल देवी माँ कामाख्या)

Price : Rs. ₹ 301

ISBN : 9788197972317